वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162
सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष · 4 शुक्रवार, 15 जनवरी, 1988
अंक · 1 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

माघ कृ 2 सवन 2044
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

आर्यसमाज ही कुरीतियों को समाप्त कर सकता है

—दत्तात्रेय

अजमेर, 3 जनवरी। आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने कहा है कि केवल आर्य समाज ही देश से सामाजिक कुरीतियो का उन्मूलन कर सकता है।

उन्होने कहा कि देश की स्वाधीनता के पश्चात एक बार पुन अधविश्वासो व सामाजिक कुरीतियो ने अपनी जडें जनसाधारण के मस्तिष्क मे जमा ली हैं। सती जैसी कुप्रथायें पुन अपना वीभत्स रूप दिखा रही है। अत आज आर्य समाज के ऊपर इन सभी रूढियो को समाज से दूर करने का एक भारी दायित्व आ गया है। और मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य कोई भी सगठन इस दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह नही कर सकता है।

आचार्य दत्तात्रेय जी स्थानीय 'समाज भवन म दिल्ली म देवराला' के अजमेर पदयात्रियो के सम्मान मे आयोजित समारोह मे अपना अध्यक्षीय भाषण कर रह थे। उन्होने कहा कि सती प्रथा हो जाति प्रथा हो या समाज म प्रचलित अन्य कोई सामाजिक कुरीति इन सब का आधार धार्मिक अधविश्वास है। और इसलिए तथाकथित बुद्धिजीवी केवल मानवीयता या बौद्धिकता के सहारे इन कुरीतियो के उन्मूलन मे कभी सफल नही हो सकते। आपने कहा कि आर्यसमाज के धार्मिक आधार पर भी इन कुरीतिया का खण्डन करन की क्षमता रखने और अपना कोई राजनैतिक स्वार्थ नही होन के कारण यही इन सभी सामाजिक कुरीतिया और कुप्रथाओ को समाप्त करन म सफल हो सकता है।

अपन भाषण मे आचार्यजी ने कहा कि हिन्दुओ के अन्य सगठन हिन्दुओ म व्याप्त कुरीतिया के विरुद्ध कोई उल्लेखनीय कदम उठाने का साहस नही रखत। पुरी शकराचार्य के सती-प्रथा का समर्थन करन पर इन सगठनो की प्रतिक्रिया को सतोषजनक नही कहा जा सकता। हिन्दुओ म व्याप्त कुरीतियो को ऐसे ढुलमुल और यथा स्थितिवादी सगठन समाप्त नही कर सकत। इन कुरीतियो से तो आर्यसमाज जैसा क्रातिकारी सगठन ही समाज को मुक्त करा सकता है। आपने कहा कि देश म हिन्दू बहुमत म है इसलिए इनकी सामाजिक उन्नति या अवनति का देश की प्रगति पर व्यापक प्रभाव पडता है।

आर्यों का आह्वान करते हुए आचार्य दत्तात्रेय न कहा कि 'दिल्ली से दिवराला की पदयात्रा तो आर्य समाज के वर्तमान जन-साधारण अभियान का प्रथम चरण था। अतएव आप भविष्य मे अभियान के आगामी चरणो के लिए पूर्ण रूप से तैयार रहे। ○

गर्भस्थ भ्रूण हत्या : एक अमानवीय कृत्य

वीरेन्द्र कुमार आर्य—

विज्ञान अपन आप मे वरदान भी है और अभिशाप भी।

एम्निओसेंटेसिस' नामक एक परीक्षण का गर्भस्थ भ्रूण के स्वास्थ्य की जाच के लिए आविष्कार हुआ था। ताकि यदि भ्रूण क स्वास्थ्य मे कोई असामान्यता नजर आए तो उसे उचित चिकित्सा द्वारा समयानुसार दूर किया जा सके। परन्तु नारी को दूसरे दर्जे का नागरिक समझने वाले आधुनिक भारतीय समाज मे विज्ञान का यह वरदान नारी समाज के लिए एक अभिशाप बनकर रह गया और इसका दुरुपयोग भ्रूण का लिंग ज्ञात कर स्त्री भ्रूण हत्या के लिए होने लगा।

हिन्दू धर्म की आधार शिला विभिन्न अधविश्वासो और पाखडो पर टिकी हुई है। इनक पुराणादि धर्मशास्त्र कहते है कि पुत्र क मुखाग्नि दिए बिना मुक्ति सभव नही। इसलिए मुक्ति कामना और वश परम्परा को चलाए रखने के लिए पुत्र प्राप्ति की अनिवार्यता से इस अमानवीय कुकृत्य की उत्पत्ति हुई। और दहेज के खौफ ने हिन्दुओ के अतिरिक्त अन्य वर्गों के लोगो को भी इस कुकृत्य का समर्थक बना दिया।

वैदिक धर्म मे नारी को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हैं। चारो वेद नारी और पुरुष की समानता की बात करत है। लेकिन यह भी एक विडम्बना है कि वेदा का जयघोष करने वाला हिन्दूसमाज ही लडके और लडकी को समान मानने के लिए तैयार नही। हिंदुत्व का आधार ही वस्तुत वेदादि धर्मशास्त्र न होकर मनुष्यकृत अमानवीयता व अधविश्वास के प्रसारक पुराणादि शास्त्र हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

दत्तात्रेय आर्य की स्वामी अग्निवेश से भेंट

आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने स्वामी अग्निवेश से 29 दिसम्बर 87 को नई दिल्ली मे भेंट की और नारी उत्पीडन विरोधी अभियान के आगामी कार्यक्रमो और आर्यसमाज क अन्य भावी जन जागरण अभियानो के विषय मे विस्तृत बातचीत की।

स्वामी जी ने आचार्य जी को बताया कि अब वे राजनीति को छोडकर आर्यसमाज के माध्यम से सुधारवादी कार्यों मे ही अपना समस्त समय लगायेंगे। आचार्यजी ने उनके इन विचारो का स्वागत किया और 'जन जागरण' के उनके अभियान मे अपनी समस्त संस्थाओ साथियो व स्वय का पूर्ण सहयोग उन्हे प्राप्त होने का विश्वास दिया।

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे नारी उत्पीडन विरोधी तथा अन्य सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध आर्यसमाज के 'जन जागरण' अभियान की रूपरेखा तय करने के लिये 24, 25 जनवरी को दिल्ली मे प्रमुख आर्य-विचारको की एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान सपादक : रासासिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   ☎ कार्या : 21010

आर्य समाज की निष्क्रियता

स्वाधीन भारत के पुनर्निर्माण के साथ भारतीय संस्कृति का रूप भी बदलना है। परिस्थितियों के इन वर्षों में आर्यसमाज के कर्णधार सोये रहे। नवीन भारत की सांस्कृतिक रूपरेखा पर वे वैदिक संस्कृति की छाप नहीं डाल सके। परिणाम यह हुआ कि देश का नैतिक बल शिथिल हो गया। विज्ञान के आधार पर देश ने उन्नति की किन्तु राष्ट्रीय चरित्र की नींव कमजोर रह गयी। आशा, उल्लास और निर्माण का स्थान निराशा, उदासी और दिशाहीन विद्रोह ने ले लिया।

—सत्यकाम विद्यालंकार

सम्पादकीय—

आर्य समाज राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र बिन्दु बने

आगामी 26 जनवरी, 1988 ई. को हमारा राष्ट्र गणतन्त्र दिवस की 38वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है। 26 जनवरी, 1950 ई. को भारत का संविधान लागू हुआ था और इसे सर्वसत्ता सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया था। परन्तु आज राष्ट्र का जो स्वरूप निखर रहा है वह स्वतन्त्रता पूर्व की आशाओं के अनुरूप नहीं है। स्वतन्त्रता पूर्व जैसी आशा उत्साह जोश, कर्त्तव्य पालन, देशभक्ति, राष्ट्रीयता, त्यागवृत्ति की भावना जन-जीवन में दिखती थी आज उसका लोप सा होता जा रहा है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता एक प्रकार से आन्तरिक एवं बाह्य संकटों से खतरा महसूस कर रही है। पंजाब में खालिस्तान के नाम पर आतंकवाद एवं उग्र हिंसा का नग्न ताण्डव हो रहा है बंगाल के उत्तर में गोरखा लैण्ड की समस्या कहीं झारखण्ड तो कहीं उत्तरी-पूर्वी भारत में नागालैंड, त्रिपुरा, मेघालय और मिजोरम में सिर उठाती हुई विघटनकारी शक्तियां राष्ट्र की अस्मिता को चुनौती दे रही हैं। साम्प्रदायिकता भाषावाद, प्रान्तीयतावाद पृथकतावाद, क्षेत्रीयतावाद एवं जातिवाद सभी विषधर सर्प माँ भारती को डराने को आतुर हो रहे हैं। चीन से सीमा विवाद अभी तक नहीं सुलझ पाया है, उधर पाकिस्तान भी अमेरिका के द्वारा अनापशनाप दिये जा रहे हथियारों के बल पर उन्मादग्रस्त होकर छेड़खानी से बाज नहीं आ रहा है। स्वार्थ के वशीभूत होकर तथा राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को भुलाकर जनसाधारण चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर है। रिश्वत भ्रष्टाचार, बेईमानी निकम्मापन तथा दीर्घसूत्रता एवं आलस्य भी राष्ट्रीय जीवन को खोखला करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। देश के सभी राजनैतिक दल भी वोट की राजनीति के चक्कर में तथा येनकेन प्रकारेण कुर्सी हथियाने की होड़ में विघटनकारी तत्वों के विरुद्ध खुलकर कुछ कहने और समझौतावादी एवं यथास्थितिवादी बनकर उन दुष्कर्मों को पनपाने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते हैं।

ऐसे विषमकाल में आर्यसमाज जैसा प्रखर राष्ट्रवादी संगठन ही आशा की किरण दिखाई देता है। क्योंकि इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वयं राष्ट्रीयता, स्वराज्य और स्वदेशी के प्रथम उन्नायक थे और उन्होंने अपने जीवन और कार्यों से आर्यजनों को निर्भीकता, स्वदेशनिष्ठा दृढ़ता एवं कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाया था तथा आर्यसमाज जैसे संगठन की स्थापना कर उसे देश और समाज में [illegible] बनाया। आर्यसमाज का यह छठा नियम है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना" तथा प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए परन्तु सबकी उन्नति को अपनी उन्नति समझनी चाहिये।"

यही कारण था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष बने थे और बाद में अलीबन्धुओं के प्रति गांधीजी की तुष्टिकरणनीति को देखकर वे अलग हो गये परन्तु देशभक्ति की राह नहीं छोड़ी। भगतसिंह जैसे शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी और लाला लाजपतराय जैसे महान देशभक्त नेता आर्यसमाज की ही देन थे। सैंकड़ों आर्यजनों ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। आर्यसमाज के प्रचार प्रसार की प्रेरणा से हजारों लोग जेलों में गये और अत्याचारों का मुकाबला किया। अब हमारी भी जिम्मेदारी है।

स्वाधीनता के बाद आर्यसमाज का संगठन भी कुछ शिथिल हो गया है। परन्तु फिर भी इस संगठन के लोग सामाजिक बुराइयों देशद्रोहितापूर्ण कार्यों, अन्धविश्वासों कुरीतियों का डंके की चोट विरोध करने में संकोच नहीं करते। आज भी इस संगठन के पास हजारों तपे हुए कार्यकर्ता, सधे हुए युवक हैं जो आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार हैं। अतः आर्यसमाज रूपी सोते हुए शेर को अपनी शक्ति पहचान कर पुनः अपनी प्रामाणिकता एवं प्रखर राष्ट्रवादिता का परिचय देते हुए सबल और सशक्त रूप धारण कर भारत राष्ट्र को एक सूत्रता में आबद्ध कर विध्वंसकारी शक्तियों को कुचलने हेतु तत्पर होना चाहिये।

जाग उठो ए आर्य वीरो तुम हो ताकत से भरपूर।
एक बार फिर मार दो ठोकर करो शत्रु को चकनाचूर।।
वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता

—रामसिंह

वेदों की उपेक्षा क्यों ?

यूं तो पौराणिक समाज भी वेदों के यशोगान में बढ़ चढ़कर भाग लेता है। परन्तु इनके शंकराचार्य भी जब सती प्रथा और जाति प्रथा का समर्थन वेदों के आधार पर करते हैं तो इनकी वेदभक्ति और वेदज्ञान का आप अनुमान लगा सकते हैं। यद्यपि अनेक आर्य विद्वानों ने कुरान और सिक्खों के मान्य ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहब में वेदों के अंश ज्यों के त्यों उद्धृत हुए सिद्ध किए हैं। लेकिन इन वर्गों के लोगों से वेदों के प्रचार-प्रसार की अपेक्षा रखना मूर्खता ही होगी।

महर्षि दयानन्द वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहते हैं। इससे अधिक वेदों की महिमा का गुणगान और क्या हो सकता है ? उन्होंने वेदों का गुणगान ही नहीं किया अपितु उन्हें जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए भी भारी उद्योग किया। मध्य काल में निर्जीव हुए वेद संहिताओं के प्रचार को दयानन्द ने ही पुनर्जीवित किया। आपने तो पंजाब के पटियाला विश्वविद्यालय में भी अपने प्रमाणित शुद्ध वेदभाष्य को विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने का उद्योग किया था। परन्तु खेद है कि अंग्रेजी सरकार ने अपने हितों को देखते हुए यह कार्य नहीं होने दिया।

दयानन्द के बाद वेदों के प्रचार-प्रसार का दायित्व उनके उत्तराधिकारी आर्यसमाज पर आया। परन्तु पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के अतिरिक्त मेरे स्मृति पटल पर ऐसा कोई नाम नहीं है जिसने भारतीय विश्वविद्यालयों की संस्कृत परीक्षाओं में उनके वेदभाष्य को सम्मिलित करवाने के लिए कभी गंभीरता से प्रयास किया हो। मान्य जिज्ञासु जी ने पंजाब विश्वविद्यालय की संस्कृत परीक्षाओं में ऋषि के वेदभाष्य सहित वेद के कुछ सूक्त और 'ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका' को भारी परिश्रम कर सम्मिलित कराया था।

आर्यसमाज अपने मंच से वेदों का स्तुतिगान करता रहता है। परन्तु 'कथनी और करनी' का अन्तर यहां भी साफ दृष्टिगोचर होता है। कहने को आर्यसमाज सैंकड़ों वेदविद्यालय और गुरुकुल संचालित कर रहा है। लेकिन मात्र कर्मकाण्डी के अतिरिक्त इनके स्नातक कभी विज्ञान वेत्ता या इंजीनियर बन पाए ? क्या प्रमाण दे पाए आप इसका कि वेदों में विज्ञान है ?

प्राप्त समाचारों के अनुसार केन्द्र सरकार ने वेदों के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए वेदविद्यालयों को भारी अनुदान देना स्वीकृत किया है। क्या आर्यसमाज इस सुविधा का लाभ उठा कर वेद विद्यालयों द्वारा विज्ञानवेत्ता और अन्य आधुनिक विषयों के विद्वान समाज को देकर वेदों की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित कर सकेगा ?

—धीरेन्द्र आर्य

आर्यसमाज की वर्तमान दशा का आलोचनात्मक अध्ययन-

अनागत - चिन्तन

— श्री प गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम ए —

आर्य समाज के भविष्य को उन्नतिशील बनाने के लिए मुझे इस वर्तमान काल मे तीन बातें चिन्तनीय प्रतीत होती हैं। (1) मन्यताओ का परीक्षण (2) पर नीति (फारेन पालिसी) मे परिवर्तन (3) गृह-नीति (होम पालिसी) का परिपालन। प्रत्येक के विषय मे सक्षेप मे विचार करना है।

मान्यताओं का परीक्षण - मेरी धारणा ऐसी है कि हमारे पूर्वजो ने ऋषि दयानन्द के शरीरात के पश्चात् आत्म-त्याग, उत्साह और तत्परता से जब कार्य आरम्भ किया तो मन्तव्यो को निश्चित करने के लिए उनके पास पुष्कल सामग्री न थी, सत्यार्थप्रकाश, सस्कार विधि तथा अन्य ग्रथ वर्तमान रूप मे विद्यमान न थे और अधिक प्राचीन न थे। ऋषिवर के मौखिक व्याख्यानो के जो सस्कार उस समय के नव-वयस्क कार्यकर्ताओ के मस्तिष्क मे बने रहे उनकी विद्युत शक्ति उनको आगे बढाती रही। उस समय जो मान्यतायें बन गई वह अगली पीढी के लिए घण्टापथ या राज मार्ग बन गई। उनमे कुछ पुरानी परम्पराओ के अवशिष्ट भाग थे जो मूलत त्यागने से रह गये थे। कुछ उस युग की परिस्थितियो और आवश्यकताओ के कारण मनो-वैज्ञानिक कारणो से स्वत बन गई थी। कुछ स्वामी जी महाराज के खण्ड-नात्मक व्याख्यानो से ले ली गई थी। जब ऋषि के ग्रन्थ उपलब्ध होने लगे तो हमने उनका अध्ययन भी उन्ही मान्यताओ के आधार पर किया और कालान्तर मे वे मान्यतायें सीमेट की सडक के समान सुदृढ हो गई। जब विपक्षियो से हमको शास्त्रार्थ करने पडे तो इन मान्यताओ को कूट पीट कर अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता पडी। हमने ऋषि के ग्रथो के शब्दो को ऊपरी दृष्टि से पढा। उन शब्दो मे ओतप्रोत जो आत्मा था वह हमारी दृष्टि से ओझल होता गया। इसलिए आजकल यदि कोई नया प्रश्न उपस्थित होता है तो वह धातु और प्रत्यय तक ही सीमित रह जाता है। यही कारण है कि दिन प्रतिदिन हमारी धारणाओ मे पौराणिकता का पुट लगता चला जा रहा है। और प्राचीन भारतीय सस्कृति की रक्षा के नाम पर हम उन मौलिक सिद्धांतो को भूलते चले जा रहे हैं जिनके आधार पर ही वैदिक धर्म विश्वव्यापी हो सकता था। और जिनके परित्याग पर वह आशायें विलीन सी होती चली जा रही हैं, यहाँ मैं कुछ की ओर सकेत करता हू —

(1) तीसरे समुल्लास मे श्री स्वामी महाराज ने सत्यासत्य के निर्णय की कुछ कसौटिया दी हैं। जिनमे 8 प्रमाण सम्मलित हैं। यहा प्रश्न यह है कि शब्द प्रमाण का उनमे क्या स्थान है? क्या शब्द प्रमाण या आप्त वाक्यो की मान्यताओ मे प्रत्यक्षादि का भी कुछ मान है या नही। जहा कही ऐसा लिखा है कि श्रुति के लिए कोई अतिभार नही है वहा क्या स्वामीजी महाराज को यह शब्दश मान्य है अथवा आप्तवाक्यो के मानवीय या अमानवीय होने के लिए भी कुछ ऊहापोह की गुजायश है। इस विषय मे हम लोग शकर या अन्य विद्वानो के कितने अनुगामी हैं और ऋषि दयानन्द के कितने। साधारण लोग इसकी उपेक्षा कर सकते है परन्तु जो यह जानते हैं कि आर्यसमाज के सिद्धान्तो के उद्यान मे पौराणिक झाडझकार फिर न उग उठें जिनके कारण एक वेद मत के अनेक मत हो गये उनको सतर्क होने की आवश्यकता है।

(2) हमारी पद्धति मे याज्ञिक युग की भावनायें बडे वेग से आ रही हैं। उन सूक्ष्म विचारधाराओ के परीक्षण की आवश्यकता है जो साधारण जनता को लोभ मे डाल रहे हैं और हमारा पुरोहित वर्ग उन पौराणिक रूढियो को प्रोत्साहन दे रहा है जिनके उन्मूलन के लिए 'यज्ञ' को सीमित करने की आवश्यकता है।

(3) वेद के विषय मे अभी हम इसी उलझन मे पडे हैं कि वेदभाष्य की शैलियो मे कौनसी शैली यथार्थ है। हमारी महासभाओ मे जब वेद-सम्मेलन होते हैं तो वेद का कोई ऐसा रूप हमारे सामने नही आता जो विश्व के लोगो को ग्राह्य हो सके। हिन्दी और सस्कृत मे तो हम मूल शब्दो या उनके पर्यायों को ज्यो के त्यो रखकर अनिश्चितता के दोष को छिपा सकते हैं। परन्तु यदि किसी विदेशी भाषा मे अनुवाद करना हो तो भावो के व्यक्त करने मे कठिनाई होती है क्योकि स्वय लेखको के मन म वह भाव व्यक्त नही है।

(4) वैदिक समाजवाद क्या है यह समस्या अभी तक निश्चित नही हो सकी। वर्ण और आश्रम को क्या रूप दिया जाय कि वह विश्व व्यापी हो सके यह टेढा प्रश्न है।

परनीति -अब थोडा सा परनीति (फारेन पालिसी) पर विचार कीजिये, आर्य समाज से इतर सस्थाओ का आर्य समाज से क्या सम्बन्ध होना चाहिये जिससे आर्य समाज के विश्व धर्म होने मे सहायता मिले। इस विषय मे मुझे हमारी वर्तमान नीति आमूल चल दूषित प्रतीत होती है। आर्य समाज का मच, आर्य समाज का प्रेस, आर्य समाज के आन्दोलन, आर्य समाज के नारे, आर्य नेताओ की मनोवृत्तिया और आर्य जनता की प्रगतिया बडे उच्च स्वर से पुकार कर कह रही हैं कि हमारी परनीति फारेन पालिसी) वही है जो सैकडो वर्षों से सामान्य हिन्दुओ की थी और जिसके कारण न केवल दूसरे देशो मे अवैदिक मतो ने जन्म लिया अपितु उन्होने अवसर पाकर वैदिक सस्कृति को प्रनष्ट भी कर दिया। इस विषय मे साठ साल पहले हम सबसे आगे थे। और यह आशा पडती थी कि हम ससार मे वैदिक धर्म फैला सकेंगे, परन्तु अब तो कई सस्थायें हमसे अधिक उदार है और इसलिए उनका अधिक मान है, हम प्रतिक्रियावादियो के पजे मे है। हम वर्तमान साम्प्रदायिक उलझनो मे इतने उलझ गये है कि विदेशी ईसाइयो को भारत से कैसे निकाला जाय, प्रतिक्रियावादी पाकिस्तानियो से हिन्दुओ को कैसे बचाया जाय, इसकी ही हमे अधिक चिन्ता है परन्तु यह चिन्ता किंचित भी नही है कि मुसलमानो के विचारो मे परिवर्तन करने के लिए क्या उपाय सोचे जायें और विदेशो म आर्य समाज की आवाज कैसे पहुचाई जाय। जो चि । हिन्दुओ को दो सहस्र वर्षों से रही वह आज भी है। इसलिए 'शुद्धि' आन्दोलन तो कभी का मर गया। इच्छामात्र बनी है केवल इच्छाओ से तो काम नही चलता। क्या यह सम्भव है कि देहली के कुछ मुसलमान स्वय सार्वदेशिक सभा के कार्यालय म आकर यह माग करें कि आप हम शुद्ध कर लीजिए। हम आर्य होना चाहते है? जब तक आर्यसमाजी मुसलमान को और मुसलमान आर्य समाजी को अपना कट्टर शत्रु समझता है तब तक क्या यह सम्भव है कि निकट भविष्य या दूरस्थ भविष्य मे कभी जादू से ऐसा समय आ सकता है कि सहयोग-विरोधिनी प्रवृत्तियाँ कम हो जायें? इसी प्रकार जब तक विदेशो मे यह धारणा पक्की होती रहेगी कि भारत मे आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो ईसाइयो को फूटी आँख से भी देखना नही चाहती उस समय तक आर्य समाज के मिशन को विदेश मे सफल होने की क्या आशायें रक्खी जा सकती है? और क्या वर्तमान अन्तर्जातीय वातावरण मे यह कभी सम्भव हो सकेगा कि भारत सरकार विदेशी ईसा-इयो के आने पर पुराने जमाने के समान कोई पाबन्दी लगा दे। और यदि किसी प्रकार ऐसी पाबन्दिया लगा भी दी गई तो आर्य प्रचारको के साथ शहर वालो का क्या बर्ताव होगा और भारतीय ईसाइयो की प्रगतिया कैसे रोकी जा सकेंगी। सामाजिक उत्सवो मे शान्ति प्रकरण के पाठ करने से तो शाति स्थापित न हो सकेगी जब तक कि अशान्त वातावरण मे शाति के बीज बोने का प्रयत्न नही होगा। क्या आर्यसमाज की वर्तमान प्रगतियो को देखते हुए कोई कह सकता है कि अमुक अशात वातावरण की अशान्ति

(शेष पृष्ठ 4 पर)

स्व उपाध्याय जी ने यह लेख कई दशक पूर्व लिखा था। उनके यह लेख लिखने से आज तक आर्यसमाज की नीति और मान्यताओ मे कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। 'आर्य पुनर्गठन' की नीति आरम्भ से ही आर्यसमाज की वर्तमान दशा पर विशेष आलोचनात्मक सामग्री देने की रही है। उसी परम्परा को निभाते हुए हम अपने विचारशील पाठको के समक्ष मान्य उपाध्याय जी का यह महत्वपूर्ण लेख प्रस्तुत कर रहे है।

— सम्पादक

गौतम बुद्ध और वैदिक ब्राह्मण पर उनका चिंतन

— प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य —

महात्मा गौतम बुद्ध को प्राय नास्तिक और वेद विरोधी बताया जाता है किन्तु ये दोना ही आरोप परम्परावादी बन चुके हैं। आरोप न तो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे सही उतरते हैं और न तर्क की दृष्टि से वास्तविक सिद्ध होते हैं। यदि उक्त दोनो दृष्टियो से देखा जाये ता बुद्ध धम की समस्त शिक्षायें वेदो मे वर्णित आचार सहिताओ का ही बौद्धीकृत सस्करण हैं। मागधी व पाली भाषा मे अपने शिष्यो को सदेश व उपदेश देकर भगवान गौतम बुद्ध ने उन्ही प्रदत्त वेद मूलक मानव मूल्यो का प्रतिपादन किया है जिन्हे मध्यकालीन पौराणिक ब्राह्मणो ने विकृत कर डाला था। पौराणिक पडितो द्वारा यज्ञ मे पशु बलि, श्राद्ध छुआछूत तथा वीभत्स तान्त्रिक विधानो को देखकर गौतम बुद्ध को तथाकथित वेद मूलक पौराणिक धम से घृणा हो गई थी।

एक बार गौतम बुद्ध ने अपनी प्रवास यात्रा के समय देखा कि कुछ तिलकधारी ब्राह्मण पशुओ का काट–काट कर हवन मे उनक माम की आहुतिया दे रहे थे। गौतम ठिठक कर खडे हो गये। ब्राह्मणो को बुलाकर पूछा कि यज्ञ जैम पवित्र काय मे यह घृणित हिंसा कम क्यो किया जा रहा है? ब्राह्मणा ने उत्तर दिया कि वदो म लिखा कि–

'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' अर्थात यज्ञादि कर्मों की हिंसा को हिंसा नही कहा जाता है। इस विधान का हिंसत पशु सीधा स्वग मे जाता है। गौतम ने पुन पूछा जिन वेदो म यह बात लिखी है उनका रचयिता कौन है? ब्राह्मण बोले वेद साक्षात ईश्वर की वाणी है। वेदो म कई स्थलो पर 'गवोलम्भन' (गोवध) आदि का विधान है।

प्रगतिशील समाज का नव–निर्माण कर सकते है। हम म से प्रत्येक के उद्देश्य व मकसद तभी पूण हो सकत है, जबकि हम अपनी कौमी एकता का यथावत भगवान आचार माव के लिए वैराग्य उपशम, अभिज्ञा, सबोधि तथा निर्माण उत्पन्न करने म सहायक न होन के कारण उन सभी प्रश्नो को निरर्थक बताया इस विषय पर उन्होने एक सुन्दर दृष्टात भी दिया था। यदि एक व्यक्ति विषैले बाण स दग्ध होकर कराह रहा हो और वैद्य बुलाने के लिये सब लोग तत्पर हो तो उस समय क्या इस बात का विचार करना उचित है कि वैद्य का नाम, गोत्र, वश व रग आदि क्या है? उस समय तो तुरन्त वैद्य को बुलाकर उपचार कराना और विष के प्रभाव को दूर करना ही बुद्धिमता मानी जावेगी। भव रोग से आक्रान्त प्राणियो की दशा भी ठीक ऐसी ही है उसे आध्यात्म ज्ञान, दर्शन तथा युक्तियो के समाधान की क्या आवश्यकता है? गौतम का यह दृष्टान्त व्यावहारिक दृष्टि से तो बिल्कुल सही है किन्तु भावी समाज व्यवस्था तथा आत्मिक उन्नति की दृष्टि से इसे सिद्धान्त स्वीकार नही किया जा सकता। क्योकि सब कुछ वर्तमान नही है। भविष्य की चिन्ता भी जीवन का एक विशिष्ट लक्ष्य हुआ करता है। ससार को दुखमय मानना वस्तुत आत्मा की श्रेष्ठता को अस्वीकार करना है। यह दुख स्वाभाविक नही अपितु किन्ही कारणो से होता है। महात्मा बुद्ध ने इसके 12 कारण बताये हैं जैसे जरामरण, जाति, भव उपादान, तृष्णा वदना, स्पश नामरूप षडा यतन, विज्ञान, सस्कार तथा अविद्या। इन्ही को वैदिक शास्त्रो म पच क्लेश, षड रिपु और जैन ग्रन्थो मे कषाय आदि के नाम से पुकारा गया है योगदर्शन मे इनसे छुटकारा पाने के लिये अष्टाग याग का विधान किया है जिन्हे हम यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि के नाम से जानते हैं। भगवान बुद्ध ने भी मध्यम प्रतिपदा' के माध्यम से द्वादश निकाया (भवचक्र) को दूर करन का सन्देश दिया है जो लगभग योगदशन के ही प्रकारान्तरित रूप है। सम्यकदृष्टि सम्यक सकल्प सम्यक वचन सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीव आदि ऐसे प्रमुख आधार है जो प्रज्ञा के उदय और मोक्ष मे सहायक हो सकते है। इसी प्रकार सम्यक व्यायाम सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि भी ऐसी परवर्ती दशायें हैं जो मनुष्य को योग शास्त्र मे वर्णित समाधि की स्थिति प्रदान करती है। वस्तुत भगवान बुद्ध ने योग दर्शन के सिद्धान्तो के साधना पक्षो को इतना व्यावहारिक और ग्राह्य रूप प्रदान किया है जो जनसाधारण के लिए सहज स्वीकार्य हो गया है। विपश्यता विधि प्राणायाम का ही रूप है। ध्यान का केन्द्रीकरण इसी से सम्भव होना बताया गया है। योगदर्शन के अष्टाग योग मे इसे चौथा स्थान दिया गया है।

पता—दयानन्द कालेज अजमेर।

(शेष पृष्ठ 3 का)

वा कम करने के लिए आर्य समाज ने यह विधि निकाली? इसके विपरीत तो सभी को दृष्टिगोचर होता है। यह हमारी पर–नीति (फारेन पालिसी) का फल है कि लोग हमसे डरते तो है हमारी ओर आकर्षित नही होते। यह रोग इतना बढ गया है कि हमारी गृह नीति (होम पालिसी) पर भी इसका प्रभाव है और एक नेता दूसरे नेता से तथा एक विद्वान दूसरे विद्वान से शकित रहता है और प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप मे साधारण जनता को उत्तेजित करने की धनाधुनी जारी रहती है।

गृहनीति—दूसरी बात है गृहनीति का परिपालन। मुझे आर्य समाज के नियम–उपनियम या विधान आदि म कोई विशेष त्रुटि दिखाई नही पडती। आर्यसमाज का यह विधान उस विधान से सवथा भिन्न है जो प्राचीन मठो के थे। वर्तमान वातावरण उनके अनुकूल है भी नही। सावजनिक वातावरण म यही सम्भव था। परन्तु इस विधान का परिपालन नही हो रहा। इसमे अधिकतर दोष तो हमारी पर–नीति (फारेन पालिसी) का है। कहावत तो यह है कि इस घर को आग लग गई घर के चिराग से। (अभूत् प्रेग्नि गेह–दीप–शिखया गेह गत भस्मतान्) परन्तु घर के चिराग पर पर्दा डालने वाले तो बाहर से घुस आते हैं। आर्य समाज के नेताओ मे से कोई एक भी ऐसा नही जो किसी न किसी राजनीतिक दल के प्रभाव मे न हो और आर्यसमाज को उस दल के पीछे घसीटने म सहायक न हो। प्रश्न यह नही है कि हम किस तेजी से दौड रहे हैं प्रश्न यह है कि हम किस दिशा मे दौड रहे है और चालीस पचास वर्ष पीछे हम कहा होगे। योग दर्शन का सूत्र है 'हेय दुखमनागतम्'। भविष्य म आने वाले दुख को हटाने का यत्न करो। अतीत तो चला गया। उसके लिए रोने से क्या लाभ? और वर्तमान तीव्र गति से अतीत बन रहा है। अनागत परोक्ष है। सवसाधारण की दृष्टि से ओझल है। और हम उसकी ओर झाकने से डरते हैं कि कहीं हमारी मान्यताओं को धक्का न लगे। तो क्या आखें बन्द करके अपने को परिस्थिति की लहरो पर छोड दें। और कहते रहे जिधर भी देगा उधर जायेंगे।'

हरिश्चन्द्र आर्य को श्रद्धांजलि

लाडनू (राज)। आर्य समाज ने अपने नेता श्री हरिश्चन्द्र आर्य के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है और परमात्मा से उनकी आत्मा की चिरशांति के लिए प्रार्थना की है।

—मत्री

नारी जागरण यज्ञ

आर्य समाज कावाखेडा (भीलवाडा) के तत्वावधान मे 27 दिसम्बर 1987 को स्थानीय शिव मन्दिर मे नारी जागरण यज्ञ किया गया।

—अम्बा प्रसाद शर्मा (सयोजक)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

25 दिसम्बर 87 को आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के तत्वावधान मे आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर अनेक वक्ताओ ने उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। प्रमुख वक्ताओ म स्वामी अग्निवेश, स्वामी आनन्दबोध, क्षितीश वेदालकार आदि थे। इससे पूर्व प्रात नया बाजार स्थित श्रद्धानन्द बलिदान भवन' म एक यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

— विमलकान्त शर्मा (मत्री)

—महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास मे दिवराला गये आर्य वीरागनाओ के जत्थे का स्वागत किया गया। स्वागत समारोह सकल्प समारोह के रूप म मनाया गया।

— वीरेन्द्र सिंह

वैदिक उपासना

— स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती —

सिक्ख-मुसलमान-ईसाई-जैन पौराणिक आदि के यह उपासना प्रकार नवीन हैं। वैदिक उपासना ही सबसे प्राचीन एव स्वाभाविक है। जैसे ईश्वर ने सृष्टि के आदि में रूप, रस, गन्धादि के ज्ञान के लिये नेत्र-रसना और घ्राणादि का निर्माण किया था, वैसा ही अनादि काल से आज तक और आगे भी बना रहेगा। कोई भी मजहब नेत्रादि के बिना रूपादि का ज्ञान कराने का नवीन प्रकार नही बना सकता, एव सिख गुरुओ से पहले सिखो की उपासना का प्रकार एव मुहम्मद साहब, मीशुमसीह, जैन तीर्थंकर तथा पौराणिक अवतारो से पहले इनकी उपासना का कोई चिन्ह भी नही था, और उस समय के साधक भी ईश्वर की उपासना करते थे। क्योंकि उक्त मजहबो वाले जिस प्रकार और जिनकी उपासना करते हैं वे उपास्य और प्रकार मत सचालको अर्थात 4000 (सहस्र) वर्षों से पूर्व नहीं थे। और सृष्टि की उत्पत्ति को अरबो वर्ष हो चुके हैं, अत यह निर्विवाद है कि वैदिक उपासना सर्वोपरि और सबसे पहले थी। उसके सिवाय ईश्वर की उपासना का प्रकार कोई हो ही नहीं सकता।

उपासक को सर्वप्रथम शरीर शुद्धि करनी चाहिये। बाह्य जलादि से और आन्तरिक मलमूत्रादि के शोधन से तथा यम नियमादि से आत्मा और बुद्धि की शुद्धि करनी चाहिये। शरीर मे मल-मूत्रादि के आधिक्य से भी चित्त चचल रहता है। इसलिये बहुधा उपासको को उपासना समय निद्रा आ जाती है। और योग के साधनो मे रुचि का न होना भी इसका कारण है। जैसे शरीर के बाह्य भाग पर किसी पिपीलिका (चीटी) आदि का स्पर्श होने से ध्यान तुरन्त वही पहुचता है, वैसे ही मलमूत्र एव दूषित वायु के आधिक्य से आलस्य, प्रमाद विषयासक्ति और चित्त की चचलता बढ जाती है। अत शरीर के बाहर भीतर की शुद्धि उपासना मे अनिवार्य है। उपासक को भोजन भी अत्यधिक, कुपाच्य, मादक एव दुर्गन्धित नही करना चाहिये, क्योकि— "आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति" अर्थात यदि भोजन शुद्ध है तो बुद्धि शुद्ध होगी और बुद्धि शुद्ध होगी तो स्मरण शक्ति स्थिर रहेगी। योग मे उपासक के लिये 'स्मृति' सर्वोत्तम साधन है। यदि स्मृति स्थिर है तो विस्मृति, नानास्मृति एव सकल्प-विकल्प उत्पन्न ही न होगे। उपासक जहा उपासना करना चाहे वह देश धूलि धुआ एव दुर्गन्धादि से सुरक्षित हो और एकान्त अर्थात कोलाहल से रहित हो। ऐसे स्थान मे जाकर आसन लगाकर स्थिर हो जावे, क्योकि आसन की स्थिरता के बिना भी चित्त एकाग्र नही होता। पुन शरीर से पृथक् अपने आत्मा को निश्चित जान कर परमेश्वर को भी अपने ऊपर, नीचे, आगे-पीछे सर्वत्र निश्चित करे। पुन भस्त्रिका प्राणायाम करके चार प्रकार के बाह्यवृत्ति आदि प्राणायाम करे। अपनी बुद्धि मे कोई पूर्वानुभूत का स्मरण न होने दें। बहुधा उपासक पूर्वानुभूत का स्मरण करते रहते हैं और उपासना समय व्यर्थ हो जाता है। उस समय भावी कार्यक्रम पर भी कोई विचार न करे केवल अपने आपको ब्रह्म मे ऐसे अनुभव करे जैसेकि ग्रीष्म ऋतु के निदाघ से सतप्त यात्री नदी आदि के जल मे डुबकी लगाता है और जल की शीतलता का अनुभव करता हुआ यथाशक्ति जल मे ही निवास करता है।

उपासक अपने आपको ब्रह्मस्थ अनुभव करता हुआ सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त ब्रह्म को सृष्टि का कर्ता, धारक, सचालक एव नियामक मानकर पुन पुन उक्त गुण स्वभाव का विचार करे और विचार करने से ब्रह्म का निश्चय हो जाने पर जैसे गृहपति गृह मे रहता हुआ अपने आपको गृह से पृथक् अनुभव करता है एव विश्वपति को अपने सर्वत्र अनुभव करता हुआ उस अनुभूतावस्था मे स्थिर रहने का यत्न करे। जब उपासक पूर्वानुभूत इन्द्रिय जन्य नवीनतम ज्ञान शून्य और निद्राहीन जागरूकावस्था मे निवात प्रदीप शिखावत् अथवा निस्तरङ्ग महोदधि समुद्र के समान स्थिर होता है इसी अवस्था का नाम समाधि अथवा योग है। समाधि समाधान योग को कहते हैं। कई उपासक यह कहते सुने जाते हैं कि "जब मैंने समाधि लगाई तो गुरु जी ने मेरे पैर में कील ठोक दी और मुझे पता नही लगा।" यह सब ढोग है। समाधि शब्द का अर्थ अज्ञान (बेहोशी) नही है। समाधि मे तो जैसे हाथ पर रक्खी हुई वस्तु को नेत्रो वाला व्यक्ति नेत्रो से देखता है उसी प्रकार उपासक को उपासना समय विश्व की विविध वस्तुओ का ज्ञान होता है। इसलिये योग शास्त्र मे "योगश्चित्तवृत्ति निरोध" चित्त की वृत्तियो का निरोध योग कहा है। जब चित्त की चचलता अवरुद्ध हो जाती है तब 'ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा' इस योग सूत्र के आधार पर बुद्धि मे नवीनतम आत्मा, परमात्मा, प्रकृति और प्रकृति जन्य विश्व का ज्ञान समाविष्ट होता है, क्योकि जीवात्मा एक काल मे से एक ही ज्ञान कर सकता है और बिना ज्ञान के भी कभी नही रहता।

'भिद्यते हृदय ग्रन्थि " मुण्डक 2-2-8

जब इस जीव के हृदय की अविद्या अज्ञान रूपी गाँठ कट जाती है, सब सशय छिन्न होते और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं तभी उस परमात्मा मे निवास करता है।

समाधिस्थ योगीजन सूर्य चन्द्रादि लोकलोकान्तरो का ज्ञान समाधि मे ही करते हैं। उपासक कभी रोगी नही होता और न ही चोरी, जारी, व्यभिचार, मिथ्या भाषणादि कुकर्म करता है।

पता—गुरुकुल घरौंडा,
करनाल (हरियाणा)

***

ये कैसे दिन आये

—डॉ श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगज, बरेली

गीत नही मधुवन मे कोई
मधु कण वचित गागर रोई,
आतको का राज्य, त्रस्त
अपनो से ही सब पाये।
शिथिल प्रतिज्ञाओ के बन्धन,
व्यालो ने घेरे बहु चन्दन,
कृषक, श्रमिक धनवान आदि
रोगो से घिरते पाये।
भटकी दीख रही तरुणाई
जर्जर असमय फिर अरुणाई,
है उपाधियाँ, किन्तु यथोचित,
पद किसने है पाये।
राम राज्य की स्मृतियाँ है,
विश्वासो की विस्मृतियाँ है,
है भविष्य उज्ज्वल कैसा,
जब वर्तमान अकुलाये।
विध्वसो मे शक्ति लगाई,
वही राष्ट्र उन्नति कहलाई,
वामन के अवतार बने सब,
बलि लगते सकुचाये।
सीताओ की करुण-कथा है,
लगता है बन गई प्रथा है,
रावण से भी बढे-चढे
अधिकाश राम अब पाये।

***

व्यवहार भानु ब्रेललिपि में

आर्यसमाज, अजमेर ने मुजफ्फरनगर (उ प्र) के प्रज्ञाचक्षु श्री विजयेन्द्र 'कुसुम' को ऋषिकृत 'व्यवहार भानु' के ब्रेललिपि मे प्रकाशन के लिये 301 रु की सहयोग राशि प्रदान की है।

उल्लेखनीय है कि श्री कुसुम इससे पूर्व 'आर्याभिविनय' का भी ब्रेललिपि मे प्रकाशन कर नेत्रहीनो मे प्रचारार्थ वितरित कर चुके है।

***

पत्र बोलते हैं—

आर्य समाज को बचाओ

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की साकार है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के मन की कसक है, प. लेखराम के हृदय की टीस है, अध्यात्म का प्रशस्त मार्ग है, राष्ट्रीय भावनाओ का स्रोत है, सामाजिक उत्थान का सोपान है, निस्सदेह आर्यसमाज ने वेदो के आधार पर देश मे सत्य का प्रकाश किया। रूढ़िवाद एव पाखण्ड मे जनता को बचाया और वेद के पवित्र पथ पर चलाने का प्रयास किया। आज मानवता की भावनाओ का जो विकास हो रहा है, साम्राज्यवाद के ससार में इस ज्योति को आर्यसमाज ने ही जगाया, राष्ट्र की स्वतन्त्रता का श्रेय भी मूल रूप से इसी सस्था को जाता है। परन्तु परन्तु प्रश्न होता है कि आज हम कहा खडे हैं? वास्तविकता से आँखें मूंद लेने से कठिनाई दूर नहीं हो सकती, आज हम देख रहे हैं कि व्यक्तिगत स्वार्थों के कीचड मे हम इतने धस गये है कि स्वकर्तव्य बोध भी समाप्त हो चुका है, तब आनन्द बोध कैसे सम्भव है?

सोए हुए लोग तो सोए हुए थे,
हम को जरा देखिय जाग के हम सो गये।

आज अ प देश भर की समाजों मे आपसी रस्साकशी है, प्रतिनिधि सभाए चुनावो का अखाडा बन के रह गई हैं। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर शायद जामामसजिद का मिम्बर किसी आयसन्यासी की प्रतीक्षा करता होगा जो वेदमन्त्रो से वातावरण को सुवासित करे परन्तु अब वह सन्यासी हम कहां से लायें? कुछ साथी आर्य धर्म मे प्रविष्ट हुए हैं उनको सम्भाल कर उन्हे वैदिक धर्म से परिचित कराने वाली कोई सस्था नही, उनसे आर्य बन्धु अरबी तथा कुरान का ज्ञान प्राप्त कर सकते थे परन्तु अब मुसाफिर विद्यालय कहा से लायें? शास्त्रार्थ के महारथी जा रहे हैं उपदेशक वग प्राय समाप्त हो रहा है। आर्यों को पुरोहित तक मिलने कठिन हो गये हैं परन्तु सभाए इस ओर देखना भी नही चाहती। समाजो के आपसी तकरार न्यायालयो तक जा रहे हैं, परन्तु सार्वदेशिक सभा सभाओ की उठापटक मे जूझ रही है। किसी का सम्मान सुरक्षित नही, प्रजातन्त्र गुटबन्दी का शिकार हो चुका है। मेरी आज की डाक मे हैदराबाद से इसी के सम्बन्ध मे पत्र आया, इधर राची वालो का पत्र पढा, दिल्ली के एक बन्धु का पत्र इधर पजाब सभा का विवाद गुरुकुल मे आपसी तकरार, आखिर यह सब आर्यों के लक्षण तो नही है? आरोपो की भरमार है पदलोलुपता चरम सीमा पर है, किसको कहू?

"यहाँ पगडी उछलती है इसे मैखाना कहते हैं

दूसरी ओर नवधर्मियों ने आर्यों को मिटाने का निश्चय कर रखा है। देवबन्द मे उनका सुव्यवस्थित कार्य उनके प्रकाशन विभाग की कर्मठता कुछ देशों का उन्हे सहयोग देश में रहकर भी देशद्रोह का उनका साहस, सोचने पर विवश करता है कि राष्ट्रभक्त आयसमाज कहां है? धार्मिक ससार मे इसका पूछने वाला कोई नही सामाजिक क्षेत्र मे इसका मौन दु खद है, राजनीति मे तो यह आना ही नही चाहता, यद्यपि इसके नेता राजनैतिक पार्टियो के सम्मुख भिक्षुक बने रहते हैं कि कहीं से किसी सीट का टिकट इन्हे मिल जाए।

मैं दु ख से यह सब लिख गया, 'आर्य पुनर्गठन' के सम्पादक महोदय की योग्यता एव कर्मठता का मैं प्रशसक हूँ परन्तु उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या आर्यों का यह विघटन समाप्त किया जा सकता है? क्या पदलोलुप व्यक्ति हटाये जा सकते हैं? क्या आर्यों का पुनर्गठन सम्भव है?

"इसी आस अटको रहे अलि गुलाब के मूल
हुहै फेर बसन्त ऋतु इन डारन के फूल"

—उत्तमचन्द्र शरर
पता—30/8 पानीपत (हरियाणा)

आवश्यकता है एक और रामायण की

प्रति रविवार दूरदर्शन पर रामायण का प्रदर्शन उल्लेखनीय लोकप्रियता अर्जित कर रहा है। आकर्षक प्रस्तुति के लिए दूरदर्शन को मेरी ओर से बधाई। इस श्रृंखला के माध्यम से घर–घर में रामलीला के दर्शन हो जाते हैं। यदि इसे मध्याह्न मे दिखाया जाता तो अधिक व्यक्ति लाभ उठा सकते। इस प्रस्तुति की पूर्णता के बाद भी एक शुद्ध रामायण के प्रदर्शन की आवश्यकता बनी हुई है, जो शेष रह गए अन्धविश्वासों को दूर कर सके। बालि, सुग्रीव आदि बन्दर रूप में दिखाये गए हैं और उनके पूंछ लगाई गई है। जबकि इनकी पत्नियाँ तारा–रूमा आदि साधारण नारियों के सभ्य वेश में हैं। सुग्रीव के दरबार में होने वाले सामूहिक नृत्य की नर्तकियो में एक भी बन्दरिया दिखाई नहीं दी। दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक 26–12–87 में श्री गिरिजा किशोर माथुर की टिप्पणी युक्तियुक्त लगी। इक्कीसवीं सदी की ओर अग्रसर इस वैज्ञानिक युग मे अपनी मानवीय मान्यताओं पर जमी धूल को यदि हम नहीं धो सकेंगे तो कब धोयेंगे? अस्तु आवश्यकता है मर्यादा पुरुषोत्तम राम की शुद्ध ऐतिहासिक रामायण के प्रस्तुतिकरण की।

—श्रीमती दर्शन देवी भारद्वाज
एफ–42, मानसरोवर कालोनी

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार सम्मानित

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री हरकिशन लाल कपूर ने 28 दिसम्बर को हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित वर्ष 85-86 के सम्मान अर्पण समारोह मे आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान डा सत्यकेतु विद्यालकार को हिन्दी की विशिष्ट सेवा के लिए 11 हजार रुपये, शाल, स्मृति चिन्ह एव प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

शहीदे आजम बिस्मिल की बहिन नहीं रहीं

आर्य जगत मे यह समाचार अत्यन्त दु ख के साथ सुना जायेगा कि ऋषि दयानन्द के भक्त अमर शहीद प. रामप्रसाद बिस्मिल की क्रान्तिकारिणी बहिन श्रीमती शास्त्री देवी का 22 दिसम्बर को निधन हो गया। आपने अपने भ्राता श्रीयुत बिस्मिल' को अनेक बार क्रातिकारी कार्यों मे सहयोग दिया।

'आर्यपुनर्गठन परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि सादर समर्पित है।

— सम्पा

(शेष पृष्ठ 1 का)

गत दिनो महाराष्ट्र सरकार ने 'एम्नियो से टेमिस के भ्रूण हत्या के लिए दुरुपयोग किए जाने को आधार बनाकर इस परीक्षण पर रोक लगा दी। परन्तु प्राप्त जानकारी के अनुसार 'अल्ट्रासोनोग्राफ नाम का एक और परीक्षण बाजार मे 'एम्निओसेंटिसस' के विकल्प रूप में आ धमका है। अत मात्र नामभेद या तकनीक भेद के कारण इस परीक्षण को भी कोई छूट नही मिलनी चाहिए।

ऐसे प्रबन्ध किए जा सकते हैं कि अर्थलोलुप डॉक्टर और पुत्रैषणाग्रसित लोग 'अल्ट्रासोनोग्राफी' व एम्नियो-सेंटिसिस' परीक्षण का दुरुपयोग न कर सकें। केन्द्रीय सरकार, महाराष्ट्र सरकार से प्रेरणा लेकर इस भ्रूण हत्या को कारगर ढंग से रोकने के लिए एक विधेयक-संसद द्वारा स्वीकृत करा सकती है। यह कोई ऐसा भी मामला नही है कि जिसके विरुद्ध विधेयक लाने से सत्ता पक्ष के किसी राजनैतिक हित को कोई आघात लगता हो। [illegible] किसी सामाजिक बुराई या अंधविश्वास को केवल उसके विरुद्ध कानून बनाकर समाप्त नही किया जा सकता। उसकी समाप्ति के लिए जन चेतना का होना भी आवश्यक है। और इस संदर्भ मे यह भी विशेष उल्लेखनीय है कि अन्य सामाजिक सगठनों के अतिरिक्त पिछले दिनो अग्निवेश ने भी अपनी नारी उत्पीडन विरोधी पदयात्रा मे स्त्री भ्रूण हत्या के विरुद्ध अपनी आवाज उठाकर जन साधारण मे इसके विरुद्ध वातावरण तैयार करने मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा आर्य प्रिण्टर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162
सृष्टि सम्वत् : 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष : 4 शनिवार, 30 जनवरी, 1988
अंक : 2 पं. स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

माघ शु 12 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

डी. ए. वी. स्कूल स्थापना शताब्दी मनायेगा

अजमेर का डी ए वी स्कूल आगामी 10 फरवरी, 1988 ई को अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे करने जा रहा है। यह विद्यालय 1892 मे मिडिल स्कूल, 1895 मे हाईस्कूल तथा 1941 ई मे इस विद्यालय की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक आयोजित की गई थी तथा उसी अवसर पर दयानन्द कॉलिज अजमेर की स्थापना का निश्चय हुआ जो आज राजस्थान की गैर सरकारी शिक्षण सस्थाओ मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

डी ए वी स्कूल प्रबन्ध समिति के विशिष्ट पदाधिकारियो, आर्य समाज शिक्षा सभा द्वारा सचालित 13 शिक्षण सस्थाओ के प्रधानाध्यापको एव डी ए वी स्कूल के भूतपूर्व छात्र प्रतिनिधियो की गत रविवार को प्रो दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न बैठक मे सर्व सम्मति से डी ए वी स्कूल स्थापना शताब्दी समारोह पूर्वक मनाने का निश्चय किया गया। 10 फरवरी 1988 ई से शताब्दी वर्ष शीघ्र ही बृहद स्तर पर मनाने हेतु स्वागत समिति एव व्यवस्था समिति का गठन किया जायेगा। शताब्दी वर्ष मे उपयुक्त तिथियो पर समुचित समारोह करने, विशिष्ट महानुभावो, शिक्षाशास्त्रियो को आमन्त्रित करने स्मारिका प्रकाशन, भूतपूर्व छात्र सम्मेलन, प्रदर्शनी, विशिष्ट भूतपूर्व छात्रो/अध्यापको/सचालको का सम्मान करने तथा अजमेर नगर मे किसी उपयुक्त स्थान पर पर्याप्त भूमि प्राप्त कर इसके शतवर्षीय गौरव के अनुरूप विद्यालय का निजी भवन बनाने सबधी विचार विमर्श हुआ ।

10 छात्रो को लेकर प्रारम्भ किये गये इस विद्यालय से अब तक बीस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। यहा से निकले कई विद्यार्थी स्वतन्त्रता सेनानी, मत्री, विधायक, प्राचार्य, प्रशासक, न्यायाधीश, इजीनियर, डाक्टर, व्यापारी, उद्योगपति तथा श्रेष्ठ नागरिक के रूप मे भारत माता की सेवा कर रहे हैं। वर्तमान मे भी यह विद्यालय अजमेर नगर एव जिले के सबसे बडे और शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण विद्यालयो मे से एक हैं। इसमे कला, विज्ञान, वाणिज्य मे 29 सैक्शन, 1700 छात्र एव 60 अध्यापक एव कर्मचारी है ।

आर्य समाज शिक्षा सभा के अध्यक्ष श्री दत्तात्रेय आर्य, मत्री श्री कृष्णराव वाब्ले तथा प्रधानाचार्य श्री रासासिह ने सभी भूतपूर्व विद्यार्थियो तथा अजमेर के नागरिको से इस पुनीत अवसर पर पूर्ण सहयोग प्रदान करने की प्राथना की है। भूतपूर्व विद्यार्थियो से अपने पते तथा कार्य क्षेत्र के सम्बन्ध मे जानकारी देने हेतु भी निवेदन किया गया ।

गंगानगर में ईसाई मिशनरियों का राष्ट्र विरोधी षडयन्त्र

— मदन अरोडा —

एक ओर जहाँ दूरदर्शन एव आकाशवाणी द्वारा इस सीमावर्ती और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिले मे सास्कृतिक हमले किये जा रहे है, वही दूसरी ओर ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म निरपेक्षता और भारतीय कानूनो की धज्जिया उडाते हुए गरीब हरिजनो को प्रलोभन देकर न केवल धर्मान्तरण का कार्य जोर-शोर से चलाया जा रहा है, वरन बाल गोपालो को अग्रेजी माध्यम से सुशिक्षित करने के नाम पर उन्हे ईसाईयत की ओर घसीटा जा रहा है तथा उनके दिलो दिमाग में भारतीय सस्कृति को निकृष्टतम सस्कृति के रूप मे अकित करते हुए पाश्चात्य सस्कृति के रगो मे रगा जा रहा है ।

भारत-पाक युद्धो के बाद ज्यो-ज्यो इस जिले को सामरिक दृष्टि से विकसित कर यहाँ सैन्य छावनियो का जाल बिछाने का काय शुरू हुआ त्यो-त्यों ईसाई मिशनरियो की गतिविधियाँ भी बढनी शुरू हो गई और जिले मे अग्रेजी माध्यम के स्कूलो का जाल बिछना शुरू हो गया। जिसके माध्यम से स्कूल के ईसाई सचालक बाल गोपालो को ईसाईयत मे रगने के साथ-साथ छावनियो मे रहने वाले सैन्य अधिकारियो से अपने सम्पर्क बनाने मे कामयाब होते जा रहे हैं ।

ईसाई मिशनरी द्वारा शुरु मे लोगो को धन और ऐश्वर्य का प्रलोभन दिखाकर धर्म परिवर्तन का कुचक्र चलाया गया। जो उस समय अधिक कारगर साबित नही हुआ, परन्तु अब धीरे-धीरे ये अपनी साजिशो मे सफल होते जा रहे हैं तथा सीमावर्ती क्षेत्रो मे भारी सख्या मे धर्मान्तरण कराने मे कामयाब हो चुके है ।

दिसम्बर 87 के प्रथम सप्ताह मे सीमावर्ती गजसिहपुर कस्बे के निकट 35 बी बी चक मे दो परिवारो के दस-दस सदस्यो को हिन्दू धम से ईसाई बनाया गया। ये दोनो परिवार गरीब, मजबी सिखो के हैं तथा इनके मुखिया गुलजार सिह और जगल सिह मेहनत मजदूरी कर अपने परिवारो का पेट पालते आ रहे है। गुलजार सिह उसकी बीबी बलविन्द्र कौर बटे राजन्द्र सिह एव महन्द्र सिह तथा बेटिया छिन्द्रकौर एव पासी अब 'सिह और 'कौर नही बल्कि बसीस्मा अपना कर (ईसाई धर्म मे लाने की पद्धति) मरियम, मसीह और पॉल बन चुके हैं। यही नही, उनमे ईसाईयत इतनी कूट-कूट कर भर दी गई है कि वे अपने देश से ऊपर इसे तरजीह देने लगे है ।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म निरपेक्षता और भारतीय कानूनो की धज्जिया उडाते हुए गरीब हरिजनो को प्रलोभन देकर धर्मान्तरण बाल-गोपालो को अग्रेजी माध्यम से सुशिक्षित करने के नाम पर ईसाइयत की दीक्षा छावनियो मे रहने वाले सैन्य अधिकारियो से गुप्त जानकारियो की प्राप्ति हेतु आत्मीय सम्बन्ध स्थापित सलामत मसीह पादरी की राष्ट्रविरोधी गतिविधिया आर्यसमाज ने राज्य सरकार को पत्र लिखा ।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक : रासासिह संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या : 21010

सम्पादकीय–

डी. ए. वी. विद्यालय अजमेर की शताब्दी : एक ऐतिहासिक अवसर

राष्ट्रीयता के प्रथम पुरोधा, स्वराज्य, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वसंस्कृति के प्रथम उन्नायक तथा वेदोद्धारक महर्षिदयानन्द सरस्वती अपने गुरु विरजानन्द से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् 16-17 वर्षों तक निरन्तर देश, धर्म एवं समाज के उत्थान हेतु प्रचार के पुनीत कार्य मे सलग्न रहे। परन्तु अपनी दूरदर्शिता और योगविद्या के आधार पर उन्हें पूर्वाभास हो गया था कि अब उनकी जीवन सध्या अधिक दूर नही है। अत 1883 मे अपने निर्वाण के पश्चात् भी अपने द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य को निरन्तर बनाये रखने, अपने द्वारा रचित ग्रन्थो का मुद्रण एव प्रकाशन अबाधगति से चलता रखने, देशदेशान्तर एव द्वीप द्वीपान्तर मे वैदिक धर्म प्रचार, अनाथ रक्षण अबला उद्धार आदि के लोकोपकारी कार्यों को अनवरत रूप से चालू रखने के प्रयोजन की सिद्धि के लिए अपनी एक स्थानापन्न सभा, परोपकारिणी सभा की स्थापना की। इससे पूर्व स्वामीजी 1875 ई में बम्बई नगरी मे आर्य समाज की स्थापना कर चुके थे। इसके बाद सात-आठ वर्षों मे ही देश के प्रमुख नगरो विशेषत उत्तरी भारत मे आर्य समाजो की स्थापना हो चुकी थी। **अजमेर मे भी आर्य समाज की 13 फरवरी, 1883 ई को स्थापना हो गई थी।**

ऋषि की मृत्यु के पश्चात् 28 एव 29 दिसम्बर, 1883 ई को मेयो कालेज स्थित मेवाड दरबार की कोठी मे सम्पन्न महर्षिदयानन्द की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन मे लाला मूलराज की अध्यक्षता मे द्वितीय दिन हुए विचार-विमर्श के दौरान राव बहादुर पण्डित महादेव गोविन्द रानाडे ने यह प्रस्ताव किया और कविराज श्यामलदासजी ने सम्मति प्रकट की कि 'दयानन्दाश्रम" बनाया जाय और उसमे इतने स्थान हो अर्थात् पुस्तकालय **"अग्रेजी वैदिक पाठशाला"**, विक्रयार्थ पुस्तको का भण्डार, अनाथाश्रम, अद्भुत वस्तु सग्रहालय, यत्रालय, व्याख्यानगृह। इनके लिये द्रव्य एकत्रित करने का उद्योग प्रारम्भ करने का निश्चय हुआ।

अत **आर्य समाज, अजमेर** ने महर्षिदयानन्द की पुण्य स्मृति मे उनकी निर्वाण स्थली अजमेर मे महर्षि की उत्तराधिकारिणी, परोपकारिणी सभा मे हुए निश्चय को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करने के लिए विधिवत् **दयानन्द आश्रम ऐंग्लो वैदिक पाठशाला** सन् 1888 मे स्थापित की। यद्यपि इससे पूर्व भी अनौपचारिक रूप से 1885 ई मे एक पाठशाला समाज की पाठशाला के रूप म प्रारम्भ कर दी गई थी। जिसका 1886 ई तक भी उल्लेख मिलता है।

परमपिता परमात्मा की महानअनुकम्पा से आगामी 10 फरवरी, 1988 ई का दिन **आर्य समाज, अजमेर** के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायगा। यही वह गौरवपूर्ण दिवस है जब इस समाज द्वारा सौ वर्ष पूर्व 10 फरवरी, 1888 ई को 'आटाफण्ड' शुरू कर 10-11 विद्यार्थियो को लेकर इस दयानन्द आश्रम पाठशाला का शुभारम्भ हुआ जो कालान्तर म दयानन्द आश्रम ऐंग्लो वैदिक पाठशाला (D A A V S) नाम से सचालित हुई और आज जिसे डी ए वी हायर सैकण्डरी स्कूल कहा जाता है। यह स्कूल 1892 म मिडिल स्कूल तथा 1895 मे हाई स्कूल बन गई। छात्र सख्या 1888 ई म 10-11 से बढकर 1888 के अन्त म 111 हो गई, 1893 मे 178 1894 म 325 और 1895 म 450 हो गई।

इस विद्यालय ने 1940 41 ई मे अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई तथा उसी अवसर पर कर्मवीर प जियालालजी ने दयानन्द कॉलेज की स्थापना की घोषणा की जो आज दत्तात्रेय जी आर्य तथा श्री कृष्ण राव जी वाल्ले के सद्प्रयत्नो और सतत् पुरुषार्थ से राज्य के सबसे बडे गैर सरकारी महाविद्यालयो म से एक है। एक लघु विश्वविद्यालय है।

यह विद्यालय 1958 ई मे बहुद्देशीय हायर सैकण्डरी स्कूल बना, वर्तमान म यह विद्यालय कला, विज्ञान एव वाणिज्य विषयो मे हायर सैकण्डरी स्तर तक मान्यता प्राप्त है। 29 विभाग, 1715 छात्र एव 60 अध्यापक एव कर्मचारी है। वर्तमान मे यह विद्यालय आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर के अन्तर्गत सचालित है। प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री बी पी बेरी पूर्व मुख्य न्यायाधीश राजस्थान, कार्यवाहक प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य एव मन्त्री श्री कृष्णराव वाल्ले हैं।

यह विद्यालय इस समय अजमेर नगर एव जिले के श्रेष्ठ अनुशासित एवं अच्छे विद्यालयो मे से एक है। यह विद्यालय एक छोटे से बीज रूप मे प्रारम्भ हुआ था जो आज विशालकाय वट वृक्ष बनकर तेरह शिक्षण सस्थाओ रूपी परिवार से सयुक्त हो गया है। इस विद्यालय का गौरवपूर्ण चिरस्मरणीय इतिहास एव परम्परायें रही हैं। यहा से पढकर निकले हुए छात्र प्रसिद्ध भजनोपदेशक, समाज सेवक, क्रान्तिकारी, स्वाधीनता सेनानी, विधायक, प्रशासक, डाक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर आचार्य तथा शिक्षा शास्त्री, उद्योगपति, व्यवसायी एव व्यापारी आदि के रूप मे उत्तम नागरिक बनकर देश की सेवा कर रहे हैं। इस विद्यालय ने अनेक उतार-चढाव देखें हैं परन्तु फिर भी अपने लक्ष्य से कभी विचलित नही हुआ है। गाधीजी के आह्वान पर यहा के छात्रो द्वारा असहयोग आन्दोलन मे भाग लेने पर हडताल करने पर इसका अनुदान अग्रेजी सरकार ने बन्द कर दिया था। बी बी एण्ड सी आई रेल्वे ने भी इसे कई वर्षों तक अनुदान दिया था। दीनदयालजी, महात्मा कन्हैयालालजी, प कन्हैयालालजी, रघुनन्दनजी, हरनारायणजी, मगलचरणसिहजी, विशम्भर दयालजी भार्गव, प्रकाशनारायणजी नरुल्ला, डा सूर्यदेवजी शर्मा, एम ए. एल टी, डी लिट् प मन्जुनाथ शास्त्री प्रभृति प्रधानाध्यापको की समृद्ध परम्परा रही है। इसी प्रकार यहा का शिक्षक वर्ग मिश्नरी भावना से सेवा कार्य करता रहा है जिसके फलस्वरूप आज भी विद्यालय का शिक्षा जगत् मे महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

इस विद्यालय को स्थापना काल से ही अनेक महानविभूतियो का वरदहस्त और आशीर्वाद रहा है जिनमे प्रारम्भिक वर्षों मे दीवान बहादुर हरविलास शारदा हीरालालजी, पदमचन्दजी, मथुराप्रसादजी, मुन्नालालजी शाहपुरा, प्रतापगढ, खैंगारगढ नरेश एव रावगोपालसिहजी खरवा, बनवारीलाल जी, राव्तमल जी, ईश्वरीप्रसाद जी, नथमलदास जी, दौलतराम जी, प बशीधर जी गोपीनाथ जी माथुर, बैरिस्टर गौरीशकर जी मध्य युग मे राय बहादुर मिट्ठनलालजी भार्गव, कर्मवीर, प जियालालजी, बाबू जवाहरलाल जी, गुलराज गोपाल जी, बाबू परमात्मास्वरूप जी, बाबूलाल जी सक्सेना, डा अम्बालाल जी, शिवप्रसाद जी, दीवान बहादुर, के एल पत्तनाष्कर तथा वर्तमान युग मे प्रमुख श्री दत्तात्रेय जी वाल्ले श्री कृष्णराव वाल्ले, श्री प्रो आर एस कपूर तथा श्री ठाकुर प्रेमसिहजी, श्री देवदत्तजी एडवोकेट, प्रो, जी एल जोशी आदि हैं।

1888 ई मे संस्थापित इस डी ए वी स्कूल को आज स्वतन्त्र भारत का सबसे पुराना डी ए वी स्कूल होने का गौरव प्राप्त है क्योंकि महात्मा हसराज, लालालाजपतराय, प गुरुदत्त तथा लाला साईदास, मूलराजजी आदि द्वारा 1886 ई मे लाहौर मे सस्थापित डी ए वी स्कूल तो आज पाकिस्तान म चला गया। उसकी उत्तराधिकारिणी सस्था डी ए वी कालेज प्रबन्धकारिणी समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली है। जिसके अध्यक्ष प्रो वेद व्यासजी हैं तथा मन्त्री दरबारीलालजी शर्मा हैं। जिनके अन्तर्गत पजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली, जम्मू कश्मीर, बिहार, उडीसा, महाराष्ट्र, आन्ध्र आदि मे सैकडो डी ए वी स्कूल, कालेज तथा पब्लिक स्कूलें सचालित हैं। अजमेर का डी ए वी भी इसी विशाल परिवार से कुछ विशेष अनुबन्धो के अन्तर्गत सम्बद्ध हो गया है।

राजस्थान और विशेषत. अजमेर की मध्यम एव निम्न वर्गीय जनता इस विद्यालय की सेवाओ से कभी उऋण नही हो सकती।

हर्ष का विषय है कि विद्यालय प्रबन्ध समिति ने वर्ष 1988 ई. को शताब्दी वर्ष के रूप मे मनाने का निश्चय किया है। शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे विस्तृत कार्यक्रम की जानकारी आर्य जगत् को दी जायेगी।

ईश्वर इस विद्यालय के सचालकों, रहनुमाओ को शक्ति प्रदान करे ताकि वे निरन्तर इस सेवा कार्य को उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर करते रहे।

—रासासिंह

***

हमारा गणतन्त्र

प्रतिवर्ष 26 जनवरी को भारतीय 'गणतन्त्र दिवस' मनाया जाता है। इस वर्ष भी सरकारी स्तर पर दिल्ली और प्रदेशीय राजधानियो मे यह 'दिवस' समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रमुख सरकारी एव गैर सरकारी भवनो पर रोशनी की गई। मिठाइया बांटी गई तथा परस्पर 'गणतन्त्र दिवस' की बधाईयो का आदान-प्रदान किया गया।

'गणतन्त्र दिवस' हमारा राष्ट्रीय पर्व है। इसे समारोह पूर्वक मनाया भी जाना चाहिए। परन्तु देश की वर्तमान परिस्थितियो ने इस पर्व के औचित्य के प्रति ही एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगा दिया है। और जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

देश के स्वतन्त्र होने पर जन साधारण ने देश के कर्णधारो से बड़ी-बड़ी आशायें लगाई थी। गाधी की कांग्रेस से 'रामराज्य' आने का विश्वास उनके मनो मे पैदा हुआ था। परन्तु भारत के 'गण' की वे आशायें आज इतने वर्षों बाद भी पूर्ण नहीं हो पाई। और आज तो वे आशायें एक 'आकाश-कुसुम' हो गई हैं।

स्वाधीनता के इतने समय बाद भी यहा लोग भूख से मर रहे हैं। लाखो लोग बेघर हैं। और गदी नालियो के कीडो की भाति रेंग-रेंगकर जीने पर विवश हैं।

आर्थिक रूप से देश पूर्णतया दिवालिया हो चुका है। नित हम बाहरी देशों से ऋण पर ऋण लिए जा रहे हैं। विश्व बैंक के सामने भी प्रतिवर्ष गिडगिडाने की रिहर्सल करनी पडती है। देश का सम्पूर्ण शासनतन्त्र भ्रष्टाचार मे आकण्ठ डूबा है। प्रधानमन्त्री तक पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं।

देश का कोई भी वर्ग जाति सतुष्ट नही है। पजाब मे सिख असतोष अपनी चरम सीमा पर है। अकेले जनवरी मे 200 के लगभग लोगो की उग्रवादियो द्वारा हत्या की जा चुकी है। प बगाल मे गोरखालैण्ड की माग की जा रही है। और इसे लेकर गोरखा लोग हिंसा के रास्ते पर हैं। त्रिपुरा टी एन वी. की हिंसा की आग मे झुलस रहा है। राजस्थान मे राजा मानसिंह हत्याकांड को लेकर लोग आदोलन कर रहे हैं। देश का किसान वग अपने आर्थिक शोषण से पीडित हो 'टिकैत' के नेतृत्व मे शासन से सघर्ष करन पर आमादा है।

देश का अल्पसख्यक वर्ग पूर्ण सुरक्षा एव अधिकारो की प्राप्ति के बावजूद भी सन्तुष्ट नही है। शाही इमाम और शहाबुद्दीन 'शरीयत रक्षा और बाबरी मस्जिद के मुद्दो को लेकर मुस्लमान वग को विद्रोह के लिए उकसा रहे हैं। मिजोरम, अरुणाचल राजस्थान आदि सीमावर्ती राज्यो मे ईसाई मिश्नरी अपनी राष्टविरोधी गतिविधियो मे सलग्न हैं। परन्तु सरकार सब कुछ देखते हुए भी अनदेखा कर रही है।

सैन्य शक्ति मे हम पिछडे हुए हैं। खबर है कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बना लिया है। और हम नाकारा बोफोर्स खरीदने मे लगे हुए है।

हिन्दी आज भी सही अर्थों मे देश की राष्टभाषा नही बन पाई है। सरकार के सभी विभागो मे अग्रेजी का ही बोलबाला है। देश का राष्ट्रपति राष्ट्र के नाम अपना सदेश अग्रेजी मे देता है।

देश बडी गभीर परिस्थितियो से गुजर रहा है। सत्ताधारी लोग किकर्तव्यविमूढ बने हुए हैं। फिर भी हमे आशा का दामन नही छोड़ना चाहिए।

बकौल शायर—

किसको खबर है कश्ती तबाही के हाल की,
तख्ता अगर किनारे कोई बह के आ लगे।

—वीरेन्द्र आर्य

***

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का—

स्वामी दयानन्द विषयक संकीर्ण एवं पूर्वाग्रहग्रस्त दृष्टिकोण

—डा भवानीलाल भारतीय—

इस समय मेरे समक्ष राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ - एक सही चित्र शीर्षक 6 पृष्ठो का मुद्रित प्रचार पत्र है। इसका मुद्रण आनन्द आर्ट प्रिटस पब्लिशिंग हाउस, अजमेर से हुआ है। इसमें सघ पर लगाये जाने वाले कतिपय आक्षेपों का निराकरण सघीय दृष्टिकोण से किया गया है जिनके बारे मे हमें कुछ नही कहना। सघ की आर्य समाज और उसके प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे जो विरक्ति, जिसे हम दुर्भावना भी कहे तो अनुचित नही होगा सर्वविदित है। सघ वाले दयानन्द और आर्य समाज के गौरव और वर्चस्व के प्रति अत्यन्त असहिष्णु हैं इसे भूरिशः प्रमाणित किया जा सकता है। उपर्युक्त चर्चित पत्रक मे विवेकानन्द अरविन्द और तिलक को श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माता के रूप मे उल्लिखित किया गया है जबकि सघ की दृष्टि मे मानो दयानन्द राष्ट्र निर्माता कहलाने के योग्य ही नही हैं। इससे भी अधिक आपत्तिजनक बात आगे कही गई है—यहाँ जात पात छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयो को उखाड फैंकने वाले समाज सुधारको मे राजा राममोहन राय मदनमोहन मालवीय और महात्मा गाधी को तो गिनाया गया है परन्तु यहाँ भी समाज सुधारको के शिरोमणि स्वामी दयानन्द का नाम जानबूझ कर हटाया गया है।

राममोहन राय को समाज सुधारक मानने मे हम कोई विप्रतिपत्ति नही है किन्तु अस्पृश्यता और जन्मगत जाति प्रथा का विरोध करने वालो मे दयानन्द ही शीर्षस्थ हैं। राममोहन राय द्वारा प्रचलित ब्रह्म समाज के प्रारम्भकालीन अधिवेशनो मे केवल आद्यदेशीय ब्राह्मण ही पर्दे के पीछे बैठ कर वेद पाठ करते थे। दयानन्द ने वेदाधिकार के द्वार स्त्रियो और शूद्रो सबके लिए खोले। अस्पृश्यता निवारण के लिए मदन मोहन मालवीय को श्रेय देना सत्य का अपलाप करना है। मालवीय जी कट्टर सनातनी थे। उनके नेतृत्व मे हिन्दू सभा के अधिवेशनो मे दलित वर्ग के वक्ताओ को अपनी बात कहने का भी अधिकार नही दिया गया जिसकी शिकायत स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने लेखो और सस्मरणो मे की है। (द्रष्टव्य श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का 11वाँ जीवनी खण्ड) जहाँ तक अस्पृश्यता का प्रश्न है मालवीय जी तो भयकर किस्म की छूतछात मानते थे। 1924 मे वे जब गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने दिल्ली गये तो अपने साथ पीने के लिए गगाजल और हाथ धोने के लिए सगम की मिट्टी भी साथ ले गये। इस प्रकार की सकीर्ण दृष्टि वाले लोग तो सघ के विचार मे समाज सुधारक हैं और दयानन्द को इस श्रेणी मे रखने मे उन्हे सकोच है। महात्मा गाधी के जाति प्रथा विषयक विचार चाहे कितने ही उदार थे, किन्तु वे वर्ण व्यवस्था को जन्मना ही मानते थे। द्रष्टव्य-महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी ले. उमदेव विद्या वाचस्पति।

अत मेरी समस्त आर्य जगत से पुरजोर अपील है कि वह अपनी पूरी शक्ति से सघ की इस दयानन्द विरोधी नीति का खुलकर विरोध करे। अन्यथा हिन्दुत्व की जर्जर विचारधारा के पोषक ये लोग दयानन्द की क्रान्तिकारी विचारधारा के प्रति अपना प्रत्यक्ष और परोक्ष विरोध भाव प्रकट करने से कभी विरत नही होगे।

शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए

अजमेर 28 जनवरी। शिक्षा का उद्देश्य रोजगार नही अपितु चरित्र निर्माण होना चाहिए।

उक्त शब्द आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने दयानन्द कालेज, अजमेर के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह मे मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए कहे।

दयानन्द कालेज के सस्थापक प्राचार्य श्री दत्तात्रेय ने समारोह के मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए कहा कि डी ए वी सस्थाओ की स्थापना एक विशेष उद्देश्य को लेकर की गई थी और वह उद्देश्य था देश के लिए चरित्रवान नागरिक तैयार करना। आपने कहा कि आज कहा जाता है कि शिक्षा रोजगार-मुखी होनी चाहिए जबकि शिक्षा का उद्देश्य रोजगार न होकर चरित्र निर्माण होना चाहिए। तभी देश की उन्नति सम्भव है।

समारोह की अध्यक्षता श्री प्रियदर्शी ठाकुर क्षत्रीय आयुक्त अजमेर ने की। अन्त मे कालेज प्रबन्ध समिति के मन्त्री श्री कृष्णराव वाकर ने आभार प्रदर्शन किया।

डाक पं. सं. RJ/AJ-169

दो न आँसू की दुहाई

—सावन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'—

दो न आँसू की दुहाई, साधनाओं के सुमन दो।
रात से मत तिलमिलाओ, प्रात की हँसती किरन दो॥
भावनाओ से भरा मन,
साधनाओ से हरा मन,
हारते पग को समय की चेतना के नव चरण दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ के सुमन दो॥
तप-प्रभा से फट रही पौ,
युग-निशा में जल रही लौ,
तुम सृजन के देवता को खिलखिलाता आचरण दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ मे सुमन दो॥
यदि पिघल कर प्राण बहने,
चल पड़ें हों लहर बनने,
हो जगी बेचैनियाँ तो दर्द-दुख को सन्तरण दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ के सुमन दो॥
व्यष्टि मे जो बिन्दु बन्दी,
कर सके जो सिन्धु बन्दी,
उस समष्टि उपासना को, भक्ति के भीगे नयन दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ के सुमन दो॥
व्यक्ति मे विस्तार कितना,
बूँद, पारावार जितना,
प्यास कुम्भज-सी जगाकर, तुम तृषा को तृप्ति कण दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ के सुमन दो॥
प्यास को वरदान कर दे,
तृप्ति को जो दान कर दे,
त्यागमय उस चेतना को भावनाओ के नमन दो।
दो न आँसू की दुहाई, साधनाओ के सुमन दो॥

पत्र बोलते हैं

आर्य समाज के मौलिक स्वरूप को बचाओ

(आदरणीय आचार्य सत्यव्रतजी)

आपके ग्रन्थ रत्न 'दी आर्य समाज' का प्रथम आद्योपान्त ध्यानपूर्वक वाचन मैंने कल समाप्त किया। आर्य समाजों द्वारा सचालित विद्यालयो के सम्बन्ध मे जो वैधानिक जानकारी इस पुस्तक के माध्यम से आपने इस पुस्तक के पाठको को उपलब्ध कराई है यदि मुझको पूर्व ही विदित हो गई होती जब मैं स्थानीय दयानन्द आर्य विद्यालय लश्कर के प्रबन्ध से सम्बद्ध था तो मैं अवश्यमेव उसको बिगड़ने से बचाने हेतु कटिबद्ध हो गया होता। अब मेरा आप से अनुरोध है कि कम से कम सब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ को तो अवश्य इस महत्वपूर्ण विषय से परिचित कर दीजियेगा। स्थानीय संस्थाओं के प्रबन्धकों को तो मैं सचेत करने का यत्न करूंगा।

मूल बात तो यह है कि हम सबको आर्य समाज के अपने मौलिक स्वरूप को पहिचानने हेतु प्रयत्नशील होना अविलम्ब नितान्त आवश्यक है। वर्तमान समय में तो न केवल अनेक आर्य समाज अपितु आर्य प्रतिनिधि सभायें भी अनार्यों के हाथ मे पहुच गई हैं जिनकी करतूतो से ससार के उपकार हेतु महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज बदनाम हो चला है।

इस विषय पर मैं इन दिनो एक लेख लिख रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आगामी कुछ दिनों पश्चात मैं आपकी सेवा मे वो लेख प्रस्तुत करूं।

'आर्य पुनर्गठन' की तीन प्रतियां मेरे पास आ चुकी हैं। इसका उद्देश्य स्तुत्य है।

पुनश्च पुस्तक के उत्तरार्द्ध के वाचन के पश्चात मैं समझा कि इसका उपनाम "Hindu without Hinduism' आपने क्यो रखा है यह सर्वथा सोद्देश्य है।

—बाबूलाल आर्य,
ग्वालियर (म प्र)

(शेष पृष्ठ 1 का)

इन भोले-भाले ग्रामीणो को बरगला कर धर्मान्तरण कराने का कार्य गगानगर और केसरीसिंहपुर के पादरियो और जगसिंह की बीवी ने किया जो दो साल पूर्व ही ईसाई धर्म ग्रहण कर चुकी है तथा फाजिल्का की रहने वाली है। बताया जाता है कि दोनो पादरी तथा जगसिंह की बीवी पिछले दो सालो से इन्हे धर्म परिवर्तन कराने मे जुटे थे और अन्तत वर्ष 1987 के जाते-जाते अपने मकसद मे कामयाब हो गए।

जिले मे चलाये जा रहे धर्मान्तरण की इन साजिशो के पीछे जो चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं, वे वास्तव मे काफी गम्भीर और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति खतरनाक साबित हो सकते हैं।

एकत्रित तथ्यो के अनुसार-धर्मान्तरण का यह कार्य भारत-पाक सीमा से सटे क्षेत्रों और सैन्य छावनियों के आसपास चलाया जा रहा है तथा इसमे केसरीसिंहपुर को इनकी गतिविधियों का केन्द्र बनाए सलामत मसीह नामक 55 वर्षीय पादरी सबसे ज्यादा सक्रिय है और उसकी गतिविधियाँ भी काफी सदिग्ध हैं। इसी के साथ जो चौंकाने वाली बात सामने आई, वह यह है कि इस पूरी साजिश का सचालन पाकिस्तान से ही सटे पजाब के फाजिल्का कस्बे से किया जा रहा है। जहाँ सैन्य छावनी तो है, परन्तु ईसाईयो की सख्या नाम मात्र की होते हुए भी चर्च बनी हुई है।

गगानगर जिले मे भी ईसाईयो की सख्या नगण्य के बावजूद कई स्थानो पर छोटी-छोटी चर्च बन चुकी हैं। जिनका उपयोग धार्मिक प्रार्थना के साथ-साथ धर्मान्तरण और अन्य गतिविधियो के लिए किया जा रहा है। पता चला है कि ईसाई मिशनरियाँ पहले सीमावर्ती क्षेत्रों में ईसाई साहित्य वितरित करने के साथ-साथ दवा और कम्बल व अन्य सामान गरीबों मे [illegible] हैं, और फिर हिन्दू धर्म की मनोवैज्ञानिक तरीके से आलोचना कर भोले भाले लोगो मे उसके प्रति नफरत पैदा कर उन्हे ईसा और बाईबल का पाठ पढा ईसाई धर्म अपनाने के लिए बरगलाते हैं। इसके लिए वे उन्हे आर्थिक प्रलोभन तथा भविष्य मे ऐश्वर्यपूर्ण जिन्दगी के सपने भी दिखाते हैं। धर्मान्तरित गुलजारसिंह और जगसिंह जो अब गुलजार मसीह और जग मसीह बन चुके हैं, हिन्दू अथवा सिख धर्म का नाम सुनना पसन्द नही करते और न ही उन्हे हिन्दुस्तान के बारे मे कोई बात सुनना गवारा होता है। वे कहते हैं कि ऐसा धर्म किस काम का जो उन्हे अपने धार्मिक स्थल गुरुद्वारो मे प्रवेश करने से भी वचित करे। 35 बी बी, जहाँ पड़े सूखे ने गाँव वालो की आर्थिक रूप से कमर तोड दी है अधिकाश आबादी हरिजन सिखो की है तथा उन्हे सम्भालने के लिए गाँव के कांग्रेसी सरपच नरेन्द्र सिंह कग जो पास मे ही 39 बी बी मे रहते हैं, कभी वहाँ नही आए। जिसके कारण ईसाई मिशनरिया अपने षडयन्त्रो मे सफल हो 10 लोगो का धर्मान्तरण करने मे कामयाब हो गईं।

ईसाई मिशनरियो द्वारा सीमावर्ती चको 8 एफ, 9 एफ, 28 एव 42 एफ, मोहल्ला, 33 बी बी, 35 बी बी, अरायन, चकसाला आदि मे धर्मान्तरण के कुत्सित एव राष्ट्रघाती प्रयास चलाये जा रहे हैं भारी सख्या मे लोगो को ईसाई बनाया जा चुका है। भारतीय जनता पार्टी के जिला महामन्त्री श्याम चुघ ने केन्द्रीय सरकार को पत्र लिखकर इस राष्ट्र विरोधी षडयन्त्र को विफल करने तथा धर्मान्तरण के कार्य मे लगे लोगो के विरुद्ध कार्रवाई करने की माग की है।

इससे पूर्व पिछले साल इन्ही दिनो मे गगानगर के एक पत्रकार राकेश शर्मा एव जिला युवक कांग्रेस आई के सास्कृतिक प्रकोष्ठ के सयोजक निर्मल जैन ने ईसाई मिशनरियो की साजिशो का पर्दाफाश करते हुए सरकार से उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियो पर प्रतिबन्ध लगाने की माग की थी, परन्तु अभी तक इस सम्बन्ध मे कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अलबत्ता पत्रकार राकेश शर्मा को एक ईसाई स्कूल के सचालको द्वारा गम्भीर परिणाम की चेतावनी देने के साथ उनके विरुद्ध अदालत मे भा द स की धारा 107 के अन्तर्गत [illegible] हुआ और राकेश शर्मा का [illegible] इसी धारा के अन्तर्गत स्कूल [illegible] गया।

अब के राष्ट्रभक्त लोग और सस्थाए इस धर्मान्तरण को लेकर काफी चिन्तित हैं। आर्य समाज ने राज्य सरकार को एक पत्र लिखकर ईसाई मिशनरियो की गतिविधियो पर अकुश लगाने की माँग राष्ट्र हित में की है।

आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि गुप्तचर विभाग द्वारा जिले मे धर्मान्तरण और ईसाई मिशनरियो की गतिविधियों की रिपोर्ट दिए जाने के बाद भी केन्द्र और राज्य गृहमन्त्रालय कोई कार्रवाई करने के स्थान पर चुप्पी साधे राष्ट्र विरोधी गतिविधिया होते देख रहा है। (नवभारत टाइम्स से साभार)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा आर्य प्रिण्टर्स अजमेर मे मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 162

सृष्टि सम्वत् 1972949087

। ओ३म् ।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 सोमवार 15 फरवरी, 1988
अक 3 प स -433338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

फाल्गुन कृ 12 12 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे



डी ए वी विद्यालय शताब्दी समारोह को सबोधित करते हुए परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती एव दाए से प्रधानाचार्य श्री रासासिह, श्री दत्तात्रेय आय, श्री गोविन्दसिह गुर्जर, श्री जगनप्रसाद रावत, श्री किशन मोटवानी एव श्री कृष्णराव बाब्ले।

डी. ए. वी. विद्यालय शताब्दी समारोह का शुभारम्भ

दि 10 फरवरी, 1988 ई को डी ए वी को स्थापित हुए 100 वर्ष पूरे हो गए हैं। इस उपलक्ष मे बुधवार दि 10 फरवरी 88 को शताब्दी शुभारम्भ समारोह का प्रारभ प्रात काल यज्ञ एव ध्वजारोहण स प्रारभ हुआ। यज्ञ डा बाबूरामजी शास्त्री, प्रो देव शर्मा वेदालकार प्रो कृष्णपाल सिह, प्रो बुद्धिप्रकाश आय एव आचाय गोविन्दसिह के सानिध्य मे सम्पन्न हुआ। बैण्डो की धुन के बीच ध्वजारोहण उत्तर प्रदेश के भू पू गृहमन्त्री एव डी ए वी के हो भू पू छात्र श्री जगनप्रसाद रावत ने किया।

इस अवसर पर आय जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी एव परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती, आय समाज आगरा के प्रधान एव स्वाधीनता सैनानी श्री भोजदत्तजी शर्मा भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

सायकाल 4 बजे राजस्थान के कृषि, खाद्य एव आबकारी मन्त्री श्री गोविन्दसिह गुर्जर की अध्यक्षता व श्री जगनप्रसाद रावत के मुख्य आतिथ्य म समारोह सम्पन्न हुआ।

अपन अध्यक्षीय भाषण मे श्री गोविन्दसिह गुजर ने कहा कि देश के बहुमुखी विकास के लिए शिक्षण सस्थाओ का महत्ती भूमिका है। यह सस्थाये ही देश के लिए अनुशासित नागरिक तैयार करती है। अत इनका दायित्व आज की परिस्थितियो मे अधिक बढ गया है।

श्री गुजर ने विद्यालय के बालको को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह अपने जीवन म स्वामी दयानन्द के पथ के अनुगामी बने व समाज मे व्याप्त अन्ध विश्वास जैसी कुरीतियो को दूर कर। श्री गुजर ने विश्वास दिलाया कि वह डी ए वी शिक्षण सस्था के भू पू विद्यार्थी होने के नाते इस सस्था की जो कुछ भी सुविधा व सहायता तथा साधन जुटाने मे सहायता कर सकेंगे, अवश्य करेंगे।

उत्तर प्रदेश के भू पू गृहमन्त्री श्री जगनप्रसाद रावत ने नन्हे मुन्नों को सम्बोधित करते हुए नन्हे अपने माता-पिता गुरु तथा अग्रजा के कहना मानने और उन्हे सम्मान देने हेतु कहा। श्री रावत ने अपने बाल-पन के सस्मरण सुनाने म बच्चो म इतने भाव विभोर हो गए कि स्वय भी इतनी वृद्धावस्था मे बच्चो जैसे हो गए। इन्होंने विद्यार्थियो से अनुशासनहीनता जैसी बुरी आदत से दूर रहने की सलाह देते हुए कहा कि बालको मे एकता व सगठन की भावना से ही देश म राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न होती हैं जिससे देश मजबूत होता है।

समारोह म विशिष्ट अतिथि पद से बोलते हुए राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी ने राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र मे दयानन्द शिक्षण सस्थाओ के योगदान की विशेष प्रशसा की। उन्होने कहा कि जिन उद्देश्यो को लेकर इस विद्यालय की स्थापना हुई थी, उन उद्देश्यो को प्राप्त करने मे तथा सामाजिक चेतना जाग्रत करने मे यह शिक्षण सस्था शिक्षा जगत मे अनूठी मिसाल रखती है। श्री मोटवानी ने डी ए वी सस्था के प्रगति के सोपानो का प्रदर्शन करने हेतु एक वर्कशाप आयोजित करने का भी सुझाव दिया।

समारोह का सचालन करते हुए विद्यालय के प्रधानाचाय श्री रासासिह ने शिक्षण सस्था का गौरवशाली इतिहास प्रस्तुत करते हुए सस्था के शताब्दी वर्ष समारोह के उद्देश्यो पर प्रकाश डाला। उन्होने कहा कि शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर भू पू छात्रो का एक सम्मेलन बुलाया जायगा शिक्षण सस्था के विस्तार के प्रयास किये जायगे तथा विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय के रूप मे विकसित करने के प्रयत्न किये जायगे। इसी प्रकार शिक्षा जगत मे डी ए वी सस्था के योगदान पर सगोष्ठी का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जायगा।

इस अवसर पर लगभग दो हजार दर्शको के सम्मुख विद्यालय के विद्यार्थियो ने योगासन व देश-भक्ति पूर्ण वीर रस की कविताए व सगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक : रासासिह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   ☎ कार्या : 21010

दयानन्द एक शक्ति पुन्ज

आधुनिक मार्ग दर्शको मे स्वामी दयानन्द का प्रथम स्थान है। वे भय और मोह दोनो से परे थे। उनका व्यक्तिगत जीवन एक खुली पुस्तक के समान था, चाकू, छुरे, विष और यहा तक की विषधर सर्प द्वारा उनकी हत्या के प्रयत्नो का उन्होंने सामना किया। अपशब्दो और लाछनो को अपने निष्कलकित चरित्र और हिंसा का अपने दुर्दमनीय साहस से उन्होंने प्रतिकार किया। वे द्वेष से मुक्त थे किन्तु असत्य के विरुद्ध उनका रोष ज्वालामुखी से निकले भडकते लावे के समानदाहक था और उसमे भारत की अन्तरात्मा को कुठित करने वाले सब तत्वो को भस्मसात करने की क्षमता निहित थी।

स्वामीजी की अदभुत प्रतिमा का एकमात्र लक्ष्य भारतीय सस्कृति मे पुन आर्य युग की शक्ति और पौरुष उत्पन्न करना था। उनकी विद्वता मानवीय सामर्थ्य से भी ऊपर थी। वे अद्भुत भाषण शक्ति के धनी थे और उसमे ओज और गर्जना थी। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक निरन्तर घूम-घूम कर उन्होंने देश भर मे एक निर्माणिक शक्ति पुन्ज की किरणें प्रसारित की। शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति के एक माने हुए मानव, विद्युत उत्पादक केन्द्र थे। वे पहले आधुनिक व्यक्ति थे जिन्होंने अपने जीवन तथा उद्देश्यो से हमे अपनी सस्कृति के शाश्वत मूल्यो के अनुसार जीवन निर्माण करने की प्रेरणा दी। हमारी राष्ट्रीयता का आधार अधिकाश मे उनके द्वारा दिये गये सास्कृतिक पुन सगठन के कार्यक्रम पर स्थित है। जैसे जात पात तथा छुआछूत का उन्मूलन, नारी की समानता। उच्च से उच्च वैज्ञानिक शिक्षा को भारतीय शिक्षा से जोडने का प्रयत्न राष्ट्र भाषा का व्यवहार तथा राष्ट्रीय प्रेरणा के रूप मे सस्कृत का अध्ययन, पश्चिम के अन्धानुकरण का विरोध, वैदिक काल मे प्रचलित स्वतन्त्रता के आधार पर जीवन का पुन निर्माण और विदेशी राज्य तथा सस्कृति का दृढ प्रतिरोध।

जनवरी 1976 की "भवन पत्रिका" मे प्रकाशित मूल अग्रेजी का "भावानुवाद"

सम्पादकीय

सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द को शत-शत नमन

कविवर 'शकर' ने एक स्थान पर क्या ही सुन्दर कहा है—'आनन्द सुधासार दया कर पिला गया, भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया'। एक अन्य कवि के शब्दों मे धन्य है तुझको ए ऋषि, तूने हमे जगा दिया, सो सो के लूट रहे थे हम, तूने हमे बचा दिया। 'अन्धो को आखें मिल गई, मुर्दो मे जान आ गई जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया'। इन पक्तियो के यहा उद्धृत करने का मतव्य स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्वतोमुखी समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे। यह उस अकेले साहसी व्यक्ति का ही कमाल था कि जीवन मे सत्रह बार विषपान करने विरोधियो द्वारा कई बार अपमानित करने के प्रयासो के बावजूद सत्य के मार्ग से नही डिगा और बडी से बडी चुनौतियो का भी हसते-हसते निर्भीकता के साथ मुकाबला किया।

सोये हुए भारतीयो मे स्वाभिमान पैदा करने, भारतीयो को आत्म गौरव का याद दिलाने प्रताडित एव पददलित हिन्दुओ मे आत्म विश्वास फूकने अग्रेजो के विरुद्ध जन जागरण कर स्वतन्त्रता का मत्र फूकने, सामाजिक कुरीतियो पाखण्डो, अन्धविश्वासो तथा कुप्रथा पर कठोर प्रहार करने तथा सृजनात्मक जीवन एव समाज का निर्माण करने हेतु मार्ग दर्शन करने का जो कार्य महर्षि दयानन्द ने किया है वह न भूतो न भविष्यति के आधार पर अब तक कोई अकेला व्यक्ति नही कर सका है। उपदेश दे देना, धर्म का प्रचार कर देना तो एक सामान्य बात है परन्तु उन उपदेशो से पूर्व पहले अपना व्यक्तिगत जीवन शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एव आत्मिक दृष्टि से तदानुकूल बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत करना, धर्म प्रचार की व्यस्तता होते हुए भी सतत् साहित्य साधना करते हुए वेदो का भाष्य करना तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमर ग्रन्थो का निर्माण करना अपने अकाट्य तर्कों एव प्रबल पाडित्य से पौराणिको को शास्त्रार्थों मे निरुत्तर कर देना, सम्पूर्ण समाज मे वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर सोचने को विवश कर देना उस महान ऋषि का ही प्रताप था। अपने बाद भी क्रान्ति की अजस्र धारा निरन्तर प्रवहामान करने हेतु आर्यसमाज जैसे क्रान्तिकारी सगठन का निर्माण किया। अनेक महापुरुषो ने ऋषि के इस क्रान्तिकारी स्वरूप को मुक्त कण्ठ से सराहा है।

महर्षि की क्रान्तिकारिता का बखान

दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई न हुआ। भारत म स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे भी दयानन्द ने बडी उदारता व साहस से काम लिया। —फ्रेंच लेखक रोम्याँ रोला

ऋषि का आदेश—'आर्यावर्त, उठ जाग। समय आ गया है, नये युग मे प्रवेश कर। आगे बढ।' —पाल रिचर्ड

उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है और वेद चुनी हुई पुस्तक है। —रेमजे मेकडानल्ड

वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण मे लाने वाला योद्धा और मनुष्य व सस्थाओ का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग म उपस्थित की जान वाली बाधाओं का वीर विजेता था।

—योगी अरविन्द घोष

'स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरुष तो थे ही, साथ उनके हृदय मे सामाजिक अन्यायो को उखाड फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओ का हम सबके लिए भारी महत्व है। उन्होंने हमे ये महान् सन्देश दिया कि हम सत्य की कसौटी पर कस कर ही किसी बात को स्वीकार करें।

—सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन

महर्षि दयानन्द महान् राष्ट्रनायक और क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होने व्यावहारिक रूप से जीवन के प्रत्येक पहलू मे अपनी छाप छोडी है। स्वामीजी को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाना चाहिए। उन्होने देश मे धार्मिक, सास्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र मे जो कार्य किया वह अभूतपूर्व है। उन्होने जो काम पकडा उसे पूरी तरह निभाया। उन्होने हिन्दू धर्म का कल्याण किया। वह बडे दृढ व्यक्ति थे। उन जैसा क्रान्तिकारी नेता हमेशा बिरले ही लोगो का काम होता है। —लाल बहादुर शास्त्री

'स्वामी दयानन्द ने पददलित भारत का पुनरुत्थान किया, राष्ट्र को नवजीवन का सन्देश दिया। उन्होने सामाजिक क्रांति की, अन्धश्रद्धा को दूर करने का प्रयत्न किया और राष्ट्र का निर्माण किया।'

—मोरारजी देसाई

मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता-पूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक सस्था मे बद्ध होकर नियमानुवर्तिता का पाठ दिया।'

—पजाब केसरी ला लाजपतराय

'मैंने राष्ट्र, जाति तथा समाज की जो सेवा की है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को प्राप्त है। मैंने जो कुछ प्राप्त किया है उसमे सबसे बडा हाथ उस सर्वहितैषी वेदज्ञ और तेजस्वी युगद्रष्टा का है। मुझे उस स्वतन्त्र विचारक का शिष्य होने मे अभिमान है।' —श्यामजी कृष्ण वर्मा

महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने तो हमे स्वामी श्रद्धानन्द पडित लेखराम शहीदे आजम भगतसिह, शेरे पजाब लाला लाजपतराय, महात्मा हसराज क्रान्ति शिरोमणि श्री प रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सत्यानन्द, गुरुदत्त, महात्मा नारायण स्वामी जैसे अनेक तपपूत, त्यागी, तपस्वी कर्मठ नेता और क्रान्तिकारी दिये परन्तु आज उसी ऋषि दयानन्द और उनके आर्यसमाज की धधकती हुई आग क्यों धूमयुक्त हो गई है यह हम सब के लिए घोर विचारणीय है। आज आर्यसमाज मे भी असली सिक्को के स्थान पर 'नकली सिक्को' का चलने से प्रचलन हो रहा है फलस्वरूप हमारी प्रतिष्ठा कम हो रही है। नकली सिक्को के प्रचलन को बन्द करना होगा। कागजी शेरो से सावधान रहना होगा।

अत ऋषिबोधदिवस मनाने वक्त हमे अपने स्वय के तथा आर्यसमाज के उस क्रान्तिकारी स्वरूप को उजागर करने का सकल्प लेना होगा। हमे पहले सच्चा, तेजस्वी, आर्य बनना होगा। हमे दरबारी और 'सरकारी' तथा पदलोलुपी बनने के स्थान पर क्रान्तिवीर, स्वाभिमानी और निर्भीक आर्य बनना होगा।

—[illegible]

एक विचारोत्तेजक समस्या : राजनीति का भारतीयकरण

—डॉ भवानीलाल भारतीय—

उपर्युक्त शीर्षक युक्त एक विचारोत्तेजक लेख डा हर्षनारायण का लिखा आर्य-जगत के 13 दिसम्बर के अक मे प्रकाशित हुआ है। लेख के पूर्वार्द्ध मे भारतीय अल्पमत और बहुमत की समस्या का लेखक ने तर्कपूर्ण विवेचन किया है, जिस से असहमत होने की कोई बात नहीं है। उत्तरार्द्ध मे मेरे एक लेख मे उठाये कतिपय बिन्दुओ पर डा नारायण ने टिप्पणी की है जिसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। जब मैंने आर्यसमाज के प्रत्येक सभासद को अपने मनपसन्द राजनैतिक दल मे जाने की छूट की बात कही तो मेरा यह कदापि अभिप्राय नही था कि वह किसी ऐसे दल मे भी जा सकता है, जहा जाकर उसे वैदिक सिद्धान्तो की अवहेलना या हनन करने की छूट मिले। यदि कोई आर्यसमाजी काग्रेसी बन कर अजमेर के ख्वाजा साहब की दरगाह पर चादर चढाये या महाराष्ट्र के गणपति उत्सव पर गणेश की प्रस्तर या मिट्टी की प्रतिमा पर फूल चढाये, तो मेरी दृष्टि मे वह दयानन्द का अनुयायी कहलाने का अधिकारी नही है। उसी प्रकार कोई आर्यसमाजी मार्क्सवादी कम्युनिष्ट बनकर ईश्वर और धर्म का उपहास करे तो वह आर्यसमाजी ही कहा रहेगा? अत निश्चय ही उसे ऐसे दल को चुनना होगा जिसका आर्यसमाज की धार्मिक मान्यताओ से विरोध न हो। अब भारत मे ऐसे दल कौन से हैं, यह मेरे विचार की परिधि मे नही आता, क्योकि मै स्वय एक गैर राजनैतिक व्यक्ति हू।

हिन्दू सभा और भारतीय जनता पार्टी की निश्चेष्टता और अप्रासगिकता पर टिप्पणी करना भी मेरे लेखन के दायरे मे नही आता। हा, यह सच है कि स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय जैसे तेजस्वी आर्य-पुरुष काग्रेस द्वारा अपनाई गई हिन्दू विरोधी और मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियो से खिन्न होकर ही हिन्दू सभा की ओर उन्मुख हुए थे। किन्तु यहा भी उन्हे निराशा ही हाथ लगी। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि के कार्यक्रम को हिन्दू महासभा द्वारा मान्यता प्रदान करवाई तो पुरी के तत्कालीन शकराचार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ ने मद्रास मे भाषण देते हुए कहा कि शुद्धि को हिन्दू सभा मे मान्यता दिलवाकर आर्यसमाज अपनी शक्ति का ही प्रसार कर रहा है। मालवीय जी जैसे उदार सनातनी नेता भी शूद्रों को वेदाधिकार



देने, उन्हे यज्ञोपवीत देने अथवा मदिर प्रवेश जैसे मसलो पर कट्टर रूढिवादी दृष्टिकोण अपनाये हुए थे। अत स्वामी श्रद्धानन्द का हिन्दू महासभा से शीघ्र ही मोह भग हो गया।

काग्रेस के प्रति विक्षनस्वरूप गोयल का आक्रोश यदि है, तो उसे हम आर्यसमाज के दृष्टिकोण से समझें न कि राष्ट्रीय स्वय सेवक या विश्व हिन्दू परिषद् के दृष्टिकोण से। मेरी तो यह मान्यता है कि इन सस्थाओ का घटाटोप ही भयकर है, वे वास्तविक अर्थ मे हिन्दू हितो की कितनी रक्षा कर सकती है, या कर सकेगी, यह सर्वथा शकास्पद है। स्वामी दयानन्द का अनुयायी होने के नाते गगाजल के घडो का जुलूस निकलवाने और राम जन्म भूमि के लिये राम और सीता के रथो को देश भ्रमण कराने मे मेरा कतई विश्वास नही हैं। मेरे जैसे लाखो आर्यसमाजियो के लिए राम और कृष्ण की जन्म भूमि ऐतिहासिक स्मारक से अधिक महत्व नही रखते। वहा राममदिर बनाये जाये और राम जानकी की मूर्तियो का षोडशोपचार पूजन आरम्भ हो, कम से कम कोई सच्चा आर्यसमाजी तो यह हरगिज नही चाहेगा। अब प्रश्न है बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि पर किस वर्ग का स्वत्व रहे? निवेदन है कि शताब्दियो से हिन्दुओ की निर्बलता के कारण उनके मठो, मन्दिरो तीर्थों और पुण्य स्थानो का विध्वस हो रहा है। उसके लिये रोना धोना हमने बहुत कर लिया। हमे इस समस्या का कोई तर्कसगत समाधान अवश्य निकालना चाहिए। मुस्लिम साम्प्रदायिकता और सैयद शहाबुद्दीन के तास्सुबी रवैये के आगे आत्मसमर्पण की तो बात ही नही उठती। काग्रेसी सरकार मे जो हिन्दुओ का बहुमत है, उसका विवेक क्यो नहीं जाग्रत होता और उन नेताओ को सत्ता दिलाने वाला हिन्दुओ का विशाल मतदाता वर्ग अपने इन प्रतिनिधियो

को इस बात के लिये विवश क्यो नही करता कि वे ऐसे मर्म को छूने वाले विस्फोटक प्रश्नो का कोई तर्क सगत समाधान ढूढें। राष्ट्रघात करने वाली सस्था मे यदि कोई आर्य सदस्य प्रविष्ट होता है तो उसे सरक्षण देने का भी कोई प्रश्न नहीं है।

देश मे यदि राजनीति का महाशून्य उत्पन्न हो गया है तो उसकी जिम्मेदारी इस देश के विशाल हिन्दू बहुमत पर ही है, हा, आर्यसमाज के चिन्तन की प्रखरता निर्विवाद है, किन्तु उस समाज के लोगो की राजनैतिक आस्थायें भी शतधा विभक्त हैं। अत वे इस महाशून्य को कैसे भरे? डा नारायण को इस भ्रम को मन से निकाल देना चाहिए कि मैंने आर्यसमाज को सकुचित अर्थ मे धार्मिक सस्था कहा है। मेरा तो समग्र जीवन ही ऋषि दयानन्द के विचारो के अध्ययन, मनन, चिन्तन, तथा आर्यसमाज के इतिहास के अनुशीलन मे लगा है। दयानन्द के प्रखर राष्ट्रवाद, उनकी राजनैतिक सूझबूझ तथा दूरदर्शिता को मैंने अपने ग्रन्थो और व्याख्यानो मे भूरिश उद्धृत और व्याख्यात किया है। आर्यसमाज यदि अपने राजनैतिक दायित्व से मुह मोड लेता तो वह श्रद्धानन्द, लाजपतराय, भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल तथा भाई परमानन्द जैसे देश के लिये सर्वस्व बलिदान करने वालो की जमात को ही पैदा नही कर सकता था। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास और उसमे वर्णित राजधर्म प्रकरण से विमुख होने का भी कोई प्रश्न नही है। मैंने जो बात कही वह अतीत के कुछ तथ्य और वस्तुस्थिति की यथार्थता के आधार पर कही थी। यदि भारत के आर्यसमाजी इस देश के हित के लिय अपना कोई राजनैतिक मच बनाये, तो उन्हे रोकता कौन है? विगत काल मे ऐसे कई प्रयोग हुए, किन्तु सभी असफल हो गये। जनसघ के पहले प बुद्धदेव विद्यालकार की अध्यक्षता मे भारतीय लोक सघ बना। उसके विधान की प्रति और उसके सस्थापक सदस्यो के नाम मेरे पास है। यह विशुद्ध आर्यसमाज का प्रयास था। उसके पश्चात यदि मैं भूलता नही हू, तो इस सदी के छठे दशक मे भारतीय लोक समिति बनी। इसमे भी प रामचन्द्र देहलवी और प रामगोपाल शास्त्री (वैद्य) जैसे अनेक सक्रिय आर्यसमाजी थे। राजार्यसभा बनाने के तो न जाने कितने प्रस्ताव पास हुए,

समितिया बनी और उनका क्या परिणाम रहा, यह किसी से अविदित नही हैं। मेरे विचार से आर्यसमाज के वे लोग जो राजनीति मे रुचि रखते हैं, उनके अपने स्वार्थ भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलो मे रहने से ही पूरे होते है। अत वे स्वय नही चाहते कि आर्यसमाज के विचारो के अनुयायी कोई अपना पृथक् वर्चस्वपूर्ण राजनैतिक मच बनायें।

हरियाणा मे कुछ वर्ष पहले बनी आर्यसभा और उसके हश्र को भी सभी लोग जानते हैं। उस सस्था के सस्थापक नैष्ठिक सन्यासी लोग, जिन्होने आर्यसमाज के राजनैतिक दर्शन के व्याख्याता और प्रवक्ता होने का गर्व किया था, उनका स्वार्थ का ही परिणाम था कि आर्य सभा तो छिन्न भिन्न हुई ही, उनमे से एक सन्यासी लोकदल मे गये, दूसरे जनता पार्टी मे मे जाकर चन्द्रशेखर से टकराव कर बैठे और तीसरे काग्रेस (आई) के अनुयायी बन कर किसी निगम की अध्यक्षता ले पडे। किन्तु आचार्य दयानन्द की मूल शिक्षाओ से दूर हट जाने का ही परिणाम निकला कि आज इन तीनो सन्यासियो की न तो अपनी मातृसस्था आर्यसमाज मे ही कोई अच्छी प्रतिष्ठा है और तत्-तत् राजनैतिक दलो से तो इन्हे दूध की मक्खी की भाति निकाल बाहर किया है। अब हालत यह है कि इन्ही मे से एक सज्जन कभी तो बन्धुआ मजदूरो के अधिकारो की लडाई लडते है और कभी देवराला की सती के प्रतिरोध मे पदयात्रा आयोजित करते है, जब कि तथ्य यह है कि न तो सती काण्ड ही बार-बार होते और केवल पदयात्राओ से ही सती विषयक अन्ध विश्वास भी नही हटाये जाते।

आर्यसमाज अपना राजनैतिक मच अवश्य स्थापित करे किन्तु वह विशुद्ध भारत की राजनैतिक समस्याओ के समाधान के लिये ही होगा और वह आर्यसमाज के सार्वदेशिक सगठन से भी पृथक होगा। किन्तु हमारे आर्यसमाजी प्रचारको के अज्ञान को क्या कहा जाय? वे जब मारिशस या अफ्रीका के आर्यसमाजो की वेदी पर प्रवचन करने बैठते है तो वहा भी वे पजाब के उग्रवादी या काश्मीर की 370वी धारा की ही बात करते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि मारिशस, अफ्रीका या सिंगापुर के आर्यों को न तो पजाब से मतलब है और न फारुक अब्दुल्ला से। वे तो

(शेष पृष्ठ 4 पर)

(शेष पृष्ठ 3 का)

दयानन्दीय विचारधारा को जानना और समझना चाहते हैं। किन्तु एक बात मैं अवश्य कहूंगा। आर्यसमाज का यह राजनैतिक मंच स्वय के बल बूते पर खड़ा होना चाहिए। क्योंकि यदि हम इसमें राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ या विश्व हिन्दू परिषद् का सहयोग लेंगे तो इन सस्थाओं के सकीर्ण हिन्दुत्ववाद का अजगर आर्यसमाज को ही निगल लेगा। इस सम्बन्ध में जो अनेक कटु अनुभव आर्यसमाज को हुए हैं, उन्हें हमें ध्यान में रखना होगा। डा नारायण ने मेरे लेख से जिन दो वाक्यों को पसन्द कर उद्धृत किया है मेरे आलोच्य लेख के भी वे ही मूलभूत मुद्दे हैं और मेरे वाक्य मेरे नहीं अपितु ऋषि दयानन्द के ही हैं, जिन्होंने एक उपास्य देव, एक उपासना पद्धति, एक भाषा, एक वेशभूषा और एक ही वैचारिक पद्धति के बिना राष्ट्र की एकता को स्वप्न तुल्य माना था। इस सुरसा की भांति मुह फैलाये हमारे राष्ट्र के निगल जाने वाली भयकर समस्या का निदान न तो वह कांग्रेस कर सकती है जो एकता में अनेकता की बात करती है और न राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ ही उसका समाधान कर सकता है जो स्वामी विवेकानन्द की ही भांति हिन्दू धर्म और समाज में मौजूद दुर्बलताओं की आलकारिक व्याख्या तो करता है, किन्तु दयानन्द की भांति जिन्हें ठुकराने का उसमें साहस नहीं है। सडी गली पौराणिक अवधारणाओं से तो मुक्ति पानी ही होगी।

हम भी यह चाहते हैं, कि आर्य समाज हिन्दू जाति का राजनैतिक नेतृत्व ग्रहण करे, किन्तु क्या उसके पीछे वे पदलोलुप हिन्दू आयेंगे जो सत्ताधीश बने रहने के लिये कांग्रेस के दुमछल्ले बने रहने मे ही अपना हित मानते हैं? क्या आर्यसमाज का नेतृत्व वे मठाधीश, सन्त, महन्त और गद्दीधारी धर्माचार्य कभी स्वीकार करेंगे जो आज भी अपने करोडों अनुयायियों को नकेलबधे ऊंटों के समान सभाले हुए तो हैं किन्तु उनमें न तो विवेक शक्ति ही जाग्रत करते हैं और न राष्ट्र-भक्ति के भावों को ही बढावा देते हैं। पुरी का जो शकराचार्य सुधारक शिरोमणि राममोहन राय और अर्धापत्ति से दयानन्द को भी पापी कहने का दुस्साहस करे और उसे धर्माचार्य के इस पद से च्युत न करें, उस हिन्दू समाज का यदि बेडा गर्क हो जावे, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

***



ध्वजारोहण के पश्चात उपस्थित छात्र समुदाय को सम्बोधित करते हुए आचार्य दत्तात्रेय आर्य

पत्र बोलते हैं—

संघ स्वामी दयानन्द की उपेक्षा नहीं करता

महोदय,

आपके पत्र में एक लेख डा भवानीलाल भारतीय का पढा। लेखक ने आर्यजनों से अपील की है कि वे 'राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ' का महर्षि दयानन्द की उपेक्षा करने के कारण विरोध करें। बडा दुख हुआ। वास्तव में यही कारण हिन्दुत्व की दुर्दशा के हैं। जब एक ही ध्येय के अनुगामी, भले ही उनके मार्ग अलग हैं, एक दूसरे की टांग वह भी सार्वजनिक रूप से घसीटने से नहीं चूकते।

लेखक ने जो तथ्य दिए हैं वह एकदम हल्के एव घटिया किस्म तथा सत्य से परे हैं। यह बात बडी दुखदायी है कि लेखक महोदय 'पत्र' के माध्यम से हिन्दुत्व के प्रति समर्पित एक सगठन के प्रति लोगो मे गलतफहमी पैदा करना चाहते हैं। शायद उन्हे सघ की कार्यपद्धति की बिल्कुल भी जानकारी नहीं है। सघ महर्षि का समाज-जागरण के कार्य मे महत्वपूर्ण योगदान मानता है। तभी सघ के प्रात स्मरण मे वह स्वामी दयानन्द का नाम श्रद्धा के साथ गाता है।

—नरेन्द्रपालसिंह भदौरिया,
नई सडक, ग्वालियर

संघ दयानन्द और आर्यसमाज को अछूत मानता है

सघ का व्यवहार सदैव ही आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा है। और फिर पौराणिक ढकोसलो के समर्थक सघ और पाखड के प्रखर विरोध में आर्यसमाज दोस्ती सभव ही कहा है!

—विश्व बंधु,
सोतीगज, मेरठ

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा आर्य प्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह द्वारा आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द · 163

सृष्टि सम्वत् . 1972949088

।। ओ३म् ।।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज को वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 4 सोमवार, 29 फरवरी, 1988
अंक : 4 प. स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

फाल्गुन शु 12 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्यसमाज के पुनर्गठन की दिशा मे पहला कदम

समाज के द्वार सबके लिए खुले किन्तु सदस्यता पर प्रतिबन्ध

सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्यसमाज की सदस्यता के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय

— आचार्य दत्तात्रेय आर्य, संयोजक उपसमिति —

सदस्यता सम्बन्धी जिस नवीन शर्त को प्रण के रूप मे सभा ने 20 सितम्बर 1987 की बैठक में सर्व सम्मति से स्वीकार किया है, वह निम्न प्रकार है —

'मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूंगा, ना ही मृतक श्राद्ध, या स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा। तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नहीं मानूंगा। अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नहीं करूंगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छूआ-छूत को नहीं मानूंगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी भी नहीं बनूंगा तथा आर्य समाज के उपनियमो में वर्णित सदाचार के नियमों का पूर्णतः पालन करूंगा। यदि मैं इसके विपरीत आचरण करूं तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे।"

आर्यसमाज के पुनर्गठन के सम्बन्ध में प्रारम्भ से दो दृष्टिकोण रहे हैं। वर्तमान यथास्थिति मे स्वभवत कुछ प्रभावशाली लोगो का निहित स्वार्थ था, इसलिए वे किसी परिवर्तन के पक्ष मे नही थे। यह स्पष्ट है। दूसरा दृष्टिकोण आर्य समाज के वर्तमान सगठन मे क्राति-कारी परिवर्तन का समर्थक था। किन्तु वर्तमान नेतृत्व या तो इसके प्रति उदासीन था या इसे अनावश्यक समझता था। परिणाम स्वरूप अनेक प्रमुख व्यक्तियो को यह आशा नही थी कि उपसमिति का कोई भी सुझाव सभा द्वारा स्वीकार किया जा सकेगा। किन्तु गत चार-पाच वर्षों के प्रयत्न के पीछे मेरी यह मान्यता रही है कि आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य के सम्बन्ध मे विचार करने का न केवल अधिकार अपितु कर्तव्य भी आर्य समाज की शिरोमणि सभा का है। अत यह स्पष्ट था कि सभा के नेतृत्व और विशेषकर प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी के आशीर्वाद के बिना इसमे कोई सफलता नही मिल सकती। अत जो चार सुझाव सभा द्वारा स्वीकार किए गए है, वे यद्यपि प्रारम्भिक है फिर भी उन्हे मै प्रधान जी के वर्तमान कार्यकाल की एक उपलब्धि समझता हू और आशा करता हू कि अन्य सुझावो के सम्बन्ध म भी सभा उनके नेतृत्व मे विचार करेगी। फिर भी मुख्य प्रश्न यह है कि सदस्यता के सम्बन्ध मे जो महत्वपूर्ण निर्णय सिद्धान्त रूप मे स्वीकार किया गया है वह कार्यान्वित होगा या नही। अनेक मित्रो ने मुझे पहले भी चेतावनी दी थी कि इस सम्बन्ध मे सभा से कोई अपेक्षा करना व्यर्थ है उपरोक्त सशोधन के बाद भी मुझे इसी प्रकार के निराशाजनक पत्र मिलते रहे हैं। इसलिए सभा कार्यालय द्वारा इस सम्बन्ध मे जो उदासीनता दिखाई जा रही है उसका मैं यहा कुछ सकेत करना आवश्यक समझता हू।

गत कई वर्षों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त उपसमिति आर्य समाज की वर्तमान शिथिलता और उसके निराकरण के उपायो के बारे मे विचार विनिमय करती रही है। जहा सभा द्वारा इसे 'आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम' के विचार के रूप मे प्रस्तुत किया जाना रहा वहा उप-समिति के कुछ सदस्य ही नही अपितु आर्य जगत् के अनेक विचारशील और मनस्वी व्यक्ति इसे आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य के सम्बन्ध मे चिन्तन के रूप मे देखते रहे। वस्तुत इस पाक्षिक पत्र 'आर्य पुनर्गठन' का लक्ष्य ही इसी महत्व-पूर्ण प्रश्न के बारे मे आर्य जगत् का ध्यान आकर्षित करना रहा है। गत वर्षों मे हमने इसीलिए समय-समय पर इस दिशा मे किए गए प्रयत्नो की ओर समाजो, प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक सभा का ध्यान आकर्षित करना अपना मुख्य कर्तव्य समझा है। उपसमिति ने अपनी प्रारम्भिक रिपोर्ट सन् 1983 ई मे प्रस्तुत की थी। उसके बाद सभा द्वारा उस पर समाजो, सभाओ और प्रमुख आर्य पुरुषो की सम्मतिया निमत्रित की गई। सभा के प्रधान जी के आदेश पर उपसमिति की सिफारिशो को पाच सक्षिप्त बिन्दुओ मे व्यक्त कर पुन उन पर सम्मतिया निमत्रित की गई और स्वामी सत्य-प्रकाश जी की अध्यक्षता मे 20-21 अप्रैल 1987 को आर्यसमाज, मदिर मार्ग, देहली मे प्रधान सा सभा के आदेशानुसार प्रमुख आमत्रित व्यक्तियो की एक विचार गोष्ठी मे उन पर विचार किया गया। और अन्त मे सार्वदेशिक सभा की एक विशेष बैठक 19 व 20 सितम्बर 1987 को समिति की इसी अतिम रिपोर्ट पर विचारार्थ बुलाई गई, जिसमे सदस्यो के अतिरिक्त अन्य निमत्रित आर्य पुरुष भी उपस्थित थे।

एक बार तो ऐसा प्रतीत होने लगा कि आर्यसमाज के लिए जीवन मरण के इस प्रश्न के बारे मे विचार करने के लिए या तो अपेक्षित चिन्ता और उत्साह नही था अथवा कुछ व्यक्ति इन सारी सिफारिशो को 'दाखिल दफ्तर' करने के पक्ष म थ। उनका कहना यह था कि आर्य समाज के वर्तमान उपनियमा मे उन सभी बातो का पहले से ही प्रावधान है जिनके निराकरण के लिए उपसमिति ने सुझाव दिए है। स्वभावत प्रश्न यह उत्पन्न हुआ कि यदि वर्तमान उपनियमो मे उन सब परिस्थितियो का इलाज है, जिनके कारण न केवल आर्य समाज का सगठन अपितु स्वय उसके क्रातिकारी और लोकप्रिय

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान सपादक : रामसिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   कार्या : 21010

परमात्म-प्रेम से सम्पन्न जीवन ही धन्य है

परमात्मा से प्रेम होना ही प्राणी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। परमात्मा में प्रीति होते ही प्राणी की सारी कामनाएँ परितृप्त हो जाती हैं। उसके दुख-दारिद्र्य प्रकाश की उपस्थिति में अन्धकार के समान दूर हो जाते हैं। प्राणी आत्म-तुष्ट हो जाता है। उसकी सारी आसक्तियाँ मिट जाती हैं। जीवन में अनन्त और अक्षय सुख का सागर लहरा उठता है।

परमात्मा के प्रति प्रेम ही सच्चा प्रेम है अन्य सारे आकर्षण वासनाएँ हैं, जिनका सुख क्षणिक और परिणाम में दुखकारक है। जिस प्रेम में अनन्यता, अक्षयता और निरपेक्षिता न हो जो पवित्रता और सम स्वार्थों से रहित हो वह प्रेम नहीं मोह है। वास्तविक और नित्य कल्याणकारी प्रेम केवल ईश्वर विषयक ही हो सकता है? संसार विषयक नहीं।

परमात्मा के प्रति प्रेम रखने वाला अपने सच्चे स्वरूप को जान लेता है और अन्य प्राणियों की वास्तविकता को समझ लेता है जिससे उसके अन्दर विश्व प्रेम की भावना जाग्रत हो जाती है।

परमात्मा के प्रति प्रेम रखने वाला जीवन के सत्य को पहचान लेता है आत्मा के दिव्य दर्शन कर लेता है और उसे एक ऐसी अहेतुक परितृप्ति प्राप्त हो जाती है कि फिर किसी वस्तु की कामना नहीं रहती। —महर्षि रमण

सम्पादकीय—

समझौतावाद एवं यथास्थिति को मिटाना होगा

आर्य समाज का पुनर्गठन अवश्यमेव करना होगा

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण नगरी अजमेर से ऋषि के अनन्य भक्त, सुप्रसिद्ध चिन्तक एवं शिक्षा शास्त्री तथा अजमेर के "मालवीय" कहे जाने वाले, मन-वचन कर्म से समर्पित एवं निष्ठावान आर्य समाजी 78 वर्षीय प्रो दत्तात्रेय आर्य (वाब्ले) ने 1982 ई में "आर्य समाज अजमेर" की शताब्दी के अवसर पर सुप्रसिद्ध सन्यासीद्वय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा श्री स्वामी विद्यानन्द जी की उपस्थिति में जिस 'आर्य विचार मंच' के सम्मेलन में 'आर्य समाज आर्य समाज रहकर ही जीवित रह सकता है" के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज के पुनर्गठन के मन्त्र को फूंका था आखिर वह कई उतार चढ़ावों से गुजरता हुआ आर्य समाज के संगठन की शिरोमणि सभा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली" की विगत कार्यकारिणी में यत्किंचित रूप में स्वीकृत हो ही गया। इसके पीछे आर्यसमाज अजमेर के प्रधान तथा आर्य समाज की अजमेर में स्थित शिक्षण संस्थाओं के प्राण श्री दत्तात्रेय आर्य की सतत साधना और ध्येय निष्ठा ही प्रबल सूत्रधार रही। उन्होंने शिरोमणि सभा की बैठकों में, विभिन्न सम्मेलनों में निरन्तर इस ओर सबका ध्यान आकर्षित कर आर्य समाज को पौराणिक हिन्दुत्व की नमक की खान में गिरने से बचाने के लिये "आर्य समाज" का शखनाद फूंककर आर्य समाज के शुभचिन्तकों, बुद्धिजीवियों, चिन्तकों, मनीषियों एवं नेताओं को विचार करने को उद्वेलित एवं प्रेरित किया। अततोगत्वा उनका प्रयास रंग लाया और सैद्धान्तिक दृष्टि से ही सही तथा भले ही अभी प्रारम्भिक सदस्यता के प्रतिज्ञा पत्र पर हो सही पर वर्तमान सनातन पौराणिक हिन्दू धर्म के छुआछूत, दहेज, मूर्ति पूजा, श्राद्ध, जानपान तर्पण तीर्थ व अवतारवाद, अंधविश्वास आदि आर्य धर्म की जड़ों को खोखला कर देने वाली बुराइयों को स्वीकार नहीं करने की प्रतिज्ञा या घोषणा ही अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

आर्य समाज के पुनर्गठन के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रो दत्तात्रेय आर्य के संयोजन में गठित उपसमिति द्वारा प्रस्तुत जिन 33सुझावों में से अभी केवल चार सुझावों पर ही सार्वदेशिक सभा की अंतरंग ने मुहर लगाई है उसके लिये अंतरंग सभा तथा उसके प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती आर्य जगत की ओर से बधाई के पात्र हैं वहीं उपसमिति के सदस्यगण तथा विशेषत उसके संयोजक श्री दत्तात्रेय जी आर्य भी धन्यवाद एवं साधुवाद के पात्र हैं जिनके अथक प्रयास और सबर्ष से यह "पुनर्गठन योजना" कार्यान्वयन की ओर अग्रसर हुई है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि स्वीकृत प्रस्ताव और मन्तव्य फाईलो या कार्यवाही रजिस्टरो में ही बन्द न हो अपितु उन्हे आर्य जगत में सभा के मुख पत्र 'सार्वदेशिक' प्रतिनिधि सभाओं के मुखपत्रों के माध्यम से तथा शिरोमणि सभा की ओर से समस्त आर्य समाजों को आवश्यक परिपत्र द्वारा अधिकाधिक प्रचार प्रसार कर परिपालनार्थ आर्य समाजों में अनिवार्यता से क्रियान्वित किया जाय। अन्यथा वही "ढाक के तीन पात' वाली स्थिति होगी।

दुर्भाग्य से आज आर्य समाज पर पौराणिकता का छद्मवेशी जाल जकड़ता जा रहा है। आर्य समाजी लोग भी पौराणिक हिन्दुत्व की तथाकथित अनेकता में एकता के नाम पर अपनी प्रखरता, प्रचण्डता, तेजस्विता और मनस्विता को कुन्द करते जा रहे हैं, वह भी 'मैं बुरा नहीं बन जाऊ", 'मैं अलगाववादी नहीं समझा जाऊ" "मैं हिन्दुत्व का विरोधी नहीं कहलाऊ" की आड में समझौतावादी दृष्टिकोण का शिकार होता जा रहा है जो आर्य समाज की शिथिलता का बहुत बडा कारण है। तुष्टिकरण आर्य समाज के लिये घातक है। सत्य को सत्य, झूठ को झूठ कहना होगा। 'सबका प्यारा बन जाऊ" का मोह छोडकर बुराइयों पर प्रहार करना होगा।

अत यदि आर्य समाज को ऋषि दयानन्द के सपनों का आर्य समाज बनाना है यदि आर्य समाज को एक "क्रान्ति की जलती भट्टी" बनाना है, यदि आर्य समाज को जीवित जाग्रत एवं सक्रिय संगठन बनाना है तो उसे समझौतावाद तथा यथास्थितिवाद के केंचुली को उतार कर फेंकना होगा तथा नये सिरे से आर्य समाज का पुनर्गठन होगा। इससे आर्य समाज की शिथिलता उजागर नहीं होती अपितु यह उसकी महिमा और जीवन्तता का प्रमाण होगा। हमारे महान ऋषि ने हमें यही पाठ पढ़ाया है कि **"सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।**

—रामसिंह

तमस से भी कुछ सीखो

देश विभाजन में निभाई अपनी भूमिका के अपराध बोध से मुक्ति पाने के लिए कम्युनिष्टो ने 'तमस' को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। इससे पूर्व हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार ने रामायण और बुनियाद दूरदर्शन में प्रसारित करें इसके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था। आखिर सरकार को सन्तुलन तो रखना ही था।

तमस में इतिहास को तोड-मरोड कर प्रस्तुत किया गया है। आर्य समाज मंदिर का साम्प्रदायिक प्रचार का केन्द्र दिखाना साम्यवादियों का सफेद झूठ है। बम्बई उच्च न्यायालय का 'तमस' को इतिहास कहना भी पूर्णतया गलत है। तमस' इतिहास न होकर भीष्म साहनी की स्वय की कल्पनाओं और धारणाओं पर आधारित है। वस्तुत देश विभाजन का श्रेय मुस्लिम लीग और कम्युनिष्टो को प्राप्त है।

यह विचारणीय है कि आखिर किस बूते पर भीष्म साहनी और गोविन्द निहलानी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रखने वाले आर्यसमाज' को साम्प्रदायिक कहने का साहस कर सके। खाली हवा में लाठी भांजने या वक्तव्य दागने से कुछ नहीं होता। चिंतन से ही प्रत्येक समस्या का सही समाधान होता है।

गत पचास वर्षों में आर्यसमाज के शीर्ष स्तर के नेताओं के आचरण से जनसाधारण के मन में आर्यसमाज की छवि 'हिन्दुओं के एक सम्प्रदाय के रूप में अंकित हो गई है। वर्तमान में आर्यसमाज को हिन्दुत्व की विचारधारा के एक प्रवक्ता के रूप में ही जाना जाता है।

जरा सोचिए! क्या आर्यसमाज हिन्दुत्व का पोषक है? सदैव याद रखिए! आर्यसमाज का लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है। यह न तो हिन्दुत्व का प्रवक्ता है और न ही ईसाइयत या इस्लामियत का। प्रत्येक मत या सम्प्रदाय में व्याप्त बुराई का विरोध करना इसका उद्देश्य है। संगठन के ठेकेदारों! आर्यसमाज को संकीर्णता की भावना से बचाओ। अन्यथा 'तमस' का झूठ कालांतर में सत्य सिद्ध हो जाएगा। —वीरेन्द्र आर्य

आचार्य दत्तात्रेय आर्य के नाम सा. सभा के प्रधान स्वामी आनंद बोध सरस्वती का पत्र

माननीय श्री दत्तात्रेय जी आर्य, दिनाक 24-11-87

सादर नमस्ते। पत्राक-3304

आपका 17-11-87 का पत्र आज मुगलसराय तथा बनारस से वापस लौटने पर प्राप्त हुआ। इससे पूर्व आपने भावी कार्यक्रम सबधी निर्णयो का जो प्रारूप भेजा था वह भी प्राप्त हो गया था। सार्वदेशिक सभा की 20–9–87 को सम्पन्न हुई अन्तरग सभा से पूर्व 19 सितम्बर को भावी कार्यक्रम सबधी उपसमिति की रिपोर्ट के मुख्य 4 बिन्दु क, ख, ग और घ पर विचार हुआ था। इन्ही बिन्दुओ पर जो राय बनी थी, उनपर 20 की अन्तरग सभा ने विचार हुआ था और उनमे कुछ सशोधन के साथ जो निर्णय हुआ था, वह निम्न प्रकार है—

बिन्दु (क)—आर्य समाज के किसी सदस्य व अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दो का अपने नाम के आगे प्रयोग न करने के प्रस्ताव पर आम सहमति थी कि यह प्रेरणा का विषय है। सार्वदेशिक सभा पहले से ही ऐसी प्रेरणा आर्यों को देते रही है।

बिन्दु (ख)—आर्य समाज के उपनियम समस्त और सार्वभौम हैं। शब्दो की व्याख्या का प्रश्न नही है बल्कि उन्हे जीवन मे धारण करने और आचरण करने की बात आवश्यक है। इसलिए आर्य समाज के नियमों मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत पालन करने वालो को ही 2 वर्ष के पश्चात् आर्य समासद घोषित किया जाये और उस समय उनसे एक शपथ पत्र भरवाया जाय जिसका प्रारूप निम्न प्रकार है।

प्रतिज्ञा पत्र : आर्य सभासद् की ओर से

श्री प्रधान जी,

आर्य समाज

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूगा ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूगा। तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नही अपनाऊगा। अर्थात वेद विरुद्ध आचरण नही करूगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआ–छूत को नही मानूगा। मै किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति सगठन का सदस्य या अधिकारी भी नही बनूगा तथा आर्य समाज के उपनियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत पालन करूगा। यदि मैं इसके विपरीत आचरण करू तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जाये।

(ग) सक्रिय सदस्य—इस विषय मे निर्णय हुआ कि आर्य समाज के नियम उपनियमो मे सशोधन करने की आवश्यकता नही है। आर्य सभासद् बनने से पूर्व जो प्रतिज्ञा पत्र जारी किया गया है वह इसकी पूर्ति करता है, इसलिए सक्रिय सदस्यता का कोई औचित्य नहीं है।

(घ) 1- आर्य समाज के किसी भी सदस्य को जो किसी राजनीतिक पार्टी का पदाधिकारी हो, तो आर्य समाज का पदाधिकारी बनने पर यदि वह राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु आर्य समाज अथवा सबधित सस्था को प्रभावित करना चाहता हो अथवा कर रहा हो तो ऐसे पदाधिकारी को पद से पृथक कर दिया जावे।

2- आर्य प्रतिनिधि सभाओ की नियमावली मे एक रूपता होनी चाहिये, इसके लिये एक समिति का गठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे किया गया। समिति के सदस्य श्री छोटू सिंह एडवोकेट, श्री सोमनाथ एडवोकेट, श्री दत्तात्रेय आर्य और प. रामचन्द्र राव वन्देमातरम् चुने गए।

आपको अन्तरग सभा मे जो कार्यवाही रिकार्ड हुई है, वह निर्णय लिख दिया है। आपने जो प्रारूप भेजा है, वह भी हमने देख लिया है।

आप उपरोक्त पत्र को पढकर जो निर्णय हुए हैं, उन्हे देखकर यदि उचित समझें तो यहा आकर मुझसे मिल लें ताकि उनके क्रियान्वयन के लिये आपसे चर्चा करके जारी किया जा सके। शुभकामनाओ सहित,

भवदीय

आनन्द बोध सरस्वती

प्रधान

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का आर्यसमाज से त्यागपत्र

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने आर्यसमाज के वर्तमान नेतृत्व के कार्य-कलापो से खिन्न होकर 1 जनवरी 1988 को आर्यसमाज की सदस्यता मे त्यागपत्र दे दिया है। 10 फरवरी को जारी अपने वक्तव्य मे स्वामी जी ने कहा "मैंने आर्यसमाज के सगठन को छोडा है, वैदिक धर्म को नही। उसके प्रचार-प्रसार मे मैं पूर्ववत् प्रवृत्त रहूंगा।'

आर्य वीरों से

—साकन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'

(1)

उषा खडी रक्त-अभिषेक करने के लिए,
खगो के स्वरा मे सुनो जागृति की टेर है।
समय समीर झकझोर रही बार-बार
दीर्घ सूत्रता मे हुई युगो की अबेर है।
जब रहा तब रहा बुद्धि का ही फेर बन्धु,
झूठ बात है कि रहा काल का ही फेर है।
भाग का ही फेर बता, चादरें न तानो मित्र,
उठो-उठो, अरे अँगडाई की ही देर है।

(2)

विश्व की निराश दृष्टि तुमको निहारती है,
नूतन प्रकाश भरो दीपक अमन्द का।
वेद का प्रकाश, चेतता की चन्द्रहास लिये,
गाते हुए गीत मीत सविता के छन्द का।
कूद पडो युद्ध हेतु तम की अनी को चीर,
ध्वस्त करो अनय अभाव व्यूह-द्वन्द का।
बाल बाँका कौन कर सकता है तुम्हारा बन्धु,
दायाँ हाथ शीश पर है ऋषि दयानन्द का।

**

'आर्य पुनर्गठन' का विवरण

फार्म न.-4

1	प्रकाशन का स्थान	अजमेर
2	प्रकाशन का अवधिक्रम	पाक्षिक
3	मुद्रक का नाम	रतनलाल गर्ग
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता	श्री आर्य प्रिन्टर्स, बाबू मोहल्ला, अजमेर।
4	प्रकाशक का नाम	रासासिंह
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता	मत्री, आर्य समाज, अजमेर।
5	सपादक का नाम	रासासिंह
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता	मत्री, आर्य समाज, अजमेर।
6	उन हिस्सेदारो के नाम और पते जिनके पास कुल पूंजी के प्रतिशत से अधिक के हिस्से हैं।	रासासिंह मत्री, आर्य समाज, अजमेर।

मैं रासासिंह घोषणा करता हूं कि उपरोक्त दिए गए विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णतया सत्य हैं।

—रासासिंह (ह प्रकाशक)

(शेष पृष्ठ 1 का)

स्वरूप तक का दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है तो उसकी यह दयनीय स्थिति क्यो है ? और उसके लिए कौन उत्तरदायी है ? सार्वदेशिक सभा की ता 20-9-87 को द्वितीय दिन की बैठक मे भी पुन: इसी प्रकार का वातावरण देखकर सदस्यो के सामने यह विषय एक चुनौती के रूप मे प्रस्तुत किया गया, परिणाम स्वरूप कुछ न कुछ करने या यथास्थिति बनाए रखने की कुछ लोगो की योजना सफल नही हो सकी। किन्तु फिर भी परिवर्तन या पुनर्गठन की बात स्वीकार करने के साहस का अभाव स्पष्ट प्रतीत हो रहा था। इस स्थिति मे कोई ऐसा मार्ग निकालना आवश्यक था जिससे 'यथास्थिति' की पूर्व योजना जाहिरा तौर पर निरस्त न करके भी किसी नवीन दिशा या परिवर्तन के लिए कोई मार्ग निकल सके। इस प्रकार जहाँ कोई संशोधन न करने का आग्रह एक समझौते के रूप मे स्वीकार कर लिया गया, वही उपसमिति के लगभग 33 सुझावों में से 4 को इस रूप मे स्वीकार किया गया कि उन्हें उपनियमो मे संशोधन करके सम्मिलित किए बिना कार्यान्वित किया जा सके क्योकि कुछ सदस्यो और विशेषकर अधिकारियो की बराबर यह मान्यता थी कि आर्य समाज अथवा उसकी सभाओ के पुनर्गठन का कोई प्रस्ताव या योजना स्वीकार करने का अर्थ उसकी वर्तमान असफलता और निर्बलता को स्वीकार करने के समान होगा।

इस पृष्ठभूमि का यहाँ केवल इसलिए संकेत किया जा रहा है कि आर्य समाज जैसे एक समय के व्यापक और शक्तिशाली आन्दोलन की वर्तमान स्थिति स्वय हमारी या समाज की वर्तमान शोचनीय स्थिति का लक्षण है।

सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र के गत चार अको को देखने से भी उपरोक्त तथ्य की पुष्टि होती है। सभा की अतरग सभा ने 24 जनवरी को अपने अधिवेशन मे 20-9-87 की अतरग मे स्वीकृत इन प्रस्तावो की पुष्टि करते हुए यह निश्चय किया था कि आर्य समाज के **भावी कार्यक्रम के बारे में सभा द्वारा लिए गए निर्णयों को प्रभावी ढग से क्रियान्वित किया जाए।"** किन्तु उसके 7 14 और 21 फरवरी के अको मे जहाँ अन्य प्रस्तावो का विस्तृत विवरण दिया गया वहा आर्यसमाज की स्थिति जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर किए गए निर्णय का उल्लेख तक नही है। यदि स्वय आर्यसमाज के शिरोमणि सगठन की स्वय अपने निर्णय के बारे मे ये उपेक्षा और उदासीनता है तो प्रतिनिधि सभाओ और आर्यसमाजो से यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वे इन निर्णयो को प्रभावी ढग से क्रियान्वित करेंगे।

सभा के मुख पत्र अथवा विशेष विज्ञप्ति आदि द्वारा इन निर्णयो की जानकारी दिए बिना यह आशा कैसे की जा सकती है कि उसका पालन किया जायेगा। अस्तु। इस सारी निराशाजनक स्थिति के उपरान्त भी आशा की केवल एक मात्र किरण यह है कि समिति के 33 मे से जो 4 संशोधन या सुझाव स्वीकार किए गए हैं वे यद्यपि अपर्याप्त और प्रारम्भिक हैं फिर भी उनमे आर्यसमाजो की सदस्यता सम्बन्धी उपरोक्त निर्णय इसलिए दूरगामी पहला कदम सिद्ध हो सकता है कि यदि उसे निष्ठा पूर्वक कार्यान्वित किया जाए तो आज आर्यसमाज के सामने हिन्दू धर्म की नमक की खान मे विलीन होने का जो सबसे बडा खतरा है उससे बचा जा सकता है। यद्यपि यह आधारभूत निर्णय सदस्यता सम्बन्धी उपनियम की धारा 3 मे स्पष्ट रूप मे स्वीकार किया जाना चाहिए था फिर भी उसे सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित आर्यसमाज मे प्रवेश सम्बन्धी फार्म मे सम्मिलित करने का जो निर्णय किया गया है वह भी इस दिशा मे एक कारगर पहला कदम सिद्ध हो सकता है।

इस संशोधन के पीछे एक दृष्टिकोण यह था कि आर्यसमाज जैसे सार्वभौम सगठन के द्वार जहा सबके लिए **मुक्त रूप से खोले जाए** जिसके आधार पर पौराणिक हिन्दू ही नही अपितु मुसलमान या ईसाई जैसे अहिन्दू भी शुद्ध होने पर आर्यसमाज के पुराने उपनियमो की संरक्षक सम्बन्धी धारा के अन्तर्गत सहायक या सहयोगी के रूप मे साधारण सदस्य बन सकते है वहा उसके पदाधिकारी या सक्रिय सदस्य बनने के लिए यह अनिवार्य है कि वे दस नियमो तथा ऋषि दयानन्द के धार्मिक मन्तव्यो मे निष्ठा रखते हो। इस बात को स्पष्ट करने के लिए उन्हें यह घोषणा भी करनी होगी कि वे मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तीर्थ छुआछूत आदि वर्तमान हिन्दू धर्म में प्रचलित धार्मिक और सामाजिक कुरीतियो मे विचार व व्यवहार दोनो में विश्वास नही रखते।

आर्य समाज के क्षेत्र मे अक्सर यह चिन्ता व्यक्त की जाती रही है कि न केवल उसकी शिक्षण सस्थाओ में अपितु उसके अन्य सगठनो मे भी अवसरवादी आर्य इसलिए आसानी से प्रवेश और अधिकार कर पाते हैं कि आर्यसमाज की वर्तमान सदस्यता केवल चन्दा देकर प्रवेश की औपचारिकता पूरी करने तक सीमित रह गई है। उसके लिए आर्यसमाज के विशिष्ट सिद्धान्तों का पालन तो दूर उनके प्रति आस्था तक रखना आवश्यक और अनिवार्य नहीं समझा जाता।

इस अक में ही पृष्ठ 3 पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का वह पत्र प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें उन्होंने [illegible] के अर्थ मे मेरे नाम सभा के निर्णय की अधिकृत सूचना भेजी है।

सदस्यता के लिए अनिवार्य इस महत्वपूर्ण प्रश्न का व्यवहार मे यदि पालन किया गया तो यह आशा की जा सकती है कि उसके आधार पर आर्यसमाज का पृथक् धार्मिक अस्तित्व सुरक्षित हो सकेगा और वह केवल हिन्दू धर्म का नवीन या सुधरा हुआ सम्प्रदाय बनकर कालान्तर मे हिन्दू धर्म की खान मे विलीन नही हो जाएगा।

यह पत्र इसलिए भी प्रकाशित किया जा रहा है कि सार्वदेशिक सभा ने अपने पत्र या विज्ञप्ति द्वारा अभी तक इस निर्णय को न प्रकाशित किया है और न ही उनके [illegible] के लिए प्रतिनिधि सभाओ और समाजो को आदेश ही दिया है। [illegible] चाहिए कि इसके बाद सभा द्वारा इस निर्णय को अधिकृत रूप से प्रचारित और प्रसारित किया जाएगा।

वार्षिकोत्सव तथा वेद वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 43 वा वार्षिकोत्सव 20 से 26 जनवरी 1988 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। वार्षिकोत्सव में पूजनीय स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, प शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री पन्नालाल जी पीयूष श्री सतीश भूटानी, श्री सत्यपाल जी पथिक, प सत्यकाम जी विद्यालकर, श्री प्रभुदास जी यादव आदि अनेक वक्ताओ के प्रवचन तथा भजनोपदेशो से आर्य जनता लाभान्वित हुई। 26 जनवरी को आचार्य [illegible] जी को 1988 का वेद वेदांग पुरस्कार एवं प शान्तिप्रकाश जी को वेदोपदेशक पुरस्कार प्रदान किया गया। —[illegible]

—दयानन्द बाल सदन मे 'आर्य कुमार सभा' के तत्वावधान मे 'महर्षि दयानन्द महिमा' पर [illegible] गायन एव भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। विजेता छात्रो को 'सुरेन्द्र शर्मा स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

— [illegible] (मंत्री)

— आर्य समाज पुष्प नगर (आजमगढ) का वार्षिकोत्सव 8 फरवरी से 1? फरवरी 88 तक मनाया गया। डा पुष्पावती आचार्या व प सूर्यबली पाण्डेय के प्रवचन हुये।

—विद्याधर (मंत्री)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह द्वारा आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 163
सृष्टि सम्वत् : 1972949088

।। ओ३म् ।।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 4 मंगलवार, 15 मार्च, 1988
अंक : 5 प. स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न: सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

चैत्र कृ 12 संवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्यसमाज और स्वामी अग्निवेश

संगठन और आन्दोलन दोनों को सक्रिय करना आवश्यक

— आचार्य दत्तात्रेय आर्य —

स्वामी अग्निवेश एक अत्यन्त सक्रिय, सुयोग्य और निष्ठावान आर्य सन्यासी हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे कर्मठ और प्रगतिशील व्यक्ति के नेतृत्व से अभी तक आर्य समाज वंचित रहा है। उनके सम्बन्ध मे आर्य जगत् मे समय-समय पर विवाद भी उत्पन्न होते रहे। मैं इसके कारणो मे नही जाना चाहता। किन्तु इतना स्पष्ट है कि केवल निष्क्रिय व्यक्ति ही विवाद से मुक्त रह सकता है। व्यक्ति की दृष्टि से यह भले ही एक उपलब्धि हो किन्तु संगठन, समाज एव आन्दोलन तथा विशेषकर आर्य समाज जैसे प्रजातन्त्र पर आधारित संगठन मे इसकी न ही अपेक्षा की जा सकती है और न ही उसे एक आवश्यक उपलब्धि ही माना जा सकता है। स्वय स्वामी जी अब यह अनुभव करने लगे हैं कि उन्होंने आर्य समाज के स्थान मे राजनीति को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर एक भूल की है। मैं स्वय आर्यसमाज से अपने दीर्घकाल के सम्बन्ध के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुचा हूं कि आर्य समाज जैसे धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय संगठन का नेतृत्व उनके हाथ में नहीं होना चाहिए जो हमारे देश की वर्तमान राजनीति मे सक्रिय हैं अथवा जिनकी कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा है। उनके कारण आर्य समाज जैसे सार्वभौम और सार्वदेशिक संगठन मे दलबन्दी, विवाद और निर्वाचन मे उखाड़-पछाड़ जैसी अनेक विकृतियां उत्पन्न होती हैं। इसी अभिशाप से हमारे देश का राजनैतिक वातावरण दूषित है। कई बार यह भी देखने मे आया कि हमारे देश की तथाकथित विकृत धर्म निरपेक्षता के कारण आर्य समाज मे सक्रिय राज-नैतिक व्यक्ति उसकी धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओ की उपेक्षा ही नहीं करते अपितु **सब धर्मों** के प्रति आदर के नाम पर उन धार्मिक अंध विश्वासो और सामाजिक कुरीतियो का भी समर्थन करते हैं, जिनका आर्यसमाज ही नही स्वय कांग्रेस के मंच से भी निषेध और विरोध किया जाता रहा है। इस सैद्धान्तिक विरोध के अतिरिक्त आर्यसमाज का वर्तमान संगठन भी सत्ता और चुनाव के लिए हथियाए गए इन हथकंडो से प्रभावित होता है और हुआ है।

शुभ अवसर

सती विरोधी पदयात्रा का आयोजन और नेतृत्व करने के बाद जहा स्वय स्वामी अग्निवेश पुन आर्य समाज के कार्यक्षेत्र मे लौटने के इच्छुक हैं, वही उनके प्रति अनेक गलत भावनाओ अथवा गलतफहमियो से प्रेरित आर्यसमाज के जो नेता उन्हे स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे वे भी अब अपने पहले के मतभेदो को भूलकर उनका स्वागत करने के लिए तैयार दिखाई देते हैं। इसे मैं आर्यसमाज के लिए एक **शुभ अवसर** समझता हूँ।

अपने उपर्युक्त विचारो के सदर्भ मे मैंने भी स्वय अग्निवेश जी से पत्र व्यवहार तथा व्यक्तिगत भेंट करके उनकी वर्तमान स्थिति समझने का प्रयत्न किया तथा आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य के सम्बन्ध मे अपनी मान्यताओं के बारे मे भी उनसे विचार-विनिमय किया है। इन सबके परिणाम स्वरूप दो बातें उभरकर आई उन पर मैं यहा संक्षेप मे प्रकाश डालना आवश्यक समझता हूं। एक तो यह कि मेरे समान उन्हे भी आर्य समाज की वर्तमान शिथिलता और प्रभावहीन स्थिति से असंतोष और चिन्ता है, और दूसरे यह कि उसके वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध मे गम्भीरता-पूर्वक विचार करके इस स्थिति के निराकरण का कोई उपाय तलाश करने की उत्कृष्ट इच्छा है।

उनके द्वारा दिल्ली मे 24 व 25 जनवरी 88 को "आर्य समाज की नई भूमिका और कार्यक्रम पर विचार करने के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। यद्यपि इस प्रकार की गोष्ठी की आवश्यकता के बारे मे स्वय मेरी उनसे चर्चा हुई थी किन्तु निश्चित तारीखो की सूचना के अभाव मे मैं उसमे उपस्थित नही हो सका फिर भी इस गोष्ठी मे जो विचार हुआ, उसका जो विवरण मुझे प्राप्त हुआ है उससे मैं सन्तुष्ट हूं और मोटे तौर पर उसका समर्थन करता हू।

इस गोष्ठी मे लगभग 50 प्रबुद्ध आर्य पुरुषो ने भाग लिया। जिनमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा प्रति-निधि सभाओ के अधिकारी भी थे।

संगठन और आन्दोलन

जैसा गोष्ठी की रिपोर्ट से स्पष्ट है स्वामी अग्निवेश जी आर्यसमाज को पुन एक सक्रिय और प्रभावशाली आदोलन के रूप मे सक्रिय करना चाहते हैं। किन्तु उसके वर्तमान संगठन मे परिवर्तन या सुधार के प्रश्न पर उनका दृष्टिकोण या तो उदासीनता का है अथवा वे अभी इस प्रश्न को उठाना उचित नही समझते। जैसा मैंने स्वामी जी को अपनी पहली भेंट मे स्पष्ट किया था कि संगठन और आन्दोलन एक दूसरे के पूरक और सहायक हैं, इतना ही नही आर्यसमाज का संगठन उसके वर्तमान और भविष्य का भी मुख्य आधार है। आन्दोलन संगठन की शक्ति का प्रतीक या प्रमाण मात्र है। दूसरी ओर इसमे भी सन्देह नही कि सामयिक आन्दोलनो के माध्यम से न केवल किसी संगठन की शक्ति का परिचय ही मिलता है अपितु उसके कारण उसमे नवीन चेतना का संचार भी होता है। किन्तु यदि आधार-भूत संगठन स्वय शक्तिशाली और अनु-शासित न हो तो इस प्रकार के सामयिक आन्दोलन केवल उसे अस्थायी या क्षणिक चेतना मात्र दे सकते है।

इस प्रकार यह निर्विवाद है कि आर्यसमाज को पुन गतिशील बनाने के लिए उसके वर्तमान संगठन मे सुधार करना और उसके प्रारम्भिक क्रांतिकारी आन्दोलन को पुन सक्रिय करना **दोनो आवश्यक** है।

नेतृत्व का प्रश्न

स्वामी अग्निवेश जी का आर्य-समाज के संगठन से जो मतभेद रहा है, उसके गुण-दोषो का विवेचन करना अब अनावश्यक व अप्रासंगिक है। विचार गोष्ठी मे भी आर्यसमाज के संगठनात्मक पहलू पर विचार करते समय आर्यसमाज के वर्तमान ढांचे व नेतृत्व मे परिवर्तन के प्रश्न

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक : रासासिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   ☎ कार्या : 21010

आ. स. की स्थापना के समय व्यक्त की गई ऋषि दयानन्द की आशंका

आप यदि समाज से पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हो, समाज करलो इसमे मेरी कोई मनाई नहीं। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गडबडाध्याय हो जाएगा। मैं तो मात्र जैसा ग्रन्थ को उपदेश करता हूँ वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष मे रखना कि कोई स्वतन्त्र मेरा मत नहीं है। और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूँ। इससे यदि कोई मेरी गलती आगे पाई जावे युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इसी को भी सुधार लेना। यदि ऐसा कोई न करोगे तो आगे यह भी एक मत हो जाएगा, और इसी प्रकार से बाबावाक्य प्रमाण करके इस भारत में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित होके, भीतर भीतर दुराग्रह रखके धर्मान्ध होके लडके नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है इसमें, यह भी एक मत बढेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष मे नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित है वो भी वे सब वेदो को मानते हैं, इससे वेदशास्त्ररूपी समुद्र मे यह सब नदी नाव पुन मिला देने से धर्म एकयता होगी। और धर्म ऐक्यता से सांसारिक और व्यवहारिक सुधारणा होवी और इससे कला कौशल्यादि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्यमात्र का जीवन सफल होके अन्त मे अपना धर्म बल से अर्थ काम और मोक्ष मील सकता है।"

सम्पादकीय—

"जग की पुकार है व युग की आवाज है। आर्य समाज है यह आर्य समाज है॥"

इस माह की 19 मार्च 1988 ई. को समस्त आर्य जगत् हर्षोल्लास के साथ महान यशस्वी एवं क्रान्तिकारी संगठन आर्यसमाज का 113 वा स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। 7 अप्रैल 1877 ई. तदनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन भारतीय इतिहास मे स्वर्णाक्षरों मे लिखा जायेगा क्योंकि इसी दिन स्वराज्य स्वधर्म स्वसंस्कृति एवं स्वभाषा तथा स्वाभिमान के प्रथम उन्नायक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने मिशन को निरन्तर चलाये रखन तथा आगे और भी गतिमान रखने के लिए बम्बई नगर मे आर्य समाज की स्थापना की थी। 1975 ई. मे इस महान संगठन की स्थापना शताब्दी केन्द्रीयस्तर पर भारत की राजधानी दिल्ली मे आयोजित की गई थी तब भी उस विराट समारोह की ओर समस्त विश्व का ध्यान आकर्षित हुआ था।

आज पुन पाखण्ड अन्धविश्वास मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थ, बाल-विवाह दहेज मृतीकाण्ड, आदि विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक बुराइयो का प्रबलबोलबाला हो रहा है तथा हर व्यक्ति बदले हुए जीवन मूल्यो का शिकार होकर पैसे को ही सबकुछ समझकर स्वार्थ का पुजारी हो गया है, गुरुडम का शिकार हो रहा है, 'शार्टकट् मैथ्डम' मे विश्वास करने लग गया है, पुरुषार्थ तथा परिश्रम एवं संघर्ष के प्रति उसकी आस्था विचलित होने लग गई है। रही सही कमी गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले सफेदपोश राजनीतिज्ञो ने पूरी कर दी है। पर्व धर्म सापेक्ष के नाम पर समस्त बुराइयो और कुरीतियो को सह-अस्तित्व, और सहिष्णुता के नाम पर प्रोत्साहित किया जा रहा है, चरित्र, सच्चाई, ईमानदारी, आस्तिकता, परोपकार, सेवा, कर्तव्य परायणता, देशभक्ति व मानवता, निर्लोभता आदि का नामोनिशा मिटता चला जा रहा है। जो जितना ज्यादा निकम्मी गुण्डा, बदमाश, तेजतर्रार खाऊ, भ्रष्ट, रिश्वतखोर बेईमान एवं कामचोर व वोटबटोरू है वही सब कुछ है, अर्थ प्रधानता तथा कामुकता का बोलबाला हो गया है तथा धर्म, मुक्ति, ईश्वर भक्ति, भजनभाव, बीते हुए जमाने की बात रह गई है।

ऐसी विषम परिस्थिति मे केवल आर्यसमाज ही एक मात्र आशा की किरण रह गई है। आज भी आर्यसमाज का निष्ठावान कार्यकर्ता, सेवक, अथवा अधिकारी प्रामाणिकता लिए हुए है, पुरानी पीढी के आर्यसमाजियो मे आज भी वही वेद प्रचार की ललक, मानवीयमूल्यो के प्रति अनन्य निष्ठा व्यक्तिगत चारित्रिक शुद्धता व सार्वजनिक सेवा के भाव भरे हुए हैं जो नई पीढी के आर्यवीरों के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मन्तव्य तथा आर्यसमाज के सिद्धान्त तथा नियम सार्वभौम, अकाट्य तर्क संगत, विवेक सम्मत, बुद्धिग्राह्य तथा सार्वकालिक हैं। उनमे कहीं भटकाव नहीं है। उनका मूलाधार वेद है। वेद प्रतिपादित ही सच्चा आर्य वैदिक धर्म है। एक ईश्वर की उपासना है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। स्वामी श्रद्धानन्द, प. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, श्यामजीकृष्ण वर्मा, हरदयाल, राजपाल, प. रामप्रसाद, बिस्मिल, स्वामी ध्रुवानन्द, आचार्य रामदेव, महाशय कृष्ण, जस्टिस मेहरचन्द महाजन जैसे महान नेताओ संन्यासियो एवं बलिदानियो द्वारा सिंचित एवं सपुष्ट लाखो आर्य नेताओ द्वारा रक्षित एवं प्रचारित, प्रमाणित आर्य समाज ही राष्ट्र का एकमात्र सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठन है जो मानवता-तथा आर्यत्व का पोषक, सत्य धर्म का रक्षक, सच्चे ईश्वर का प्रचारक तथा वेद ज्ञान का संरक्षक है। आवश्यकता है हम इस स्थापना दिवस पर संकल्प ग्रहण करें कि **हम स्वयं सच्चे आर्य, दयानन्दी** बनेंगे, अपने परिवार को आर्य बनायेंगे, अपने पडौस और मौहल्ले को आर्य बनायेंगे, वेद ज्ञान का प्रचार प्रसार करेंगे, आर्य समाज के संगठन को निस्वार्थ भाव से सेवा की भावना से सबल बनायेंगे, पद लोलुपता त्यागेंगे। भाई चारा, मैत्रीभाव रखेंगे। तथा वेद के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के संदेश को सार्थक करने मे स्वाध्यायशील होकर मनसावाचा कर्मणा प्राण प्रण से जुट जायेंगे। तभी समस्त राष्ट्र कह उठेगा—

"जग को जगाने वाला आर्य समाज है,
जग को पुकार व युग की आवाज है।
ईश की उपासना का रास्ता बता दिया।
जड की आराधना के पाप से बचा लिया।
ढोंग-ढाग जिसके भय से डोल रहा आज है।"

—रामसिंह

अमर हुतात्मा पं. लेखराम का पुण्य स्मरण

महर्षि दयानन्द की मृत्यु के पश्चात जिन आर्य विद्वानो ने वैदिक धर्म की विजय पताका को ऊंचा उठाए रखा उनमे आर्य मुसाफिर कर्मवीर प. लेखराम का नाम अग्रगण्य है। विधर्मियो को आप उनके घर मे जाकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारते थे। वैदिक धर्म एवं ऋषि के मन्तव्यो की सत्यता को असत्य सिद्ध करने की आपकी किसी भी व्यक्ति को खुली चुनौती थी। इसके लिए आपका आह्वान था—

नगाडा धर्म का बजता है आए जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदम, आजमाए जिसका जी चाहे।

वैदिक धर्म के प्रचार मे बाधा बनने पर सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दिया पारिवारिक दायित्वो की उपेक्षा की। दिन हो या रात आपके अहर्निश चौबीस घण्टे एक धर्म प्रचार की ही धुन रहती थी। ऋषि भक्त इतने कि उनके इस आदेश के, "25 वर्ष से पूर्व विवाह मत करना" का दृढता से पालन किया।

स्वयं को ज्वर होते हुए, एक मात्र पुत्र को गम्भीर बीमारी की अवस्था मे छोडकर अपने एक भाई के विधर्मी बनने का समाचार पा घर से चल देना और छोटे स्टेशन के कारण गाडी के न रुकने पर चलती गाडी से ही कूद पडना, उनके अतुलनीय धर्म प्रेम का उदाहरण है।

अनेको धमकियाँ मिलने एवं हजारो लोगो के जान के दुश्मन बन जाने पर भी दयानन्द का यह सैनिक धर्म प्रचार एवं अपने शुद्धि अभियान से तनिक विचलित नहीं हुआ। अपने इसी महाभियान में जुटे इस मृत्युंज्य दयानन्द के शिष्य प्राणवीर प. लेखराम की जान 6 मार्च 1897 ई. को एक धर्मान्ध मुस्लिम हत्यारे ने ले ली, जो शुद्धि के बहाने आया था।

प्राण त्यागने से पूर्व हुतात्मा प. लेखराम की अन्तिम प्रार्थना-इच्छा थी—
'आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का काम कभी बन्द न होने पावे।"

हथियारो के साए मे भी जाकर पजाब के आर्यों का मनोबल बढाने का साहस तक न करने वाले आर्य नेता क्या अमर शहीद प. लेखराम के जीवन से कोई प्रेरणा ले सकेंगे?

—बीरेन्द्र आर्य

आर्य समाज बचाओ

— डा पुष्पावती —

आर्य पुनर्गठन के 15 जनवरी के अक मे चुभती हुई प्रेरणा छपी कि आर्यसमाज को बचाओ। पढकर एक पीडा हुई, और आर्य समाज का अतीत और वर्तमान साकार हो उठा, और उसके साथ ही दिखाई दी दूर-क्षितिज से उठती हुई एक काली घटा जो आर्यसमाज रूपी सूर्य को धीरे-धीरे आच्छन्न करती हुई आगे बढ रही है।

आर्यसमाज का वर्तमान गति शैथिल्य सबको चिन्तित कर रहा है। पर इसका मूल भी खोजना चाहिये। बुराइया अनेक हैं, परन्तु इनके मूल पर प्रहार करने से सभी एक साथ निरस्त हो सकेंगी। मेरे विचार मे मूलभूत एक ही कारण है कि आर्यों मे भौतिकतावादी दृष्टिकोण की प्रधानता हो रही है, जिसके कारण वे ऊपरी चमक दमक को ही वास्तविक उपलब्धि मान बैठे हैं, जो जितना भौतिक आडम्बर फैला सकता है वह उतना ही यहा पर शक्तिशाली हो रहा है। ऐसी अवस्था मे ब्रह्म तेज, त्याग, वेद ज्ञान सेवा सादगी, निराभिमानता, सत्यप्रियता आदि गुणो के मूल्यांकन का प्रश्न ही कहा उठता है? भौतिकतावादी दृष्टिकोण का प्रमाण यही है कि आज सन्यासी को भी बढिया वस्त्रो की आवश्यकता रहती है, कार टैक्सी का उपयोग उसके महत्व का मापदण्ड हो गया है। बैंक बैलेन्स उसके लिए आवश्यक है। सन्यास लेने के पश्चात् भी घर मे रहना उचित है या नही, यह अभी निर्णायक स्थिति मे है।

आध्यात्मिक आश्रमो तथा शिक्षा स्थलो मे जब तक सुख सुविधा के उपकरण स हीत न हो तब तक उनका महत्व स्वीकृत नही होता।

उपदेशक, विद्वान सभी के लिए चमक दमक आवश्यक शत हो गई है, जनता की दृष्टि मे महत्वपूर्ण जचने के लिए। यह क्यो हुई? कैसे हुई? यह पृथक् विवेचनीय विषय है पर वास्तव मे यह स्थिति है। इसी की भूल-भूलैया मे समाज उलझ रहा है। वैभव का सग्रह इस युग मे बिना बेईमानी के हो नहीं सकता। सेठो का धन-वैपुल्य किस झूठ, छलकपट एव शोषण के बल पर है, सब जानते है परन्तु उसी धन की पूजा होती है और उसे दान मे रुपये लेने के लिए सतोगुणी व्यक्तियो विद्वानो, उपदेशको, सन्यासियो समाज के अधिकारियो आदि को क्या-क्या विडम्बनायें करनी पडती है यह सर्वविदित है जिसका दुष्परिणाम सब बुराइया हैं जो आर्यसमाज के भविष्य को धूमिल कर रही है। समाजो मे गुटबन्दी का राक्षसी खेल चल रहा है। अनैतिक व्यक्ति पनप रहे हैं। सभी समाजो के निर्वाचन भ्रष्टाचार के उदाहरण बन रहे हैं। शिक्षा सस्थायें दयानन्द की आत्मा से दूर जा रही है। आध्यात्मिक साधना स्थलो मे बनावटीपन आ रहा है और इस सब मे वे मुट्ठी भर लोग बुरी तरह पिस रहे है, जो इस सब छलछन्द से दूर रह कर समर्पित भाव से ऋषि ऋण उतारने मे सलग्न है। आर्यों की करनी और कथनी मे कितना भयावह अन्तर आ रहा है, यह भुक्तभोगी ही जानता है। वचन देकर झुठलाना तो बायें हाथ का खेल हो रहा है। जिसकी वाणी सच्ची नही, उसका अन्त सच्चा कैसे हो सकता है? हमारा झूठ-मिथ्या हम खा रहा है, निगल रहा है और हम बेखबर खाई खन्दक की ओर चल रहे है।

किसी भी तरह इस झूठ अनृत के घेरे को तोडना होगा, जिसने चमचमाती कारो के नीचे किसी सच्चे तपस्वी की पदगति को रौद दिया है, जिसने झूठी आत्म श्लाघा के उदघोषो मे किसी निरीह कण्ठ की वेद ध्वनि को अनसुना कर दिया है, जिसने ढोगी की माया मे कर्मयोगी की कर्मशक्ति को अवरुद्ध कर दिया है और भी न जाने क्या-क्या अनर्थों की सृष्टि कर रखी है। कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि जो व्यक्ति खूब ऊँचे ऊँचे स्वर मे सुन्दर-सुन्दर उद्घोष कर सके, आत्म प्रशसा का नाद कर सके, मिथ्या आश्वासन दे सके ऐंठ कर चल सके वाणी का क्रय विक्रय कर सके, नैतिकता का बाना पहलाकर अनैतिक कुकृत्या को छिपा सके, वाग्जाल मे जनता को उलझा सके, वह पूजनीय, माननीय है। जानते हुए भी लोग उसको प्रश्रय देते हैं। यह क्या रहस्य है? क्या तमाशा है? पचयज्ञ का पालन होता है या नहीं पर आर्य ग्रही है तथा समाज अधिकारी भी है, बच्चो को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराया है या नही पर गुरुकुल का प्रबन्धक है वेद का स्वाध्याय किया है या नही पर वेद का व्याख्याता है। साधना का प्रकाश पाया है या नही पर साधना शिविर का सचालक है। सन्यास की साधना आई है या नही, पर सन्यासी वेष म है। इत्यादि।

आर्यसमाज को बचाने के लिए यह अत्यावश्यक है कि हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम क तथ्य को आर्यसमाज-आर्यजनो क हृदयगम कराया जाये। तपश्चर्या की ओर आर्यों का ध्यान आकृष्ट कराया जाय। सरलीकरण के नाम पर विलासिता को प्रश्रय दिया जा रहा है वह बन्द हो। प्राय देखने म आता है कि जो पौराणिक लोग निष्ठा से मन्दिरो म जल चढाने या दर्शन करने जाते है शीत ऋतु म भी गगा स्नान करते है परन्तु वे ही व्यक्ति आर्यसमाज के क्षेत्र म आने पर सत्सग के लिए समय नही निकाल पाते। बाहर जाकर क्या होगा? मन म ही गगा है—या घर की जिम्मेदारिया हैं इत्यादि बहाने लगाकर हम लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं यह हमारी सुविधावादी दृष्टिकोण का ही दुष्परिणाम है। हम कष्ट स बहुत घबराते हैं, यही कारण है कि अनेक पिछडे हुए क्षेत्रो मे ईसाई प्रवेश कर रहे है। हम वहा जाने मे डर रहे है और भोलीभाली जनता को विदेशी मिशनरियो के चगुल म फसते हुए टकुर टकुर देख रहे है। अनेक आर्य सस्थायें बर्बाद हो रही हैं, पर कष्ट व असुविधा के कारण उनके समीप जाकर उनकी रक्षा नही कर पा रहे है।

इस भौतिकतावादी दृष्टिकोण और तज्जनित विलासितामयी प्रवृत्ति के पाश से कैसे छुटकारा हो, यह अनिवार्य रूप से विचारणीय तथा करणीय भी है, यदि आर्यसमाज को बचाना है। इस पर हम समर्थ व्यक्तियो के सुझाव तथा सुनिश्चित कदम की प्रतीक्षा कर रहे हैं। स्मरण रहे नैतिकता का दीप बिना त्याग व तपश्चर्या के प्रज्वलित नही हो सकता और बिना नैतिकता के कोई समाज या देश जीवित नही रह सकता।

पता—आचार्या, मातृ मन्दिर
कन्या गुरुकुल, वाराणसी

यज्ञ-कुण्ड जागो, आहुति लो

—लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'—

सकल्पो के बने खण्डहर, सस्कृतिया के राज महल म।
सूरज के घर घिरी अमावस, रश्मि-रथी तम के दल-दल मे।
कालजयी धमकाये जाते, मर-पिपीलिका की फौजो से,
नीलकण्ठ कतराते दिखते, उठी हलाहल की मौजो से।

'स्वर्गादपि गरीयसी धरती पर होता, अभाव का नर्तन।
देवो की क्रीडा का आँगन, दैत्यो के कृत्यो का साधन।
मत्रा-गु जित, अन्तरिक्ष मे फैला कल-युग का कोलाहल
श्वास-श्वास अवरुद्ध घुटन से, माँग रही मानवता सम्बल।

आह-कराह विवशताओ से, डसी हुई जीवन की तानें।
चेहरो पर उदासिया उभरी राह भूल गयी मुस्कानें।
एक अनिश्चित भाग-दौड के बीच फँसा मानव का जीवन
अपना खोया सुख तलाशते भरे-भरे लगते है, सूनापन।

चहल-पहल की चकाचौंध मे हम अपनी ममतायें भूले।
उसी डाल को काट रहे हैं जिस पर डाल रहे है झूले।
युद्धो के बादल ऋषियो की कुटियो पर गडगडा रहे है
अस्थि दान की युग वेला मे, युग दधीचि थरथरा रहे है।

कल्पवृक्ष का देश, क्षुधा की महाज्वाल मे धधक रहा है।
कामधेनु के घर म कान्हा दुग्ध-बूँद को सिसक रहा है।
तमसा-तट से चीत्कार का कोई छन्द नही जगता है
शान्ति-वधिक की निर्ममता को कोई शाप नही लगता है।

यज्ञ कुण्ड जागो आहुति लो, चरम पतन की महानाश की।
मगल मधु वर्षो पर्जन्यो धारायें बरसो प्रकाश की।
सम्बल-हीन, आस्थाओ को अपने गौरव की ममता दो
अमृत-घट साधे, सस्कृति को फिर से जगाने की क्षमता दो।

विश्वासो को अभय दान दो, प्राणो म जी उठें ऋचायें।
माता सतयुग लौट न जाये, लेकर चन्दन की समिधायें।
युग का विश्वामित्र कह रहा, राम उठो सन्ताप मिटाओ।
युगपिनाक तोडना ठहरकर पहले शिव का चाप चढाओ।

पत्र बोलते हैं—

आर्यसमाज अपना विशुद्ध रूप धारण करे

मान्यवर आचार्य दत्तात्रेय आर्य

सादर नमस्ते ।

'आर्य पुनर्गठन' का 29 फरवरी का अंक मिला। उसके मुख पृष्ठ पर मुद्रित आपका लेख पढ़ा। मेरी जो धारणा बनी है वह मैं निवेदन करता हूं।

मैं आपसे पूर्णतया सहमत हूं कि हमारे राष्ट्र मे जितनी कुरीतिया (धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र मे) इस समय व्याप्त हैं तथा भविष्य मे उत्पन्न हो सकती हैं, उन सबका उन्मूलन केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। परन्तु इस महान कार्य को करने की सामर्थ्य आर्यसमाज मे तब ही उत्पन्न हो सकती है जब वह अपना विशुद्ध रूप धारण कर ले।

—बाबूलाल आर्य,
चित्रगुप्त गंज, लश्कर,
ग्वालियर।

आर्य समाज बनाम संघ

महोदय,

आर्य पुनर्गठन दिनाक 15 फरवरी 1988 के अक मे नरेन्द्रपाल सिंह भदौरिया ग्वालियर का पत्र पढने से ऐसा लगा कि या तो वह सच्चाई को छुपाना चाहते हैं या फिर सच्चाई से अनभिज्ञ हैं।

मैं श्री भदौरिया जी को बताना चाहता हू कि मैंने अपने जीवन का बहुत बडा भाग राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ मे बिताया है।' अनेक स्थानो पर विस्तारक के रूप मे भी कार्य किया है। इस नाते मैं अधिकार पूवक कह सकता हू कि केवल प्रात स्मरण मे नाम लिख देने मात्र से सघ की आर्य समाज मे निष्ठा स्वीकार नही की जा सकती।

प्रात स्मरण के अतिरिक्त मैं अनेक उदाहरण दे सकता हूं, जहा ऋषि दयानन्द के नाम का विरोध किया गया। मुझे याद है कि अबोहर मे जब सघ द्वारा एक स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की जाने लगी तो उसके नाम पर विचार होने लगा। प्रो राजेन्द्र जिज्ञासु ने दयानन्द स्वाध्याय मण्डल नाम रखने का अनुग्रह किया। इस पर बैठक के सयोजक तथा सघ के तात्कालिक प्रचारक ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वह तो साम्प्रदायिक था। इसी प्रकार के और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। यदि सघ से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकाओ को देखा जाय तो भी आर्य समाज की अवहेलना स्पष्ट दिखाई देती है। कभी कभार महर्षि दयानन्द को याद अवश्य करते हैं किन्तु वह भी अन्य पौराणिक महापुरुषो के मुकाबले नगण्य ही, केवल आर्य समाज के नाम का लाभ उठाने के लिये। न कि आर्य समाज को सम्मान देने के लिए।

[illegible]त डाक्टर भारतीय जी ने जो भी इस सम्बन्ध मे लिखा वह सत्य है। मैं मेरठ (मोनीगज) के श्री विश्वबन्धु के प्रकाशित पत्र से पूर्णतया सहमत हूं कि सघ सदैव ही आर्य समाज व स्वामी दयानन्द सरस्वती की उपेक्षा करता है।

अशोक आर्य पत्रकार,
[illegible] (पंजाब)

केवल वैदिक मान्यताओं पर आधारित लेख दें

'आर्य पुनर्गठन' पत्र वास्तव मे बहुत ही अच्छा पत्र है। सम्भव है यह आर्यसमाज के पुनर्गठन का मार्गदर्शक बन सके। आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप कुछ समाप्त सा होता जा रहा है। आर्यसमाजी अपने विश्वकल्याणकारी सिद्धान्तो से विमुख होते जा रहे हैं।

यदि आप आर्यसमाज को बचाना चाहते हैं तो अपने पत्र मे विशुद्ध रूप से वैदिक धर्म, आर्यसमाज तथा महर्षि जी के सिद्धान्तो व मान्यताओ पर आधारित अधिक से अधिक लेख दीजिये।

—जगदीशचन्द्र वसु
पानीपत।

मांस मानव आहार नहीं है

दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक 26 फरवरी 1988 [illegible] 'प्राचीन भारतीय मांसाहारी थे' आकार मे छोटा किन्तु [illegible] मे 'झूठा' समाचार पढ़कर मन उद्विग्न हो उठा। मैसूर के द्वितीय [illegible] सम्मेलन मे श्री के टी आचार्य द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र मे जो यह [illegible] व असामयिक बात कही गई इसीलिये उसे प्रचार मिल गया। मानव सभ्यता ने जब से होश सम्भाला तब से निरन्तर मांसाहार को घृणित व त्याज्य मान कर इसका विरोध किया जाता रहा है। ससार के पुस्तकालय में प्रतिष्ठित सर्वप्रथम ग्रंथ वेद इसके प्रमाण हैं, जिनमें कठोरतापूर्वक मांसाहार का निषेध किया गया है। करोड़ो वर्ष पूर्व मूल वैदिक साहित्य से पुरानी कौनसी सभ्यता आचार्य जी बता सकते हैं।

खुदाई मे प्राप्त पत्थरो के उपकरण मांसाहार की पुष्टि नहीं करते, प्रत्युत हिंसक वन्य पशुओ से रक्षा के सकेत करते हैं। आज के अन्य उपकरण व आग्नेय अस्त्र तो अत्यन्त सहायक हैं, उन्हें मांसाहार के साधन के ही रूप मे नही प्रयोग किया जाता है, बचाव व सुरक्षा म भी प्रयोग किया जाता है। वर्तमान मे तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मांसाहार को त्याग कर शाकाहार की प्रेरणा के लिए सगठन कार्यरत हैं, किन्तु आचार्य जी का यह [illegible] प्रचार निष्प्रभावी रहेगा, क्योंकि धर्म-संस्कृति से पृथक् मानव स्वास्थ्य हेतु भी मांसाहार एव अण्डाहार अनुपयुक्त ठहराये जा रहे हैं।

—श्रीमती दर्शन देवी भारद्वाज,
एफ–42 मानसरोवर कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ।

संगठन और (शेष पृष्ठ 1 का)

पर विचार किया गया और इस विषय से सम्बन्धित विवादो और कठिनाइयो पर विचार करने के बाद किसी प्रकार के संघर्ष मे पड़ने की बजाय यह सर्वसम्मत निश्चय किया गया कि वर्तमान सगठन और संस्थाओं की यथास्थिति स्वीकार करके उन सबसे सहयोग प्राप्त किया जाय और इस प्रकार नारी उत्पीडन विरोधी तथा अन्य इस प्रकार के आन्दोलन जिनका आर्य समाज के उद्देश्यों और मान्यताओ से सम्बन्ध है, उन्हें व्यापक जन समर्थन के आधार पर कार्यान्वित किया जाय।

बीच का मार्ग उपयुक्त

मैं समझता हू कि वर्तमान स्थिति मे बीच का यह मार्ग और विकल्प आर्यसमाज की दृष्टि से भी सर्वथा उपयुक्त और स्वागत योग्य [illegible] भी स्वामी अग्निवेश जी का पूर्व अनुभव, और योग्यता [illegible] पृष्ठभूमि से सम्बन्धित रही है। इसलिए इस प्रकार के किसी [illegible] का सचालन और नेतृत्व करने के लिए उनसे अधिक उपयुक्त कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। आर्य जगत् को उनके प्रस्ताव का स्वागत करना चाहिए और उनके द्वारा सचालित ऐसे प्रत्येक आन्दोलन मे तन, मन, धन से उत्साहपूर्वक सहयोग देना चाहिए, जिससे आर्यसमाज की लोकप्रियता, शक्ति और प्रभाव मे वृद्धि होती हो अथवा जो ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज [illegible] किसी कार्यक्रम के अनुकूल हो।

पुनर्गठन भी आवश्यक

दूसरी ओर मेरे जैसे जो व्यक्ति इच्छा, अनिच्छा या परिस्थितियों के कारण आर्यसमाज के वर्तमान संगठन से जुड़े [illegible] भी उसके वर्तमान संगठन के ढाचे मे आवश्यक सुधार करने के प्रयत्न को जारी रखना चाहिए। यह कितना कठिन और विरोधी स्वार्थों के कारण उलझा हुआ है, यह मेरे जैसे भुक्तभोगी से अधिक शायद और कोई नही जानता। फिर भी जैसा मैंने निवेदन किया है कि आर्यसमाज जैसा कोई क्रांतिकारी सगठन बिना सामयिक आन्दोलन किए वर्तमान स्थिति मे जीवित, जाग्रत नही रह सकता है, और न ही कोई बड़े से बड़ा आन्दोलन बिना चिरस्थायी सैद्धान्तिक और संगठनात्मक आधार के सफल हो सकता है। इस प्रकार आर्यसमाज का पुनर्गठन और उसके तत्त्वावधान मे होने वाले आन्दोलन दोनो एक दूसरे के आवश्यक अंग ही नही अपितु पूरक और सहायक हैं।

***

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलोधर्ममूलम
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

।। ओ३म् ।।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम
सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 बुद्धवार 30 मार्च, 1988
अक 6 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

चैत्र शु 12 सवत 2045
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

डी ए.वी. हाई स्कूल अजमेर का

स्वाधीनता आन्दोलन में अनुकरणीय योगदान

— उत्तरप्रदेश के भू. पू. गृह मत्री श्री जगनप्रसाद जी रावत के सस्मरण —

1 1919 में 12 दिसम्बर को देश मे ब्रिटिश सरकार ने प्रथम महायुद्ध के बाद विजय दिवस मनाया था। उसका नाम उन्होने आवर डे (our day) रखा था। मैगजीन के सामने शहर भर के स्कूलो से छात्र इकट्ठे किये गय थे और सबको एक-एक रूमाल जिस पर बादशाह की तस्वीर छपी थी दिया गया था। इस रूमाल में बूदी के लड्डू जिनका वजन लगभग एक सेर था रखकर सब छात्रो को बाटा गया था। जलियावाला काण्ड हो चुका था। उस समय डी ए वी स्कूल के हम सब छात्र मिलकर एक साथ नारे लगाने लगे। "क्या छात्रों के खून मे सने हुए लड्डू हम लोग खायेंगे?" उत्तर मिला "कभी नही।" हम लोगो ने फिर नारे लगाय। 'इन लड्डुओ को सडक पर फेंक दो' और सडक पर लड्डुओ की चादर सी बिछ गयी और सभी छात्र महात्मा गाधी की जय, भारत माता की जय के नारे लगाते हुए अपने घरो को वापस चलेगये।

2 1920 ई मे ईदगाह मे राजपूताना राजनैतिक कान्फ्रेन्स थी। मौलाना शौकत अली मुख्य अतिथि थे। राय साहब खरवा स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। नगी तलवार हाथ मे उठाकर उन्होंने स्वागत भाषण दिया था। मैं उस समय आठवी कक्षा मे था। हम सब छात्रो ने अपनी कक्षायें छोडकर सामूहिक रूप से कान्फ्रेन्स में भाग लिया था।

3 1920 मे अपने स्वर्गवास से पहले एक बार लोकमान्य तिलक अजमेर आये थे। हम डी ए वी स्कूल के छात्र रेलवे स्टेशन उनके



श्री जगनप्रसाद रावत

स्वागत के लिए उपस्थित थ। उनके स्वागत के लिए लाई हुई गाडी म जुते हुए घोडे हम लोगो ने खोल दिये थे और स्टेशन से केसरगज तक छात्र स्वय उस गाडी को खीचकर लाये थे।

4 1921 मे गाधी जी साबरमती जाते हुए अजमेर स्टेशन पर कुछ समय के लिए रुके थे। डी ए वी स्कूल के छात्रो ने कक्षायें छोडकर स्टेशन पर आकर उनका स्वागत किया था और गांधी जी के आह्वान पर हम लोगो ने अपने-अपने विदेशी कपडे उतार कर प्लेट फार्म पर उसकी होली जलाई थी। और सब कक्षाओ के विद्यार्थियो ने सामूहिक रूप से गांधी टोपी पहन कर स्कूल मे आना प्रारम्भ किया था। स्कूल प्रारम्भ होने पर प्रार्थना के समय सफेद टोपियां ही दिखाई देती थी।

5 1921 ई मे गांधी जी के स्कूल कालेज छोडने के आह्वान पर डी ए वी स्कूल के छात्रो मे से बहुतो ने राष्टीय स्कूल जो श्री गोरीशकर भार्गव जी की धमशाला मे चलता था वहाँ जाकर पढना शुरू किया था। हमारे स्कूल के मास्टर रतनलाल जी उसके प्रधानाचाय थे। आन्दोलन ढीला पडने पर हमारे प्र म स्व श्री विश्वम्भर दयाल भागव जी ने सब छात्रो को उनकी अपनी-अपनी कक्षा मे वापस ले लिया था और सरकार के आदेश के बावजूद भी छात्रो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की थी।

6 उन्ही दिनो हमारे स्कूल मे प्रतियोगितायें (Debates) हुआ करती थी। एक बार हम लोगो ने विषय रखा 'आय समाय और असहयोग कायक्रम बहुत अच्छा चला। हम लोगो ने सत्यार्थ प्रकाश के वाक्यो को उदधृत करके यह सिद्ध किया कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के अनुसार प्रत्येक आय समाजी को असहयोग आन्दोलन म भाग लेना चाहिये।

7 1927-28 की घटना तो दत्तात्रेय बाब्ले व कृष्णराव बाब्ले को (बाब्ले बन्धु इसी स्कूल के भू प छात्र हैं।) पूरी तरह याद होगी जब साइमन कमीशन का बायकाट हुआ था। उस समय स्कूल के छात्रो ने अपनी कक्षायें छोड़कर 'साइमन गो बैक के नारे लगाये थे। हमारे **स्कूल के अधिकारियों ने सरकारी आदेश के बावजूद भी केवल अनुपस्थिति लगाकर एक आना प्रति विद्यार्थी जुर्माना किया था और कोई सजा नहीं दी थी।** 1927-28 म दिल्ली मे एक आर्य कान्फ्रेन्स भी थी। 1927 का अन्त हो या 1928 का प्रारम्भ ये मुझ याद नही है। कुछ छात्र भी उस कान्फ्रेन्स मे भाग लेने गय थे। साथ ही स्कूल की हाकी टीम का सेन्ट स्टीफन कालेज की टीम के साथ मैच भी तय कर लिया गया था। मैच तो खेले ही लेकिन अधिक समय कान्फ्रेन्स के कार्यक्रम मे दिया। आय कान्फ्रेन्स के अवसर पर दिल्ली शहर मे एक जुलूस निकालना शामिल था लेकिन सरकार ने जुलूस के खिलाफ धारा 144 लगा दी। इस पर **कान्फ्रेन्स मे बहस हुई और तय हुआ कि जुलूस नहीं निकलेगा लेकिन हमारे डी ए वी स्कूल के छात्रो मे और आर्य समाज के कार्यकर्ताओ ने जिसमे स्व जियालाल जी भी शामिल थे और** वे खादी भी पहनते थे ने बहस के दौरान अपनी राय धारा 144 को तोडने के पक्ष म दी थी। अजमेर मे ये सब बातें व घटनायें **डी ए वी स्कूल के** छात्रो तक ही क्या सीमित रही हालाकि और स्कल के छात्रो ने भी छिटपुट सख्या मे साथ दिया। **ये सब महर्षि दयानन्द के सिखाये रास्ते का ही छात्रों के मन पर प्रभाव पड़ा, उसी का परिणाम था।**

इसके अलावा 1942 के आन्दोलन म भी डी ए वी स्कूल के छात्रो का सहयोग रहा था जिसकी जानकारी दत्तात्रेय एव कृष्णराव आदि को अधिक है क्याकि मैं उस समय उत्तर प्रदेश मे था और 31 मार्च 1942 को ही गिरफ्तार कर लिया गया था और 1945 म गाधी जी व

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य
प्रधान संपादक : रासासिंह
संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य
☎ कार्या. 21010

दो मुक्तक

— लालसिंह भदौरिया "सौमित्र" —

(1)

रात घिर आयी है तो क्यो घबराता है।
यदि काली घटा छायी है तो क्यो कतराता है।
अरे पग रुक रहे है क्यो, क्या तुझे ज्ञात नही
कि रात की राह से ही तो प्रभात आता है।

(2)

हाथ पर धर हाथ बैठने से हार होती है।
बाहो की बल्ली से नाव पार होती है।
पांव जब उठते अडिग विश्वास लिए राही के
तो राह देने को क्षितिज मे दरार होती है।

सम्पादकीय—

"शंकराचार्य होश में आओ, धर्म का यूं न मान घटाओ"

आज की बीसवी शताब्दी मे भी पुरी के जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी निरजनदेव के तीर्थ अभी भी अपने को मध्यकालीन पौराणिकता तथा सकीर्णता के मकड जाल से मुक्त नही कर पाये हैं। सुप्रसिद्ध समाजसुधारक एव भारतीय सामाजिक एव धार्मिक पुनर्जागरण के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहस, स्वामी श्रद्धानन्द महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा गाधी, अम्बेडकर आदि ने जिन सामाजिक कुरीतियो, अन्धविश्वासो तथा धार्मिक रूढियो का मूलोच्छेदन कर एक परिष्कृत एव सुधरे हुए प्रगतिशील समाज के निर्माण का जो सुखद स्वप्न सजोया था और जिन सुधारो के कारण हिन्दू धर्म विश्व के समस्त धर्मों मे अपना मस्तक ऊचा रखकर स्वाभिमान तथा गौरव का अनुभव करता है वह सभवत पुरी के शकराचार्य को नही भाता है और वेदो के पौराणिक भाष्यकारो तथा मध्यकालीन दासताजन्य दकियानूसी पुरातन प्रथाओ का अन्ध समर्थन कर पुन सती प्रथा, जन्मगत जाति प्रथा, छूआ-छूत, पर्दा प्रथा, नरबलि, स्त्रियो को शिक्षा मे वचित रखना आदि भ्रम जाल के निबीड अन्धकार म ढकेल देना चाहते हैं। समस्त देश के जागरूक महानुभाव, बुद्धिजीवी पत्रकार, सामाजिक सस्थाए प्रगतिशील धार्मिक सगठन, हिन्दू धर्म के नेतागण तथा नई पीढी के लोग जिन पुरातन रूढियो, अन्ध विश्वासों सामाजिक कुप्रथाओ को छोडकर एक सगठित समाज का निर्माण करने के लिए जिन वैज्ञानिक एव तर्कसगत विवेक युक्त बातो का समर्थन करते हैं वही शकराचार्य अपने 'धर्म मच' के झण्डे तले अपनी ढफली पर अपना राग अलाप रहे हैं। भारत के सर्वोच्च न्यायालय के आदेशो के विपरीत उन्होंने मेरठ के पास पुरा में आयोजित समारोह मे सती प्रथा की महिमा को तोड-मरोड कर मण्डित करने का दुस्साहस किया है तथा नेपाल के विश्व हिन्दू सम्मेलन मे अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उदघोषित "जाति प्रथा कर्मगत है, जन्मगत नही" का जिस ढग से उपहास किया है वह न केवल आर्यसमाज के लिए एक चुनौती है अपितु समस्त देश, प्रशासन और व्यवस्था का भी मखौल है। इससे हम सब की आँखें खुल जानी चाहिए।

"कौओ के काटने से बैल नही मरा करते" परन्तु फिर भी उस समारोह मे महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये वेद भाष्यो के सम्बन्ध में भी विचार विमर्श कर कुछ 'प्रलाप और वितण्डावाद किये जाने की चर्चा है जो आर्य जगत के लिए चिन्तनीय एव विचारणीय है।

उन्होने स्वामी अग्निवेश जी का नाम लेकर शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार करने और शास्त्रार्थ करने का आह्वान किया है तो समस्त आर्य समाज को इस चुनौती को स्वीकार कर सगठन का परिचय देते हुए आर्य विद्वानो को सामने आना चाहिये। भले ही शकराचार्य मिलने से कतरायें, अस्वस्थता का बहाना बनायें परन्तु उन्हे मुह तोड जवाब देना होगा, पोगापथियो की धज्जियां उडानी होगी और दूषित मनोवृत्ति वाले दकियानूसी विचारो के जनक तथा घोर प्रतिक्रियावादी शकराचार्य का मुह तर्क तीरो से बन्द करना अत्यावश्यक है।

नन्दिता की बलि

देश के सामाजिक जीवन पर धर्म के नाम पर पिछले दिनो एक और कलक लग गया जब महाराष्ट्र के ठाणे नामक नगर मे हसती खेलती मासूम अबोध बालिका को आदि माता शक्ति के मन्दिर के पुजारी ने चोरी छिपे उस बालिका का देवी को प्रसन्न करने के नाम पर नवरात्रा के दौरान हत्याकर नरबलि का काण्ड कर दिया और उस लाश को पवित्र मन्दिर के आँगन मे दबाकर अपनी आत्म तुष्टि की। बाद मे दो-तीन दिन की जाँच-पडताल के बाद बदबू आने पर पुलिस ने उस शव को निकाला और उस धर्मध्वजी नरबलि काण्ड के हत्यारे पुजारी को गिरफ्तार किया। यह देश इन पौराणिक जालो मे पडकर अन्ध-विश्वासो का शिकार होकर कब तक निर्दोषो की हत्या को सहन करता रहेगा। **धिक्कार है ऐसे पुजारी को और लानत है ऐसे अन्ध विश्वासों को।** कौन सुनेगा उस अबोध नन्दिता की चित्कार को? कौन करेगा उद्धार? उस बालिका के मां-बाप भाई, बहनो परिजनो पर क्या गुजर रही होगी?

खुदा के बन्दो को देखकर, खुदा से मुनकिर हुई है दुनियाँ।"
जिस खुदा को ये मानने वाले है, वह खुदा कोई अच्छा खुदा न होगा।'

—रासासिंह

वेदामृत—

हजार धार का प्रवाह

इन्द्राय पवत मद सोमो मरुत्वते सुत।
सहस्रधारा अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायव ॥10॥

(सामवेद, पावमान पर्व)

(सोमो मरुत्वते सुत) सोम-रस की पैदायश प्राणो के पति के लिए हुई है। (मद इन्द्राय पवत) यह मस्ती इन्द्रियो के राजा के लिए एक पवित्र प्रवाह के रूप मे बह रही है। (सहस्राधार अतिमव्यम् अर्षति) यह हजार धार का प्रवाह रोगटे-रोगटे से पार हो रहा है। (ई) अरे! (आयव त मृजन्ति) आती-जाती तरगें इसका सशोधन करती है!

सोम-रस एक नशा है—अत्यन्त आह्लाद-कारक, अत्यन्त हर्षोत्पादक नशा। इसका पान करने के लिए-शक्ति चाहिये। श्वास मे शक्ति हो इन्द्रियो म बल हो, तब इस रस का स्वाद लिया जा सकता है। निर्बलो के लिए यह नशा नही निरिन्द्रियो के लिए यह मस्ती नहीं। भक्ति बलवानो का नशा है। प्रभु के भक्त की फकार से पापी ससार थर्रा उठता है, पाप का कलेजा काप जाता है। भय डरकर भाग जाता है। प्रभु का भक्त सयमी होता है, इन्द्रिया उसके इशारे पर नाचती है। वह दास नहो, आर्य होता है।

जब प्रभु की भक्ति का नशा सहस्र-धार होकर रोम-रोम से बह निकलता है तब भावना के उस परम पुनीत प्रवाह के क्या कहने? इस प्रवाह को और किस चलनी में छानना? सात्विक रोमाच स्वयं एक चलनी है—चिति की पवित्र भावना की चलनी। जो आता-जाता भाव इस चलनी मे से गुजर गया वह स्वय पवित्र हो गया। प्रभु की भक्ति का सहारा लेकर राष्ट्र-भक्ति, देश भक्ति विश्व-भक्ति सब अत्यन्त पवित्र हो जाती हैं। उनमें आध्यात्मिकता की लहर भी दौड जाती है। वे पार्थिव भावना न रह कर एक दिव्य साधना बन जाती हैं। प्रभु-भक्त को राष्ट्र राष्ट्र नहीं, विश्व विश्व नहीं ये सब स्वय प्रभु की प्रतिकृतिया प्रतीत होती है। वह दरिद्रो मे दरिद्र नारायण के, शिशुओ मे बाल लीला-धर के, अबोध बालाओ मे "मातृ-भक्ति" के दर्शन करता है। ये मूर्तिया आने जाने वाली, क्षण-भर की छायामात्र-सी है। इन की आधार-भूत वह अमूर्त वात्सल्यमयी जगदम्बा है जो बूढ़ा भी है और बाला भी, जो नित नई है और हमेशा पुरानी। वह ध्रुव सत्य है—अविकृत सत्य। सोम के स्तनो का दूध है उसी की आंखो के प्रमाण हैं।

भोले मनुष्य प्रभु भक्ति के रस को देश तथा राष्ट्र की भक्ति मे छानना चाहते हैं। उन की दृष्टि मे प्रभु-भक्ति देश-भक्ति तथा समाज-भक्ति का रूप धारण कर पवित्र होती है। वास्तव मे प्रभु-भक्ति के ये सब सामयिक रूप हैं। और जब तक ये उस के रूप नहों, इन में पवित्रता, ध्रुव निर्मलता नही आती।

— प चमूपति (सोम सरोवर में)

क्रान्तिकारियों के पितामह : श्यामजी कृष्ण वर्मा

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने जहाँ एक ओर पराधीन भारत मे सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में महान सुधारात्मक कार्य किया था, वहीं दूसरी ओर स्वाधीनता की लड़ाई मे भी बढ़-चढ़कर भाग लिया था। आर्यसमाज के जिन प्रमुख व्यक्तियो ने परतत्र भारत की बेड़ियो को काटने मे अपने जीवन का सर्वस्व स्वतन्त्रता की देवी को समर्पित कर दिया था, उनमे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम अग्रगण्य है।

4 अक्टूबर 1857 ई को गुजरात प्रांत की कच्छ रियासत के माण्डवी गाव मे जन्मे श्यामजी को परिस्थिति वश छोटी आयु मे ही अपना गाव छोड़कर अपने पिता के साथ बम्बई आना पड़ा। बालक श्यामजी बड़ी कुशाग्र बुद्धि के थे, किन्तु इनके पिता श्री कृष्ण अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण इनकी समुचित शिक्षा की व्यवस्था करने मे असमर्थ से थे। ऐसे कठिन समय मे ये दैवयोग से सेठ मथुरादास लवजी के सम्पर्क मे आए एव बालक श्यामजी की कुशाग्रता से प्रभावित हो सेठजी ने इन्हे अपने सरक्षण में ले लिया। और आगल विषयो के साथ इनके सस्कृत अध्ययन का भी विशेष प्रबन्ध कर दिया। सेठ मथुरादास जी द्वारा प्रदत्त सुविधाओ का श्याम जी ने भरपूर उपयोग किया एव आधुनिक विषयो सहित उन्होंने सस्कृत मे भी विशेष दक्षता प्राप्त कर ली।

युवक श्याम जी समाज मे व्याप्त पाखड व रूढ़ियो से बहुत खिन्न थे। अतएव सन 1874 ई मे जब स्वामी दयानन्द का बम्बई आगमन हुआ तो उन्होने उनसे भेंट की। स्वामी जी के सुधारवादी विचारो से वे अत्यन्त प्रभावित हुए और उनके भक्त बन गए। ऋषिवर भी श्यामजी की विद्वता से अत्यन्त प्रभावित थे। इसका पता उनके द्वारा श्याम जी को लिखे पत्र के इस अश से चलता है विद्वानो के मान्य, सर्वशोभायुक्त, पाखड खडन मे अभग उत्साही अपनी वाक्य विन्यास शैली से सर्व सज्जनो को प्रमुदित करने वाले पडित श्यामजी कृष्ण वर्मा के लिए अब वैदिक धर्म प्रचार मे लग जाना श्रेयस्कर है।'

इधर श्यामजी स्वामी के निर्देशानुसार प्रचार कार्य कर ही रहे थे कि उन्हे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सस्कृत प्रोफेसर मि मोनियर विलियम्स का निमन्त्रण मिला और मार्च, 1879 के अंत मे श्यामजी इग्लैंड चले गए। आपने वहाँ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे सस्कृत के अध्यापन के साथ बैरिस्टरी की उपाधि भी प्राप्त की। इस विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय स्नातकोत्तर होने का श्रेय आपको ही प्राप्त है।

अपने इग्लैंड प्रवास के दौरान ही श्यामजी को 1881 मे पचम अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के बर्लिन अधिवेशन मे भारतीय प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी अधिवेशन मे आपने अपना विख्यात शोध पत्र 'सस्कृत भारत की जीवित भाषा" पढ़ा था। जिसमे अत्यन्त विद्वतापूर्ण ढग से सस्कृत भाषा को एक जीवित भाषा सिद्ध किया और भारत की राष्ट्र भाषा होने मे समर्थ बताया।

श्यामजी सस्कृत भाषा के अतिरिक्त लैटिन व ग्रीक भाषा के भी अद्वितीय विद्वान थे। उनकी सस्कृत संबंधी योग्यता का लोहा यूरोप के तत्कालीन सस्कृतविदो ने भी माना था। अध्ययन की समाप्ति पर श्यामजी को दिए डा मोनियर विलियम्स ने अपने प्रशसा पत्र मे लिखा कि इस समय यूरोपीय सस्कृतज्ञों मे ऐसा कोई नहीं है जो श्यामजी के तुल्य पाणिनीय व्याकरण का ज्ञाता हो तथा भारत में भी ऐसा कोई पण्डित नही है जो सस्कृत मे अपूर्व योग्यता रखने के साथ लैटिन तथा ग्रीक का उच्चकोटि का ज्ञाता हो।

सन् 1885 में श्यामजी स्वदेश लौटे। परन्तु स्वामी दयानन्द से राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता का पाठ पढने वाले श्यामजी ने अंग्रेजी सरकार की सेवा करना स्वीकार नहीं किया। जब कि स्वदेश लौटने से पूर्व भारत के भू पू वाइसराय लार्ड नॉर्थ ब्रुक ने उन्हे एक प्रमाण पत्र दिया था जिसमें उन्हे भारत मे किसी उच्च राज्य सेवा में नियुक्त करने की सस्तुति की गई थी। यदि श्याम जी चाहते तो इस पत्र का उपयोग कर सकते थे परन्तु उन्होने ऐसा नही किया।

भारत आने पर श्यामजी ने अपना नाम 19 जनवरी 1885 ई को बम्बई हाई कोर्ट मे एक वकील के रूप अकित मे कराया परन्तु। परिस्थितिया कुछ ऐसी बनी कि उन्हे मार्च, 1885 ई मे मध्य भारत की देशी रियासत रतलाम के दिवान पद का कायभार सभालना पड़ा। इसके पश्चात आपने मालवा, मेवाड़ और कठियावाड आदि देशी रियासतो मे भी दीवान पद पर काम किया। और इन्ही रियासतो मे रहकर श्यामजी ने निकट से देखा कि किस प्रकार अंग्रेजी सरकार भारतीयो के राजनैतिक और समाजिक अधिकारो का हनन कर रही है। स्वामी दयानन्द की राष्ट्रवादी शिक्षाओ ने श्यामजी के हृदय मे जो भाव भरे थे इन परिस्थितियो ने उन्हे और भी दृढ कर दिया। और देश को स्वतन्त्र कराने का पुनीत ध्येय अपने हृदय मे सजोये 1897 ई मे वे इग्लैड प्रस्थान कर गए।

इग्लैंड पहुचकर श्यामजी अपने स्वदेश-मुक्ति के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जी-जान से जुट गये। पराधीन भारतीयो के मन मे स्वतन्त्रता के भाव उत्पन्न करने के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए उन्होने जनवरी 1905 ई मे दि इण्डियन सोसोलोजिस्ट नामक अंग्रेजी मासिक पत्र का प्रकाशन किया। पत्र के प्रत्येक अक मे अंग्रेजी सरकार के दमनपूर्ण रवैये की आलोचना की जाती थी तथा भारतीयो को निरकुश विदेशी सरकार का दृढता से मुकाबला करने की प्रेरणा दी जाती थी। पत्र के द्वितीय अक मे ही आपने लिखा कि वर्तमान भारत मे विद्यमान बेईमानी, धोखाधडी पाखण्ड, झूठ तथा अन्य प्रकार की सभी बुराईयोके जन्म का श्रेय विदेशियो का निरकुश तथा अत्याचार परिपूर्ण शासन को है। इसी पत्र के सितम्बर1908ई के अक मे उन्होने बारूद का आचारशास्त्र और भारत मे ब्रिटिश तानाशाही' नामक अपने निबन्ध मे लिखा कि ब्रिटिश सरकार के अत्याचारो का प्रतिकार करने के लिए यदि भारतीय युद्ध की घोषणा भी करते हैं तो वह अनुचित नही है।

श्यामजी जीवन भर भारत की स्वतन्त्रता के लिए उद्योग करते रहे। इण्डियन होम रूल सोसाइटी व इण्डिया हाउस की स्थापना भी इन्होने स्वदेश की स्वतन्त्रा को दृष्टिगत रखते हुये की थी और जिसे केन्द्र बनाकर भारतीयो मे स्वदेश भक्ति, आत्म गौरव की रक्षा के भाव फूके थे। इण्डियन होम रूल सोसायटी का स्पष्ट घोषित मुख्य उद्देश्य था भारत को स्वराज्य दिलाना। यह भी उल्लेखनीय है कि इण्डिया हाउस मे रहकर स्वात यवीर सावरकर को अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियो को सचालित करने के लिए आश्रय भी मिला था।

वस्तुत यह सच है कि श्यामजी ने स्वय हाथ मे शस्त्र लेकर आजादी के लिए सघर्ष नही किया था। उनकी भूमिका केवल एक ऐसे आचार्य के रूप म ही रही थी जो केवल सिद्धान्तस्थापक था। फिर भी सेनापति बापट, लाला हरदयाल सावरकर आदि क्रान्तिकारियो के निर्माण म उनका विशेष हाथ था।

श्यामजी भारत ही नही अपितु अन्य सभी पराधीन देशो की भी स्वतन्त्रता के पक्षधर थे। उल्लेखनीय है कि टर्की के क्रातिकारी नेता मुस्तफा कमालपाशा के लदन आगमन पर उनके सम्मान म आयोजित समारोह मे उन्होने पाशा का अभिनन्दन करते हुए टर्की, मिस्र आदि देशो के शीघ्र स्वाधीन होने की कामना की थी।

श्यामजी की ऋषि दयानन्द के प्रति जीवन भर अगाध श्रद्धा रही। यहा नही उन द्वारा प्रदत्त छात्रवृतियो मे गुरुवर दयानन्द के नाम पर भी एक छात्रवृति थी। स्विटजरलैंड की राजधानी म श्यामजी से भेंट करने वाले प रामनारायण मिश्र ने अपने सस्मरण मे लिखा है कि राजनैतिक क्रांतिकारी जीवन जीते हुए भी उन्हे आर्यसमाज से अगाध प्रेम था।

श्यामजी ने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष स्विटजरलैण्ड म व्यतीत किए एव उनकी मृत्यु जिनेवा शहर म 31 मार्च 1930 को हुई।

क्रांति सग्राम के प्रथम सेनापति स्वातन्त्र्यवीर भारतीय सस्कृति के उन्नेता ऋषि दयानन्द के प्रमुख शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनकी 58 वी पुण्य तिथि पर कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से कोटिश श्रद्धाजलिया सादर समर्पित हैं।

पत्र बोलते हैं

संघ की कारगुजारी

महोदय

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ अपने अथवा B J P V H P समर्थक एजेन्टों को आर्यसमाज मे बिठाकर जात-पात, साम्प्रदायिकता, मूर्ति पूजा आदि पाखण्ड को बढावा दिलाता है। समाज के गुरुकुल आश्रम, स्कूल आदि सस्थाओ को हडपता है। वेद ईश्वर, धर्म की चर्चा नही करता। महर्षि दयानन्द का सम्मान नही करता। 'नमस्ते' के बजाय नमस्कार करवाता। ध्वजपूजन और गुरुडम फैलाता।

आज आर्यसमाज के अस्तित्व को सघ के घुसपैठियो के कारण खतरा पैदा हो गया है। यह खतरा देश भर की आर्यसमाजो को है, वहा के आर्य भाई खबर देंगे। आन्ध्र प्रदेशस्थ आर्यसमाज इस खतरे मे है। इसे कोई भी देख सकता है।

—ममाराम वानप्रस्थी
हैदराबाद (आ प्र)

कथनी और करनी का भेद

आज ससार मे आर्य समाज की मान्यताओ का महत्व बहुत बढ गया है। लेकिन स्वय आर्यसमाजी ही पथभ्रष्ट होते जा रहे हैं। जब वैद्य ही बीमार होवे तो बीमारो का इलाज कैसे कर सकता है। अपनी शिक्षण-सस्थायें खाली पडी हैं और हमारे बच्चे अग्रेजी स्कूलों, कालेजो में जाते हैं। कहाँ तक लिखते जाइएगा, सर्वत्र वैदिक धर्म का ह्रास ही नजर आता है। कागजी कारगुजारी तो अच्छी है परन्तु प्रायोगिक और व्यावहारिक हालत बहुत खस्ता है।

— विनय, पुरोहित
आर्यसमाज मलोट (पजाब)

सराहनीय प्रयास

महोदय

आर्य पुनर्गठन' पत्र की प्रशसा के लिये मेरे पास शब्द नही हैं। आर्य-जगत मे जितनी पत्र-पत्रिकायें निकलती है उनमे सबसे अधिक निष्पक्षता और निर्भीकता आपके पत्र मे झलकती है। नि सदेह आप इस पत्र द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

—...नाथ आर्य टेलर
...(उ प्र)

आर्य समाज किस ओर?

15 मार्च के 'आर्य पुनर्गठन मे प्रकाशित आपके (आचार्य दत्तात्रेय जी के) लेख मे सटीक विश्लेषण है। किन्तु परिस्थितिया जिस ढग से करवट ले रही हैं और आर्यसमाज का नेतृत्व जिस प्रकार दिग्भ्रमित, दिशाहीन और अकर्मण्य है उससे एक भयकर सकट आसन्न है। आर्यसमाज का अन्तर्द्वन्द्व इसे कमजोर बना रहा है। स्वामी अग्निवेश निश्चय ही आर्यसमाज मे गतिशीलता लाये हैं। किन्तु पहले भी उन्हे अपनी विश्वसनीयता पुन स्थापित और सिद्ध करनी पडेगी।

—अखिलानन्द आर्य
सुल्तान बाजार, हैदराबाद

विद्वदभिनन्दन समारोह

'आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट' द्वारा आर्यसमाज, नया बास के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 3 अप्रैल को समायोजित विद्वदभिनन्दन समारोह मे श्री विशुद्धानन्द जी मिश्र को सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार स्व ला दीपचन्द आर्य की स्मृति मे प्रारम्भ किया गया है।

—धर्मपाल आर्य
मन्त्री

—आर्यसमाज बालोतरा (राज) का वार्षिकोत्सव 17 फरवरी से 19 फरवरी 88 तक मनाया गया। स्वामी दीक्षानन्द आचार्य सत्यानन्द व डा कुसुमलता वेदाचार्य के प्रवचन हुए। —भगवानदास



डी ए वी. विद्यालय के शताब्दी समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री जगतप्रसाद रावत, नीचे पास ही खड़े हैं प्रधानाचार्य श्री रासासिंह

(शेष पृष्ठ 1 का)

कांग्रेस कार्यकारिणी के छूटने के बाद ही जेल से रिहा किया गया था।

मुझे खेद है कि स्थापना दिवस की शताब्दी पर अधिक नही ठहर सका। यदि निकट भविष्य मे शताब्दी वर्ष के सम्बन्ध मे कार्यक्रम करने के लिए कोई गोष्ठी रखेंगे तो मैं पहुचने का प्रयास करूगा।

भाई रासासिंह जी से मिलकर बडी प्रसन्नता हुई। उनमे स्कूल के प्रति बडी आस्था है।

डी ए वी. विद्यालय ने वार्षिकोत्सव मनाया

9 मार्च, 1988 को डी ए वी उच्च मा विद्यालय, अजमेर का 100 वा वार्षिकोत्सव जिला शिक्षा अधिकारी श्री आई सी मगल की अध्यक्षता व जिला प्रमुख श्री हनुवन्तसिंह रावत के मुख्य आतिथ्य मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें प्रतिभावान छात्रो को पुरस्कृत किया गया एव प्रधानाचार्य श्री रासासिंह ने विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन पढा।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री नहीं रहे

वेदो के प्रख्यात विद्वान-भाष्यकार, अनेक ग्रन्थो के रचयिता, सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी आचार्य वैद्यनाथ जी का 12 मार्च 1988 को नई दिल्ली में असामयिक निधन हो गया। "आर्य पुनर्गठन" परिवार आचार्य जी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की चिरशांति के लिए प्रार्थना करता है। — सपादक

'आर्यसमाज स्थापना दिवस' मनाया

अजमेर 20 मार्च। स्थानीय आर्य समाज, केसरगज मे आर्य समाज का 113 वां स्थापना दिवस दयानन्द कॉलेज, अजमेर के प्राचार्य श्री डा दिनेश सिंह जी की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे प्रो दत्तात्रेय जी आर्य, डा कृष्णपाल सिंह जी, श्री बाबूराम जी शास्त्री तथा कर्नाटक के स्वतन्त्रता सेनानी श्री नरसिंह राव जी ने आर्य समाज के गुणगान गौरवपूर्ण इतिहास, भारतवर्षीय सेवा कार्य आदि पर प्रकाश डालते हुए देश की वर्तमान विषम परिस्थिति में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की शिक्षाओं की महती आवश्यकता प्रतिपादित की। इससे पूर्व आचार्य श्री गोविन्द ...यजमान में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा रामचन्द्र जी आर्य व वेदरत्न जी आर्य, श्री निर्मल तथा विभिन्न विद्यालयो के बालक-बालिकाओ के मधुर भजन हुए।

अन्त मे आर्य समाज के मन्त्री श्री रासासिंह जी ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

—आदर्शनगर अजमेर के प्रवासी गुरुकुल उपदेशक महाविद्यालय का त्रिदिवसीय उद्घाटन समारोह 1, 2 व 3 अप्रैल 1988 को मनाया जा रहा है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, आचार्य दत्तात्रेयआर्य, डा. सत्यकेतु विद्यालकार व श्री वीरेन्द्र एम ए आदि विद्वान पधार रहे हैं। 1 अप्रैल को श्री रासासिंह के नेतृत्व मे नगर मे विशाल शोभायात्रा निकाली जायगी।

—आचार्य

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स अजमेर मे मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द . 163

सृष्टि सम्वत् : 1972949088

॥ ओ३म् ॥

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 4 शुक्रवार 15 अप्रैल, 1988
अंक · 7 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

वैशाख कृ 14 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

आर्य समाज के पुनर्गठन की आवश्यकता

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति मे उसके सगठन के किसी प्रश्न पर कोई विचार गोष्ठी तथा विचार विनिमय केवल तभी प्रासगिक हो सकता है जब आर्य समाज के पुनर्गठन के प्रश्न पर गभीरता पूर्वक विचार किया जाए। अन्यथा इस विषय पर कोई भी चर्चा या केवल तात्विक विवेचन सर्वथा अवास्तविक, अनुपयोगी व व्यर्थ सिद्ध होगा।

पुनर्गठन से चौंकने का कारण—

सार्वदेशिक सभा द्वारा 1983 मे मेरे सयोजकत्व मे जो एक उपसमिति गठित की गई उसे स्वय सार्वदेशिक सभा आय समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार करने के लिये नियुक्त की गई उपसमिति कहती रही है। जब कि मेरे जिस प्रस्ताव के आधार पर और बार-बार के आग्रह के उपरान्त इस उपसमिति का निर्माण किया गया, उसका मुख्य उद्देश्य आर्य समाज की वतमान चिंतनीय स्थिति और उसके निराकरण के सम्बन्ध म विचार विनिमय के बाद सभा को कुछ रचनात्मक सुझाव देना था। इसलिये मैं सदा इसे आर्य समाज के पुनर्गठन सम्बन्धी उपसमिति मानता रहा हू। उपसमिति के नाम के बारे मे इस अन्तर के पीछे कोई तात्विक मतभेद है, यह बात प्रारम्भ से ही स्पष्ट थी। कुछ व्यक्ति पुनर्गठन शब्द को ही एक खतरे की घण्टी मानकर उसका विरोध करते रहे हैं। इनमे दो प्रकार के व्यक्ति हैं। एक वे जिनका आर्य समाज के वर्तमान सगठन के ढांचे को यथावत बनाये रखने मे निहित स्वार्थ है। आर्य समाज में जो तथाकथित हिन्दुत्वनिष्ठ तत्व हैं वे यह अनुभव करते हैं कि उनके राजनैतिक तथा अन्य हितो की सुरक्षा आर्य समाज के मच से तभी सम्भव है जब वे उसकी वर्तमान स्थिति को बनाये रखें। दूसरे कुछ तत्व ऐसे हैं जो आर्य समाज के सगठन और सस्थाओ मे अपना वर्चस्व बनाये हुए हैं किन्तु आय समाज के सिद्धान्तो और ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति उनकी अनास्था नही तो स्पष्ट उदासीनता है।

सिद्धान्त और सगठन—

सबसे पहले ये स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि आर्य समाज के पुनर्गठन का यह वर्तमान आन्दोलन जिसके प्रचार और प्रसार के लिये आर्य समाज अजमेर की ओर से एक पाक्षिक पत्र 'आर्य पुनर्गठन" का भी प्रकाशन किया जा रहा है, वह आर्य समाज के सैद्धान्तिक आधार मे सशोधन करने का आन्दोलन नही है अपितु उसके वर्तमान सगठनात्मक ढाचे मे उपयुक्त परिवर्तन करने का है। वस्तुत इस पुनर्गठन का भी उद्देश्य ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तो को सुरक्षित रखना है। इसलिये सिद्धान्त और सगठन के इस भेद को स्पष्ट समझने की आवश्यकता है।

यह प्रथम प्रयत्न नहीं है—

आर्य समाज के पुनर्गठन के सम्बन्ध मे कुछ लोगों की धारणा रही है कि यह कोई नवीन या प्रथम प्रयत्न है। जैसा उपसमिति की पहली रिपोर्ट की समालोचना करते हुए कहा गया है कि आर्य समाज का सगठन तो पहले ही बना हुआ है इसलिये उसके पुनर्गठन का प्रश्न नही उठता। जैसा पुनर्गठन शब्द से ही स्पष्ट है कि जिसका सगठन मौजूद हो उसी का पुनर्गठन किया जा सकता है। अस्तु।

आर्य समाज की स्थापना का इतिहास—

आर्य समाज की स्थापना के बारे मे जो नवीन तथ्य सामने आये हैं उनसे स्पष्ट है कि सबसे पहले स्वामी जी के कुछ प्रशसको व भक्तो के आग्रह पर गुजरात मे तत्कालीन देशी राज्य राजकोट मे उसकी स्थापना का प्रथम प्रयत्न किया गया। अंग्रेजी सरकार ऋषि दयानन्द के स्वराज्य सम्बन्धी क्रांतिकारी विचारो के कारण आर्य समाज को एक राजद्रोही सस्था मानती थी इसलिये राजकोट के तत्कालीन अंग्रेज पोलीटिकल एजेण्ट की चेतावनी के कारण वहा आर्य समाज की स्थापना का यह प्रस्ताव त्याग दिया गया। उसके बाद पुन अहमदाबाद मे उसकी स्थापना का दूसरा प्रयत्न किया गया। किन्तु यह समझा जाता है कि उसके समर्थको मे वहा के कुछ ऐसे प्रभावशाली और सम्पन्न व्यक्ति थ जो ऋषि दयानन्द के विचारो से प्रभावित होकर आर्य समाज के माध्यम से वहा प्रचलित और भ्रष्ट स्वामी नारायण मत के प्रभाव को निरस्त करना चाहते थे। आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रति उनकी विशेष निष्ठा नही थी। सभवत स्वामीजी न इसलिये इस दूसरे प्रयत्न मे अधिक रुचि नही दिखाई। 1875 मे आर्य समाज की स्थापना वास्तव मे इस दिशा मे किया गया तीसरा प्रयत्न था किन्तु इसे प्रथम आर्य समाज की स्थापना मानना एक प्रकार से इसलिये भी उपयुक्त है कि इस बार औपचारिक रूप से उसकी स्थापना की गई और उसके नियम आदि निर्धारित करके उसे एक सगठित और सवैधानिक रूप दिया गया।

लाहौर आर्य समाज—

जैसा सर्व विदित है कि सन 1877 मे लाहौर मे बम्बई मे स्थापित आर्य समाज का पुनर्गठन किया गया जिसमे बम्बई के 28 नियमो के स्थान म वर्तमान 10 नियम निर्धारित किये गये। उन्हे आर्य समाज के सिद्धान्त या उद्देश्य कहा जा सकता है। उनके व्यापक और महत्वपूर्ण स्वरूप के सम्बन्ध मे बहुत कहा तथा लिखा जा चुका है उस पर चर्चा करना यहा अप्रासगिक होगा। किन्तु शीघ्र ही यह अनुभव किया जाने लगा कि आर्य समाज को एक व्यापक और प्रभावशाली आन्दोलन का रूप देने के लिये ये दार्शनिक और तात्विक आधार पर्याप्त नही है। इतना ही नही उनको लेकर स्वामी जी के समकालीन तथा लाहौर आर्य समाज की स्थापनाकाल से उनके एक प्रमुख अनुयायी श्री मूलराज जी तथा उनके कुछ साथियो ने कहना शुरू कर दिया कि आर्य समाज की सदस्यता क लिये केवल इन दस नियमो को स्वीकार करना मात्र आवश्यक है। अन्य मामलो म आर्य समाज के सदस्य अपने विचार और व्यवहार म स्वतन्त्र है। कुछ लोगो न यहां तक देकर मास भक्षण तक का औचित्य सिद्ध करना प्रारम्भ कर दिया जबकि दूसरी ओर य तर्क दिया जाने लगा कि स्वामी दयानन्द मास भक्षण के विरुद्ध थे और इस प्रकार पजाब मे मास पार्टी व घास पार्टी बनी जिसे कालान्तर म कालेज पार्टी तथा गुरुकुल पार्टी का नाम दिया गया। वस्तुत स्वामी जी के शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध मे भी इसी आधार पर मतभेद प्रारम्भ हो गया कि आर्य समाज के सदस्यो के लिय नियमो के अतिरिक्त स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित खान-पान और शिक्षा आदि सबधी अन्य मन्तव्य भी मान्य नही है। किन्तु जैसा लाला लाजपतराय ने

(शेष पृष्ठ चार पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक : रासासिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   कार्या : 21010

मननीय

इतिहास के कुछ महानतम व्यक्ति तब तक अपना असली रूप नही देख सके जब तक उनके हौसले और चरित्रबल के बलबूते सब कुछ नष्ट न हो गया या जब तक उन पर कोई बड़ी मुसीबत न आ पड़ी और हताश होकर उन्हे अपने लिए नया रास्ता बनाने पर मजबूर न होना पड़ा। —स्वेट मार्डेन

सम्पादकीय—

"हँस हँस के हंसराज ने तन, मन व धन लुटा दिया"

आर्य समाज के जन्मकाल से ही समय-समय पर कोई न कोई महान विभूति जन्म लेती रही है जिन्होने आर्यसमाज के गौरव में चार चाद लगा दिये। ऐसी ही महाविभूतियो मे से एक हैं 'महात्मा हसराज''। महात्मा लोगो मे प्रकृति प्रदत्त निम्न गुण सहज भाव से ही होते हैं—विपत्ति के समय, धैय अभ्युदय के समय ही क्षमाशीलता, सभा मे वाक्पटुता, युद्ध मे विक्रम, यश के प्रति अभिरुचि तथा शास्त्रो के स्वाध्याय का व्यसन। यह कहने म कोई अत्युक्ति नही कि सचमुच हसराज जी एक सच्चे महात्मा थे। उनकी आत्मा महान थी। मलिनताए, सकीर्णताए एव स्वार्थमयी भावनाए उनसे कोसो दूर थी। समाजोत्थान तथा महर्षि के मिशन को आगे बढाने हेतु उन्होने सर्वस्व समर्पित कर दिया था। त्याग की वे साक्षात् प्रतिमा थे।

महात्मा जी का जन्म 19 अप्रैल 1864 ई को पजाब के होशियारपुर जिले मे बजवाडा नामक ग्राम मे हुआ था। पिता का नाम चुन्नीलाल और माता का नाम गणेश देवी था। एक अत्यन्त साधारण परिवार मे जन्मा यह प्रतिभावान युवक लाहौर के आय समाज के तत्कालीन मन्त्री साईदास की प्रेरणा से आर्य समाज की ओर आकर्षित होकर फिर आर्य समाज का ही बन गया। योग्य एव समर्पित व्यक्तित्व के धनी हसराज ने 1885 ई मे पजाब विश्व विद्यालय से बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। इतिहास तथा सस्कृत मे विशिष्ट योग्यता हासिल की। 30 अक्टूबर 1883 ई को अजमेर नगर मे महर्षि दयानन्द का निधन हुआ। उनके निधन पर उनकी स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए साईदास, लालालाजपत राय, प गुरुदत्त, लाला मूलराज ने 1886 मे लाहौर मे डी ए वी कॉलिज स्थापित करने का निश्चय किया। उस समय इस सस्था के सस्थापक प्राचार्य पद पर हसराज जी को अधिष्ठित किया गया। इन्होने अपने आपको सर्वात्मना डी ए वी को समर्पित कर दिया। डी.ए.वी और हसराज एक दूसरे के पर्याय बन गये। स्वय की आर्थिक स्थिति सुदृढ नहीं होते हुए भी इन्होने अवैतनिक रूप मे काय करते हुए प्राचार्य पद स्वीकार किया। इनकी गृहस्थी का गुजारा इनके बडे भाई लाला मुल्कराज ने चलाया। यह हसराज के त्याग, साहस, मिशनरी भावना, कुशलनेतृत्व और कर्मठता का ही परिणाम था कि स्कूल के रूप मे स्थापित डी ए वी धीरे-धीरे लाहौर पजाब और देश का तत्कालीन प्रमुख गौरवपूर्ण राष्ट्रीय शिक्षण सस्थान बन गया। डी ए वी एक आन्दोलन बन गया। आज देश मे जो सैकड़ो डी ए वी स्कूल कॉलिज, हसराज कालेज आदि समाज की शिक्षण सस्थाओं का जाल बिछा हुआ है उनके मूल मे महात्मा हसराजजी का त्याग, बलिदान एव समर्पण भाव ही प्रमुख कारण है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मे जो महत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी का है, वही स्थान भारतीय और पाश्चात्य, शास्त्र और विज्ञान, पूर्व और पश्चिम की मिलीजुली ऐंग्लो वैदिक शिक्षण सस्थाओ के इतिहास मे महात्मा हसराज का है। यद्यपि उस समय आर्य समाज मे दो विचार धाराओं का प्राबल्य हुआ जिसे व्यग्य मे 'घास'' और ''मास'' पार्टी तक कहा जाता था परन्तु आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार तथा सेवा भाव मे महात्मा हसराज जी भी कभी पीछे नही रहे। बिना कोई सरकारी अनुदान लिए, जन सहयोग से समर्पित और प्रोत्साहित होकर उन्होने अपने जीवन काल मे इस शिक्षण सस्था को शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना दिया। कला, विज्ञान, वेद, सस्कृत, आयुर्वेद, कला कौशल उद्योग आदि की महा विद्यालय स्तर तक की शिक्षा की व्यवस्था हो गई। उनके त्याग और तपस्या ने ही इस सस्था द्वारा भारत को शहीदे आजम भगतसिह जैसे क्रान्तिकारी, तथा कई महान व्यक्ति प्रदान किये। महात्मा जी सच्चे ईश्वर भक्त, वैदिक धर्म के दीवाने तथा महर्षि के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु थे। ऐसे ही महान व्यक्तित्व के धनियो ने आर्य समाज के गौरव को आगे बढाया। ठीक ही कहा गया कि "हस हस के हसराज ने तन, मन व धन लुटा दिया।" काश! आज की डी.ए वी सस्थाओ के कर्णधार सचालक गण, व्यवस्थापक, शिक्षक, कर्मचारी गण डी ए वी आन्दोलन के जनक महात्मा हसराज के जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर 'भरतीनरी' और मशीनरी, के स्थान पर सच्चे मिशनरी' बनें, सादगी, समर्पण और सेवा का आदर्श प्रस्तुत करें। यही काय महान प्रणेता को सच्ची श्रद्धाजली होगी। "कीर्तिर्यस्य स जीवति"

—रामसिंह

शंकराचार्य का दिमागी दिवालियापन

पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजन देव तीर्थ जो आचरण कर रहे हैं, उसे देखकर सदेह होता है कि कही यह व्यक्ति मानसिक रूप से विक्षिप्त तो नही है, विधवा विवाह निषेध, सती प्रथा और जन्मगत जात-पात जैसी कुरीतियो को वेद सम्मत बतलाकर समस्त ससार मे वेदो को 'गडरियो के गीत' सिद्ध करने का पक्षधर यदि मानसिक रूप से दिवालिया नही है तो धर्म द्रोही अवश्य है।

आज जिन कुरीतियो और कुप्रथाओ का विरोध कॉंग्रेस जैसी राजनैतिक पार्टियो के मच से भी होता है, उन्ही कुरीतियो का अपने को शकराचार्य कहने वाले व्यक्ति द्वारा समर्थन किया जाना एक विडम्बना ही कहा जाएगा। उस पर दावा ये कि मैं यह समर्थन वेदो के आधार पर कर रहा हूँ। वेदो का सबसे बडा प्रवक्ता होने का दावा करने वाला ही जब वेदो की महिमा को लाछित करे तो उसे क्या दड मिलना चाहिए?

श्री शकराचाय कहते हैं कि वेदो की अनेक सहिताए विलुप्त हो गई हैं और ये आय समाजी उनके बारे मे कुछ नही जानते तथा उन्ही सहिताओ म विधवा विवाह निषेध व सती प्रथा और जन्मगत जात-पात का उल्लेख मिलता है। वाह जनाब! क्या दूर की कौडी लाए। भला इस पाखण्डाचार्य से कोई पूछे कि यदि नारी दहन व विधवा विवाह निषेध जैसी कुरीतियो की महिमा का विलुप्त सहिताओ मे उल्लेख होता तो वह विद्यमान सहिताओ म भल ही अश मात्र ही सही लेकिन देखन को तो मिलता।

श्री निरजन देव का आरोप है कि आर्य समाज हिन्दू समाज के सगठन की एकता को ऐसे सवालो को बहस का मुद्दा बनाकर कमजोर कर रहा है। इस सदर्भ मे हमारा कहना है कि हिन्दुओ की एकता के सबसे बडे शत्रु शकराचार्य जैसे महानुभाव ही हैं, आर्य समाज नही। हमारी मान्यता है कि जब तक हिन्दुओ मे मूर्ति पूजा और अवतारवाद, जन्मगत जात-पात, छूत-छात और मृतक श्राद्ध व फलित ज्योतिष जैसे अध विश्वास और कुरीतियाँ विद्यमान हैं तब तक हिन्दुओ मे एकता व सगठन की बात सोचना एक दिवास्वप्न जैसा है। आर्य समाज हिन्दुओं को उनके इन्हीं कलको से मुक्ति दिलाकर उनका एक शक्तिशाली सगठन बनाने का विचार रखता है।

श्री शकराचाय ने यह भी कहा है कि यदि आर्यसमाज के लोग इसी तरह हम से, वाद-विवाद और बहस करेंगे तो वे भी अपनी तरफ से समझौते का पालन नही करेंगे। प्रत्येक आर्यसमाजी के ही नहीं अपितु जन साधारण के मन मे इस कथन से यह प्रश्न पैदा होगा कि आखिर आडम्बरो और कुप्रथाओ के प्रखर विरोधी आर्यसमाज और अध विश्वासो की दल-दल मे गरदन तक डूबे हिन्दुओ के मध्य कोई समझौता सभव है?, हम मानते हैं कि कोई भी सच्चा ऋषि भक्त ऐसा समझौता नही कर सकता। पाखड खण्डन ही तो आर्यसमाज का प्राण है। यदि इस कार्य मे भी वह समझौता करने लगे तो हिन्दुओ के अन्य सगठनों में और उसमे अन्तर ही क्या रहेगा। अस्तु। इस सबके उपरान्त भी आर्य समाज के कर्णधारों का यह दायित्व बनता है कि वे शकराचार्य के इस आरोप का दृढ़तापूर्वक और स्पष्ट शब्दो मे खण्डन करें।

—वीरेन्द्र आर्य

आर्य समाज को समझो

—बाबूलाल आर्य—

आर्य समाज को स्थापित हुए यद्यपि शताधिक वर्ष व्यतीत हो चुके और इस सुदीर्घ काल मे इससे अनेक महत्वपूर्ण कार्य भी किये हैं तथापि न केवल जन साधारण मे अपितु भारत के सुपठित लोगो मे भी आर्य समाज के सबन्ध में घोर अज्ञान व्याप्त है। अधिक शोचनीय एव खेदजनक स्थिति तो यह है कि आर्य जगत के अन्तर्गत भी ऐसे अनेक व्यक्ति उत्पन्न हो गये हैं जो आर्य समाज का रूपान्तर करने पर तुले बैठे हैं। पिछले कुछ समय मे लेखक का पत्राचार ऐसे दो महानुभावो से हुआ है। प्रथम सज्जन जो स्वय को अनेक आर्य समाजो के पदाधिकारी रह चुके होना बताते हैं चाहते है कि आर्य समाज अपने सब मन्तव्यो को त्याग कर अब केवल एक अ तवादी सम्प्रदाय बन जावे। दूसरे प्रख्यात विद्वान आर्य समाज की वर्तमान असन्तोषजनक स्थिति से क्षुब्ध होकर आर्य बुद्धिजीवियो का एक ऐसा महा सम्मेलन आयोजित करने हेतु प्रयत्नशील हैं जो ऊहापोह करके आर्य समाज की भावी रूप रेखा निर्धारित कर सके।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति सन्तोषप्रद नही है। वह न केवल उन लोगो को जो अभी तक आर्य समाज के सपक मे नही आए अपितु अन्य बहुत से ऐसे लोगो को भी जिनका एक न एक प्रकार से आर्य समाज से सम्बन्ध रह चुका है अब प्रभावित नही कर रही। इस असन्तोषजनक स्थिति का कारण यह नही कि इस सस्था के नियमो, सिद्धातो और मन्तव्यो मे ऐसी मौलिक त्रुटियाँ है कि उनके अनुसार आचरण करना हानिकारक अथवा दुष्कर है अपितु इस सगठन के अन्दर ऐसे बहुत से व्यक्ति घुस पड़े हैं जिनकी आर्य समाज के नियमो, सिद्धान्तो और मन्तव्यो के पालन मे लेश मात्र भी रुचि नही है।। अपने किसी स्वार्थ की सिद्धि हेतु न केवल आर्य समाजों की साधारण सदस्यता ही ग्रहण किये हुए हैं अपितु अनेक आर्य समाजो के पदाधिकारी बन कर उन पर और उनके द्वारा सचालित सस्थाओ पर कब्जा भी जमा बैठे हैं। परिणामत ऐसे सिद्धान्त हीन व्यक्तियो का आचरण आर्य समाज की बदनामी का कारण बनता जा रहा है।

आर्य समाज को समझने के लिए सबप्रथम हमको इसके नियमो पर दृष्टि डालनी होगी। इसके दस नियम है जिनको इस सस्था के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने स्वय निर्धारित किया था और जो बिना किसी परिवर्तन के आज तक ज्यो के त्यो विद्यमान हैं। छठे नियम द्वारा ससार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया गया है। ससार के अन्तगत न केवल भारतवासी न केवल मुनुष्य मात्र अपितु प्राणी मात्र आते हैं। अत ऐमी सपूर्ण लोक हितकारो सस्था के सबध मे वास्तविक जानकारी प्राप्त करना प्रत्येक समझदार व्यक्ति का परम पुनीत कर्तव्य है।

आर्य समाज के चतुर्थ और पचम नियम क्रमश सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने हेतु सर्वदा उद्यत रहना चाहिये एव सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचारकर करने चाहिये। यदि उपर्युक्त दो नियमो का पालन ही सब मनुष्यों का अभ्यास बन जावे तो जितनी धोखेबाजी, मक्कारी, चोरी आदि बुराइया वर्तमान समय मे जनता को कष्ट पहुचा रही है वे बहुत शीघ्र समाप्त हो जावें। हमारा पारस्परिक व्यवहार कैसा हो इसक दिग्दर्शन आर्य समाज का सातवा नियम करता है अर्थात सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये, ससार मे ऐसे अनेक महापुरुष हुए है जिन्होन लोगो को आपस मे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने का उपदेश दिया है किन्तु इस नियम की विशेषता यह है कि हमारा व्यवहार प्रीतिपूवक अर्थात द्वेषरहित होने के साथ-साथ धर्मानुसार तथा यथायोग्य भी होना नितान्त आवश्यक है। हमारा व्यवहार धर्मानुसार तो निश्चित रूप से प्रत्येक के साथ होना नितान्त आवश्यक है किन्तु सबको स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि धर्म शब्द का तात्पय हिन्दु धर्म, इस्लाम धम आदि मतो से नहीं है अपितु आर्य समाज के पाचवे नियम के अन्तर्गत जैसा बताया गया है इसका तात्पर्य सत्य पर आधारित होन से है।

हमारे अधिकाश कष्टो का कारण अज्ञान अथवा मिथ्याज्ञान है। आर्य समाज का आठवा नियम अविद्या का नाश एव विद्या की वृद्धि करनी चाहिये है। इस सर्वकालिक और सार्वदेशिक नियम को स्वीकार करने म कदाचित ही किसी समझदार व्यक्ति को आपत्ति हो। आर्य समाज का नवा नियम सब लोगो को परामर्श देता है कि प्रत्येक को केवल अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति मे अपनी उन्नती समझनी चाहिये।' आजकल हमारे अधिकाश देशवासी स्वार्थन्धिता के चक्रवात मे फस चुके हैं। सार्वजनिक हित की ओर विरले ही दृष्टिपात करते हैं। किन्तु यदि हम अपना दृष्टिकोण बदलकर आर्य समाज के नवें नियम का पालन करने लग जावें तो जनता का कल्याण होने मे देर न लगेगी। आर्य समाज का दसवा और अन्तिम नियम यह है कि सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे। इस नियम का पूर्वार्द्ध भाग तो ऐसा है जिसका पालन किये बिना राजमार्ग पर चलना भी निरापद नही है। उपर्युक्त छह नियमो की समीक्षा से से यह स्पष्टतया सिद्ध हो गया कि आर्य समाज की स्थापना के समय इसके सस्थापक ने छठ नियम के अन्तर्गत सामाजिक उन्नति कराने का लक्ष्य जो इस सस्था के सामने रखा था वह इन नियमो के यथावत पालन करने से नि सन्देह प्रत्येक देश और प्रत्येक काल मे सिद्ध हो सकता है।

सब मनुष्यों की शारीरिक और बौद्धिक क्षमता एक समान नही होती। उनकी प्रवृत्तियो और रुचियो मे भी प्राय असमानता पाई जाती है। क्षमता और रुचि की भिन्नता एक ही माता-पिता की सन्तानो मे भी दिखाई दे जाना सामान्य बात है। सुगमता पूवक जीवन निर्वाह करन हेतु प्राय प्रत्येक मनुष्य को दूसरो के सहयोग की अपेक्षा रहती है। इस अपेक्षा ने ही समाज मे वर्गीकरण को जन्म दिया है। जो वर्गीकरण मनुष्यो के गुण, कम और स्वभावो पर आधारित होता है वह तो सपूण समाज की उन्नति मे सहायक सिद्ध होता है परन्तु जो वर्गीकरण केवल मनुष्यो के जन्म पर आधारित जाति उपजाति प्रथा है वह अस्वभाविक होने के कारण प्राय हानिकारक और उनकी उन्ननि मे बाधक ही सिद्ध हो रही है।

यदि सम्पूर्ण मनुष्य समाज की तुलना मनुष्य के शरीर से की जावे तो त्यागी तपस्वी और विद्या के प्रचार प्रसार मे रत मनुष्यो के समुदाय को ब्राह्मण की सज्ञा देकर उसको समाज रूपी शरीर का मुख कहा जा सकता है। बल पराक्रम से युक्त दुष्टो के दमन हेतु सदैव तत्पर रहन वाले मनुष्यो को क्षत्रिय पुकारा जाकर उनको मनुष्य समाज का बाहु अर्थात भुजाए माना जा सकता है। जीवनोपयोगी समस्त सामाग्री का कृषि पशुपालन और विविध उद्यमो द्वारा उत्पादन और वाणिज्य द्वारा उसका आवश्यकतानुसार समस्त जनता मे वितरण करने वाले समुदाय को वैश्य की सज्ञा देकर उनकी तुलना उरू अर्थात शरीर के मध्य भाग से की जा सकती है। समाज के शेष लोग जो मन्द बुद्धि होने के कारण स्वत तो कोई व्यवसाय करन मे असमथ हो किन्तु अपने शारीरिक श्रम द्वारा ही समाज की सेवा कर सकते हो उनको शूद्र कहा गया है उनकी तुलना पैरो पर टिका रहता है इसी प्रकार शूद्र भी सपूण मनुष्य समाज के लिए उपयोगी हैं।

आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द मनुष्य समाज के ऊपर वर्णित वेदोक्त वर्गीकरण के ही अभिलाषी थे किन्तु खेद है कि वतमान समय मे आर्य समाज के नेतागण इस परम उपयोगी व्यवस्था को पुनर्जीवित करने की ओर से सर्वथा उदासीन प्रतीत होते हैं। इस वेदोक्त वर्णव्यवस्था के अनेक लाभ हैं। व्यक्तियो की योग्यता का यथोचित मूल्याकन इसी व्यवस्था के अधीन हो सकता है। हिन्दुओ का एक बडा भाग जो अछूत माना जा रहा है उसका उद्धार इसी व्यवस्था के प्रचलन से सम्भव हो सकेगा। आजकल दहेज प्रथा के रूप मे जो एक भयकर रोग भारतीय समाज म फैल गया है उसके उन्मूलन मे भी यह व्यवस्था लाभदायक सिद्ध हो सकेगी। राष्ट्रीय दृष्टि से प्रमुख लाभ यह होगा कि हमारे राष्ट्र का बहुसख्य भाग जो हिन्दू माना जाता है और जो हजारो जाति उपजातियो मे बिखरा हुआ है उसका एक दृढ सगठन बन सकेगा।

आर्य समाज की दूसरी महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि सामान्यतया प्रत्यक मनुष्य का जीवन चार भागो मे विभाजित किया जावे जिनको आश्रमो का नाम दिया जावे। प्रथम भाग ब्रह्मचर्याश्रम है जो पुरुषो के लिए उनके जन्म से लेकर न्यूनतम पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त होने तक और स्त्रियो के लिए कम से कम सोलह वर्ष की आयु तक न केवल अविवाहित रहना ही, अपितु

(शेष पृष्ठ 4 पर)

डाक पं. सं. RJ/AJ-169

आर्य समाज को

(शेष पृष्ठ 3 का)

प्रत्येक प्रकार के व्यसनो से असिप्त रह कर बल वीर्य की वृद्धि करते हुए विद्योपार्जन मे व्यस्त रहने हेतु आवश्यक है। मनुष्य जीवन का द्वितीय भाग गृहस्थाश्रम है जो पुरुषो के लिए पच्चीस वर्ष की आयु के उपरान्त पचास पचपन वर्ष की आयु पर्यन्त ही बताया गया है। इस पच्चीस तीस वर्ष की अवधि मे वे अपने-अपने वर्णानुसार जीविकोपार्जन करते हुए गृहस्थ धर्म का पालन कर सकते हैं। तदोपरान्त उनको वानप्रस्थाश्रम मे प्रविष्ट होना अनिवार्य है। यह आश्रम सम्पत्ति का मोहत्याग कर अपनी आत्मिकोन्नति हेतु साधना करने और परोपकारी जीवन व्यतीत करने का है। चतुर्थ आश्रम सन्यास आश्रम है अर्थात् पूर्ण वैराग्य प्राप्त होने पर मृत्युपर्यन्त सर्वथा लोकोपकार करते रहने का है।

यदि आर्य समाज की मान्यता के अनुरूप राष्ट्र में आश्रम व्यवस्था प्रचलित हो जावे तो राष्ट्रवासी जहां स्वस्थ और बलिष्ठ बनेंगे वहां वे धन लोलुप भी न होंगे क्योंकि जब ब्रह्मचर्याश्रम मे वे त्यागी, तपस्वी एव अविलासी जीवन व्यतीत करने के अभ्यस्त हो चुकेंगे और उनके सामने केवल सीमित काल तक ही गृहस्थ जीवन का ऐश्वर्य भोग कर पुन वानप्रस्थाश्रम एव सन्यास आश्रम में सयमित तपस्यापूर्ण जीवन व्यतीत करने का लक्ष्य होगा तो उनके भ्रष्टाचारी होने की आशका अति न्यून है। जीवन के विविध अगो का अनुभव प्राप्त किये हुए निःस्वार्थी कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी सेना राष्ट्र को उपलब्ध हो सकेगी। वे वानप्रस्थी लोग परामर्शदात्री समितियों के सदस्यो विधायकों सांसदों और मन्त्रियों के रूप में भी राष्ट्र के लिए अति उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे।

पारिवारिक कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थान-स्थान पर पुरुषों और स्त्रियो के नसबन्दी शिविर लगाये जा रहे हैं और न केवल सभी बाजारो मे भांति-भांति के विज्ञापन लगाकर ही अपितु छविगृहों मे और दूरदर्शन पर भी आकर्षक रूप मे इस कार्यक्रम को विज्ञप्त किया जा रहा है। प्रशासन द्वारा इस तथ्य को सर्वथा भुला दिया गया है कि उपर्युक्त उपाय और उसका विज्ञापन एव अन्य कामुकता वृद्धि के प्रदर्शन नासमझ युवक और युवतियों मे दुराचार की प्रवृत्ति को कितनी तीव्र गति से बढा रहे हैं। शासन को सुपथ पर चलाने का प्रयास तो अतिकठिन है परन्तु आर्य समाज सस्कार विधि में वर्णित सस्कारो का प्रभावी ढग से प्रचार करके अवाछनीय सन्तानोत्पत्ति पर रोक लगाने हेतु अवश्य ही राष्ट्र की महती सेवा कर सकता है।

आर्य समाज का सिद्धान्त है कि इस ससार का रचयिता, नियन्ता और पालनकर्ता एक ऐसी अदृष्ट शक्ति है जो निराकार निर्विकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्ति सम्पन्न और न्यायकारी है। हमारा कोई भी कार्य मनसा, वाचा कर्मणा ऐसा नहीं है जो उस सर्वान्तर्यामी परमात्मा से अविदित रह सके और उसकी न्याय व्यवस्था के अधीन जिसका यथोचित फल हमको न मिले। जब लोगो को उस सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अस्तित्व के ऊपर अटल विश्वास हो जावेगा तब पापाचार स्वत. बन्द हो जावेगा और ससारवासी सुखी जीवन व्यतीत करने लगेंगे। आर्य समाज का छठा नियम उसी समय सार्थक हो जावेगा। पता—बुद्धि भवन, लश्कर (ग्वालियर)

(शेष पृष्ठ 1 का)

[illegible] स्वाव'' मे स्पष्ट किया है कि कुछ व्यक्तियों के मतभेद के उपरान्त "श्री आर्य" ने सर्वसम्मत मान्यता बन गई थी कि आर्य समाज की सदस्यता के लिये दस नियमों के अतिरिक्त स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार करना भी आवश्यक है। यह आवश्यकता इसलिये भी अनुभव की जाने लगी कि कुछ स्पष्ट निश्चित और तर्क सम्मत धार्मिक सिद्धान्तों को स्वीकार किये बिना मुसलमान और ईसाई धर्म प्रचारकों का ही नहीं स्वय पौराणिक हिन्दुओं के विरोध का भी मुकाबला नहीं किया जा सकता था और न ही उनके उत्थान मे आर्य समाज के सिद्धान्तो का व्यापक और प्रभावशाली प्रचार और प्रसार ही किया जा सकता था। जैसा यहां समाज के कटु अनुभव से स्पष्ट है।

सगठन का सैद्धान्तिक आधार—इस प्रकार आर्य समाज के संगठन को एक सैद्धान्तिक आधार पर पुनर्गठित करने का यह पहला [illegible] प्रयत्न था परिणामस्वरूप 1934 मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की [illegible] सभा ने इस पर विचार करने के लिये एक विशेष सम्मेलन महात्मा [illegible] स्वामी की अध्यक्षता में आयोजित किया जिसमे यह निश्चय किया गया कि भविष्य मे आर्य समाज का सदस्य होने तथा रहने दोनों के लिये केवल दस नियमों को स्वीकार करना पर्याप्त नहीं है किन्तु उनके [illegible] सिद्धान्तों को भी जो वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में लिखे हैं मानना और उन पर आचरण करना आवश्यक है।

इतिहास की पुनरावृत्ति—आर्य समाज की सदस्यता के सम्बन्ध में किये गये इस महत्वपूर्ण निर्णय के परिणामस्वरूप आर्य समाज का वर्तमान पुनर्गठित रूप अभी तक चल रहा है किन्तु गत 50 वर्षों के अनुभव से यह सिद्ध हो गया है कि केवल दस नियमो की [illegible] सम्बन्धी विवाद के कारण जो स्थिति उत्पन्न हो गई थी ठीक [illegible] स्थिति आज कहीं अधिक उग्रता से आर्य समाज के सामने पुन उत्पन्न [illegible] इस चिन्तनीय स्थिति के कारणो पर मैं अपने विचार अपनी [illegible] पुस्तक "आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म" तथा उसके हिन्दी [illegible] समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं है' में व्यक्त कर चुका हूं। उनकी पुनरावृत्ति यहां करने की आवश्यकता नहीं है। आर्य समाज के सैद्धान्तिक आधार के प्रति इन वर्षों मे धीरे-धीरे उत्पन्न उदासीनता के कारण उसके सगठन मे जो गम्भीर निर्बलता और निरन्तर गिरावट आ गई है वह सर्व विदित है उसके नवीन पुनर्गठन के विरोधी भी इस दयनीय स्थिति से इन्कार नहीं कर सकते। वे केवल यह कहकर इस वस्तुस्थिति का सामना करने से कतराते हैं कि आर्य समाज की वर्तमान दशा के अन्य कारण हैं और उसके निराकरण के लिये भी अन्य उपाय हैं। उपसमिति को भी इसकी अनुभूति थी और है इसलिये उसकी प्रारम्भिक रिपोर्ट मे इन अन्य कारणों तथा उपायों के बारे में भी उपयुक्त सिफारिशें की गई हैं जिनका विवेचन फिर कभी किया जायेगा किन्तु वर्तमान प्रसग में इतना कहना पर्याप्त होगा कि आर्य समाज के सगठन की वर्तमान निर्बलता का मुख्य और पहला कारण उसके सैद्धान्तिक आधार के प्रति बढती हुई उदासीनता है।

जिस प्रकार सर्वत्र न दीखने वाला पावरहाउस या जिनरेटर सर्वत्र दीखने वाली बिजली की बत्तियों का स्रोत या आधार है उसी प्रकार आर्य समाज के सगठन की स्थानीय, प्रांतीय और यहां तक कि सार्वदेशिक इकाइयों द्वारा प्रकाशित प्रकाश उसके सैद्धान्तिक जिनरेटर द्वारा प्रदत्त शक्ति का वोल्टेज पर निर्भर है। आर्य समाज के झण्डे के नीचे सचालित आन्दोलनो तथा उसकी सगठनात्मक शक्ति का भी यही अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। आन्दोलन बिजली की बत्तियो के समान उसके सगठन के इस सैद्धान्तिक आधार का प्रतीक या प्रमाण है और कुछ सीमा तक उसमे सहायक भी है किन्तु वह उसकी शक्ति या प्रभाव का मुख्य स्रोत या आधार नहीं बन सकता।

पौराणिक मान्यताओं से समझौता—जहां तक आर्य समाज के सगठन या आन्दोलन के इस सैद्धान्तिक आधार का प्रश्न है यह निर्विवाद है कि हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओ के साथ धीरे-धीरे जो समझौते की नीति अपनाई गई उसी का यह परिणाम है कि आज न केवल खुले या छुपे रूप से मूर्तिपूजा करने वाले व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य ही नहीं कहीं-कहीं अधिकारी तक भी हैं। ठीक यही स्थिति श्राद्ध, तीर्थ, जातपात, छुआछूत आदि धार्मिक और सामाजिक कुरीतियो के सम्बन्ध मे उत्पन्न हो रही है। जिसके निराकरण और निषेध के लिए आर्य समाज की स्थापना की गई थी।

(क्रमश)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत् : 1972949088

।। ओ३म् ।।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ।।"

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष · 4 शनिवार 30 अप्रैल, 1988
अंक . 8 प. स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

वैशाख शु 14 संवत 2045
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आर्य समाज के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा का दूरगामी निर्णय

आर्य समाज के भावी कार्यक्रम विषयक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित उपसमिति की कई बैठको के पश्चात् समिति के संयोजक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने जो रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को प्रस्तुत की थी, उस पर 19 सितम्बर 1987 को सार्वदेशिक सभा के अन्तरग सदस्यो, प्रतिनिधि सभाओ के प्रधान और मन्त्रियो तथा समिति के संयोजक तथा सदस्यो एव अन्य विद्वानो के सम्मेलन मे विचारार्थ रखा गया और सम्मेलन द्वारा स्वीकृत निर्णयो पर सार्वदेशिक सभा की 20 सितम्बर 87 की बैठक मे विचार करके भावी कार्यक्रम समिति के केवल चार बिन्दुओ पर अन्तरग सभा ने अपना निर्णय निम्न प्रकार दिया

बिन्दु (क) आर्य समाज के किसी भी सदस्य व अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दो का अपने नाम के आगे प्रयोग न करने के प्रस्ताव पर निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक सभा पहले से ही इस विषय मे उचित प्रेरणा करती रही है।

बिन्दु (ख) आर्य समाज मे सदस्यो की दो श्रेणियाँ होती हैं। सभासद् तथा आर्य सभासद्। साधारण सभासदो को उपरोक्त सिद्धान्त सम्बन्धी नियमो के अन्तर्गत प्रवेश दिया जाए। आर्य सभासद् बन जाने के उपरान्त वे समाज द्वारा संचालित कार्यक्रमो मे से किसी एक या अधिक मे नियमित रूप से कार्य करते रहने पर सक्रिय सदस्य समझे जाएगे।

इस बिन्दु पर गम्भीरता से विचार विमर्श के उपरान्त निश्चय हुआ कि आर्य समाज के नियम सशक्त और सार्वभौम हैं। शब्दो की व्याख्या का प्रश्न नही है, बल्कि उन्हे जीवन मे धारण करने और आचरण की बात आवश्यक है। इसलिए आर्य समाज के नियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत पालन करने वालो को ही 2 वर्ष पश्चात् आर्य सभासद् घोषित किया जाए और उस समय उनसे एक शपथ पत्र भरवाया जाए जिसका प्रारूप निम्न प्रकार हो।

प्रतिज्ञापत्र (आर्य सभासद्)

मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति पूजा या जड वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नही करूगा ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूगा। तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नही मानूगा। अर्थात् वेद विरुद्ध आचरण नही करूगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छुआ-छूत को नही मानूगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी नही बनूगा। तथा आर्य समाज के नियमोपनियमो मे वर्णित सदाचार के नियमो का पूर्णत पालन करूगा।

यदि मैं इसके विपरीत आचरण करू तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जावे। ह आर्य सभासद्

(नोट प्रतिज्ञा पत्र का यह प्रारूप आर्य समाज के प्रवेश पत्र (फार्म) के दूसरी ओर मुद्रित किया जावे अथवा अलग से प्रकाशित करा लिया जावे)।

बिन्दु (ग) आर्य समाज के पदाधिकारी सक्रिय सदस्यो मे से ही निर्वाचित हो सकेंगे।

निश्चय हुआ कि सक्रिय सदस्यता का कोई औचित्य नही है, आर्य सभासद् बनते समय प्रतिज्ञा पत्र द्वारा इसकी पूर्ति हो जाती है।

बिन्दु (घ) किसी राजनैतिक दल का पदाधिकारी तथा उसका सासद या विधान सभा मे निर्वाचित व्यक्ति आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा का पदाधिकारी नही हो सकेगा।

इस विषय पर गम्भीरता से विचारान्तर निम्न निर्णय हुआ

आर्य समाज के किसी भी सदस्य को जो किसी राजनीतिक पार्टी का निर्वाचित प्रतिनिधि अथवा पदाधिकारी हो तो आर्य समाज का पदाधिकारी बनने पर यदि वह राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज अथवा सम्बन्धित संस्था को प्रभावित करना चाहता हो, या कर रहा हो तो ऐसे पदाधिकारी को पद से अन्तरग सभा द्वारा पृथक् कर दिया जावे।

नोट आर्य समाज के भावी कार्यक्रम विषयक सार्वदेशिक सभा की अन्त-रग सभा 20-9-87 द्वारा स्वीकृत तथा 24-1-88 की अन्तरग द्वारा पुष्ट उपरोक्त निर्णय तत्काल समूचे आर्य जगत पर लागू समझे जाएगे।

—आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान-सार्वदेशिक सभा,
नई दिल्ली

लकीर पीटने वाले तो बेवकूफ होते हैं

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

गत दिनो कामराजनगर मे हुए कांग्रेस के महाधिवेशन मे गृह मंत्री बूटासिंह ने भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह पर जो गम्भीर आरोप लगाए हैं वे भारतीय राजनीति के घटिया चरित्र के मुह बोलते सबूत हैं। हम इस बहस मे नही पडना चाहते कि आरोप सही हैं या गलत। लेकिन बूटासिंह के इन आरोपो से जो प्रश्न उठे हैं, उन पर चर्चा करना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

श्री बूटासिंह फरमाते हैं कि पूर्व राष्ट्रपति षडयन्त्रकारी विदेशी शक्तियो के इशारे पर नाच रहे थे और उनके कार्यकाल मे राष्ट्रपति भवन अपराधियो का शरण स्थल बन गया था। देश का अदने से अदना व्यक्ति भी इस सब को लेकर गृहमंत्री को सवालो के कठघरे मे खडा कर सकता है। वह पूछ सकता है कि पुख्ता सबूतो और दोनो सदनो मे सत्ता पक्ष का स्पष्ट बहुमत होने पर भी आखिर राष्ट्र-विरोधी कृत्यो मे लिप्त राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग क्यो नही लाया गया ?

देश के गुप्तचर विभाग का मुखिया गृहमंत्री ही होता है। इस लिए श्री बूटासिंह के बयान को गंभीरता से लेना आवश्यक है। इस तथ्य को मद्देनजर रखते हुए कहा जा सकता है कि वे एक कमजोर गृहमंत्री साबित हुए है और उनके कारण देश को काफी नुकसान उठाना पडा है। अपने कर्त्तव्य पालन म लापरवाही बरतने के लिए आखिर क्यो न उन्हे दण्डित किया जाए ?

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक : रामसिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   कार्या : 21010

सम्पादकीय—

मुरारी बापू का अनर्गल प्रलाप निन्दनीय

राम कथा के लिये प्रसिद्ध गुजराती सन्त मुरारी बापू ने पिछले दिनों उत्तर प्रदेश मे शुक्रताल (मुजफ्फर नगर) मे रामकथा करते हुए मूर्ति पूजा विषयक प्रकरण के सदर्भ मे आर्य समाज के प्रवर्तक तथा जीवन भर मूर्ति पूजा के विरुद्ध अनवरत सघर्ष करने वाले एव इस कुकृत्य पर कड़ा प्रहार कर शास्त्रार्थ मे पौराणिको के दात खट्टे करने वाले जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती के विरुद्ध जो अनर्गल प्रलाप किया है वह सर्वथा निन्दनीय एव आपत्तिजनक है। उनका यह कहना कि स्वामी दयानन्द जी ने प्रारम्भ में तो अपरिपक्व बुद्धि एव अज्ञानता के कारण मूर्ति पूजा का विरोध किया था परन्तु बाद मे परिपक्व होने पर अपने जीवन मे छिपकर मूर्ति पूजा किया करते थे" मुरारी बापू का यह आक्षेप शरारतपूर्ण, विद्वेष युक्त तथा क्षोभकारक है। उन्हे ज्ञात होना चाहिये कि स्वामी दयानन्द का जीवन एक खुली पुस्तक था जिसमे छिपाव अथवा दुराव के लिये कोई स्थान नही था। उन्होने हरिद्वार के कुम्भ मेले मे पाखण्डखण्डिनी पताका गाडने के बाद सर्वत्र वैदिक धर्म की मान्यताओ और वेद का प्रचार-प्रसार करते हुये तथा सभी पौराणिक गढो मे विजय पताका फहराते हुये अन्त मे पौराणिको के दुर्ग काशी (वाराणसी) मे इसी विषय पर शास्त्रार्थ कर पौराणिको के गर्व को चूर-चूर कर दिया था। सारा जगत् इस अकाट्य तथ्य को जानता और मानता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। आर्य समाज के दूसरे नियम मे स्वामीजी ने **ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में** स्पष्ट उद्घोषित किया है कि—

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।"

यह सच्चाई का खुला हुआ पृष्ठ और स्पष्ट उद्घोषणा है। महर्षि दयानन्द इस मूर्ति पूजा की अवैदिक परम्परा को आर्य जाति को पतन के रसातल मे पहुचाने वाली, दासता के बन्धन मे बाधने वाली तथा घोर पुरुषार्थहीन और अकर्मण्य बनाने वाली तथा भाग्यवादिता और आलस्य तथा भ्रष्टाचरण को बढ़ावा देने वाली घोर कुप्रथा मानते थे।

अत मुरारी बापू स्वय गुजराती होते हुये गुजरात की टकारा धरती के उस महान सपूत दयानन्द पर स्वार्थवश लाछन लगाने से पूर्व थोड़ा स्वाध्याय और आत्मालोचन और चिन्तन कर लेते तो उत्तम रहता। वैसे कौओ के काटने से बैल नही मरा करते। सत्य सत्य ही रहेगा। सत्य से सत्य का ही जन्म होगा। परन्तु यह उलूकवृत्ति मुरारी बापू जैसे सत के लिये अशोभनीय है। उन्होने सामान्य जनता की अन्ध श्रद्धा का लाभ उठाकर उसे भ्रमित करने का दुस्साहस किया है जो सवथा निन्दनीय है।

स्वय वेद मन्त्र कहता है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। (यजुर्वेद अध्याय 40, मन्त्र 8)

अर्थात्

(स) वह परमेश्वर (परि-अगात्) हर वस्तु के चारो ओर व्याप्य व्यापक भाव से उपस्थित है। (शुक्र) वह ससार की बीज शक्ति है (अकायम्) वह कायाधारी नहीं है (अव्रणम्) वह व्रण आदि रोगों से मुक्त है। (अस्नाविर) वह नाड़ी आदि बन्धनो मे जकड़ा नही है। (शुद्धम्) वह मलरहित है। (अपापविद्धम्) पाप उसको बींध नहीं सकते वह (कवि) ज्ञानी है। (मनीषी) विचारवान् है (परिभू) सब स्थानो को घेरे हुये है, कोई स्थान उससे रिक्त नहीं है (स्वयभू) उसका कोई दूसरा उत्पादक वा प्रभु नहीं है, वह स्वय अपना स्वामी है। उसने (शाश्वतीभ्य समाभ्य) अपनी नित्य रहने वाली सनातन प्रजाओ के लिये (अर्थान्) पदार्थों का (याथातथ्यत) ठीक-ठीक रीति से (वि-अदधात्) विधान बनाया है।

तथा

'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्यनाम महद्यश"

अर्थात् उस महान यश वाले परमेश्वर की कोई मूर्ति नहीं होती।

ईश्वर सबको सन्मति दे।

—रासासिंह

विदेशी मिशनरियों की बढ़ती हुई अराष्ट्रीय गतिविधियों पर अंकुश लगाओ

पाश्चात्य देशो से गरीबो तथा असहायो की सहायता के नाम पर प्राप्त होने वाले करोड़ो रुपयो की धन राशि के बल पर भारतीय सविधान की धर्म निरपेक्षता का लाभ उठाकर विदेशी ईसाई मिशनरी गिरजाघरो के इर्दगिर्द सचालित विभिन्न केन्द्रो के माध्यम से घोर दुर्भिक्ष तथा अकाल से सत्रस्त और पीड़ित भोलेभाले ग्रामीण निधन व्यक्तियो तथा पिछड़े वनवासी एव आदिवासियो का धर्म परिवर्तन करने के कुचक्र मे रात-दिन लगे हुये हैं। नागालैंड, अरुणाचल, मणिपुर, मिजोरम, झारखण्ड, छोटा नागपुर आदि क्षेत्रो मे तो ईसाई मिशनरियो के कुचक्र से पृथकतावाद की प्रवृत्तिया पनपकर आज भारत की एकता और अखण्डता को चुनौती दे ही रही हैं परन्तु धीरे-धीरे उन द्वारा देश के अन्य प्रान्तो मे भी सवेदनशील स्थलों का चयन कर दूध, कपड़े, दवाइयो की आड़ मे तथा स्कूल, अस्पतालो आदि के नाम पर सहायता सामग्री निरन्तर वितरित कर बेसहारा अतिनिर्धन लोगो को धर्म परिवर्तन पर मजबूर किया जा रहा है। राजस्थान मे भी अजमेर, ब्यावर, कोटा बासवाड़ा, डूँगरवाड़ा आदि क्षेत्रो मे तथा मध्य प्रदेश के झाबुआ, खरगौन, बस्तर आदि क्षेत्रो मे ये अपना जाल फैलाने मे लगे हुये हैं। समय रहते हुये यदि भारत सरकार तथा सम्बन्धित राज्य सरकारें नही चेती तो मिशनरी सकट पैदा कर देंगे। सबसे पहला उपाय तो अतिशीघ्र यह करना चाहिये कि इस प्रकार की विदेशी सहायता का सरकार के माध्यम से देश में आर्य तथा सरकारी कल्याण एजेंसियों के माध्यम से वितरण हो एव मजबूरी का लाभ उठाकर और ईमान को खरीद करने वाले विदेशी पादरियों को भारत से निकाला जाय।

—रासासिंह

मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

महर्षि दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् जिन प्रमुख आर्य विद्वानो ने उनके काम को आगे बढ़ाया उनमे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम उल्लेखनीय है। अजमेर मे स्वामीजी की मृत्यु के दिव्य दृश्य को देख नास्तिक से महाआस्तिक बन गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपना जीवन आर्यसमाज के लिये बलिदान कर दिया।

लाहौर मे प्रथम डी ए वी स्कूल के सस्थापको मे से एक होने पर भी उसकी ओर से वेदो की उपेक्षा देखकर उदासीन हो जाना, आपकी ऋषि भक्ति का अप्रतिम उदाहरण है।

यदि इस ग्रन्थ का मूल्य हजारो रुपये होता तो भी मैं अपनी समस्त सम्पत्ति बेचकर इसे खरीदता यह कहकर ऋषि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की महिमा का यशोगान करने वाले मनस्वी गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन भर उनके मन्तव्यो के प्रचार-प्रसार मे लगे रहे। वेदो के वैज्ञानिक स्वरूप को जनता के सम्मुख लाने का आपने भारी उद्योग किया। इसके लिए आपने टर्मिनोलोजी आफ वेदाज नामक एक कोष का निर्माण किया और उपनिषदो का अग्रेजी मे अनुवाद किया।

विद्यार्थीजी एक उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होने पर भी सादा जीवन जीने में विश्वास रखते थे। एक मात्र ऋषि के कार्य को प्रभावपूर्ण ढग से आगे बढ़ाना ही उन्हें अभीष्ट था। यही कारण था कि कभी भी उन्होंने स्वय को एक नेता के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न नही किया। निरन्तर मौन भाव से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे लगे रहे। घर फूक तमाशा देखा। अत्यधिक कार्य करने के कारण आप क्षय के शिकार हुए और (जन्म 26 अप्रैल, 1864) अल्पायु मे ही 19 मार्च, 1889 को आपका देहान्त हो गया।

आज समाज के पैसे से देश के अन्दर भी प्रचारार्थ हवाई जहाज से सफर करने वाले विद्वता में बिलकुल कोरे तथाकथित आर्य नेता क्या मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन से कोई प्रेरणा ले सकेंगे ? या फिर विश्व सम्मेलनो मे डींगें हाकते रहेंगे और समाज के नाम पर गुलछर्रें उड़ाते रहेंगे।

—वीरेन्द्र आर्य

ऋषि भक्त ठाकुर कर्णसिंह

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

राजस्थान के तत्कालीन राजे व रजवाड़ो का नैतिक एव चारित्रिक पतन देख ऋषि ने अपने समाज-सुधार कार्यक्रम मे इन्हें प्रमुखता दी थी। उनके प्रचार जीवन का अधिकांश समय राजस्थान मे व्यतीत हुआ। इन्हीं राजे और रजवाड़ो के सुधार हित ही 1881ई मे ऋषि के जीवन का बलिदान हुआ।

ऋषिवर के इस सुधारवादी प्रचार का रजवाड़े पर व्यापक प्रभाव पड़ा था और अनेक राजा, जागीरदार-ठिकानेदार उनके भक्त बन गये थे। जोबनेर के ठाकुर कर्णसिंह भी इनमे से एक थे।

ठाकुर कर्ण सिंह महर्षि दयानन्द की भक्ति के रग में पूर्णतया रग गये थे। उनके द्वारा 1893 ई मे प्रकाशित 'राजस्थान के क्षत्रियो के चाल-चलन पर एक सरसरी निगाह' नामक पुस्तक के मुख पृष्ठ पर उन द्वारा दिया दोहा इस सदर्भ मे विशेष उल्लेखनीय है

राज त्रिलोकी को हमे मिलणो छै आसान।
गुरु दयानन्द सारसे मिलणो कठिन जहान॥

ऋषि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु हो जाने के कारण ठाकुर कर्णसिंह के समय जोबनेर आर्य समाजी गतिविधियो का एक प्रमुख सचालन केन्द्र बन गया था। 1894 ई में पण्डित लेखराम 'आर्य मुसाफिर' की अगुवाई मे जोबनेर में शुद्धि आन्दोलन भी चलाया गया था।

ठाकुर कर्णसिंह एक अच्छे प्रशासक थे। जयपुर महाराजा के अधीनस्थ रहकर उन्होने जरायमपेशा मीणा जाति का सुधार कर उसे सम्मानजनक जीवकोपार्जक व्यवसायो में लगाया था। मीणो की सामाजिक एव आर्थिक उन्नति के लिये उन्होंने अन्य कई रचनात्मक कदम भी उठाये थे।

एक सुशिक्षित व्यक्ति होने के कारण वे देश की स्वतन्त्रता का महत्व जानते थे। इसीलिये परोक्ष-अपरोक्ष रूप से वे क्रान्तिकारियों को सहयोग देते रहते थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय व केसरीसिंह बारहठ आदि क्रान्तिकारियो से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। कहा तो यहा तक जाता है कि केसरीसिंह बारहठ के गुप्त क्रान्तिकारी सगठन की एक बैठक जोबनेर की हवेली मे भी हुई थी।

ठाकुर कर्णसिंह शिक्षा प्रसार को समाज-सुधार एक विशेष साधन मानते थे। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुये उन्होने 1891 मे जोबनेर मे 'एग्लो वैदिक स्कूल' की स्थापना की थी। आर्य समाज के क्षेत्र मे यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि ठाकुर कर्णसिंह ने इस स्कूल मे ऋषि दयानन्द प्रवर्तित गुरुकुल-पद्धति को अपनाया था। यहा वेद मत्रो द्वारा दैनिक प्रार्थना होती थी। स्कूल मे पढने वाले समस्त छात्रो के साथ समानता का व्यवहार किया था। छुआछात व ऊच-नीच के भावो के लिये यहा कोई स्थान नही था। यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि अपने इकलौते पुत्र नरेन्द्रसिंह को उन्होने जागीरदारो के बच्चो को पढाने हेतु उपयुक्त समझे जाने वाले किसी अग्रेजी स्कूल में भर्ती न कराकर जोबनेर के 'एग्लो वैदिक स्कूल' मे ही भर्ती कराया था। ऋषि भक्ति का यह अप्रतिम उदाहरण है।

ठाकुर कर्णसिंह एक ऊचे चरित्र के आदमी थे। सामन्तों मे आम पाये जाने दुर्व्यसनो से वे कोसो दूर थे। देशभक्ति, समाज सेवा, दयाशीलता और परोपकार जैसे गुणो से वे समलकृत थे। उनके इन्ही गुणो को देखते हुये समाज ने उन्हे 'राजर्षि' की उपाधि से अलकृत किया था। उनकी शिक्षा यद्यपि अग्रेजी पद्धति पर आधारित मेयो कालेज मे हुई थी लेकिन उनके आचार-विचार पर पाश्चात्य दूषित विचारधारा का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा था। चन्दन की भाति वे सर्प रूपी विषैले वातावरण मे रहते हुए भी उससे अछूते रहे थे। उनकी वेशभूषा पूर्णतया देशी थी।

ठाकुर कर्णसिंह की ऋषि भक्ति और उनके अनुकरणीय जीवन को देखते हुये अन्य ऋषि भक्त, राजे-रजवाड़े उनकी तुलना मे बौने प्रतीत होते हैं। ऋषि के इस अनन्य भक्त जनसाधारण मे अपने असाधारण गुणो के लिये विख्यात ठाकुर कर्णसिंह का अल्पायु मे ही सन् 1911 ई मे देहावसान हो गया।

बाल विवाह और सरकार

वैसे तो अपने पूरे देश मे ही बाल विवाह होते हैं परन्तु राजस्थान मे इस कुप्रथा का प्रचलन अत्यधिक है। प्रतिवर्ष अक्षय तृतीया को हजारो छोटे-छोटे बच्चो को शादी के बन्धन मे बाध दिया जाता है। इस वर्ष भी समाचार-पत्रों ने ऐसी अनेक शादियो के सचित्र समाचार प्रकाशित किये हैं जिनमे दुल्हन और दूल्हा मात्र 3 या 4 वर्ष के थे।

1929 ई मे बने 'शारदा एक्ट' के बावजूद भारी शोर-शराबे के साथ बाल-विवाहो का होना सरकार की अकर्मण्यता का परिचायक है। यदि कोई व्यक्ति जन चेतना की कमी का तर्क देकर बाल-विवाहो का औचित्य सिद्ध करना चाहे तो इसे उसकी नादानी ही समझा जाएगा। आज सरकारी और गैर सरकारी प्रचार माध्यमो से जनसाधारण को बाल-विवाह के सभी दुष्परिणामो से अवगत करा दिया है और यदि इसके उपरान्त भी बाल विवाह होते हैं तो उसकी मुख्य दोषी सरकार है। उसे चाहिये कि कानून की अवमानना कर बाल-विवाह करने वाले अभिभावको और इस कार्य मे सम्मिलित समाज के अन्य सभी व्यक्तियो के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करे।

—वीरेन्द्र आर्य

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, देसराज कालोनी पानीपत का प्रथम उत्सव ला आदित्य प्रकाश आर्य की अध्यक्षता मे 27 व 28 फरवरी 1988 को मनाया गया। स्वामी वरुणवेश, स्वामी नियमानन्द, श्री वेद सुमन वेदालकार, श्रीमती राजरानी व बहन सविता के प्रवचन व गीत हुए।

—वसु (मन्त्री)

हम मिल राष्ट्र जगायें

—डॉ (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी

वेद ज्योति से आलोकित बन,
हम मिल राष्ट्र जगायें।
चहु अज्ञान, तिमिर है छाया,
धूमिल हुई दिशायें।
भूल गये सब, सुलभ हुई थी,
हम को प्रिय आभायें।
दूर-दूर हम जिस सुमार्ग से,
पुन उसे पा जायें।

सम्प्रदाय का गरल निरन्तर,
बढ़ता ही है जाता।
धर्म चेतना से वचित,
अलगाववाद पनपाता।
उग्रवाद के इस अराति को,
मिल हम दूर भगायें।

अन्तर्दाह निरन्तर चलता,
मानवता है रोती।
देख भारती कापुरुषो को,
विकल प्राण है खोती।
गरुण बने, आतकवाद के,
व्यालो को ग्रस पायें।

उठो आर्य वीरो मेधावी!
सौरभ चहु फैलाओ।
जो वैचारिक महा प्रदूषण,
परिशोधित कर पाओ।
दिशा दिशा वैदिक नादो से,
करें मुखर, हर्षायें।

पता —प्रोफेसर्स कालोनी, श्याम गज, बरेली–243005 (उ प्र)

द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मेलन :

हिन्दुत्व के नाम पर फिर लगा दरबार

— वीरेन्द्र कुमार आर्य —

25 से 28 मार्च 1988 तक नेपाल की राजधानी काठमाडो मे द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ। विभिन्न सम्प्रदायो के 26 देशो के लगभग 1500 प्रतिनिधि इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। विचार गोष्ठियाँ हुई, प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव पढने-सुनने मे बहुत ही प्रभावी और दूरगामी नजर आता है।

सम्मेलन द्वारा जो पृष्ठीय प्रस्ताव पारित किया गया है उसमे हिन्दू धर्म को पूर्ण विज्ञान सम्मत बनाने की वकालत करते हुए इसके लिए 12 विभिन्न सूत्रो का उल्लेख किया गया है। 'प्रस्ताव मे सभी हिन्दू समान हैं और ईश्वर के अंश हैं' की दुहाई देकर संकल्प किया गया है कि हिन्दू समाज को जात-पात से मुक्त किया जाएगा और छुआ-छूत को जड से खत्म कर दिया जाएगा।

सम्मेलन के इस संकल्प से भला किसको असहमति हो सकती है। आखिर हिन्दुओं के पतन की ये दो बुराईयाँ प्रमुख कारण रही हैं। लेकिन खेद तो इस बात का है कि प्रस्ताव मे इन कलंको (बुराइयो) की समाप्ति का कोई उपाय नही बताया गया है। और तो और जब सम्मेलन के प्रतिनिधि प्रस्ताव के इस महत्वपूर्ण अंश को जोर-शोर से विज्ञापित कर रहे थे, तभी भारत मे पुरी के शंकराचार्य जगद्गुरु निरंजनदेव जन्मगत जाति-पात और हरिजनो का मंदिर प्रवेश निषेध वेदोक्त ठहरा रहे थे। अब ये संकल्पकर्त्ता ही ही जानें कि उनका संकल्प कैसे पूरा होगा ?

सम्मेलन मे हिन्दुओ के लिए एक आचार संहिता बनाने की भी बात चली। पता नही इन लोगो को इतनी सी बात भी कैसे मालूम नही कि वैदिक काल मे वैदिक धर्मी सभी लोगो की एक ही आचार संहिता थी। बाद मे सभी सम्प्रदायो ने अपनी स्थापना के समय सुविधानुसार अपनी-अपनी आचार संहितायें बना ली। अब यदि वे अपनी इस आचार संहिता का त्याग करते हैं तो उनके सम्प्रदाय का अस्तित्व भी स्वयं समाप्त हो जाएगा। और ऐसा वे कभी नही चाहेंगे।

सम्मेलन मे गोहत्या पर प्रतिबन्ध और संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार पर भी बल दिया गया है। जहा तक हम समझते हैं; गौहत्या एक धार्मिक समस्या न होकर आर्थिक और सामाजिक समस्या है। और धर्म से जोडकर इसे अत्यधिक जटिल बना दिया गया है। संस्कृत का प्रचार-प्रसार तभी हो सकता है जबकि उसके विशेष महत्व को अन्य भाषाओ की तुलना मे सिद्ध किया जा सके।

हिन्दू धर्म को और अधिक विज्ञान सम्मत बनाने की बात प्रस्ताव मे दोहराई गई है। लेकिन प्रश्न उठता है कि जब किसी धर्म का आधार ही वैज्ञानिक न हो तो उसे अधिक विज्ञान सम्मत कैसे बनाया जा सकता है। लगता है कि शायद सम्मेलन मे सिर जोड कर बैठने वाले प्रतिनिधि अपने सम्प्रदायो की विज्ञान विरोधी मान्यताओं को भूल गये थे। या फिर उन्होने अपने-अपने तथाकथित धर्मग्रन्थों का भली-भाँति अध्ययन नहीं किया है।

सम्मेलन ने नेपाल मे ही एक 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू केन्द्र' की स्थापना का निर्णय लिया है। ये केन्द्र शायद पारित प्रस्तावो पर अमल करने का कार्य करेगा। कैसे करेगा ? य सम्मेलन वाले ही जानें। सम्मेलन मे एक सुझाव हिन्दू धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए एक शक्तिशाली शार्टवेव रेडियो स्टेशन स्थापित करने का भी आया। प्रश्न इस बात का नही है कि यह केन्द्र किस देश म स्थापित हो प्रश्न इस बात का है कि आखिर परस्पर विरोधी मान्यताओ पर आधारित विभिन्न सम्प्रदायो के प्रचार कार्य मे यह केन्द्र कैसे संतुलन रख पाएगा ?

आर्यसमाज देशराज कालोनी का निर्वाचन

संरक्षक श्री प्रभुदयाल गुलाटी व श्री आदित्य प्रकाश आर्य, उपप्रधान श्री सुरेन्द्रपाल त्यागी व श्री अमरसिंह सैनी, मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र बसु, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल, प्रचार मन्त्री श्री पूर्णचन्द पथिक।

पत्र बोलते हैं—

आर्य समाज के नेता सावधान हों

आर्य समाज के प्रति निष्ठा रखने वाले लोगो ने जब श्री विद्यानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता को त्याग देने की बात पढी होगी तो उनको धक्का लगा होगा। बासठ वर्ष तक आर्य समाज की सेवा करने के बाद उसकी सदस्यता त्यागने के वास्तविक कारण यदि कुछ अन्यथा रहे भी हो तो भी आर्य समाज में स्वार्थपरता का जो घुन लेखा घुन लग रहा है उसे उन्होंने बहुत अच्छी तरह पहिचाना है इसमें दो राय नही हो सकती हैं। अब बाड ही खेत को खाने लगे तो रखवाली कौन करेगा ? पदाधिकारी पदो और समाजो को अपनी जागीर बनालें। उनका मनमाना दुरुपयोग करें, बन्दर बाँट के चक्कर मे अदालतों में समाज का पैसा फूकें, नये रक्त के लिए समाज के द्वार बन्द कर दिये जावें, गुण्डा तत्वो की सहायता लेते फिरें और भले और निष्ठावान लोगो को बदनाम करके बाहर निकालने की साजिशें रचते रहते हो तो कर लिया आर्य समाज ने वसुधैव कुटुम्बकम् 'या' 'विश्वमार्यम' का लक्ष्य पूरा ?

यदि प्रतिनिधि सभाओ को इस रोग से मुक्त मान भी लिया जावे (यद्यपि वे हैं नही।) तो यह निर्विवाद है कि वे पूर्णत निर्बल और असहाय हैं। अपने से नीचे की इकाइयो पर उनका कोई नैतिक या संवैधानिक नियन्त्रण नहीं है और न हो उनमें ऐसा करने का साहस है क्योंकि चुनावी लाभ भूखे उच्च पदाधिकारी स्वयं ही उनके पीछे गिडगिडाते फिरते हैं। आर्य समाज के अधिकांश सन्यासी व प्रचारक प्रचार की अपेक्षा अचार (उत्तम भोजन, भारी दक्षिणा) की चिन्ता अधिक करते हैं। समाजो का कार्य मात्र एक दो उत्सव करके जनता को अपने जीवित रहने का भान करा देने तक सीमित हो गया। आर्य समाजो और आर्य समाजियो ने नया धन्धा प्रकाशन का पकड लिया है। महर्षि सहित आर्य विद्वानो के ग्रन्थो को छापो और सोने के पौने दामो मे बेचकर अपना घर भरो। वे गीता प्रेस गोरखपुर की प्रकाशन पद्धति से कुछ भी सीखने को तैयार नहीं हैं। आर्य साहित्य लिखना, छापना, पत्र पत्रिकाए निकालना, हवन यज्ञ करना, उत्सव करना, भाषण करना और नई शोध करना ये सभी हो रहे हैं। होने भी चाहिए। परन्तु लाखो को सच्चे आर्य बनाने का कार्य, संस्कार प्रतिष्ठा का कार्य, सच्ची वैदिक शिक्षा देने का कार्य व जुआ, शराब, दहेज, नारी दहन, बलात्कार, नर बलि, छुआ-छूत, जाति भेद और अन्ध-विश्वासो के कलंको से समाज को मुक्त कराने केलिए कितनी समाजें योजना बद्ध कार्य कर रही हैं। समाज के लिए अनुपयोगी किले खण्डहर बन गये हैं। आर्य समाज भी अनुपयोगी बनता जा रहा है। खण्डहर बनने के कगार पर खडा है। संभव है शीघ्र खण्डहर बन जावेगा और उसमे मात्र कुछ उल्लू (अवांछनीय पदाधिकारी) ही जहाँ तहाँ शेष दिखलाई देंगे।

स्वार्थान्धता की आँधी मे फंसा आर्य समाज यदि इसी राह पर चलता गया तो निष्ठावान आर्य समाजियो को अपना कल्याण इसी मे दिखेगा कि वे भी श्री विद्यानन्दजी की भांति समाज का पल्ला छोडकर एक ओर हट जावें। जब एक-एक करके विज्ञजन आर्य समाज से किनारा कर जावेंगे तब देश की जनता यही कहेगी कि "हर शाख पै उल्लू बैठे हैं, अन्जामे गुलिस्तां क्या होगा ?" आर्य समाज के करोडों सदस्यो मे से एक विद्यानन्दजी का कम हो जाना सर्वथा महत्वहीन घटना ही जाती है परन्तु यह भी हम याद रखें कि आर्य समाज के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी भी है। आर्य समाज के नेता सावधान हों।

—अम्बा प्रसाद शर्मा
आर्य समाज कावाखेडा, भीलवाडा।

लकीर पीटने (शेष पृष्ठ 1 का)

प्राप्त समाचारो के अनुसार पिछले दिनो राजीव गाधी की नजरो मे बूटासिंह का महत्व कम हुआ है। पंजाब मे गलत रूप से दखलअंदाजी की राज्यपाल रे की शिकायत को लेकर श्री गाँधी ने श्री पी चिदम्बरम् को उनका कार्य सौंप दिया था। हो सकता है कि आरोपो की इस राजनीति का सहारा लेकर श्री बूटासिंह पुन अपना स्थान पाने का प्रयास कर रहे हो। लेकिन प्रत्येक काम मे विवेक से तो काम लेना चाहिए ही। ऐसा लगता है कि ज्ञानीजी के विरुद्ध ये आरोप लगाते समय वे विवेक से काम लेना ही भूल गए। अब कोई उनके प्रधान मन्त्री राजीव गांधी से भी प्रश्न कर सकता है कि जब देश का राष्ट्रपति राष्ट्र विरोधी ताकतो को शह दे रहा था तो जानकारी होते भी आप मौन क्यो रहे ?

श्री रतनलालगग द्वारा श्री आर्यप्रिटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

रविवार

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

।। ओ३म् ।।

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 रविवार 15 मई, 1988
अंक 9 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

ज्येष्ठ अमावस्या सवन 2045
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

महाराजाधिराज जोधपुर "सर" प्रतापसिंह ने हिन्दूधर्म, इस्लाम और ईसाइत से निराश होकर कैसे आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना धर्मोपदेशक तथा गुरु स्वीकार किया ?

यह लेख सर प्रतापसिंह की उस अप्राप्त जीवनी पर आधारित है जो उनके समकालीन और स्वामी जी के भक्त रावराजा रघुनाथसिंह के सुपुत्र तथा मेरे मित्र ठाकुर प्रेमसिंह, सेवा निवृत्त आर ए एस की कृपा से मुझे पढ़ने को मिली।—द आर्य

सर प्रतापसिंह की जीवन-गाथा के अंग्रेज लेखक आर बी वानवर्ट उनकी धार्मिक विचारधारा को अपने शब्दो मे प्रकट करते हैं—

"ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं जिनके लिए मैं स्वय उत्तरदायी हू।'

"प्रारम्भ से ही धर्म सम्बन्धी विषयो को सावधानी से छोड़ते (बदलते) रहने की मेरी आदत रही है। बाल्यकाल मे मैं अपना पर्याप्त समय रूढिवादी परम्परा मे पूजापाठ मे बिताया करता था। मैं रामायण, गीता और भागवत के पाठ सुना करता था, लेकिन इनमे किसी से मेरी आत्मा को सुख न मिला क्योकि कहानियो और नीति कथाओ के अतिरिक्त उनमे बहुत कम सार था। इतिहास बताता है कि हिन्दुओ मे मूर्तिपूजा और पुराण का प्रचलन बहुत थोड़े समय से हुआ—लगभग उन दिनो मे जिसे सचमुच "अन्धकार युग" कहा जा सकता है। उस काल मे हिन्दुओ ने अपने यथार्थ धर्म ग्रन्थो-वेदो एव विशुद्ध शास्त्रो का अध्ययन छोड़ दिया था और अज्ञान में पड़कर, अपने प्राचीन व विशुद्ध धर्म मे बहुत सी काल्पनिक धारणाओं तथा शाश्वत पूर्व रीति-रिवाजो का समावेश कर लिया था। परिणाम स्वरूप हिन्दूधर्म आज तक असगत कल्पनाओ का सग्रह व अन्धविश्वासो का बण्डल समझा जाता है, और इसकी असारता हास्य का विषय बन गई है।"

हिन्दूधर्म पर अनास्था के कारण—

"किन्तु इस परवर्ती कलेवर वृद्धि से विशुद्ध, हमारा सत्यधर्म, जिसकी शिक्षा केवल वेदो मे दी गई है, किसी विचारशील व्यक्ति का अनुमोदन प्राप्त करने मे पीछे नही रहते। गम्भीर अध्ययन और अनुसधान के बाद पश्चिम के दार्शनिको तथा विद्वानो ने इस तथ्य को प्रमाणित किया है कि हिन्दुओ के प्राचीन धर्म-ग्रन्थ—वेदो तथा उपनिषदो मे उत्तम कोटि का ज्ञान भरा पड़ा है जो सबके द्वारा सम्मान करने के योग्य है। यथार्थरूप मे हिन्दू धर्म की वर्तमान स्थिति कुछ ऐसी है कि कोई शिक्षित व्यक्ति उसकी महत्ता पर विश्वास

प्रस्तुति: आचार्य दत्तात्रेय आर्य

नही कर सकता और न ही इसका प्रामाण्य स्वीकार कर सकता है। बहुत काल तक मैंने अपने विश्वास को इस धर्म मे केन्द्रित रखा किन्तु अन्ततोगत्वा यह मुझे ऐसी भूल प्रतीत हुई जिसे छोड़ना ही श्रेयस्कर था। सावधानी से परीक्षण करने पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस विशुद्ध वैदिक धर्म को भ्रष्ट करने वाले परकालीन ब्राह्मण ही थे।"

"श्रद्धा-भक्ति के लबादे मे वे अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए तथा बुरे रीति रिवाजो के निगूहित दुरितो को प्रचलित करने के लिये शास्त्रो मे मे स्वकल्पना प्रसूत नये-नये अंशो के पैबन्द लगाते रहे। इस प्रकार हमारा प्राचीन धर्म अब इस अवस्था में है कि इसके बहुत से अश अवश्य त्याग देने चाहिए।

कुरान और बाईबिल से निराशा

अत इसे छोड़कर बाद मे मैंने मुस्लिम धर्म ग्रन्थो का परीक्षण किया और कुरान के बहुत से अंशो को कण्ठस्थ किया। यही नही मैंने कुछ कट्टरपंथी मुसलमानो की सगति की ताकि उनके व्यावहारिक जीवन का कुछ प्रभाव मुझ पर पड़े किन्तु उनका सम्प्रदाय भी मुझे सतुष्ट न कर सका।"

"अपने लक्ष्य मे अग्रसर होते हुए मैंने बाइबिल भी खोली, निश्चित ही, इसकी कहानियो और नीति-कथाओ ने मेरी कल्पना को प्रभावित किया, किन्तु मेरे दिल या दिमाग पर इसका ऐसा प्रभाव नही हुआ कि मैं इसे ईश्वर का शब्द मान सकता और जीसस का ईश्वर-पुत्र होना, उनका एक कन्या (मरियम) मे जन्म लेना-आदि ऐसी बाते थी जिनका मतलब मेरी समझ के परे था।"

"थोड़े समय मे किसी भी धर्म ने मुझे सतुष्ट नही किया जिनका मैंने अध्ययन किया। मेरा विचार है—कि धर्म का सम्बन्ध शरीर से बहुत कम आत्मा से अधिक है किन्तु मतो के साधारणीकरण ने विश्वास की आधारशिला उन वस्तुओ पर रखी है जो ग्राह्य और मूर्तविषयक है और अच्छाई या बुराई की प्राप्ति के साधनरूप मे उसी वर्ग की वस्तुओ की सस्तुति की है। किन्तु सच्ची धार्मिकता सत्य सिद्धान्तो, सदाचार और पवित्र आत्मा मे निहित है।"

वेद और स्वामी दयानन्द का प्रभाव

"जब मेरा मन इन सन्देहो और अनिश्चयो से उद्विग्न था मुझे एक बार एक टॉग टूट जाने के कारण "EYPORE' मे दो माह के लिए अपने बिस्तर पर बधना पड़ा। उस समय वेदो को सुनने और उनमे क्या है? इसे जानने की इच्छा जाग्रत हुई। तदनुसार, समय बिताने के साधन रूप मे तथा अपने हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को दूर करने की आशा मे-मैंने वेदो के मत्रो का पाठ और उनकी व्याख्या सुनना और उन पर ध्यानपूर्वक विचार करना प्रारम्भ कर दिया। मैं सम्पूर्ण वेदो को पढ लेने या उनमे किसी रूप मे पारगत होने का दावा नही करता किन्तु उनसे, निश्चित रूप मे, मेरे क्लान्त हृदय पर बड़ा सुखद प्रभाव पड़ा इसलिए अन्ततोगत्वा मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आर्यों के प्राचीनतम और प्रतिष्ठित धर्म ग्रन्थो मे धर्म के सम्बन्ध मे वास्तविक सर्वांगरूपेण अन्तर्निहित है। दूसरे सभी धर्मग्रन्थो मे-अच्छाई-बुराई, सच-झूठ, सशयास्पद-रूप मे मिश्रित हैं।" "इसके कुछ समय बाद, जब मै जोधपुर मे था।- स्वामी दयानन्द सरस्वती वहा आए और मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की मैं भी उनसे मिलने को उत्सुक था मैंने उनकी बड़ी प्रशसा सुनी थी अत मैं अपने बड़े भाई महाराजा यशवन्त सिंह के साथ उनसे मिलने गया। थोड़े वार्तालाप के बाद ही हम लोगो को उनके बड़प्पन का विश्वास हो गया।

ऋषि दयानन्द का भव्य व्यक्तित्व

आकृत्या निस्सन्देह वे प्राचीन ऋषियो की भांति थे उनकी वाणी सिंह के गर्जन सदृश थी ब्रह्मचर्य का तेज उनकी आँखो से दमकता था। अब तो सम्पूर्ण विश्व उनकी विस्तृत विद्या और महान् व्यक्तित्व से परिचित हो चुका है। मेरे विचार से यह भारत के लिए गौरव की बात है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती उसे दीर्घ सुप्तता की प्रगाढ निद्रा से उद्बुद्ध करने के लिए प्रकट हुए। वे भारत माँ के महानतम और सच्चे से सच्चे शुभ-चिन्तक थे जिन्होने जीवनभर केवल उसी के लिए कार्य किया।'

आर्यसमाज से आशाएँ

' मैं उनका अत्यधिक सम्मान करता हूँ, वस्तुत मैं उन्हे अपना गुरु मानता हूँ, क्योकि उन्होने मुझे बहुत सी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक : रासासिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   फोन कार्या : 21010

सम्पादकीय

दयानन्द शोधपीठ खत्म नहीं की जाय
हरियाणा सरकार से विशेष अपील

आर्य समाज अजमेर ने अपनी एक विशाल सभा मे सर्वसम्मत से प्रस्ताव पारित कर हरियाणा तथा विशेषत मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल तथा हरियाणा राज्य के शिक्षामन्त्री एव कुरुक्षत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति से पुरजोर शब्दो म अपील की है कि विगत 15 वर्षों से सुस्थापित एव सुसचालित दयानन्द चेयर (वैदिक शोधपीठ) को समाप्त नही किया जाय तथा इसे पूर्ववत कायरत रहने दिया जाय । ' इस शोधपीठ मे पूर्व मे श्रीनिवास शास्त्री तथा आचार्य कपिलदेव शास्त्री जैसे प्रकाण्ड विद्वानो ने सेवाकार्य के दौरान महत्वपूर्ण शोधकार्य करते हुए कई अनमोल ग्रन्थ देश को अर्पित किये हैं अब यकायक किन्ही वेद व्यासपीठ के द्वय पौराणिक सचालको द्वारा सरकार से इस चेयर को समाप्त कराने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है । सभवत देश के महान समाज सुधारक वेदोद्धारक, राष्ट्रीयता के प्रथम मन्त्रदृष्टा और सत्यान्वेषी महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो पर शोधकार्य करना पौराणिक प्रोफेसरों के गले नहीं उतर रहा होगा । इसी आधार पर दिसम्बर 87 ई. के बाद अभी तक दयानन्द पीठ के प्रोफेसर पद को नहीं भरा गया है । पजाब विश्वविद्यालय के अन्तगत चडीगढ मे दयानन्द शोधपाठ कायरत है इसी प्रकार राजस्थान में दयानन्द कालेज अजमेर म भी शोधपीठ की स्थापना की गई है ।

हरियाणा जैसे जाग्रत और आर्य समाज बहुल प्रदेश मे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय मे पूर्व स्थापित दयानन्द शोधपीठ का सचालित रहना नितान्त आवश्यक एव अनिवार्य है । लाखो आर्यों और देशभक्तो की भावनायें जुडी हुई हैं । आर्य समाज का विश्वव्यापी, लोकोपकारी सगठन इस शोधपीठ को बन्द करना कभी बरदाश्त नही करेगा । देश की प्रबुद्ध जनता विशेषत आर्य समाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ तथा आर्य नेताओ से प्रार्थना है कि वह हरियाणा सरकार तथा मुख्यमत्री श्री देवीलाल को पत्र लिखकर, प्रस्ताव प्रेषित कर यह आग्रह करे कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अन्तर्गत दयानन्द शोधपीठ को चालू रखा जाय, रिक्त प्रोफेसर के पदों को भरा जाय ताकि वेद और दयानन्द पर अनवरत शोधकार्य हो सके । इससे हरियाणा सरकार की ही शोभा बढेगी ।

—रासासिह

आतंकवाद का "मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की"

देश मे सामान्य तौर पर और भारत की भुजा कहलाने वाले पजाब राज्य मे विशेषत गत पाच छ वर्षों के दौरान आतकवाद की बीमारी दिन दूनी और रात चौगुनी बढती ही जा रही है । ब्ल्यू स्टार ओपरेशन से लेकर सीमा की सीलबन्दी और रेड अलर्ट, बरनाला सरकार की बर्खास्तगी, राष्ट्रपति शासन राष्ट्रपति सुरक्षा अधिनियम, राय और रिबेरो के प्रयासो आदि समस्त क्रियाकलापो के अन्तिम चरण मे पुन अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर से पिछले कुछ दिनो से लगातार आतकवादियो द्वारा किलेबन्दी कर सुरक्षा बलो से गोलियो से मुकाबला करना और आतकवादियो द्वारा स्वर्ण मन्दिर से हाथ खडे कर आत्म समर्पण करने के लिए प्रस्तुत होना आदि तक भी अभी आतकवाद की आधी थमने का नाम ही नही ले रही है । मर्ज बढता ही चला जा रहा है ज्यो 2 दवा की जा रही है । रोज 20-25 निर्दोष व्यक्ति बालक बूढे, जवान, कर्मचारी, सैनिक, मजदूर, माताए बहनें ए के 47 राइफलो से निकलन वाली गोलियो का शिकार हो रही हैं । निर्दोषो का खून बहाया जा रहा है । क्यो ? एक ही उत्तर है मर्ज सही नही पहचाना गया । इसलिए बढता जा रहा है । पत्तो को पानी दे रहे है जडो को नही ।

पजाब की धरती रक्त रजित हो चुकी है । लोगो का जानमाल खतरे मे है । हजारो हिन्दू और कही कही देशभक्त सिक्ख भी सीमान्त क्षेत्रों के गावों को खाली कर अपने घरबार छोडकर अपने मासूम बीबी बच्चो को लेकर शहरो की ओर भाग गये हैं । उत्तरी भारत के विभिन्न शहरो मे शरणार्थियो का जैसा जीवन बसर कर दाने दाने को मोहताज हो रहे हैं, हिन्दू-सिख एकता और भाईचारे मे दरारें पडन लगी हैं और हमारी यह राजीव गाधी की सरकार एक के बाद एक प्रयोग कर कडी कार्यवाही करने, कठोर कदम उठाने का कोरा स्तोत्र पाठ कर रही है ।

मातृभूमि, देश की रक्षा तथा इन्सानों को बचाने से बढकर कोई मन्दिर, मस्जिद की पवित्रता नहीं हो सकती । शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति अथवा अकाली दल के विभिन्न धडों या विभिन्न ग्रन्थियों और रागियो की ओर टुकुर-टुकुरताकने या देखने से काम नहीं चलेगा । यदि सिक्खिस्तान या खालिस्तान के नारों को कुचलना है तो उनको वादियों को नेस्तनाबूद करना होगा अन्यथा पजाब के हर गांव मे रोज नये 2 आतकवादी सगठन कुकुरमुत्तो की तरह अपना सिर उठा रहे हैं । इनसे निपटने का एकमात्र उपाय पजाब को सेना के हवाले सौंपना है तथा इन पृथकतावादी आतकवादियों के गढ़ों को बिना परवाह किये हुए सरकारी सरक्षण मे ग्रहण कर कड़ा पहरा बिठा देना है ताकि वे भगवान के तथाकथित मन्दिर आतकवादियों की शरणस्थली न बने । आतंकवादियों के नेताओं से कोई बात नहीं की जाय । राजनैतिक गोटियां लाल करने का कुत्सित खेल बन्द किया जाय । राष्ट्रहितों को सर्वोपरि मानकर कठोरतम कदम उठाकर एक बार निर्णायक कदम उठा लिया जाय । अब धैर्य का प्याला छलकने वाला है बहुत परीक्षण कर लिये । बन्द करो इन नाटकों को । समझ मे नही आता दयानन्द का आर्य समाज क्यो सो रहा है ?

—रासासिह

उफ ! अनाथ होने की इतनी बड़ी सजा

सरकारी भोपू चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि आजादी के चालीस वर्षों मे देश ने आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से बहुत उन्नति की है ।

तथाकथित सुधारवादी सगठनो से जुडे लोग यह कहते हुए नहीं अघाते कि हमने स्वतत्र भारत के सभी नागरिको मे समानता के भाव को गहरे तक भर दिया है ।

वास्तविकता कुछ और ही है । गत 7 मई को जयपुर के 'राज्य महिला सदन' ने 'नारी निकेतन' की 13 आवासनियो की शादी सम्पन्न कराई ।

सूत्रो के अनुसार ये सभी लडकिया बचपन से ही किसी न किसी रूप से अनाथ थीं । इनको निकेतन ने ही पढाया और लिखाया था ।

पढाया-लिखाया कितना ? इसको लेकर प्रशासन को सवालो के कठघरे में खडा किया जा सकता है । परन्तु हमारा यहा इस पर चर्चा करना अभीष्ट नही है ।

समाचारो के अनुसार ये सभी लडकिया कक्षा छह तक पढी हुई थी और इन सभी के दूल्हो के लिए 'काला अक्षर भैंस बराबर' था ।

इसी के साथ ही एक खेदजनक बात (एक राष्ट्रीय पत्र का सवाददाता इसे एक मजेदार बात लिखता है—बहुत खूब !) यह है कि इन सभी दूल्हो की यह दूसरी शादी थी । इनकी पहली पत्निया मर चुकी हैं ।

राज्य का समाज कल्याण विभाग कहता है कि हमारा उद्देश्य आवासनियो का किसी सुयोग्य एव कामकाजी युवक से विवाह करना था । अपने इस उद्देश्य मे विभाग पूर्ण सफल हुआ है, इसमे भी हमें सन्देह है ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार विवाह करने वाले सभी युवक निम्न से भी निम्नतर आय वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले थे ।

प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार इन युवको मे से अधिकाश देखने मे अधेड लगते थे । जबकि वे अपनी उम्र बहुत ही कम बतान थे (अनपढ व्यक्तियो की जन्मतिथि देखने के लिए कोई शैक्षिक प्रमाण पत्र तो हो सकता नही—सो चाहे जो बता दो) ।

'नारी निकेतन' की इन आवासनियो के इन विवाहो से आज के समाज का जो चेहरा उभरता है, वह अत्यन्त ही घिनौना है ।

इससे सिद्ध होता है आज भी हम रूढिवादिता ग्रस्त मान्यताओ से छुटकारा नहीं पा सके हैं । कक्षा छह उत्तीर्ण एक लडकी को एक अधेड विधुर अनपढ और निम्न स्तर का जीवन जीने वाले व्यक्ति के साथ मात्र इसलिए बधना पडता है कि वह अनाथ है (चुल्लू भर पानी मे डूब मरो—समाज-सुधार के ठेकेदारों) ।

जब कोई योग्य युवक आवासनियों को जीवन सगिनी बनाने हेतु तैयार न हो तो उन्हें फिर विवश हो उपलब्ध किसी भी व्यक्ति से विवाह के लिए सहमत हो जाना पडेगा ही । आखिर वो भी तो सेक्स को ही विवाहित जीवन का मुख्य उद्देश्य मानने वाले समाज का ही एक हिस्सा हैं ।

—वीरेन्द्र आर्य

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रचार कार्य

छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर स्वामी दयानन्द 'विदेह' ने प गोविन्द प्रसाद आर्य 'विद्यावारिधि' के साथ अप्रेल मास मे निम्नलिखित स्थानो पर वेद प्रवचन का कार्य किया—कार्के के ब्लाक चौक और पशु चिकित्सा महाविद्यालय के पशुपतिनाथ मन्दिर, नमरा टोली बेलगढा गुमला, बाबरा लोहरदगा, निवनी ग्राम, नगर उन्टरी,, चपरी ग्राम, टाऊनशिप, बरसली, भवनाथपुर और कन्द्रावेर ग्राम के माता स्थान।

हजारीबाग जिले के केरेडारी प्रखण्ड के कन्द्रावेर ग्राम में तीन दिनो तक वेदमाता गायत्री यज्ञ एव आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया।

—दयाराम पोद्दार (मन्त्री)

शिमला में आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की ओर से आर्य समाज लोअर बाजार शिमला मे दिनाक 10 से 12 जून तक एक "आर्य महासम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है जिसमे अनेक गणमान्य नेता महात्मा विद्वान और सगीतज्ञ पधार रहे हैं। 11 जून को एक भव्य शोभा यात्रा भी निकलेगी।

—भगवान देव 'चैतन्य' (मन्त्री)

गऊशाला जींद शहर की उल्लेखनीय उपलब्धियां

जींद शहर की गऊशाला का शुभारम्भ सन् 1894 को हुआ। यह हरियाणा प्रान्त की पुरानी गऊशालाओ मे से एक है। इसमे 600 गऊओ से ज्यादा के रहने का पूरा प्रबन्ध है। गत वर्ष भयकर सूखे के कारण गऊशाला के प्रबन्धको ने विशेष रूप से सक्रिय काम किया। आस-पास के इलाके की भूखी बीमार गऊओ को अपने यहा रखकर उनको चारे द्वारा सर्दी-गर्मी से बचाव किया। उनकी पूरी सुरक्षा की व्यवस्था की गई। इस समय मे गऊशाला मे 1200 से ज्यादा गऊए हैं। इनके रखाव के लिए लाखो रुपये की लागत से बैरकें बनवाई। सूखे और हरे चारे का प्रबन्ध किया। इसके अलावा शहर मे इधर-उधर भटकती गऊओ के लिए नागरिको को गऊशाला के अधिकारियो ने प्रेरित करके उनके चारे का प्रबन्ध किया।

इस समय गऊशाला की देखरेख के लिए 50 कर्मचारी काम करते हैं। सब गऊओ का पानी का इन्तजाम इनकी बैरको मे ही है। उनके चारे के लिए हर रोज 12 बग्गी आती हैं। गऊशाला के पास 95 एकड़ भूमि है। 11 ट्यूब वैल, तीन ट्रैक्टर, दो बैल गाडिया और दो छोटा बुग्गी हैं। गऊशाला का बजट लगभग 8 लाख का होता है। गऊशाला के खर्चे की पूर्ति दुकानो और क्वार्टर्स के किराये आदि से होती है। अब कमेटी ने दो लाख की लागत से नई बैरकें बनवाने का निर्णय लिया है। गऊशाला का सारा स्थान पक्का है। जो बाकी है उसे पक्का किया जा रहा है। गऊशाला से दूध उचित दाम पर शहर के नागरिको को वितरित किया जाता है।

सरकार का गऊशाला को पूरा सहयोग मिलता रहता है। इस साल सूखे से निपटने के लिए हरियाणा सरकार ने भरपूर आर्थिक अनुदान दिया।

—छबील दास आर्य
(उपप्रधान)

—गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन मे 1 मई, 1988 से छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ है। —मुख्याधिष्ठाता

—लक्ष्मीबाई इन्दुमति पवनाष्कर विद्यालय, पटेल भवन के पास, जयपुर रोड, अजमेर की नर्सरी कक्षाओ मे प्रवेश प्रारम्भ है। —संचालक

ऋषि दयानन्द से

—लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'

समय दे रहा है, चुनौतियो पर चुनौतिया,
देखता हूँ—पिये जा रहे हैं लोग।
यह कैसी जिन्दगी है तेरे दीवानो की,
अपमानो मे जिये जा रहे हैं लोग।

तेरी समाधियो के आगन मे,
आधियो के नृत्य होते हैं।
आज धधक रहा है घर अपना,
वीर मरदाने पड़े सोते हैं।

और अगिरा की गिरा पाकर भी
ओठ सिये जा रहे हैं लोग।
समय दे रहा है चुनौतियो पे चुनौतिया,
देखता हू—पिये जा रहे है लोग।

अपनी दक्षिणा की याद दिलाते हैं गुरु विरजानद
चार लोगो का समर्पण कहाँ गया।
कुछ तो कहो अपनी वाणी से—
दहकती सासो का क्रन्दन कहाँ गया।

चुप खड़े हैं आप गुरु सम्मुख,
दोष पर दोष दिये जा रहे हैं लोग।
समय दे रहा है चुनौतिया पर चुनौतिया,
देखता हूँ—पिये जा रहे है लोग।

प्रात लाने को रात भर जागे,
शिव खोजने को घर से भागे थे।
रात गयी कहा है ? अब तक है,
भोग जिसके लिये सब त्यागे थे,

वेदमाता की कोख रोती है,
वार पर वार किये जा रहे लोग।
समय दे रहा है चुनौतिया पर चुनौतिया,
देखता हू—पिये जा रहे है लोग।

किसलिये, पिये थे, विष प्याले,
यह तो बताओ ऋषि हमको,
हमे डस लिया है कृतघ्नता की नागिन ने,
फिर से तुम जगाओ, ऋषि हमको।

तुम्हारे बलिदानो का कर्ज कितना है,
इसे शीश पर ढोये लिये जा रहे हैं लोग।
समय दे रहा है चुनौतियो पर चुनौतिया,
देखता हू—पिये जा रहे हैं लोग।

तुमने तरुणायी जिस पर होमी थी,
वह कौन लक्ष्य थी, जिसका सगर था।
वह कौन प्राप्ति थी जिसे पाने को,
तुम्हारा मुक्ति-सुख निछावर था।

तुम बताओ इसका है उत्तर क्या ?
प्रश्न पर प्रश्न किये जा रहे है लोग।
समय दे रहा है चुनौतियो पर चुनौतिया,
देखता हू—पिये जा रहे हैं लोग।

इस सवाल ने फिर सिर उठाया है,
'समाज' श्मशान है कि बगीचा है।
जिसके सपनो मे आप खोये थे
जिसे अपने लहू से सीचा है।

कैसा पहरा चौकीदारो का,
बाग, बरबाद किये जा रहे है लोग।
समय दे रहा है चुनौतियो पर चुनौतिया,
देखता हू— पिये जा रहे है लोग।

(शेष पृष्ठ 1 का)

महाराजाधिराज जोधपुर

अच्छी चीजें पढ़ाई। बाद मे उन्होने "आर्यसमाज" नामक एक सगठन की स्थापना की मैं इसमे सम्मिलित हुआ जोधपुर मे एक समाज की स्थापना की। मेरा विश्वास है कि यह समाज भारत की प्रगति के लिए एक शक्तिशाली उपाय के रूप मे काम करेगा। इसके द्वारा बहुत कम समय मे जो काम हुए हैं और जो सुधार हुआ है, उनसे आशा जगी है कि भारत को उसकी वर्तमान अधोगति से उबारने के लिए इसका महत्तम योगदान होगा।"

"स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाएँ हम दोना भाइयो के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई।"

मास भक्षण पर मतभेद

"सर प्रतापसिंह और उनके बडे भाई महाराजा यशवन्त सिंह, जो उस समय जोधपुर रियासत के शासक थे, को यह सन्देह था कि एक क्षत्रिय होने के कारण, आखेट एव मासभक्षण की परम्परा वाले क्या वे आर्यसमाज के सदस्य हो सकते हैं। जैसा कि सर प्रतापसिंह ने स्वय स्पष्ट किया है कि यद्यपि स्वामी जी मासभक्षण के पक्षधर नहीं थे किन्तु उन्हे उन लोगो के आर्यसमाज मे सम्मिलित होने मे कोई एतराज नहीं था।"

"इसमे सन्देह नहीं कि "सर" प्रतापसिंह स्वय इस विचार के थे कि बहादुर और युद्धप्रिय जातियाँ मांसाहारी नहीं। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण के कुछ विवादास्पद अशो का उद्धरण देते हुए जो कि स्वामी जी की अनुमति के बिना प्रक्षिप्त कर दिये गये थे उन्होने तो यहा तक कहा कि जैनमत के (अहिंसा) के सिद्धान्त ने भारतवासियो को कमजोर और आत्महीन बना दिया। 'सर'' प्रतापसिंह इस तथ्य की पुष्टि करते हैं 'भारत की वर्तमान परिस्थितियो मे वे इसके सहयोगी समर्थक नही हो सकते। फिर भी उन्होने उदयपुर के महाराणा को परोपकारिणी का अध्यक्ष (प्रधान) नियुक्त किया तथा महाराजा यशवन्त सिंह एव स्वय (सर प्रतापसिंह) आर्यसमाज के सदस्य बन गये।"

महात्मा हसराज को श्रद्धाजलि

'डी ए वी आन्दोलन के सचालक दिवगत महात्मा हसराज को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए सर'' प्रतापसिंह कहते हैं कि—

'जो कार्य स्वामी जी के द्वारा आरम्भ किया गया था, उनकी मृत्यु के बाद उसे (कम से कम उसका शिक्षा और धर्मोपदेश का अग) दयानन्द-ऐंग्लो-वैदिक कालिज लाहौर के प्राचार्य लाल हसराज बी ए ने अपने हाथो मे लिया और सभी इसे भली-भाँति जानते हैं कि वे इसे किस प्रकार अब तक वहन करते रहे हैं। स्वामी जी की स्मृति मे 20 वर्ष तक लाहौर मे एक कालिज स्थापित किया गया, अप्रेल 1905 में उसकी इमारत का शिलान्यास करने का सौभाग्य मुझे मिला, लगभग 20 वर्षों तक ला हसराज बिना किसी वेतन के इस कालेज की सेवा करते रहे, और यह सर्वविदित है कि इसकी सेवा के लिए उन्होने अपना जीवन अर्पित कर दिया। यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके बहुत से शिष्य उनके पुनीत मार्ग का अनुसरण करने को तत्पर हैं। तीरा से लौटते हुए मैंने प्रथम बार कालिज को देखा था, पुन 1905 मे शिलान्यास के समय इसका प्रगति का निरीक्षण किया।

मेरी दृष्टि मे हिन्दुओं के शैक्षणिक विकास के लिए भारत में यह एक विशिष्ट सस्था है और इससे और अधिक अच्छाई की आशा की जा सकती है।"

जीवन-गाथा लेखक निम्नलिखित निष्कर्षों के साथ "सर" प्रतापसिंह के "धार्मिक विचारो" के इस अध्याय का उपसहार करता है —

"सन् 1916 मे 'सर'' प्रतापसिंह ने इन विचारो को प्रकट किया, इसमे आश्चर्य नहीं कि उन्होने खुले मस्तिष्क से परिश्रम पूर्वक धर्म के उस स्वरूप की खोज की हो जो उनकी आत्मा को शान्ति ला सके।"

आर्य समाज के प्रति उनका स्याग उन लोगो के प्रति उनकी अव्यभिचरित भक्ति का ज्वलन्त दृष्टान्त है जिनसे कभी उन्होने भिन्नता की थी। राजनीतिक क्रिया-कलाप जिनमे कि समाज के कुछ सदस्य ससग्न थे—उनको घृणास्पद लगते थे और किसी भी रूप मे वे उनका समर्थन करने वाले अन्तिम व्यक्ति होते किन्तु साथ ही किसी भी मूल्य पर वे उस समाज से सम्बन्ध विच्छेद करना नही चाहते थे जिसके धार्मिक पक्ष से उन्हे पूर्ण सहानुभूति थी।'

"जीवन-गाथा" लेखक के द्वारा उल्लेखित एक महत्वपूर्ण घटना

"सर" प्रतापसिंह के जीवन मे घटित एक महत्वपूर्ण घटना से यह प्रकट होता है कि वे उस समय प्रचलित जाति-ससाकर्य (कास्ट टेबूस) से सम्बद्ध स्वामी दयानन्द के विचारो से किस सीमा तक प्रभावित थे। सन् 1897 मे जोधपुर मे एक अग्रेज जे डी कैंडेल (सैनिक) टाईफाइड से मर गया वहा केवल तीन अग्रेज और वे जो अर्थी को उठा सकते थे क्योकि कोई सवर्ण हिन्दू जनाजे को नहीं छू सकता था, इस कठिनाई मे सैनिक के निराश पिता जी.टी कैंडेल सी सी ने "सर" प्रतापसिंह को सुझाव दिया कि वे एक भगी को बुला लें क्योकि उसकी कोई जाति नही जिससे छूत होने का डर हो। किन्तु लोगो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब अर्थी उठाने वालों मे चतुर्थ सर प्रताप स्वय बन गये पर जब महाराजा को बहिष्कृत करने वालों इस अनहोनी पर कुछ ब्राह्मण असमञ्जस हुए तो "सर" प्रतापसिंह ने उन्हें यह कहते हुए डाँट लगाई कि ब्राह्मण और राजपूत सभी एकी मिट्टी मे मिल जाएगे और सभी सहृदय जनो की जाति एक है।"

"सर' हेनरी न्यूबोल्ट ने अपने- "बाल्ड ऑफ सर प्रतापसिंह"—मे इस घटना का सुन्दर वर्णन किया है।

(मूल अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद. डॉ बाबूराम शास्त्री)

पत्र बोलते हैं....

निर्णय को लागू कौन करेगा ?

महोदय,

आर्य पुर्नगठन की प्रतीक्षा रहती है। घण्टे दो घण्टे लिए कुछ पठनार्थ मिल जाता है। इन पृष्ठों मे दर्द छिपा हुआ मिलता है उससे ऐसा आभास मिलता है कि अभी भी कुछ लोग तो हैं जिनको आर्यसमाज तथा देश का दु ख दुखी कर रहा है।

30-4-88 के अक मे 'आर्यसमाज के सम्बन्ध मे (सार्वदेशिक) सभा का दूरगामी निर्णय' लेख पढा। पढ कर गालिब का निम्न शेर याद आया—

हम को मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के बहलाने को 'गालिब' यह ख्याल अच्छा है

इस निर्णय को लागू कौन करेगा ? इस निर्णय को लागू करने मे सभा कुछ करेगी ? कदापि नहीं। किन बातो से प्रेरित होकर यह निर्णय लिया गया है। इस बात को केवल प्रभु ही जानते हो। जो सभासद और आर्य सभासद होंगे, उनका निर्णय कौन करेगा ? जिस समाज में केवल झूठ का बोल बाला है वहां क्या आशा की जा सकती है ? आप स्वय कितने ही लोगो के सम्पर्क में आते होंगे। क्या आपने कभी पता करने का कष्ट किया है कि कितने आर्यसमाजी अपनी आय का शतांश आर्यसमाज को देते हैं ? हममें से कितने ऐसे हैं जो दस नियमो को मान कर तदनुसार आचरण करने का प्रयत्न करते हैं।

जी तो हमारा भी चाहता है कि ऐसे समाज से अलग हो जाए परन्तु ऋषि दयानन्द का इतना ऋण है कि उस को हम उतार ही नही सकते। जो कुछ कर पाते हैं उसको छोड पूर्ण रूपेण कृतघ्नो की श्रेणी मे सम्मिलित नहीं होना चाहते। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती जी ने घोषणा तो कर दी ([illegible]) परन्तु क्या वे आर्यसमाज से पृथक हो सकते हैं ? लेकिन कार्य कर रहे हैं और करते रहेंगे। किसका ? आर्यसमाज का। तो क्या वास्तव मे अलग हो पाए हैं ? नहीं। वे अलग हो ही नही सकते।

जरूरत है इस बात की कि आर्यसमाज रूपी भवन मे जो गली-सडी ईंटें (धूर्त लोग) हैं उन सहित सारे भवन को गिराकर केवल पूरी तरह पकी हुई ईंटें छांट कर पुन इस भवन का निर्माण करने का प्रयत्न किया जाय। कैसे किया जाय ? यह सोचना आप जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियों काम है।

—रघुबीर सिंह आर्य,
प्रधान, आर्यसमाज, बहादुरगढ (हरियाणा)

श्री रतनलालगर्ग द्वारा श्री आर्यप्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया

DOPLICATE

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

॥ ओ३म् ॥

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 सोमवार 30 मई, 1988
अंक 10 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी स 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

ईसाई मिशनरी और धर्मान्तरण

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

टाइम्स आफ इंडिया के 23 और 24 मई, 1988 के अंको मे श्री रामस्वरूप का 'Proselytization As It Is Pratised' नामक लेख धारावाही रूप से प्रकाशित हुआ है। इसमे लेखक ने ईसाई मिशनरियो के धर्मान्तरण कराने के तरीकों तथा उसके धार्मिक औचित्य पर चर्चा की है।

लेखक ने यह लेख मिशन की पुस्तिका (14,15 मार्च) मे प्रकाशित श्री कुवदिला चेन्डी के विचारो की प्रतिक्रिया स्वरूप लिखा है। श्री चेन्डी ने धर्मान्तरण के लिए किए जाने वाले कार्य को अपनी दृष्टि से उचित एव मान्य ठहराया है। वे इसकी तुलना राजनैतिक दलो के लोगों के द्वारा किए गए दल-बदल से करते हैं। जबकि इसके प्रत्युत्तर मे श्री रामस्वरूप का कहना है कि धर्मान्तरण का कार्य ईसाइयत मान्यता धम अथवा व्यवहार में अमान्य है। यहा तक कि ईसाई धर्म की सर्वोच्च धार्मिक सस्था चर्च द्वारा भी इसे मान्यता नही दी गई है।

अपने लेख में लेखक महोदय आगे लिखते है कि किसी भी पथ-सम्प्रदाय का वास्तविक रूप तब देखने मे आता है जब उन्हे सत्ता मे भागीदारी मिलती है। वे इस सदभ मे आगे लिखते हैं कि जैसे ही ईसाई मत के लोग शासक बने तो उन्होने विधर्मियो के धार्मिक स्थानो को नष्ट कर दिया और उन स्थानो की आय को गिरजाघरो को दे दिया।

लेखक थीयोडोसीयान 380 ए डी कोड का हवाला देता है हम आदेश करते हैं कि विधर्मियो के समस्त देवालय पूजास्थल यदि अभी भी बचे हो तत्काल समाप्त कर दिए जाए।

श्री रामस्वरूप के अनुसार ऐसा ही अभियान यूरोप के उत्तर म भी चलाया गया था। और उस दौरान ईसाई पादरियो साधुओ ने जो ग्रट ब्रिटेन और जमनी के थे अ य धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले देवालयो व धार्मिक स्थानो को नेस्तनाबूद कर दिया। तेरहवी शताब्दी मे लिटकोनिया व टयूरोनिक म धार्मिक तथा फौजी सरदारो द्वारा बलपूवक धर्मान्तरण कराया गया।

लेखक आगे बताता है कि किस प्रकार मध्ययुगीन काल मे चच ने शिक्षा दी कि पोप पृथ्वी पर भगवान है इसलिए पृथ्वी का समस्त राज्य एव अधिपत्य उसी का है। उस मध्य युग मे चर्च की मान्यता थी विधर्मियो (ईसाइयत के अतिरिक्त) के देशो-स्थानो पर एकमात्र अधिकार उन पर आक्रमण करना जीतना उन्हें अपने अधीन रखना हमारा (ईसाई) धम है। उस युग मे किस प्रकार बलपूवक अन्य धर्मावलम्बियो का धर्मान्तरण किया गया इसकी बडी लोमहषक कहानी है। लेखक इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए एक-दो उदाहरण भी पश करता है।

मैक्सिको के प्रथम बिशप जुआन डी जुमैरेज ने सन 1553 मे प्रकाशित अपने लेख मे यह दावा किया था कि उसने स्वय 2000 मूर्तिया एव 500 देवालयो स अधिक को नष्ट-भ्रष्ट किया जो कि विधर्मियो के थ। द्वितीय कोचीन से से ट जेवीयर द्वारा पुतगाल के बादशाह के नाम भेजे एक सदेश का उद्धरण दिया है जिसमे जेवीयर ने लिखा था आपको स्पष्ट व प्रभावशाली आदेश देने चाहिए कि जो मेरे राज्य मे रहत है यदि उन्हे बचना है जीवित रहना है तो वे तत्काल धर्मान्तरण (ईसाई बनें) कर लें।

उपयुक्त उदाहरणा के आधार पर श्री रामस्वरूप श्री चेन्डी की मान्यता कि धर्मान्तरण राजनीतिक दल बदल जैसा है को ईसाइयत क इतिहास के आधार पर अमान्य करार देते हैं। लेखक महोदय धर्मान्तरण के इस काय को ईसाईयो की हठधर्मिता और कट्टरपथता एव ईसा मसीह की शिक्षाओ को स्वीकार न करना कहता है। इस सन्भ मे लेखक ईसाई धम के गभीर अध्येता महात्मा गाधी के निम्न विचारा को भी अपने समथन मे प्रस्तुत करता है यह काय (धर्मान्तरण का) मृत्युकारक भयकर तथा सत्य की जड को चट कर जान वाला है। यह हठधर्मिता सनकीपन एव द्विगुणित झूठ है।

धर्मान्तरण करने म किसी की भी चाह या भूख नही होती न ही इसका कोई आध्यात्मिक पक्ष है। ऐसी मिशनरिया किसा सामान के व्यापारी के सदृश है जिनका उद्देश्य मात्र अपना ही भला करना होता है। यदि मेरे मे शक्ति होती तो मैं ऐसे धर्मान्तरण को तत्काल टोक देता।

श्री रामस्वरूप ने अपने लेख मे

(शेष पृष्ठ 4 पर)

धर्मान्तरण कराने के प्रयास का ताजा उदाहरण

गत दिनो पर्वतीय प्रदेश लद्दाख से 54 बच्चो को स्टीफन नाम का एक पादरी अच्छी शिक्षा, मुफ्त भोजन, कपडे देने का लालच देकर श्रीनगर ले गया। उसने बच्चों के मां-बाप को यह लालच भी दिया था कि वह उन्हें डॉक्टर, इजीनियर बनाएगा और कहते हुए उसने एक कागज पर अभिभावकों के हस्ताक्षर या अंगूठे के निशान ले लिए थे। क्या लिखा था इन कागजो मे जिसे कानूनी भाषा मे समझौता पत्र का नाम दिया गया? यह समझौता पत्र वस्तुत ईसाई मिशनरियों की धोखाधडी चालबाजी और कपट व्यवहार का ही नहीं बल्कि असम्मानजनकता का भी प्रमाण कहा जा रहा है। इस समझौते मे यह शर्त है कि मां-बाप अपने ही बच्चों से साल भर में एक बार आकर किसी पादरी की उपस्थिति मे ही मिल सकगे और 18 वष तक बच्चे अपने घर नही आ सकेंगे।

यह सहज कल्पना की जा सकती है 18 वष के बाद ये बच्चे घर लौटेंगे हैं तो वे पूरी तरह से ईसाई बन चुके होते हैं। 54 परिवारो में ये ईसाई प्रचारक लद्दाख की बौद्ध सस्कृति और वयव्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए पर्याप्त होते हैं।

प्रसन्नता की बात है कि ईसाई मिशनरियो के इस षडयन्त्र को लद्दाख के बौद्धो के जागरूक एव जुझारू सगठन बौद्ध सघ ने जनान्दोलन कर विफल कर दिया और केन्द्र सरकार के सहयोग से सभी 54 बच्चों को मिशनरियो के चगुल से मुक्त करा लिया। (पाचजन्य के सौजन्य से)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक रामसिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   फोन कार्या : 21010

सम्पादकीय—

हम सिद्धान्तवादी एवं कर्तव्यनिष्ठ बनें

एक समय था कि आर्यसमाज समस्त राष्ट्र और विश्व के मस्तिष्क पर छाया हुआ था। बुद्धिजीवियो सुधारवादियो एव प्रगतिशील कहे जाने वाले तबको मे वह चर्चा का विषय बना रहता था। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन पर भी उसका अमिट प्रभाव था। जहा-2 आर्यसमाज था वहा-2 जीवन धड़कता था। एक क्रान्ति रहती थी। एक चेतना का निवास होता था। अंधविश्वास सामाजिक कुरीतिया, कुव्यसन और दानवता वहाँ पास फटकने का भी साहस नही कर सकते थे।

परन्तु आज संख्यात्मक दृष्टि से आर्य समाजों, आर्य समाज के स्कूल गुरुकुलो एव आर्य समाजियो की कहीं अधिक संख्या होने के बावजूद भी आर्य समाज का वह प्रचण्ड प्रभाव और तेजस्विता एव ओजमय-स्वरूप राष्ट्रीय जनजीवन मे नहीं झलकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित और स्वामी श्रद्धानन्द एव लाला लाजपत राय एव प रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा पोषित आर्य समाज अपने मन्दिरो भवनो विद्यालयो की चहार दीवारी तक ही सीमित हो गया है। कहा जाता था कि पजाब मे आर्य समाज की बहुत शक्ति है परन्तु विगत चार-पांच वर्षों से रक्तरंजित एव गोलियो की आवाज से गु जायमान हत्याओं की मरणस्थली एव आतंकवादियो एव देशद्रोही तत्वो की नाम क्रीडास्थली पजाब मे आर्यसमाज कछुआ धर्म की अथवा शुतुर्मु ग धर्म' की प्रवृत्ति को अपनाकर सर्वथा असहाय, निरुपाय होकर केवल अखबारी घोषणायें करके एक निर्जीव ढाचा मात्र रह गया है। उसकी क्षात्रत्व एव ब्रह्मत्व की शक्ति लुप्तप्राय हो गई है। न्यूनाधिक यही स्थिति देश के आम राज्यो मे भी रह गई है।

प्रतिनिधि सभाओ के आपसी विवाद, अधिकारो के लिये पदलिप्सा की होड़ कुर्सियो की छीना झपटी, संस्थाओ के माध्यम से अपनी आजीविका का निर्वाह करने, कोर्टों मे चल रहे चुनावी झगड़े उपदेशको एव विद्वानो की उपेक्षा, आर्यवीर दलो की समाप्त प्राय स्थिति, नई पीढ़ी का अभाव प्रचार की नवीनतम तकनीकों का अभाव, नये विद्वानो एव उपदेशको की कमी बढ़ता हुआ व्यक्तिवाद एव स्वार्थ परायणता आदि संस्थाओ तथा संस्थाओ के लिये सरकारी निर्भरता एव येन केन प्रकारेण उनके माध्यम से दोहन प्रवृत्ति ने आर्य समाज रूपी वृक्ष को खोखला एव जर्जरित कर दिया है। परिणाम स्वरूप आर्य समाज रूपी आग की उस भट्टी पर राख आ गई है और वह यत्र-तत्र धुआ उत्पन्न करने लग गई है।

अत आज इस बात की परम आवश्यकता है कि आर्य समाज पुन अपना पूर्व तेजस्वी एव प्रामाणिक स्वरूप प्राप्त करे। आर्यसमाज की विचार-धारा मे विश्वास रखने वाले आर्यजन सुदृढ सिद्धान्त निष्ठ एव कर्तव्यपरायण बनें। सेवा की भावना को बलवती बनायें, सेवा कार्य को प्रोत्साहन दें। आर्य समाज के विद्वानो, उपदेशको तथा सन्यासियो एव प्रचारको का महत्त्व बढ़े। कथनी और करनी मे तनिक भी अन्तर नहीं रहे। जिन सिद्धान्तो, नियमो की हम मचो से उदघोषणाए करते हैं उनके प्रति हममें दृढ आस्था हो। उन सिद्धान्तो को हम अपने जीवन मे चरितार्थ कर दिखा सकें। खण्डन मण्डन एव स्वाध्याय का आधार पुन ग्रहण करे तथा पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने का सकल्प करें। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये" के मूलमन्त्र को जीवन मे मनसा, वाचा, कर्मणा धारण कर दृढ प्रतिज्ञ होकर कार्य क्षेत्र मे उतरना चाहिये तथा अपनी प्रामाणिकता विश्वसनीयता एव व्यापकता की स्थिति को पुन प्राप्त करने को सचेष्ट रहना चाहिये। आइये आप और हम सब सकल्प करें कि कृण्वन्तो स्वयमार्यम अर्थात पहले स्वय आर्य बनें और फिर विश्व को आर्य बनावें।

—रत्नसिंह

एक और हुतात्मा दिवंगत

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रति अनन्य निष्ठावान तथा अंग्रेजी शिक्षादीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर सदा के लिये आर्य समाज के रग मे रग जाने वाले और अपने को समर्पित भाव से आर्यसमाज के कार्यों को सौंप देने वाले महान कर्मयोगी और जात पांत तोड़क मण्डल के संस्थापक के रूप मे जातिवाद के जहर के विरुद्ध जीवन भर जिहाद छेड़ने वाले सतराम शर्मा बी ए 101 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। वे सर्वात्मना आर्य समाज को अर्पित थे। उच्च-कोटि के विद्वान, महान लेखक तथा कर्तव्यनिष्ठ 'हुतात्मा' पुरुष थे। "आर्यपुनर्गठन" ऐसे महापुरुष के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है तथा परमपिता परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

—रत्नसिंह

राजनैतिक दल और जातिवाद

देश की प्राय प्रत्येक राजनीतिक पार्टी अपने को प्रखर जातिवाद विरोधी होने का ढिंढोरा पीटती है। इन सभी पार्टियो के नेता सार्वजनिक मंचो पर जातिवाद के विरुद्ध नारा भी बुलन्द करते हैं। लेकिन वास्तविकता ये है कि जात-पांत जैसी महाविनाशकारी और अमानवीय कुप्रथा के सबसे बड़े सरक्षक व प्रसारक ये राजनैतिक दल और उनके नेता ही हैं।

गांधी जी की उक्ति-अस्पृश्यता मानवता के प्रति अक्षम्य अपराध है की दुहाई देने वाले कांग्रेसी हो या फिर 'हिन्दू समानता' का नारा बुलन्द करने वाले 'भारतीय जनता पार्टी' के लोग, सभी के सभी जात-पांत की विषदायी बेल को सींचने वाले हैं। लोकदल के देवीलाल और जनता पार्टी के अजितसिंह जैसे लोगो के बारे में तो यह सर्वविदित ही है कि ये शुद्ध जातिगत आधार पर राजनीति करने वाले लोग हैं।

अपने को धर्मनिरपेक्ष कहने और जात-पात के भाव से मुक्त मानने वाले तथाकथित नेता लोग अपनी जातियों के विभिन्न आयोजनों-उत्सवो में सदैव सम्मिलित होते हैं।

ये लोग छद्म रूप से अपने जाति संगठनो मे भी हस्तक्षेप रखते हैं।- मेरी जानकारी मे ऐसे अनेक राजनीतिक नेताओ के नाम हैं जो जातीय संगठनो से पूर्णतया सम्बद्ध हैं और उनके सहारे अपनी राजनीतिक दुकान चलाते हैं।

जातीय सगठनो से राजनीतिज्ञो के सम्बन्ध रखने की बात कोई नई नहीं है। जानकार लोगों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि देश के दिवंगत भूतपूर्व प्रधानमन्त्री प जवाहरलाल नेहरू जैसे लोग भी कश्मीरी ब्राह्मणो के सगठन की सभाओ मे प्राय सम्मिलित हुआ करते थे। यही कारण है कि लोकदल नेता स्व श्री चरणसिंह के इस सुझाव को कि 'सरकारी कानून द्वारा सरकारी कर्मचारियो व अधिकारियो के लिए अन्तर्जातीय विवाह अनिवार्य कर दें', उन्होंने अव्यावहारिक और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का मामला बताकर अस्वीकार कर दिया था।

जातिवाद का घिनौना रूप लोकसभा व विधान सभा के चुनावो मे देखने को मिलता है। इसमे जातिगत आधार पर उम्मीदवारो का चयन किया जाता है जिस क्षेत्र मे जिस जाति की अधिक जनसंख्या होती है, उस क्षेत्र से प्रत्येक राजनीतिक पार्टी उसी जाति के उम्मीदवार का चयन करती है। जातीय समीकरणों के अनुसार जातीय नेताओ को अपनी जाति के मतदाताओं को प्रभावित कराने के लिए प्रचार सभाएं कराई जाती हैं। क्या जातिवाद का सहारा लेकर जीतने वाले व्यक्तियो से जाति मुक्त समाज के निर्माण मे भूमिका के निर्वहन की आशा की जा सकती है? कदापि नहीं।

यह भी एक विडम्बना है कि अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए जातिवाद का आलम्बन करने के लोभ का सवरण आर्यसमाज के कतिपय नेता भी नहीं कर पाए हैं। मेरी जानकारी मे ऐसे अनेक आर्य नेताओं के नाम हैं, जिन्होंने मात्र एक राज्यसभा, लोकसभा या विधानसभा की सीट की खातिर आर्यसमाज के सिद्धान्तो की बलि देकर जातिवाद का सहारा लिया। अपने आपको आर्यसमाज के शिखर नेता कहने वाले लोग भी जब जातीय नामो पर आधारित पत्र-पत्रिकाओ के प्रकाशनो व जातीय संगठनो से जुड़ते हैं तो बड़ा दु ख होता है। आखिर ऐसे लोगों को ऋषि द्रोही न कहा जाए तो और क्या कहा जाए?

आचार्य दत्तात्रेय आर्य के संयोजकत्व मे गठित उपसमिति की रिपोर्ट की सिफारिश कि 'आर्यसमाज के सदस्य या अधिकारी द्वारा जाति सूचक शब्दो का अपने नाम के साथ प्रयोग न किया जाय', पर अब सार्वदेशिक सभा यह कहकर कि ' यह प्रेरणा का विषय है और सभा पहले से ही ऐसी प्रेरणा आर्यों को देते रही है', इस विषय की महत्ता को कम करती है तो बड़ा मानसिक आघात लगता है। और इससे अधिक पीड़ा का अनुभव तब होता है कि जब कि उपसमिति के सदस्यों के सहित अन्य प्रमुख आर्य विचारकों के इतने अथक श्रम से तैयार की गई रिपोर्ट के महत्वपूर्ण सुझावों व सिफारिशों को आर्य जनता व सार्वदेशिक सभा का अपेक्षित समर्थन नहीं मिल पाता है।

—धीरेन्द्र आर्य

क्या महमूद गजनी धर्मनिरपेक्ष था ?

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

हाल ही में, भारतीय दूरदर्शन द्वारा दिनाक 18 व 25 मई, 88 को प्रसारित खुसरो धारावाहिक कहानी के अन्तर्गत जानबूझ कर महमूद गजनी के भारत पर आक्रमणो का मिथ्या वर्णन करके पूर्ण रूपेण धर्मनिरपेक्ष बताया गया है। यह भी अमीर खुसरो के जीवन से असम्बन्धित और तालमेल नही खाता। यह तो सर्वमान्य एव विश्व प्रसिद्ध तथ्य है कि मुस्लिम काल में सैनिक आक्रमणो का प्रथम एव अन्तिम उद्देश्य कट्टर व धार्मिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिए ही था। धन का प्रलोभन एव क्षेत्रीय विजय-राज्य प्राप्त करना तो सहयोगी कारण थे। यही कारण है कि श्री मोहम्मद इकबाल ने तो स्पष्ट व अविस्मृत रूप से एक लम्बी कविता "शिकवा" मे दावा किया है कि इस्लामिक आक्रमण का आधार न तो धन की ललक-लालच और ना ही भारतीय जमीन को हथियाना था। उनका आधारभूत उद्देश्य काफिरो (हिन्दू) को इस्लाम धर्म मे परिवर्तन करना, साथ ही काफिरो के मन्दिर, देवालय—मूर्तियो को विनष्ट करना था। यही तो उन्होने (श्री इकबाल) अपनी कविता मे कहा है, "हमसे पहले था अजब तेरे जहाँ का मन्जर, कहीं व मसजूद के पठार कहीं व मैबूद सजर। कौम अपनी जो जर ओ माल और जहाँ पर मरती, बुत फरोशी के अवाइज बुत शिकनी क्यों करती। नक्श तौहीद का हर दिल पे बिठाया हमने, जेरे खंजर भी ये पैगाम सुनाया हमने।"

स्पष्टत , मुस्लिम आक्रमणकारियो ने तो स्वय ही अपनी ऊची आवाज से प्रोत्साहनपूर्वक उक्त घोषणा की थी जैसाकि इस्लाम धर्म के प्राधिकारिक विचारक श्री इकबाल आदि ने कहा है। यह बात धर्म निरपेक्षता की जो बाकी जैसे महमूद के सम्बन्ध मे प्रेरणास्पद करते हैं, न्यायसगत नही बैठती।

भारतीय दूरदर्शन के प्रचारको का दुष्प्रयत्न, जिससे मानव का मस्तिष्क विकृत हो जाता है, अत्यन्त हास्यास्पद एव बेहूदा है। और यह बात उनके द्वारा बताये गए कारणो से स्पष्ट स्वयमेव हो जाती है। उक्त विषय मे यह सिद्ध किया गया है कि महमूद ने तो खलीफा एव मुस्लिम प्रशासको को भी प्रताड़ित किया था और एक हिन्दू से मुसलमान बनाये गये व्यक्ति को भी सेना में जनरल का पद दिया गया था। इसी प्रकार से औरगजेब बादशाह की भी प्रशसा की गई है कि उसने तो हिन्दू महाराजा जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध युद्ध मे कमान्डर बनाकर भेजा था आदि-आदि। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उक्त धारावाहिक कहानी के तुच्छ प्रसारण-विचार केवल पाठशाला के छात्र ही मान सकते हैं। यह बड़ी विचित्र एव महत्वपूर्ण बात-प्रश्न है कि एक मूल एव असुविधाजनक प्रश्न न तो किसी ने पूछा और ना ही उत्तर दिया कि महमूद द्वारा अनेक बार अथवा हर आक्रमण के समय हिन्दू मन्दिरो को ही क्यो नष्ट भ्रष्ट किया गया—मूर्तियो को क्यो तोड़ा गया ?

जैसा कि कवि इकबाल ने स्वय स्वीकारा है कि महमूद से सोमनाथ के मन्दिरो को तोड़ते समय अनेक पुजारियो ने मूर्तियो को तोड़ने से बचाने हेतु अधिकतम धन देने की पेशकश की थी, किन्तु उस महमूद ने यह कहकर टाल दिया कि ऐसा करने से तो मैं बुतपरस्त (मूर्ति पूजक) बन जाऊगा।

इतना ही नही, उक्त धारावाहिक कहानी मे बाबा अथवा मुल्ला ने स्वय स्वीकारा है कि औरगजेब ने हिन्दूओ पर जजिया नामक कर लगाया था और बड़े भाई दारा शिकोह (जो कि वास्तव मे बड़ा भाई होने के कारण गद्दी का अधिकारी था) को मौत के घाट उतार दिया था। किन्तु उक्त बातो को तोड़ मरोड़ कर औरगजेब के अनुकूल एव प्रशसा मे कहा गया कि उक्त नीति से सिद्ध होता है कि औरगजेब कितना न्यायप्रिय, हिन्दू धर्म एव उनकी धार्मिक पुस्तको के प्रति सहिष्णु था।

ऐसी अनेक अप्रिय, त्रुटिपूर्ण, बातो का गुणगान करना तथा ऐतिहासिक वार्तो-तथ्यो की अवहेलना करके वास्तव मे भारतीय समाज की धर्मनिरपेक्षता को अवरुद्ध करना जैसा है—वह भी भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात्। यह अति सुन्दर एव प्रशसनीय सुखद बात होगी कि अप्रिय किन्तु ऐतिहासिक तथ्यो को भली प्रकार उसी भावना से स्वीकारा जावे, समझ लिया जावे, बजाय इसके कि गलत तथ्यो का प्रस्तुतीकरण किया जावे, न्यायोचित बताया जाय, और वह भी अपरिपक्व स्कूली छात्रो के माध्यम से बिना सम्बन्धित प्रश्नोत्तरों के।

अभी तक

—प्रा राजेन्द्र जिज्ञासु—

अभी है अविद्या का धरती पै डेरा।
अभी विश्व मे है मनो का अन्धेरा।।
अभी मानवो मे मनुजता नही है।
अभी दनदनाती दनुजता यही है।।
अभी लाज ललना की वैसे ही लुटती।
अभी गैया-मैया भी वैसे ही कटती।।
अभी तक है पूजा प्रभूजो की होती।
अभी जन्म-भूमि बिलखती है रोती।।

नये भेद भद्दे अभी उग रहे है।
अडिग जिनको समझा था वो डिग रहे हैं।।
अभी जाति-पाति के झगडे यहा हैं।
अविद्या के फदे सगरे वे यहा हैं।।
अभी देश की एकता डोलती है।
सुनो ध्वस्त से धरा बोलती है।।
महानाश का भय धरा को सताता।
व्यथा की ध्वजा काल है फडफडाता।।
अभी पूजा जड वस्तुओ की जारी।
गुरुडम की भी पनपती है बीमारी।।
अभी ब्रह्म बनते यहा ब्रह्म ज्ञानी।
मजे पोप करते कुरानी किरानी।।

यहा पथ नूतन बनाना सुगम है।
यहा ढोंग नूतन चलाना सुगम है।।
विकट है स्थिति आर्य वीरो विचारो।
उठो लक्ष्य की ओर अपने निहारो।।
तुम्हे आग मे हस के जलना पडेगा।
कठिन कार्य यह तुमको करना पडेगा।।
दयानन्द का ऋण चुकाना तुम्हे है।
अधेरा धरा का मिटाना तुम्हें है।।

उठो आज आहूत सर्वस्व कर दो।
उठो मानवो के सभी ताप हर लो।।
धरा धाम मे गुजाओ ऋचाये।
गुजाये सुनायें यह सारी दिशाये।।
किया वेद ज्योति से घर-घर उजाला।
दयानन्द स्वामी तेरा बोल बाला।।

दयानन्द शोधपीठ द्वारा प्रतिवर्ष एक विशिष्ट प्रकाशन होगा

दयानन्द कालेज, अजमेर मे राजस्थान सरकार द्वारा सस्थापित दयानन्द शोधपीठ को अधिक सक्रिय एव गतिशील बनाने के लिए आर्य समाज भवन मे रविवार दि 22 मई 88 ई को पीठ के निदेशक श्री दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे विशेष बैठक सम्पन्न हुई जिसमे डा बाबूराम शास्त्री, श्री ठाकुर प्रेमसिंह, श्री डा दिनेशसिंह, श्री कृष्णराव वाब्ले, प्रो बुद्धिप्रकाश आर्य, डा कृष्णपालसिंह, डा देव शर्मा वेदालकार, आचार्य गोविन्दसिंह एव श्री रासासिंह ने भाग लिया।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि शोधपीठ की ओर से प्रतिवर्ष एक प्रामाणिक प्रकाशन किया जाय। इसी सदर्भ मे राष्ट्रीय एव भावात्मक एकता तथा सर्व धर्म समभाव को दृष्टिगत रखकर शाश्वत वैदिक धर्म विषय पर विद्वानो से शीघ्र ही पुस्तक तैयार करवा कर प्रकाशन कराया जायेगा। जिसमे वैदिक धर्म के शाश्वत मानवीय एव एकात्मक मूल्यो की सपुष्टि करने वाले ईसाई, इस्लाम, पारसी, सिख, बौद्ध, जैन, यहूदी आदि धर्मों के तत्सबधी तथ्य उल्लेखित होगे।

—मत्री

(शेष पृष्ठ 1 का)

ईसाई मिशनरी......

ईसाई मिशनरियों द्वारा सेवा कार्य के नाम पर धर्मान्तरण कराने के तरीके का भी विस्तृत रूप से उल्लेख किया है और अपने पक्ष मे कई प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं।

1 अमेरीका के कैथूलिन मिशन मोफ्स (1923) के प्रकाशक इण्डिका एण्ड इट्स मिशन मे प्रकाशित रिपोट मे कहा गया है, "किसी भी देश में भुखमरी, अकाल या हैजा जैसी स्थिति मे आध्यात्मिक (धर्मान्तरण का) लाभ बहुत होता है।'

2 पाण्डिचेरी के आर्च बिशप ने एक उच्चाधिकारी को लिखा था। "अकाल मे बड़े आश्चर्यजनक कार्य सम्पन्न किए हैं। भूखो मरते मनुष्य एव छोटे-छोटे बच्चे हजारों के ईसाई बनते चले जा रहे हैं आदि-आदि।"

3. ईसाइयो द्वारा संचालित स्कूल व अस्पताल आदि धर्मान्तरण के कार्य में बड़े सहभागी सिद्ध हुए हैं। मेडिकल मन्त्रालय इस तथ्य को स्वीकार करता है, "अस्पताल एक बीमारियों से बढ़कर उत्तम, सरल एव उपजाऊ माध्यम अन्य नहीं है। धर्म परिवर्तन हेतु यह माध्यम सर्वश्रेष्ठ साबित हुआ है। मिशनरीज को कहीं भी जाने एव कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है। यहा पर तो स्वय ऐसे लोग उपचार हेतु आते रहते हैं। यहां पर लोगो (मरीजों) को बड़े सतोषजनक ढग से धोखा दिया जाता है। उदाहरण के लिए—जब किसी का आपरेशन होना होता है तो उसके साथ उसके अन्य सभी रिश्तेदारों के सामने ईसा मसीह से उसके स्वास्थ्य हेतु प्रार्थना की जाती है। और जब मरीज ठीक हो जाता है तो ऐसे सभी लोग प्रभावित होकर धर्मान्तरण कर लेते हैं।

श्री रामस्वरूप ने अपने लेख में बिशप नेल्सन के कुछ विचारों को उद्धृत करते हुए, धर्मान्तरण हेतु ईसाई मिशनरियों द्वारा किए गए 'सेवा कार्य' को ईसाई धर्मानुसार अमान्य ठहराया है। बिशप नैल्सन कहते हैं 'कुछ लेखको ने मिशनरियो के सेवा कार्यों का जीसस से प्रेम करने का बखान किया है। यह सब मनघडन्त एव ख्याली-पुलाव वाली बातें हैं। सच्चाई इसके विपरीत है। सच तो यह है कि अधिकतर ऐसे तथाकथित सेवाधारी अपने स्वय के लाभ, लोभ, प्रतिष्ठा एव प्राप्त करने हेतु मिशन में आते हैं। इस कार्य हेतु उन्हें आकर्षक धन, प्रतिष्ठा मिलती है। मिशन के सदस्यों पर एक भारी रकम उनके हर कार्य पर खर्च की जाती है और वे बड़े ऐशो-आराम का जीवन यापन करते हैं। उनका वेतन भी सौ पाउण्ड तक होता है। इसकी तुलना मे एक प्रोफेसर मिशन को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे 1855-56 के अन्दर मात्र 54 पाउण्ड प्रतिवर्ष पर नौकर रखा गया था।

श्री रामस्वरूप ने अपने लेख मे अन्य दो ईसाई पादरियो के उन विचारो को भी उद्धृत किया है, जिसमें धर्मान्तरण के कार्य को ईसाई धर्म विरोधी बताया गया है

1. श्री के. डी. कोहलर कहते हैं 'ऐसा कहा जाता है कि ईसा मसीह ने कहा था, जाओ और अपने धर्म का प्रचार सभी जीवो (मनुष्यो) में करो अर्थात् धर्मान्तरण कराओ।" यह बात कतई गलत है अर्थात् क्षेपक स्वरूप है यानी बाईबिल मे बाद मे जोड दी गई है। यह बात मैं अपनी तरफ से नहीं अपितु बाईबिल के आधार पर ही कहता हू। यह धर्मान्तरण वाली बात मूल पुस्तक में नहीं है। बाद में बढ़ाई हुई, एक फुटनोट स्वरूप दी गई है। यह बात निर्भान्त है।"

2 अथा सुब्रातामबाई का कहना है "मैं चाहता हू कि इस तथ्य को सभी लोग भली प्रकार समझ लें कि धर्मान्तरण की बात कभी ईसा मसीह ने नहीं की।" मैं आशा करता हू कि सभी लोग-समझदार व सामाजिक व्यक्ति इस बात से सहमत होंगे। धर्म परिवतन एक महामारी है जो कि ससार को सदा भयाक्रान्त करती रहेगी। कुछ कट्टरपंथी बाईबिल के विचारों को अपनी दृष्टि से कुछ भी समझकर धर्म की आड मे विकृत कर रहे हैं। किन्तु धर्मान्तरण जैसे विचार क्षुद्र, कट्टर, तर्कविहीन जैसे लोगों के हैं, जिन्होंने धर्म के नाम पर कलक एवं अपने धर्म के ही विरुद्ध कार्य किया है। उदाहरण के लिए इस प्रसग में स्ट्रेटस, रेनान, बुचनर ऐवे लोइसी आदि का नाम लिया जा सकता है।"

क्या ईसाई मिश्नरी ईसाई धर्म के उक्त प्रबुद्ध विचारको की सलाह मानकर धर्मान्तरण जैसे धर्म विरोधी कार्य को तिलांजलि दे सकेंगे ?

पत्र बोलते हैं....

उपसमिति का परिश्रम व्यर्थ गया

प्रिय महोदय,

आपके उपरोक्त सम्बन्धित पत्र के विषय में निवेदन है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अधिकारी दिल से यह नहीं चाहते थे कि आर्यसमाज के नियमों मे कोई रचनात्मक संशोधन किया जावे, फिर भी किसी कारण वश नियमो के संशोधनार्थ एक उप समिति का निर्माण तो किया गया परन्तु उस समिति की आज्ञा सभा की अन्तरग दि 18-9-87 को अस्वीकार ही कर दी गई थी। दूसरे दिन 19-9-87 को कुछ विचार विमर्श के उपरान्त चार बिन्दु स्वीकार किये गये थे परन्तु दिनांक 17-4-88 के सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र मे जिस रूप मे इसका प्रकाशन किया गया है। उससे स्वीकारी जाने दिल के भाव स्पष्ट [illegible] हो रहे हैं, सबको तो ऐसा लगता है कि उप समिति ने जो इनका [illegible] किया है यह इस तरह महत्वहीन कर दिया गया है केवल (ख) बिन्दु में विवश होकर [illegible] के रूप की स्वीकारी की बात लिखी है।

तदनुसार मैंने श्री दत्तात्रेय जी से 19-9-87 को ही यह निवेदन किया था कि आप अपने पुनर्गठन पत्र मे आज के निर्णय को प्रकाशित कराने की अवश्य कृपा करें, आपके पत्र दि. 30-9-87 में यह सकेत भी दिया था [illegible] अक में विस्तृत जानकारी दी जायेगी, सम्भव है [illegible] के सही कार्य के कारण आपको 30-9-87 की उन पंक्तियो का ध्यान न रहा हो। श्री दत्तात्रेय जी का लेख जो आपने 15-4-88 को प्रकाशित किया है उससे वर्तमान पदाधिकारियों की मनोवृत्ति का आभास होता है। मेरा भी मन उसी लेख के पक्ष में होते हुये यह स्पष्ट कह रहा है कि समाज के उत्थान की ओर वर्तमान पदाधिकारियों की दृष्टि उदासीनता की ओर है। निजी स्वार्थ इस समय अधिक व्याप्त में है। श्री स्वामी [illegible] जी का त्यागपत्र और [illegible] द्वारा उसकी स्वीकृति यह सब क्या है इसे विचारें। विस्तार भय से अपनी लेखनी को विराम दे रहा हू।

धन्यवाद

भवदीय

[illegible] शर्मा

प्रधान, आर्य समाज

[illegible], [illegible] (उ.प्र.)

पं. विश्वदेव शर्मा को पुत्रशोक

अजमेर, जयपुर व अलवर से एक साथ प्रकाशित दैनिक 'न्याय' के प्रधान सम्पादक व विश्वदेव जी शर्मा के कनिष्ठ पुत्र एव अलवर 'न्याय' के सम्पादक श्री विजयकांत शर्मा का 27 मई, 1988 को एक सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया।

'आर्य पुनर्गठन' परिवार की स्वर्गीय आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि।

—सम्पादक

श्री रतनलालगर्ग द्वारा श्री आर्यप्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द : 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

॥ ओ३म् ॥

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 4 बुधवार 15 जून, 1988
अंक . 11 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

द्वि ज्येष्ठ शु 1 स 2045
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

ईसाई मिशनरी : हम नहीं सुधरेंगे

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

'आर्य पुनर्गठन' के पिछले अंक मे हमने लद्दाख क्षेत्र में बौद्धो का धर्मान्तरण कराने के ईसाई मिशनरियो के प्रयास के विषय मे एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उसी सदर्भ मे 'पाञ्चजन्य' 12 जून, 88 के अंक में कुछ और नवीन तथ्यों का रहस्योद्घाटन किया गया है। पत्र मे प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण कराने के लिए किस प्रकार की शातिर चालें चल रहे हैं।

पाञ्चजन्य मे प्रकाशित रिपोर्ट में बताया गया है कि लद्दाख निवासी बौद्धों को ईसाई धर्म में दीक्षित करने के लिए चर्च परिषद की एक बैठक में एक नई आक्रमक नीति का निर्धारण किया गया है। चर्च परिषद में जो विभिन्न प्रस्ताव इस नीति के सम्बन्ध मे पारित किए गए हैं—उनसे प्रत्येक राष्ट्रभक्त का चिन्तित होना स्वाभाविक है। परिषद के एक प्रस्ताव में जहाँ जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री को प्रधानमन्त्री कहकर सम्बोधित किया गया है, वहीं एक दूसरे प्रस्ताव में लद्दाख क्षेत्र को एक पृथक राज्य माना गया है।

पाठकों के अवलोकनार्थ

परिषद द्वारा पारित प्रस्ताव हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं?

(1) पहले की तरह धर्म प्रचारकों को प्रवास पर भेजते समय अकेले नहीं भेजना चाहिए। वे दो के गुटों में ही जावें।

(2) जब कोई उपयुक्त उम्मीदवार धर्म प्रचारक बनने के लिए प्रशिक्षण लेने आए तो उसे कई वर्षों तक प्रशिक्षण दिया जाएगा।

(3) किसी ईसाई द्वारा काफिर (गैर ईसाई) से विवाह कर लेने की स्थिति मे बुजुर्गों की सभा शीघ्र ही अनिवार्य हिदायतें देने का प्रबन्ध करेगी। अर्थात् किसी ईसाई द्वारा गैर ईसाई से विवाह करने के बाद उसे अपने मजहब में रम लेने के लिए हिदायतें देने की व्यवस्था की जाएगी।

(4) क्षेत्र की परिषद की दृष्टि मे चगताम या स्पतु के खाना बदोशो में गम्भीरतापूर्वक कार्य करने के लिए मिशन के कार्यकर्ताओं को स्थायी रूप मे बसाने की सम्भावना है।

(5) क्षेत्र की परिषद इस बात पर विचार कर रही है कि शिक्षित सामान्य नागरिको और लामाओ को ईसाई विचारों और आदर्शों के अन्तरंग सम्पर्क मे लाने के लिए एक आश्रम की शुरुआत की जाए। इस आश्रम से सामान्य शिक्षित वर्ग मे ईसाई विचारो का प्रसार किया जा सकेगा।

(6) ईसाई नवयुवको व युवतियो के विवाह उनके अभिभावको द्वारा तय किए जाने चाहिए। नवयुवको व नवयुवतियो को इस बारे मे अपने अभिभावको की इच्छा के सामने समर्पण कर देना चाहिए।

(7) यह कि ईसाई प्रचार का कार्य बोध खरबू जिले मे शुरू किया जाना चाहिए।

(8) मिशन द्वारा प्राथमिक चिकित्सा एव स्वास्थ्य सम्बन्धित एक पत्रक प्रकाशित किया जाना चाहिए।

(9) ईसाईयो की सख्या बढाने के लिए बेकार पड़ी परती भूमि की सिंचाई हेतु एक नहर या जल नलिका की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(10) मिश्रित विवाह (ईसाई-गैर ईसाई) की स्थिति मे कोई विवाह समारोह तब तक आयोजित नहीं होगा जब तक उनमे स काफिर (गैर ईसाई) पक्ष 'बपतिस्मा' लेकर ईसाई बनने के बाद चर्च से आशीर्वाद नही प्राप्त कर लेता। ऐसे विवाह की स्थिति मे विवाह की दावत देना या न देना दम्पत्ति की इच्छा पर निर्भर करेगा।

(11) सामुदायिकता की भावना और स्वैच्छिक सेवा कार्य की इच्छा को प्रोत्साहित करने के लिए हमारी मण्डली के सभी ईसाई घरो को बारी-2 से अपने चर्च के भवनो की सफाई करनी चाहिए।

(12) यह की तीन लद्दाखी ईसाईयो की एक समिति गठित की जानी चाहिए जो व्यक्तिगत तौर पर जम्मू काश्मीर के प्रधानमन्त्री से मलकर लेह मे चर्च की स्थापना के लिए मुफ्त उपहार में जमीन मागे और उन्हे स्पष्ट करें कि इस प्रकार के विशेषाधिकार का आवेदन पिछले 18 वर्षों से पड़ा हुआ है।

(13) मिशन का कोई भी कार्यकर्ता काफिरो के किसी भी त्योहार मे न तो खुद जा सकता है और न ही अपने परिवार के किसी सदस्य को जाने देगा। इस नियम का उल्लघन करने वाले कार्यकर्ता को मिशन की सेवाओ से निरस्त कर दिया जाएगा।

(14) यह ठीक है कि इस देश मे मिशन पिछले 84 सालो से कार्य कर रहा है पर मिशन अपने प्रयासो के अनुकूल प्रगति क्यो नहीं कर पाया और चर्च अपने पैरो पर खड़े नही हो पाए-इसके कारणो पर परिषद को विचार-विमर्श करना चाहिए। आगे के लिए ऐसे मामलो पर विचार करने हेतु मिशनरियो को साल मे दो बार सम्मेलन आयोजित करने चाहिए।

चर्च परिषद द्वारा पारित उपर्युक्त प्रस्तावों से ईसाई मिशनरियो के नापाक इरादो के बारे मे स्पष्ट पता चलता है। पौराणिक हिन्दू दृढता से मिशनरियो का मुकाबला करने मे समक्ष नहीं हैं। उनके राष्ट्र एव धर्म विरोधी कार्यों पर अकुश तो आर्य समाज जैसा क्रातिकारी एव तेजस्वी सगठन ही लगा सकता है। आर्य समाज के कर्णधारो का कर्त्तव्य है कि वे इस सीमावर्ती क्षेत्र मे वैदिक धर्म एव राष्ट्रवादी भावनाओ के प्रचार प्रसार म विशेष रुचि लें। सरकार से ईसाई मिशनरियो की राष्ट्र विरोधी गतिविधियो पर रोक लगाने की आशा करना तब तक एक भूल ही होगी, जब तक कि चन्द वोटो के लिए अल्पसख्यको के तुष्टीकरण की नीति पर चलने वाली सरकार को प्रबल जनान्दोलन कर इसके लिए मजबूर न किया जाए।

आर्य विद्वान् आचार्य रामानन्द शास्त्री दिवंगत

आर्य समाज के प्रख्यात विद्वान्, वक्ता तथा प्रचारक आचार्य प रामानन्द शास्त्री (74) का हृदयगति रुक जाने के कारण 2 जून को उनके निवास-स्थान पर देहान्त हो गया। वे बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के तत्वावधान मे गत 55 वर्षों से निरन्तर प्रचार कार्य मे सलग्न थे। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के कई वर्षों तक मन्त्री रहकर इन्होने विवादास्पद विषयो मे महत्वपूर्ण निर्णय भी दिया था। उनके निधन से बिहार के आर्य समाज को भारी क्षति हुई है।

—रामाज्ञा वैरागी मन्त्री, बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान संपादक रातसिंह   संपादक : वीरेन्द्र कुमार आर्य   फोन कार्या : 21010

सम्पादकीय—

अंधविश्वास का दुष्परिणाम

एक ओर जहां हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी देश को समय से पूर्व ही इक्कीसवीं सदी में ले जाने को बेताब हैं वहीं दूसरी ओर देश की सामाजिक स्थिति शताब्दियों पीछे के युग में तेजी से जाती हुई प्रतीत हो रही है।

कहावत है कि चमत्कार को नमस्कार है। चमत्कार करने की इसी सिद्धि को प्राप्त करने की इच्छा में तान्त्रिक तरीकों को अपनाकर मध्यप्रदेश के रायपुर जिले के सात नवयुवकों ने अपने जीवन की बलि चढ़ा दी। प्राप्त विवरण के अनुसार ये नवयुवक अपने तान्त्रिक गुरु गोकुल साहू से तन्त्र विद्या की शिक्षा ग्रहण करते थे। बताया जाता है कि इस तथाकथित गुरु महाराज ने अपने इन शिष्यों को यह विश्वास दिला रखा था कि वह पुनर्जीवित करने की विद्या जानता है। जिससे वह किसी भी मृत जीव को पुनः जीवित कर सकता है। आत्म हत्या करने वाले नवयुवक श्री गोकुल साहू से अन्य तन्त्र विद्या से सम्बन्धित जादुओं के अतिरिक्त मृतक को जीवित करने की विधि भी सीखने प्रतिदिन उसके पास आया करते थे। तन्त्र गुरु गोकुल साहू के सर्व प्रथम (23 मई को) आत्म हत्या करने वाले शिष्य चोवाराम साहू के बारे में 30 मई को पुलिस के सामने आत्म समर्पण करने वाले एक शिष्य अजनी उपाध्याय ने जो रहस्योद्घाटन किया है वह तथाकथित तन्त्र विद्या के नाम पर फैले अन्धविश्वास का घिनौना चेहरा दिखाता है।

अजनी उपाध्याय ने अपने पुलिस बयान में बताया कि हम सभी शिष्यों ने निश्चय किया था कि यदि चोवाराम जलते हुए लकड़ी के लट्ठों पर कूद कर जल मरे तो गुरुजी बाद में उसे अपनी तन्त्र विद्या से जीवित कर देंगे। अजनी ने आगे बताया कि चोवाराम को आश्वस्त करने के लिए गोकुल साहू ने अपनी विद्या का प्रभाव भी दिखलाया था। पहले उसने एक मछली को मार डाला और उसे बाद में सबके सामने पुनः जीवित कर दिया (शिष्यों को गोकुल ने वास्तव में सम्मोहित कर ऐसा मानने पर बाध्य किया होगा)। लेकिन इसके बाद जब उसके इन शिष्यों ने मेंढकों के ऊपर यही प्रयोग किया तो वे असफल रहे। फिर भी गुरु के प्रति अत्यधिक विश्वास लिए चोवाराम जलते लट्ठों पर कूदा और जीवन से हाथ धो बैठा। इसके बाद गोकुल साहू के अन्य जिन शिष्यों ने आत्म हत्या की उसके पीछे भी यही कारण रहने की बात स्पष्ट प्रतीत होती है। क्योंकि सभी आत्म हत्या करने वाले शिष्यों के मृत्यु स्थल के पास पूजा अर्चना में काम आने वाली सामग्री पाई गई थी। इससे पता चलता है कि गोकुल साहू पुनर्जीवित करने की अपनी तन्त्र विद्या के प्रयोग का प्रत्येक बार परीक्षण कर रहा था (या फिर परीक्षण करने का ढोंग कर रहा था)। जो भी हो तथाकथित तन्त्र विद्या के पुनर्जीवित करने सम्बन्धी चमत्कार के अन्धविश्वास में फंसकर सात नवयुवकों ने अपने अमूल्य जीवन की बलि चढ़ा दी। आखिर ऋषि दयानन्द के आर्य समाज के कार्य पर अन्धविश्वास और पाखण्ड के नाम पर हुए ऐसे काण्ड एक बड़ा प्रश्न चिह्न ही लगाते हैं।

—वीरेन्द्र आर्य

आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थमाला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट)

1	ईश्वर एक नाम अनेक	9	स्वर्ग और नरक कहां हैं?
2	आदर्श माता पिता	10	चौके चूल्हे में धर्म नहीं है
3	शिक्षा और चरित्र निर्माण	11	हिन्दू धर्म की निष्फलता
4	गृहस्थाश्रम का महत्व	12	बौद्ध और जैन मत
5	सन्यासी कौन और कैसा हो?	13	वेद और ईसाई मत
6	राज्य व्यवस्था	14	इस्लाम और वैदिक धर्म
7	ईश्वर और वेद	15	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश
8	जगत की उत्पत्ति		

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित हैं और ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो. [illegible]जी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सैट का मूल्य 8/- रुपये है।

आर्य समाज का अतीत और वर्तमान

—श्री [illegible]—

मैं प्रायः आर्य समाज के स्वरूप के सम्बन्ध में कुछ लिखते झिझकता हूं, क्योंकि मैंने समाज का यौवनकाल देखा है। इस का तेजस्वी स्वरूप मेरी आंखों के सम्मुख है। सिद्धान्त के सम्बन्ध में आर्य समाजी कितना सुदृढ़ होता था इसे सम्भवतः आज का समझौतावादी आर्य समाजी सोच ही नहीं सकता। मेरे ग्राम के समाज के प्रधान की पुत्री का विवाह था। वर पक्ष पौराणिक था उनका आग्रह था कि विवाह पौराणिक पद्धति से होगा, प्रधान जी ने बरात को घर में न आने दिया रात भर बरात बाहर पड़ी रही। प्रातः 4 बजे वासुदेवजी प्रधान ने अपने समधी श्री मूलचन्द्र को बुला कर कहा कि यदि विवाह वैदिक रीति से करना हो तो बरात को भीतर लाइये नहीं तो मैं लड़की का रिश्ता दूसरे स्थान पर करता हूं। मूलचन्द्रजी ने हार मानी और विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। यह हमारा अतीत था। अब हम कहां हैं? नाम नहीं लिखता हूं पर घटना सत्य है। समाज के प्रधान जी की पुत्री का विवाह था वर पक्ष पौराणिक रीति के विवाह आग्रह पर था। प्रधान जी ने समाज से त्याग पत्र दिया पुत्री का विवाह पौराणिक रीति से किया और मजे की बात यह कि विवाह के पश्चात समाज की अन्तरंग ने उन्हें फिर प्रधान बना दिया। कितना बड़ा अन्तर है!

आग के इब्तदाए इश्क में हम
हो गये खाक इन्तहा यह है!

पिछले दिनों दो समाजों के वार्षिकोत्सवों पर रविवार को T V द्वारा समाज मन्दिर में रामायण का सीरियल दिखाया गया ताकि उपस्थिति हो सके। परन्तु रामायण का तमाशा समाप्त होते ही लोग चले गये। इतना अवश्य हुआ कि एक स्थान पर रामायण के शो के पश्चात् एक पौराणिक विद्वान मेरे पास आये और बोले आप प्रधान जी से सिफारिश करें कि वे रामलीला के लिये हमें समाज के सामने का मैदान दे दें। मैंने कहा यह बात हमारे सिद्धान्त के विरुद्ध है। तत्काल बोले यह T V पर राम का रूप करने वाले कौन थे? शायद हमारा राम इनसे अच्छे चरित्र का होगा। मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

जात पात का रोग इतना अधिक है कि सार्वदेशिक सभा में संयोगवश मैं उपस्थित था जब आचार्य दत्तात्रय जी के जात पात सम्बन्धी शब्दों को हटाने का तथा नाम के साथ आर्य शब्द लिखने का प्रस्ताव आया। सच मानिये प्रस्ताव को बड़े सलीके से समाप्त किया गया।

बड़े सलीके से यह लोग कत्ल करते हैं।

आज आर्य पुनर्गठन की बात की जा रही है जब कि हम पदलोलुपता में समाज को बेच के खा रहे हैं! युवकों में आर्य समाज के प्रति उदासीनता है। वीर दल हो या युवक परिषद आपस में लड़ने को जवान शेर हैं नहीं तो Paper tiger हैं।

सार्वदेशिक सभा ने समाज में नवजीवन लाने के लिये उपसमिति का गठन किया था परिणाम क्या निकला यह समिति के अधिकारी ही अधिकार पूर्वक कह सकते हैं।

परन्तु निराशा के इस वातावरण में भी निराश होना उपयुक्त नहीं। हमारा समाज योग्य विद्वानों का बुद्धिजीवी समाज है। समाज में त्यागी तथा तपस्वी व्यक्ति भी विद्यमान हैं। आज भी ऋषि दयानन्द के मिशन पर सर्वस्व होम देने वाले वीर समाज में हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उन बुद्धिवादी सिद्धान्त प्रेमी आर्यों को कहीं समस्या के समाधान के लिये एकत्रित किया जावे। पहले प्रान्तों में तत पश्चात देश भर के चुने हुवे परिवर्तन चाहने वाले व्यक्तियों को इकट्ठा किया जावे और परिवर्तन की आवाज कार्यक्रम सहित बुलन्द की जाए।

अजब क्या है यह किश्ती डूब कर फिर भी उभर आये
कि हमने इनकलाबात जमाना यूं भी देखे हैं।

वेद का सत्य दयानन्द का तप और वीरों का बलिदान निश्चय ही जागृति उत्पन्न करेगा और उजड़े उपवन में बसन्त आ जायेगी आचार्य दत्तात्रय की सोच कि आर्यों में यह जन चेतना कैसे संगठित हो?

प्रो. [illegible] प्रादेशिक सभा के प्रधान

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन 29 मई, 88 को सम्पन्न हुआ। अधिवेशन से पूर्व आर्यसमाज के सत्संग में प. [illegible] का प्रभावी प्रवचन हुआ।

अधिवेशन में आगामी वर्ष के लिए प्रो. [illegible] को सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया।

—मन्त्री

सत्य धर्म के प्रसारक: ऋषि दयानन्द

—ब्रह्मदत्त शास्त्री

ऋषि दयानन्द अपने जीवन-काल मे भ्रमण करते रहे और इसी बीच उन्हे कई विदेशी विद्वानो से भी मिलने का मौका मिला। ऐसे ही विदेशी लोगों मे मोनियर विलियम्स (Monier Williams) से उनकी प्रथम भेंट 1876 में बम्बई मे हुई। इसी विलियम महोदय ने एक बार स्वामी जी से प्रश्न किया Religion (धर्म) क्या है ? इसका उत्तर स्वामीजी ने विलियम महोदय को अपने शब्दो के अनुसार (Brahmanism and Hinduism by Monier Williams 1891)

इस प्रकार दिया —"Religion (धर्म) is a true and just view (न्याय) and the abandonment of all prijudice and partiality (पक्षपात रहित)—the is to say, it is an impartial enquiry into the truth by means of the senses and the two other instruments of knowledge (प्रमाण), reason and revelrtion"

स्वामी जी ने जो सुन्दर व्याख्या धर्म की की उसका उदाहरण मिलना आज भी कठिन है। स्वामी जी की इसी धर्म व्याख्या के अनुसार वही व्यक्ति धार्मिक कहला सकता है जो ऐसे धर्म का पालन करता हो जिसमे पक्षपात को कोई स्थान न हो और जो सत्य की खोज प्रमाण, विवेक, बुद्धि और ईश्वर प्रेरित ज्ञान के सहारे करने तत्पर हो। यदि ऐसा हो सके तो ससार मे आपस के झगडे और विवाद समाप्त हो सकते हैं। यदि किसी धर्म के अनुयायी यह कहे और दूसरो को भी यही मानने पर बाध्य करें कि जो वे कहते हैं केवल वही सत्य है तो वह धर्म न तो धर्म ही है और न सत्य ही। ऐसे हठ का सबसे बडा उदाहरण ईसाई धर्म मे मिलता है जो आज इस बीसवी शताब्दी मे भी इस बात का ढिंढोरा पीटते हुए नहीं लजाता कि केवल ईसाई धर्म ही इस ससार मे सच्चा धर्म है और शेष सब मिथ्या है। यह ईसाई धर्म इतने पर ही सतोष नहीं करता अपितु यह एक कदम और भी आगे जाता अपने झूठ को छिपाने के हेतु यह लोगो को पक्षपात रहित पर कठिन प्रतिबन्ध भी लगा देता है उनकी बुद्धि और विवेक को नष्ट करने के हेतु उन्हें पक्षपात रहित सत्य की जाच करने से भी रोक देता है। इसी कारण ईसाइयो के कैथोलिक सम्प्रदाय के सबसे बडे मठाधीश मि पोप ने उन सब व्यक्तियो की पुस्तकें पढने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है जिन्होने "पक्षपातरहित हो। र विवेक, प्रमाण और बुद्धि" का सहारा लेकर सत्य के समझने का प्रयत्न किया है। बार्ज बर्नार्डशॉ की सभी पुस्तकें इसी कारण सभी ईसाइयो (कैथोलिक) को पढना वर्जित हैं। इसी श्रेणी में बाकी सब धर्मों के धर्म ग्रन्थ भी हैं। ऐसी स्थिति मे कोई भी न किसी धर्म का पालन कर सकता है और न ही धर्म का पालन करने की इच्छा रखते हुये सच्चे धर्म की खोज मे सफल हो सकता है। यदि हम स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दी हुई धर्म की इस व्याख्या के साथ उनका यह अमूल्य कथन भी जोड दें जो सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास म हमे पढने को मिलता है तो ससार को एक ऐसा पथ-प्रदर्शन मिलता है जिसकी बराबरी ससार का कोई धर्म ग्रन्थ नही कर सकता। उन्होने कहा है कि "हम सत्य को मानते हैं मिथ्या को नहीं।" स्वामी दयानन्द के इस कथन मे एक चुनौती है उन सबके लिए जो अपने हितार्थ धर्म के नाम पर झूठ, पक्षपात अज्ञान और अधम का प्रचार करने म सलग्न हैं। धर्म की यह सत्य व्याख्या स्वामीजी की वह पहली देन है जिसके लिए केवल भारतवासी ही उनके आभारी नही बल्कि ससार के वे सब लोग हे जो "सत्य" को प्यार करते है और असत्य को त्यागने के लिए तैयार है चाहे वह ईसाई असत्य हो या अहिन्दू असत्य।

जिस धर्म की व्याख्या स्वामी जी ने की है उसी धर्म का पालन करते हुये उन्होंने चार वेदो का अध्ययन किया और पक्षपात रहित होकर विवेक, बुद्धि और ज्ञान का सहारा लेकर सत्य को जानने का पूरा प्रयत्न किया और उसके फलस्वरूप सत्य को ग्रहण किया और सब असत्य त्यागा। स्वामी जी ने सत्य और सत्य-धर्म के प्रति अपने प्रेम के कारण ही अपने ग्रन्थ को सत्यार्थ प्रकाश का नाम दिया। 'सत्य' की खोज और सत्य-धर्म का पालन करते ~~हुये ही उन्होने सत्य वेद—भाष्य~~ लिखकर ~~वेदो के असत्य भाष्य की जो कुछ~~ विदेशी लोगो ने अपने हितार्थ किये थे सफाई की। विदेशी विद्वानो (?) ने कुछ अपनी नासमझी के कारण और विशेषत भारतीय धर्म और सस्कृति को हानि पहुचा कर अपनी झूठी निष्ठा बढाने के लालच मे वेदो के झूठे और असत्य भाष्य लिखे छापे और वितरण किये। स्वामी न पक्षपात रहित होकर वेदो मे छिपे सत्य को एक बार फिर इस तरह सत्यता से ससार के सामने रखा कि भारतीय सस्कृति और आर्य धर्म के दुश्मन मु ह ताकते ही रह गये। आज यदि भारत और इसके रहने वाले ससार के आगे अपना सिर ऊँचा रख सकते हैं तो इसका केवल यही एक कारण है कि उन्हे वेदो के उस सत्यार्थ का सहारा प्राप्त है जो स्वामी दयानन्द ने पक्षपात रहित होकर सत्यता से किया। यह स्वामी जी की वह बडी दूसरी देन है जिसका ऋण हम आजन्म नही चुका सकते।

आज चारो ओर हम देख रहे हैं कि धार्मिक और सामाजिक नेतागण बातें बहुत करते हैं जनता को सीख भी खूब देते हैं परन्तु वे स्वय अपने ही कथन का पालन कम करते हैं। यह अधर्म है। स्वामी दयानन्द जी न जिस जिस सत्य का प्रचार किया उसका स्वय भी पालन किया। उन्हे कोई भी सत्य कही भी दिखाई दिया तो उसको भी बिना किसी सकोच उन्होने अपनाया। सत्य को धर्म मानते हुये पक्षपात रहित होकर उन्होने जिस भांति सत्य को अपनाया और मिथ्या को त्यागा इसका एक और बहुत ही बडा उदाहरण हमे उनके जीवन से मिलता है।

स्वामी दयानन्द गुजरात मे पैदा हुए और वही पर उन्होने अपना बाल्य-काल बिताया। उनकी शिक्षा स्वर्गीय विरजानन्द जी के हाथो सस्कृत भाषा मे हुई। सस्कृत भाषा के ही स्वामी जी विद्वान थे। परन्तु उन्होने सत्य और धर्म का पालन करते हुये अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को हिन्दी भाषा मे ही लिपिबद्ध किया। ऐसा उन्होने क्यो किया ? उनकी पक्षपात रहित खोज और प्रमाण और विवेक ने यही सच्चा मार्ग उन्हे दिखाया और उसको उन्होने पक्षपात रहित होकर बिना किसी सकोच के अपनाते हुए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को हिन्दी भाषा मे लिखा। स्वामी दयानन्द के इस साधारण कार्य मे उसी धर्म और सच्चे धर्म का पालन छिपा हुआ है जिसकी व्याख्या करते हुए उन्होने मोनियर विलियम से कहा था कि Religion (धर्म) is a true and just view (न्याय) and theabandonment of all Prejudice and Partiality (पक्षपातरहित)।

आज स लगभग एक सौ वर्ष पहले स्वामी दयानन्द न यह बिना किसी पक्षपात के जान लिया था कि यदि सत्य धर्म की रक्षा हो सकती है तो वह हिन्दी भाषा को अपनाने से ही हो सकती है। उन्होंने यह भी अनुभव कर लिया था कि यह काम अब सस्कृत अथवा उनकी अपनी मातृभाषा गुजराती भी नही कर सकेगी। जनकल्याण के हित मे उन्होने अपनी मातृभाषा और गुरुभाषा दोनो को छोड हिन्दी मे सत्यार्थप्रकाश को लिखा। वह यह भी भलिभाति पहचानते थे कि इस देश की स्वतन्त्रता भी हिन्दी के हाथो मे ही सुरक्षित रह सकेगी और यदि विदेशी भाषा को भारत से निकाला जा सकेगा। तो वह भी हिन्दी के सहारे और बलबूते पर ही हो सकेगा। जिस देश की अपनी भाषा न हो उस देश की सस्कृति और उसका धर्म बचना असभव सा हो जाता है। राजनैतिक दासता तो जल्दी या देर मे सब की ही समाप्त हो जाती है परन्तु मानसिक दासता चिर स्थायी भी बन सकती है।

मानसिक दासता से बचने का केवल एक ही उपाय है कि जनसाधारण को उनकी जनभाषा दी जाये ताकि वह अपनी भाषा में बिना किसी मानसिक कठिनाई या दुर्बलता के अपने धर्म और सस्कृति को भली भाति समझ पाये। स्वामी दयानन्द भली भाति समझते थे कि ऐसी भाषा केवल हिन्दी ही हो सकती है, अस्तु, उन्होने हिन्दी को ग्रहण किया था। यह स्वर्गीय स्वामी दयानन्द की तीसरी अनुपम देन है जिसमे भारतीय धर्म सस्कृति और भारतीय राजनैतिक स्वतन्त्रता का गूढ भेद छिपा है। यदि इसे भारतीय जन-समूह पक्षपातरहित ह समझने का यत्न न करे तो यह उसका घोर दुर्भाग्य है।

आज देश भर में जो बावेला हिन्दी—अहिन्दी भाषाओ के बीच मचाया जा रहा है उसके पीछे कुछ ऐसे चतुर लोगो का हाथ है जिनकी चालो को समझना बावेला मचाने वालो की सामर्थ्य के बाहर है। साधारण लोगो को

(शेष पृष्ठ 4 पर)

(शेष पृष्ठ 3 का)

सत्य धर्म के......

यह कहा गया है कि यदि अंग्रेजी भाषा न रही तो उन्हे सरकारी नौकरिया मिलना कठिन हो जायेगा। नौकरियो का विचार ही मानसिक दासता का चिह्न स्वरूप है, परन्तु यह भी स्वय मे बिल्कुल असत्य है। यदि यह बावेला मचाने वाले लोग जरा सा भी सत्य धर्म का पालन करें और प्रमाण, विवेक और बुद्धि का सहारा लेकर पक्षपात रहित होकर सत्य को समझने भर की कोशिश करें तो उन्हे आसानी से इस बावेला और वाद-विवाद के पीछे छिपे (विदेशी) शैतान के हाथ काम करते दिखाई पड सकते हैं। हम कुछ स्पष्टीकरण किये देते हैं।

आज जो अंग्रेज बैंको, बीमा कम्पनियो, तेल कम्पनियो, एडवरटाइजिंग एजेन्सियो इत्यादि के मैनेजर और एकाऊन्टैण्ट बने बैठे हैं और बड़े-बड़े वेतन (10000) मासिक और दो-दो मोटरें, रहने के बगले इत्यादि-इत्यादि ले रहे हैं वे सब क्या करेंगे, यह कभी किसी ने सोचा है? यह सब बेकार हो जायेंगे जो अंग्रेज भारत मे विशेषज्ञ कहलाने लगता है उसे वापिस इग्लैंड जाकर रोटी के भी लाले पड़ जाते हैं। यदि यह सब लोग चले जायें तो इतनी ही नौकरिया और काम भारतीयो के लिये देश में ही तत्काल और निकल आयें। यही लोग हैं जो भारत मे अंग्रेजो की जडें मजबूत बनाते हुए भारत की मानसिक और आर्थिक दासता को लम्बा कर रहे हैं। इन सब से अधिक काला कारनामा उन विदेशी पत्रो और उनके सम्पादको का है जिन्होने अपनी रोटी (Bread and Butter) के लिये और अपनी सरकारो के हाथ मजबूत बनाने के लिये इस हिन्दी—अहिन्दी भाषा आन्दोलन के समाचार आठ-आठ कालम की सुरखिया देकर छापें और साधारण जनता को उकसाया। देश के पत्र और पत्रकार तभी देश की रक्षा के हेतु अपने काम का सचालन करते हैं यदि उन्हे देश से कुछ प्रेम हो। भला विदेशी भाषा के पत्रो के विदेशी सम्पादक देश के हित मे विदेशी भाषा का प्रयोग क्यो करने लगे? वे तो विदेशी भाषा की सहायता से दूसरे देशो की जड़ो को खोखला ही करेंगे और इसी मे उनका और उनकी विदेशी जाति और देश का हित भी छिपा है।

अब जरा एक तरफ और ध्यान दीजिए। अंग्रेजी भाषा ने भारत मे अंग्रेजी भाषी जातियो और देशो (England, America, Australia) को बाकी सब देशों और अपने मुकाबले मे भी ऊँचा पद देकर और सब के मुकाबले मे उनका काम सहज बना रखा है। क्या कोई भी व्यक्ति यह दावा कर सकता है कि आने वाले महायुद्ध मे भारत अवश्य ही अंग्रेजी भाषी देशो के साथ होगा? कदाचित भी नही। फिर भारत मे अंग्रेजी चालू रहने से सबसे बड़ा हित केवल अंग्रेजी भाषी जातियो और देशो का ही होगा। हिन्दी भाषा होने से इतना तो अवश्य ही होगा कि सब विदेशी लोग एक स्तर पर आ जायेंगे और विदेशी भाषा के कारण कोई विशेष डिफेंस रिस्क (सैनिक आपत्ति) भारत को उठाना नहीं पड़ेगा। यदि अंग्रेजी भाषा भारत से उठ जाये तो अंग्रेजी भाषी इग्लैण्ड के हाथ तुरन्त कमजोर पड़ जायेंगे जो यह नहीं जानता कि इग्लैण्ड अपना भारतीय राज खोकर अभी भी अपने पुराने घाव चाट रहा है।

यह पूरी कहानी नही है। अंग्रेजी भाषा की जहरीली पिटारी में कुछ और सांप और बिच्छू भी छिपे हैं। वर्तमान हिन्दी-अहिन्दी भाषा वाद-विवाद के पीछे सबसे स्फूर्ति के साथ काम करते हुए उन ईसाई पादरियों के हाथ छिपे हैं जो भारत को ईसालैण्ड बनाने के स्वप्न देखते है जिसकी अक्ल का पूर्णतया दिवाला ही निकल गया हो केवल वही इस कथन से इन्कार करेगा कि यदि भारत से अंग्रेजी भाषा विदा हो जाये तो फौरन ईसाई पादरियो के किलो की आधी दीवारें गिर जायेंगी। विदेशी ईसाइयत भारत में अराष्ट्रीयता फैलाने की जी तोड़ कोशिश में लगी हुई है। इसी में इसका बचाव है और यह अराष्ट्रीयता फैलाने का सब से बड़ा और सकुशल माध्यम अंग्रेजी भाषा ही है। तब भला यह विदेशी पादरी हिन्दी के रास्ते मे पत्थर क्यो नहीं बिछायेंगे।

अपनी बाल्यावस्था मे ही स्वामी दयानन्द के दिल मे सत्य की खोज करने की लालसा पैदा हुई थी। सत्य को ढूंढने के लिए इसी कारण उन्होने घर को छोड़ा था। इसी सत्य को उन्होने पक्षपात रहित होकर सवदा ढूंढा और अपनाया। उसका दिया हुआ सदेश आज भी ससार को सच्चा मार्ग-दर्शन करवाता है। इसी मे ससार का कल्याण और इसी पर आर्य समाज का भविष्य भी टिका हुआ हैं—पक्षपात रहित रह कर धर्म का पालन और सत्य का ग्रहण।

पत्र बोलते हैं—

उपसमिति की रिपोर्ट का क्रियान्वयन कैसे होगा?

मान्यवर,

आपने एक पत्र मे मुझसे आर्य पुनर्गठन के 30 अप्रैल, 1988 के अंक में प्रकाशित आर्यसमाज के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा का दूरगामी निर्णय शीर्षक से आदरणीय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत अन्तरंग सभा के निर्णय पर मेरी प्रतिक्रिया पूछी थी।

बिन्दु (क) इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा ने स्वय स्वीकार किया है कि सार्वदेशिक सभा हमेशा ही यह प्रेरणा देती रही है कि आर्य समाज के सदस्य व अधिकारी जाति सूचक शब्द का प्रयोग अपने नाम के साथ न करें। पर फिर भी इस कार्य मे सफल न हो सके। सार्वदेशिक सभा के सम्मुख विचारणीय विषय यही रहना चाहिए कि वे [illegible] सफलता किस प्रकार प्राप्त करें?

बिन्दु (ख) व (ग) यह आर्य समाज के [illegible] के लिए शपथ व प्रतिज्ञा से सम्बद्ध है। इस सम्बन्ध में [illegible] है कि इस तरह की घोषणा सभी सदस्य कर देते हैं पर व्यवहार में उनका आचरण इसके विरुद्ध देखा जाता है। इसके दोषी आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक सभा के कुछ अधिकारी भी हैं और इन सबके विरुद्ध सार्वदेशिक सभा कोई कदम नहीं उठा पाती।

बिन्दु (घ) यह राजनीति का आर्य समाज पर कुप्रभाव से बचने के सम्बन्ध में है। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक के निर्णय बहुत ही लचर हैं। व्यवहार मे उसका कोई अर्थ नहीं है। सार्वदेशिक सभा को इस सम्बन्ध मे बहुत ही गम्भीरता से विचार करना चाहिए। राजनीतिक दल के अधिकारी अथवा उसके निर्वाचित सदस्य आर्य समाज के अधिकारी न बन सकें क्योंकि ऐसा व्यक्ति आर्य समाज का लाभ अपने दल के लिए ही उठाना चाहेगा। क्या सार्वदेशिक ने ऐसा कोई सर्वेक्षण किया है कि इस समय आर्य समाजों के पदाधिकारी किस किस दल से सम्बद्ध है?

विचार तो इस विषय पर भी हुआ था कि आर्य समाज के मचो पर राजनीतिज्ञो को न बुलाया जाय जो इस सम्बन्ध मे उल्लिखित निर्णय मे कुछ नही कहा गया।

वस्तुत आर्य समाज के सम्बन्ध मे [illegible] बहुत गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इसी अक में [illegible] प्रसाद शर्मा, आर्यसमाज काचरोड़ा, भीलवाड़ा का पत्र "आर्य [illegible] के नेता सावधान हो" प्रकाशित हुआ है। यह पत्र स्वामी विद्यानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता के त्याग पत्र के [illegible]८ पर लिखा गया है। लेखक ने इस पत्र से आर्य समाज के वर्तमान रूप के सम्बन्ध मे बहुत कटु किन्तु यथार्थ टिप्पणी प्रस्तुत की है।

मैं पिछले कुछ समय से निरन्तर इस बात के प्रयत्न कर रहा हूं कि आर्यसमाज की भावी रूपरेखा का निर्धारण करने के लिए एक बुद्धिजीवी सम्मेलन बुलाया जाय जिसमे देश-विदेश के विद्वान् गम्भीरता पूर्वक इस विषय पर विचार करें। सार्वदेशिक सभा की जिस अन्तरग सभा में आचार्य दत्तात्रेय आर्य के सयोजन मे गठित उपसमिति की रिपोर्ट पर विचार हुआ था उसमें मैं भी उपस्थित था। मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त दु ख हो रहा है कि अन्तरग सभा के सदस्य इस रिपोर्ट पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के लिए तैयार नहीं थे और न ही उन्होने इस पर गम्भीरता से विचार किया। मेरा यह निश्चित मत है कि आर्यसमाज के भावी कार्यक्रमो पर विचार करने के लिए आवश्यक है कि उस पर प्रतिनिधि सभाओ व सार्वदेशिक सभा का दबाव न हो। मैंने जिस बुद्धिजीवी सम्मेलन का प्रस्ताव रखा है उसमें यही प्रयत्न किया जायेगा कि वह निष्पक्ष एव पूर्णरूप से आर्यसमाज के भविष्य को उज्ज्वल करने के निमित्त हो।

भवदीय,
प्रशान्त वेदालकार,
7/2 रूपनगर, दिल्ली-7

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिटर्स, अजमेर मे मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।
सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द . 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष . 4 बृहस्पतिवार 30 जून, 1988
अंक 12 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् ग्रमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवान सर्वा ग्राशा मम मित्र भवन्तु।।

आषाढ कृ 1 सवत 2044
वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

आखिर शंकराचार्य चाहते क्या हैं?

ऐसा लगता है कि पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजनदेव ने देश का सर्वनाश करने का बीडा पूरी तरह से उठा लिया है। अभी तक वे सती प्रथा जैसी अमानवीय वेद विरुद्ध कुप्रथा को वेद सम्मत बताकर समर्थन करने के कारण अखबारो की सुर्खियो मे थे ही कि इसके चलते ही उन्होने एक धर्म विरोधी और मानवता विरोधी वक्तव्य और दे डाला।

22 जून को जयपुर मे एक सभा [illegible] सम्मेलन मे स्वामी निरजनदेव ने कहा कि "हरिजनो को मन्दिर मे जाने का अधिकार नही है।" स्वामी निरजनदेव का यह कथन मानवता विरोधी व कानून विरोधी तो है ही, साथ ही वेद सम्मत भी नही है। लेकिन यह भी एक विडम्बना ही है कि शकराचार्य अपने प्रत्येक वेद विरुद्ध और मानवाधिकार विरोधी कथनो को वेद सम्मत बताने का दावा करते हैं। जब कि उनके बयानो को देखते हुए तो यही लगता है कि इन्होने वेदो को केवल देखा है, उनका स्वाध्याय कभी नही किया है। फिर वे वेदो के प्रकाण्ड पण्डित महर्षि दयानन्द की विद्वता का आकलन कैसे कर सकते हैं?

हमे तो कभी-कभी यह भी लगने लगता है कि कही शकराचार्य महोदय मानसिक रूप विक्षिप्त तो नही हैं, क्योंकि देश की वर्तमान परिस्थितियो मे एक कट्टर पौराणिक भी, जिसका दिमागी सतुलन ठीक अवस्था में हो, कभी ऐसे वक्तव्य देने का दुस्साहस नही कर सकता। आज एक ओर जहा हरिजनो पर अत्याचारो का नारा लगाकर ईसाई मिशनरी और इस्लाम मतावलम्बी हरिजनो का धर्म परिवर्तन करा रहे हैं तो दूसरी ओर काशीराम सवर्ण और हरिजन मे विद्वेष की भावना पैदा कर अपना राजनैतिक वर्चस्व बना रहे हैं। वे खुले आम सवर्णों के नाम पर अपशब्द बोलते है। उनका एक मात्र नारा है 'ब्राह्मण, ठाकुर, बनिया चोर, बाकी है सब डी एस फोर।' ऐसी विषम परिस्थितियो मे शकराचार्य का हरिजन विरोधी वक्तव्य निश्चित रूप से देश मे एक वर्ग

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

भेद और जाति भेद की शास्त्र एव धर्म विरोधी दीवार को खडी करने करने का काम करेगा और इसके साथ ही इससे काशीराम जैसे राष्ट्र विरोधी व्यक्ति का आधार मजबूत होगा और हरिजनो को धर्म परिवर्तन की प्रेरणा मिलेगी।

शकराचार्य याद रखें कि देश, धर्म के हित को दृष्टिगत रखते हुए पडित महामना मदन मोहन मलवीय जैसे कट्टर सनातनी को भी अपनी पौराणिक मान्यताओ को तिलाजलि देनी पडी थी और हरिजनो द्वारा धर्मपरिवर्तन करने मे भविष्य में होने वाले भयावह दुष्परिणामो को देखते हुए उन्हे कहना पडा था कि हरिजन उनके समान हैं, वे किसी के बहकावे मे आकर धर्म परिवर्तन न करे। हम (मालवीय) उनकी चरण रज लेने के लिए तैयार हैं। क्या स्वामी निरजन देव मालवीय जी से कोई प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे?

हमे अपनी वर्तमान सरकार की नीति पर भी हसी आती है। एक ओर तो वह अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति हित हरिजनो के हितो को प्राथमिकता देने का दावा करती है और दूसरी ओर शकराचार्य जैसे लोग हरिजन विरोधी व कानून विरोधी वक्तव्य दिए जा रहे हैं और सरकार है कि कान बन्द किए हुए है। आखिर एक धर्म निरपेक्ष सरकार जो ठहरी! इसे तो सभी मतो व समुदायो के लोगो की वोट लेनी है।

हरिजनों के साथ सौतेला व्यवहार सहन नहीं होगा

अजमेर। आर्य समाज अजमेर के सत्सग के पश्चात प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य की अध्यक्षता मे हुई एक सभा मे पुरी के शकराचार्य निरजनदेव के हरिजनो के मदिर प्रवेश निषेध सम्बन्धी विचारो की कडी भर्त्सना की गई। सभा मे शकराचार्य द्वारा आर्य समाज के सस्थापक व महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती के विषय मे जयपुर मे दिये गये अपमानजनक वक्तव्य की एक मत से निन्दा की गई व कहा गया कि शकराचार्य इस प्रकार की भ्रान्तियाँ पैदाकर हिन्दू समाज व भारत राष्ट्र मे वर्गभेद की समस्या पैदा कर रहे हैं।

सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि स्वामी निरजनदेव ने पूर्व मे सतीप्रथा का समर्थन कर तथा अब हरिजनो के मदिर प्रवेश निषेध सम्बन्धी वक्तव्य देकर देश विरोधी एव धर्म विरोधी कार्य किया है। आचार्य दत्तात्रेय जी ने सरकार से आग्रह किया कि वह दोगली नीति त्यागकर शकराचार्य के ऐसे कानून विरोधी वक्तव्यो पर रोक लगाए। उन्होने सरकार पर आरोप लगाया कि एक तरफ तो वोटो की प्राप्ति हेतु वह समाज के दलित वर्ग व हरिजनो की मसीहा बन जाती है तो दूसरी तरफ उसी के शासन मे इस प्रकार के वक्तव्य सरे आम दिये जा रहे हैं व हरिजनो के साथ सौतेला व्यवहार व अत्याचार किया जा रहा है। और सरकार कुछ नही कर रही है।

आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि आर्य समाज हरिजनो पर किसी भी प्रकार का अत्याचार या सौतला व्यवहार सहन नही करेगा। यह निश्चय कर आर्य समाज के लोग मूर्तिपूजा के विरोधी होने के बाद भी स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व मे नाथद्वारा के श्री नाथमन्दिर मे हरिजन भाईयो के साथ 12 जुलाई को प्रवेश करेंगे। आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि आर्य समाज अजमेर का भी एक सौ एक सदस्यो का जत्था इसमे सम्मिलित होगा। उन्होंने जानकारी दी कि आठ जुलाई को पिंक सिटी मे स्वामी अग्निवेश के "जाति तोडो यज्ञ के लिए जाते समय अजमेर रुकने पर स्टेशन पर हार्दिक स्वागत किया जायेगा व आर्य समाज अजमेर के जत्थे को भी विदाई दी जायेगी। अजमेर के जत्थे का नेतृत्व आचार्य गोविन्दसिंह करेंगे।

निदेशक . दत्तात्रेय आर्य   प्रधान सपादक : रामसिंह   सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य   [illegible] कार्या 21010

संपादकीय

अस्पृश्यता मानवता के लिये कलंक तथा हिन्दुत्व के लिये घोर अभिशाप

विगत दिनो पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरजनदेव तीर्थ ने शास्त्रो के नाम पर छुआछूत का समर्थन तथा मन्दिरो मे प्रवेश उनके लिये निषेध बता कर मानवता के प्रति घोर अपराध किया है। आज जब कि मनुष्य के पाव चन्द्रमा, मगल और शुक्र ग्रह तक पहुच चुके हैं समस्त विश्व एकसमुदाय बन रहा है शंकराचार्य जैसे प्रतिष्ठित पदपर अधिष्ठित स्वामी निरजनदेव तीर्थ का धर्म और शास्त्रो के नाम पर मानव-मानव के बीच भेद पैदा करने की बात कहना सचमुच एक आश्चर्य जनक एव हास्यास्पद एव घिनौना दुष्कृत्य है जिसकी जितनी निन्दा की जाय उतनी ही कम है। भारतीय सविधानने सबको समान अधिकार दिये हैं। भारत का सविधान समाजवाद प्रजातत्र धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृत्व की बात कहता है।

समस्त सृष्टि का कर्त्ता, जगत नियन्ता धर्ता और हर्त्ता सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक है वही सबका पिता है सब मानव उसकी सन्तान हैं। एक पिता के सब पुत्र है। एक राष्ट्र के सब निवासी एक हैं। एक आर्य (हिन्दू) धर्म को मानने-विश्वास रखने वाले सब एक हैं। फिर ईश्वर की पवित्रतम वाणी 'वेद' पुकार-पुकार कर कहता है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। अमृतस्य पुत्रा' कह कर सबको सम्बोधित किया है। सगच्छध्व सवदध्व तथा 'समानो मत्र समिति समानी' मित्रस्याह चक्षुषा समीक्षामहे एव अज्येष्ठाय अकनिष्ठा' अर्थात न कोई छोटा है और न कोई बडा है सब समान हैं ऐसी अनूठी बातें कहता है। मर्यादापुरुषोत्तम राम ने केवट और निषाद को गले लगाया था। शबरी के बेर खाये थे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव-मानव एक समान' का उद्घोष कर छुआछूत और अपृश्यता का विरोध किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोद्धार सभा बनाकर हरिजनो के उद्धार का बीडा उठाया था। तथा अली बन्धुओ द्वारा प्रस्तावित दलित विभाजन का डट कर विरोध किया। आर्य समाज ने अपने प्रारम्भकाल से ही छुआछूत को मिटाने ब्राह्मण-हरिजन का भेद दूर करने तथा समाज मे ऐक्य एव समरसता उत्पन्न करने के लिये अपने विद्यालयो गुरुकुलो तथा आश्रमो तथा समाज मन्दिरो के द्वार खोल दिये थ।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

वेदामृत

पारम्परिक प्रवाह

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा
इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं
वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥८॥

(सामवेद पावन पर्व)

(इन्दु) हृदयो को सरसाने वाला (वाजी) बलशाली (साम) वीर-रस(गोन्योघा)मातृभूमि मातृ-भाषा मातृ-सस्कृति का परम्परा-गत प्रवाह बहा कर (इन्द्रे मदाय) आत्मा मे हर्ष पैदा करने के लिए (सह-इन्वन) शक्ति की प्रेरणा करता हुआ (पवते) पवित्रता का प्रवाह लाता है। (वृजनस्य राजा) शक्ति का राजा (वरिव-कृण्वन वर प्रदान करता हुआ (रक्ष हन्ति) राक्षस का हनन करता है और (अरानि परिबाधते) कृपण, आलसी, असहयोगी को चारो ओर से दबा देता है।

वीर भाव के बिना हृदय सूखे रहते हैं। युवको का जीवन वीररस द्वारा ही पनपता है। बहादुरी के विचार मात्र से हृदय मे एक हरियाली सी अनुभव होती है। भुजाओ मे बल का सचार हो जाता है। आत्मा अनुभव करता है कि मैं ससार का शासक हूँ। शत्रुओ को दबा सकता हूँ। कोई विघ्न-बाधा हो मैं उसे हटा सकता हूँ। विरोधी सब मेरे अधीन हैं। यह विचार आते ही एक विशेष प्रकार की मस्ती सी अनुभव होती है।

इस मद का प्रयोग अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी। यदि इस वीररस के मद को "गोन्यघा" सस्कृत-रूपी भाषा के पारम्परिक प्रवाह का रखवाला—बना दिया जाय तो यह मद पवित्रता लाता है। सयाना सेनापति अपने सैनिको के कधो पर मातृ-भूमि मातृ-भाषा, तथा मातृ-सस्कृति की रक्षा का भार रख देगा उनका शत्रु राक्षसो को—अत्याचारियो को बना देगा, जिस से ससार का भौतिक तथा आध्यात्मिक भला हो।

सेना मे बल उमड रहा है। सारा दल युद्ध के लिये उत्साह का पारावार-सा बन रहा है। इससे ससार मे उत्पात भी मचा सकते हो और देशो तथा जातियो की सस्कृति-रूपी सपत्ति का विकास भी कर सकते हो। आर्यत्व रक्षा मे है। क्षत्रिय का काम है "क्षत" का "त्राण" अर्थात् पीडितों की रक्षा नाशोन्मुख जातियों का पुन' निर्माण। इस आर्यत्व के शत्रु दो प्रकार के होते हैं एक "राक्षस" अर्थात् बलात्कारी, दूसरे "अराति" अर्थात् कृपण अदान-शील असहयोगी। बलात्कार का तो हमेशा हनन ही करना करना चाहिए और यदि बलात्कारी बलात्कार को छोडने पर तैयार न हो तो उसकी गति भी वही है जो उसके राक्षस-स्वभाव की। राक्षस दूसरे को मारता है। अराति सहायता देने से इन्कार करता है। इन दो मे क्या भेद है? यह उदाहरण से और स्पष्ट हो जायगा। तैरना न जानने वाला एक मनुष्य नदी के किनारे खडा है। राक्षस उस नदी म धकेल कर डुबो देगा। अराति डूबत को हाथ नहीं देगा उसे बचायेगा नहीं। राक्षस बडा अपराधी है इसलिए उसके लिए दण्ड भी अधिक है। परन्तु जातीय जीवन में सहयोग न देना भी दोष है। यदि एक राष्ट्र, मिल रहे राष्ट्रो से अलग हो जाय और उनके सहयोग में सहायक न हो तो उसे सघ मे सम्मिलित होने के लिए बाधित करना आवश्यक है। इस प्रकार के असहयोग से भी जातियो के विकास मे भी बाधा पैदा होती है। यदि देश के साम्राज्य से कोई प्रान्त पृथक रहना चाहे तो साम्राज्य की स्थापना ही नही हो सकती।

वीर के हृदय में जब "बढने की"—विरोधियो के विरोध की शक्ति हिलोरे ले रही हो तो उसका उत्तम उपयोग इसी राक्षस-भाव के सहार तथा अराति-भाव के परिबाधित करने मे ही होगा। राक्षस तथा अराति व्यक्ति भी हो सकते हैं जातिया भी और तो और, अपने आत्मा मे भी यह भाव उठ सकता है। वीर-रस का प्रवाह इन सब के साथ एकसा बर्ताव करेगा। और अराति भाव को देगा।

वीर का काम है वर प्रदान करना। जातियों को व्यक्तियो को अपने आत्मा को सभी वरन योग्य वस्तुएँ देना।

सच तो यह है कि आत्मा का कल्याण समूह के कल्याण के साथ ही हो सकता है। विश्व-हित ही वास्तविक आत्महित है। उस हित के रास्ते से बाधाएँ हटा देना उस हित की सिद्धि का श्री-गणेश है। वीर रस की सर्वोत्तम शक्तियां इसी कार्य में लगनी चाहियें—राक्षसों को मिटा देना, अरातियों को दबा देना।

प० चमूपति
(सोम-सरोवर में)

प्रो. मैक्समूलर के वेद सम्बन्धी विचार

— डा. कृष्णवल्लभ पालीवाल —

अधिकांश भारतीय प्रो० फ्रैडरिक मैक्समूलर को भारत का हितैषी और शुभचिन्तक समझते हैं क्योंकि उन्होंने भारतीय धर्म शास्त्रो और विशेषकर वेदो पर बहुत लिखा। उनके वेदाध्ययन का मूल उद्देश्य क्या था? वेदो मे उन्होंने क्या पाया! उनका वेदो के प्रति क्या दृष्टिकोण था और विश्व के धर्म ग्रन्थो मे वेदो का इनकी दृष्टि से क्या स्थान है यही इस छोटे से लेख का अभिप्राय है।

आपकी शिक्षा जन्म से जर्मन होने के कारण पहले लीपिग और फिर बर्लिन विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष सस्कृतज्ञ प्रो हरमैन ब्रोखोस के निरीक्षण मे हुई। यहा के भाषा विशेषज्ञ फाजवोय और दार्शनिक शीलिग के विचारो का मैक्समूलर पर प्रभाव पडा। तत्पश्चात् आप ऋग्वेद विशेषज्ञ फ्रासीसी प्रोफेसर ओगीन बरनोफ के सस्कृत विभाग में पैरिस वेदाध्ययन के लिए (1846-47) आये। शिक्षा समाप्त कर एच एच विल्सन और बारोन बुनसन के आग्रह पर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे वेदानुसधान के कार्य मे लग गये और आजीवन (1847 से 1900 तक) इसी विद्यालय के विश्व को अपने वेद, भाषा तुलनात्मक धर्म और भाषाओ के विकास सबधी विचार देते रहे। इन पचास वर्षों मे आपने "पूर्व की पवित्र पुस्तके सीरीज' के अन्तर्गत 25 धर्म ग्रन्थो का 50 भागो मे अग्रेजी अनुवाद किया। ये पुस्तकें वेद, उपनिषद् गीता, वेदान्त सूत्र से लेकर जैन, बौद्ध इस्लाम, फारसी एव चीन के धर्मग्रथो आदि के विषय मे हैं। स्वय मैक्समूलर ने वैदिक ऋचायें, उपनिषद धम्मपद, गृह्य सूत्र और बौद्ध महायन का अग्रेजी अनुवाद किया। भारतीय षट् दर्शनो पर 899 मे "Six Systems of Indian Philosophy" एक ग्रन्थ लिखा। आप के वेद सम्बन्धी भाषण The Vedas, India, what it can teach us? पुस्तको के रूप मे मिलते हैं।

प्रो मैक्समूलर के वेदभाष्य का आधार सायण भाष्य है जिसे इन्होंने पहले 6 भागो में (1849-1873) छपवाया और दूसरा सस्करण 4 भागो मे (1890-92 केवल सहिताए क्रमश 1873 और 1877 मे छपवाई।

लेख के प्रारम्भ मे उठाये गये प्रश्नो का सबसे प्रामाणिक उत्तर उनके वे शब्द होगे जिन्हे उन्होने कभी-कभी पत्रो आदि के रूप मे व्यक्त किया है। इसी मे उनके अन्तर मे छिपी भावना व्यक्त हो जावेगी, तो पढ़िये उन्ही के शब्दो मे—

प्रो मैक्समूलर के एक मित्र ई बी पूसी ने उन्हे निम्नलिखित पत्र 'तुम्हारा कार्य भारत के धर्म परिवर्तन के प्रयत्न मे एक नवीन युग का निर्माण करेगा और ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय आपको यह स्थान देकर धन्यवाद का पात्र है। यह मुख्य और अत्यन्त महत्वपूर्ण (वेदभाष्यादि) कार्य भारत के धर्म परिवर्तन के कार्य को सरल करेगा और उस प्रारम्भिक असत्य धर्म को इस सत्य धर्म जिसका हम पालन करते हैं तुलना करने योग्य करेगा।'

1886 मे प्रो मैक्समूलर ने अपनी पत्नी को एक पत्र इस प्रकार लिखा "मुझे आशा है कि मैं यह कार्य सम्पूर्ण करूंगा और मुझे पूर्ण विश्वास है हालाकि मैं उसे देखने को जीवित न रहूगा तदपि मेरा यह सस्करण और वेद का भाष्य आज्ञत बहुत हद तक भारत के भाग्य पर और उस देश की लाखो आत्माओ के विकास पर प्रभाव डालेगा। वेद इनके धर्म का मूल है और मुझे विश्वास है कि उनको यह दिखाना ही कि वह मूल क्या है इस धर्म को नष्ट करने का एक मात्र उपाय है जो गत तीन हजार वर्षों से उससे (वेद से) उत्पन्न हुआ है।

16 दिसम्बर, 1868 को उन्होने तत्कालीन भारत के मन्त्री आरगायल के ड्यूक को निम्न पत्र लिखा "भारत का प्राचीन धर्म पतन हो गया है। यदि अब भी ईसाई धर्म नहीं प्रचलित होता है तो इसमे किसका दोष है?"

29 जनवरी 1882 को श्री बाईरेन्जी मालाबारी को इस प्रकार एक पत्र प्रो मैक्समूलर ने लिखा "जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि मेरे विचार "हिबर्ट भाषण लिखते समय भारतीयो के बारे मे थे। मैं कम से कम उन थोडे से लोगो को बताना चाहता हूँ जिन तक मैं अपने विचार अग्रेजी द्वारा पहुँचा सकता हूँ कि इस प्राचीन धर्म का ऐतिहासिक महत्व क्या है जैसा कि समझा जाता हैं न केवल यूरोपीय या ईसाईयत की दृष्टि से बल्कि एतिहासिक दृष्टिकोण से। मैं दो आपत्तियो से चेतावनी देना चाहता हूँ। प्रथम तो भारत के राष्ट्रीय धर्म की अवहेलना व न्यून मूल्याकन करना जो प्राय तुम्हारे अधूरे-यूरोपीय नवयुवको द्वारा किया जाता है और दूसरे अधिक महत्व देना या ऐसा अनुवाद करना जैसा कभी नही किया गया। ऐसा दु खद स्त्रोत दयानन्द सरस्वती के वेदो पर परिश्रम मे प्रदर्शित होता है। वेदो का प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ मानो जिसमे एक पुरानी और सरल प्रकृति की जाति के मनुष्यो के विचारो का चित्रण है और तब तुम इसकी प्रशसा कर सकोगे और इसमे से इस आधुनिक युग मे भी विशेषकर उपनिषदो की शिक्षाओ को ग्रहण कर सकोगे। लेकिन इसमे खोज करो वाष्प इजन बिजली, यूरोपीय दर्शन और नैतिकता की। वेद को इस सत्य रूप से अलग कर दो इसके वास्तविक महत्व को नष्ट

(शेष अन्तिम पृष्ठ पर)

अस्पृश्यता (शेष पृष्ठ 8 का)

आज आर्य समाज मे कई बडे-बडे विद्वान, भजनोपदेशक, पुरोहित समाज के तथाकथित निम्न वर्ग से आये थे परन्तु उन्हे ऊचा मान- सम्मान और आदर दिया तथा उच्चवर्णों के साथ वे घुल मिल कर एक हो गये। अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन मिला। जातपात के बन्धन तोड दिये गये।

आज सनातन धर्म एव पौराणिक मतो के ये बडे-बडे धर्माचार्य और धर्मगुरु मठाधीश इस बात को क्यो नही समझ पाते कि इसी छूआछूत और जाति भेद की दुर्भावना और सामाजिक कुरीति के कारण राम और कृष्ण तथा वेद और गीता के करोडो अनुयायी मुसलमान और ईसाई बन गये। देश का विभाजन हो गया। इन बिछुडे भाइयो को गले लगाना तो दूर उन्हे बराबरी का दर्जा देना और मानवाधिकारो मे भागीदार बनाना तो दूर उल्टा और अपनी दकियानूसी रूढिवादी, प्रतिक्रियावादी एव कुण्ठाग्रस्त सकीर्ण मनोवृत्ति का परिचय देकर छूआछूत को शास्त्र सम्मत बताने का दुस्साहस किया जा रहा है और मन्दिरो मे उनके अबाध प्रवेश को रोका जा रहा है। सचमुच शकराचार्य जैसे लोगो का ऐसा दुष्चिन्तन विकृत मष्तिष्क की उपज और मदान्ध मनोवृत्तिका परिचायक है। धिक्कार और लानत ऐसे धर्माचार्यों और धर्म के ठकेदारो को! कोई धर्म इन्सान-इन्सान मे भेद नही कर सकता। ऐसा धर्म धर्म कहलाने का हकदार नही है।

खेद है कि वोटो की राजनीति तथा तुष्टीकरण एव फूटपरस्ती कूटनीति के कारण आज झूठ को डके की चोट झूठ नही कहा जा रहा है तथा सत्य का गला घोटने का दुष्प्रयत्न हो रहा है अन्यथा भारतीय सविधान और सर्वोच्च न्यायालय के फैसेलो तथा ससद द्वारा किये गये सवसम्मत निर्णयो की खुले आम इस प्रकार से धज्जियां उडाने का दुस्साहस नही होता। चाहे सती प्रथा निषेध की बात हो, चाहे छूआछूत के उन्मूलन की बात हो अथवा महिला उद्धार की, आवश्यकता इस बात की है कि सरकार अपने बनाये कानूनो की कडाई से पालना करने तथा सविधान मे उल्लिखित मानदण्डो एव मानवाधिकारो की रक्षा करने के लिए अप्रिय कठोर कदम उठावे। समाज सुधारक एवं जागरूक सस्थाएँ भी सक्रिय होकर समाज के सामान्य जनो मे ऐसी चेतना एव वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करे कि धर्म के तथा कथित ठेकेदारो को ऐसा अनर्गल प्रलाप करने की हिम्मत नही हो।

'शंकराचार्य होश में आओ, छूआछूत को दूर भगाओ'

—दासासिंह

रजिस्ट्रार महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ०प्र०)

डाक पं. स. RJ/AJ-169 ६

सती प्रथा वेद विरुद्ध है

—न्यायमूर्ति पानाचन्द जैन—

वेदो मे सती प्रथा का कही भी उल्लेख नही है और उसे धार्मिक नही माना जा सकता।

राजपूतो मे जौहर के द्वारा जीवन त्यागने की घटनाओ के पीछे पति के पीछे जल मरने की भावना न होकर अपने चरित्र की रक्षा करना होता था। उसमे और सती में बड़ा फर्क है।

ऋग्वेद मे जिस ऋचा पर सती' को धार्मिक बताया जाता है उसके 'अग्रे शब्द को कट्टर पन्थियो ने अग्ने' बनाकर स्त्रियो को जलाना धार्मिक मान लिया जो सरासर अनुचित है। दिवराला जैसी घटनाऐ दुबारा न हो इसके लिए सख्त कदम उठाए जाने चाहिये।

सती प्रथा का प्रारम्भ 16वी सदी से प्रारम्भ हुआ। राजस्थान मे इस का अधिक प्रसार हुआ। 17वी सदी मे सवाई मानसिंह ने जो जयपुर के महाराज थे उन्होने कानून [illegible] कि कोई भी स्त्री अपने पति की चिता के साथ नही जलेगी [illegible] शासक ने भी इसका विरोध [illegible] अकबर को जब यह मालूम [illegible] जोधपुर की एक रानी सती होना चाहती है तो वे स्वय वहा गय और उसे रोका। अत इतिहास सती प्रथा के विरोध स भरा पडा है। राजा राममोहन राय के बडे भाई की मृत्यु के पश्चात उनकी भाभी को जिन्दा जला दिया गया। इसे देखकर उनके मन मे इस प्रथा के विरुद्ध विरक्ति हो गई। 1929 मे उन्होने अंग्रेज सरकार से अनुरोध कर इसका कानून बनवाया तब भी अनेक पण्डितो ने इसका विरोध किया। 120 पण्डितो ने इस पर हस्ताक्षर किये थे।

जुलाई 1932 में प्रीवी काउन्सिल ने सती प्रथा को अवैध करार दिया अत इसके विरोध का अधिकार किसी को भी नही। यहाँ तक कि सुप्रीम कोट को भी नही। केवल सुप्रीम कोर्ट मे इस पर फिर विचार ही किया जा सकता है

1950 मे भारत ने नया अपना सविधान बनाया। उसकी धारा 25,26 मे यह कहा कि धम के सम्बन्ध मे प्रत्येक नागरिक स्वतन्त्र है किन्तु धर्म तरीका लोक व्यवहार सदाचार व स्वास्थ्य के विरुद्ध है तो मान्य नहीं होगा। एक्ट 26 मे प्रत्येक सस्था धम मे स्वतन्त्र है यदि वह लोकाचार व्यवहार व स्वास्थ्य के लिए हानि कारक नही हो।

सती प्रथा को प्रथा नही कहा जा सकता क्योंकि वह लगातार अपनाया नही जाती थी न ही प्रत्येक व्यक्ति इसे अपनाता है अत इसे प्रथा नही मान सकते। इस लिए सती प्रथा धार्मिक प्रथा नही है अधार्मिक है अनुचित है। धारा 51 मे नागरिक के कर्त्तव्य बनाये हैं—महिलाओ की इज्जत सुरक्षा उसकी देखभाल आदमी का कर्त्तव्य है। मैने सती होना सुना है लेकिन यह कभी नही सुना कि कोई आदमी सता हुआ। क्या यह प्रथा मात्र नारी पर लागू होती है?

अत मानवीय मूल्यो को प्रतिस्थापित मानते हुए इस प्रथा को खत्म करना होगा। भारतीय सविधान मे लिग भद मानना अवैध है इस लिए सती प्रथा अवैध है। अत राजस्थान कोट ने इसके विरुद्ध जो कानून पास किया वह उचित है।

ए-21 मे कहा गया गया है कि जीने का अधिकार सबको है। आत्म हत्या का नही। सती होना अवैध है किन्तु सती के कारण गौरवान्वित करना भी गलत है उसे भी सजा दी जानी चाहिये। (आर्य समाज सान्ताक्रूज मे दिए गए भाषण के भाषण आधार पर)

(शेष पृष्ठ तीन का)

कर दो और तुम प्राचीन और अर्वाचीन के ऐतिहासिक क्रम को जो इन्हें बाले हुए है छिन्न-भिन्न कर दो। अतीत एक सत्य ऐसा मानो। उसका अध्ययन करो तब तुम्हे भविष्य मे अपना ठीक मार्ग अपनाने मे कम कठिनता होगी पाठक यहा प्रो साहब की अन्तरात्मा के भावो को समझ गऐ होगे और वे जिस प्रकार महर्षि दयानन्द भाष्य शैली से भयभीत प्रतीत होते हैं। समझते होंगे दयानन्द की शैली के के आगे मेरी दाल न गलेगी।

उन्होंने अपने पुत्र को इस प्रकार लिखा तुम पूछोगे कि विश्व में कौन सी पवित्र (धार्मिक) पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है? शायद यह उत्तर पक्षपात पूर्ण प्रतीत हो। लेकिन मैं सब में बाईबिल के न्यू टेस्टामेंट को कहूंगा उसके पश्चात् कुरान को स्थान दू गा जो अपनी नैतिक शिक्षाओ मे बमुश्किल न्यूटेस्टामेंट के सस्करण से श्रेष्ठ है। उसके पश्चात् क्रमश ओल्ड टेस्टामेंट, दक्षिणी बौद्धो की त्रिपिटिका लाओटज के टाओद, पुत्र कन्फ्यूसिस वेद और अवेस्ता।

१८९९ मे प्रो मैक्समूलर ने ब्रह्मसमाजी एन. के मजूमदार को निम्नलिखित पत्र लिखा—"तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे भारत के प्रिय धम को भ्रष्ट करने के प्रयत्न एव उसके द्वारा उसे अन्य-अन्य धर्मों विशेषकर ईसाईयत की पवित्रता और पूर्णता से समीप लाने के कार्य का अनेको वर्षों अध्ययन किया है। सबसे पहले तुम्हे निश्चय करना है कि तुम अपन प्राचीन धर्म का कितना भाग त्यागने को तैयार हो। यदि उसका सर्वस्व नहीं जो पुराना कहा जाता है, तुमने काफी मात्रा मे त्याग दिया है। बहुदेवतावाद मूर्तिपूजा और धूमधाम से की गई बलि पूजा।

तत्पश्चात न्यूटेस्टामट उठाओ और स्वय पढो और स्वय निर्णय करो कि उसमे लिखे ईसा के शब्द तुम्हे सतुष्ट करत हैं अथवा नही। ईसा के श्रद्धायुक्त वचनो मे अन्तर निहित उपदेश तुम तक वैसे ही आवेंगे जैसे ही हम तक आते हैं। हम भी इन उपदेशो का अपना अर्थ देने का अधिकार नही है, विशेषकर यदि हम इनका स्वय भिन्न अर्थ करे यदि तुम उनकी शिक्षाओ को यथावत स्वीकार करो तो तुम भी ईसाई हो (या हो सकते हैं)। तुम मुझे अपनी मुख्य परेशानिया बताओ जो तुम्हें स्पष्ट रूप से ईसाई बनने मे बाधा डालती हैं और जब मैं लिपि मे स्पष्ट करने की पूर्ण कोशिश करूगा कि किस प्रकार मैंने और मरे साथियो ने उनका मुकाबला किया है और उन्हें हल किया है। मेरी दृष्टि मे भारत का मुख्य भाग ईसाई बन चुका है। तुम्हे ईसाई बनाने मे समझाने बुझाने की जरूरत नही है। तब तुम स्वय अपने (धर्म परिवतन) के बारे में विचार करो।

निःसन्देह न्यू और ओल्ड टेस्टामेंट की नैतिक एव धार्मिक शिक्षायें किसी भी अन्य पवित्र पुस्तक से कहीं उत्तम है। इसमें बाइबिल की अद्वितीयता अन्तर्निहित है साधारणतया अन्य पवित्र पुस्तकें प्राचीन काल के लोगों की जो स्मरण रहा उसका सचय मात्र हैं।

तुमसे पूर्वगामियो ने पुल निर्माण कर दिया है निर्भयतापूर्वक आगे बढो। वह तुम्हारे कारण टूटेगा नही और इस पार तुम्हारे स्वागत के लिये अनेको मित्र हैं जिनमे तुम्हारा पुराना मित्र और साथी फ्रेडरिक मैक्समूलर से ज्यादा कोई प्रसन्न न होगा।

प्रोफेसर मैक्समूलर के उपरोक्त उद्धरणो से आपको अब स्पष्ट हो गया होगा कि पचास वर्ष तक वेदाध्ययन करने पर इन्हे वेदो मे क्या मिला और जो मिला उसे किस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट करके जनता के सामने रखने का निर्देश दे रहे हैं। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त तो मानवमात्र को एक परिवार के रूप मे देखने व रहने और व्यवहार करने का आदेश देते हैं बचपने के विचार लगते हैं। ऋग्वेद जो स्टुअर्ट पिगोट के शब्द मे Iliad और Odyssey दोनो के मिलकर बराबर है सामान्य ज्ञान से भरा श्लोकों हुआ जबकि सत्य यह है इस ईश्वरीय ज्ञान भंडार का रहस्यार्थ अटकलबाजी या कुत्सित मान्यताओ से नही निकलता इसके समझने के लिए आर्ष प्रणाली की आवश्यकता जिसे महर्षि दयानन्द ने पुनरुद्धार किया और जिसे वे अधिक मूल्यांकन कहते हैं। जबकि सचाई यह है कि उदात्त विचारो से पूर्ण वेद ज्ञान को हेय सिद्ध करें ताकि ईसाईयत के प्रचार का मार्ग खुला हो जावे, यह भावनायें स्पष्ट होती हैं उनके आखिरी उद्धारणो से। उनके सस्कृत और वेदाध्ययन का मूल उद्देश्य तो भारतीयों का धम परिवतन न करना था उन्होने समझ लिया कि वेद भारतीयो के प्राण है उनमे अश्रद्धा उत्पन्न करके ही हम उन्हे ईसाई बना सकते हैं और यही मार्ग उसने

निःसंदेह पाश्चात्य विद्वानो ने अनुसधान के नाम पर वेदो के साथ जबरदस्त अन्याय कर वेदों के लोक कल्याण के इच्छुक तत्त्व को अपने हित मे परिवर्तित कर गलत कार्य किया।

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रामसिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।
सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द . 163
सृष्टि सम्वत् : 1972949088

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष : 4 शुक्रवार 15 जुलाई, 1988
अक : 13 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

आषाढ़ शु 2 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

नाथद्वारा पदयात्रा ने एक सार्थक बहस को जन्म दिया

पुरी के शकराचार्य स्वामी निरजन देव तीर्थ के हरिजनों के मदिर प्रवेश निषेध सम्बन्धी वक्तव्य ने स्वामी अग्निवेश को नाथद्वारा के मन्दिर मे हरिजन प्रवेश कराने को लेकर उदयपुर से नाथद्वारा की पदयात्रा करने का अवसर उपलब्ध कराया।

पदयात्रा के कार्यक्रमानुसार स्वामी अग्निवेश 8 जुलाई की रात्रि को आर्य समाज, उदयपुर पहुचे। उनके साथ आचार्य गोविन्दसिंह के नेतृत्व मे गए अजमेर आर्य समाज के साठ सदस्यीय जत्थे के अतिरिक्त जयपुर के श्री व श्रीमती सत्यव्रत सामवेदी, सुभाष वेदालकार व राज आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटूसिंह तथा कई राष्ट्रीय दैनिकों के सवाददाता भी थे।

स्वामी अग्निवेश को नाथद्वारा पदयात्रा को लेकर सर्वप्रथम विरोध का सामना अपने ही सगठन के एक अग उदयपुर आर्य समाज के प्रधान जे एस मेहता द्वारा करना पड़ा। मेहता का तर्क था कि आर्य समाज मूर्ति पूजा को नही मानता, इसलिए श्रीनाथ मन्दिर मे हरिजनो को प्रवेश कराने की बात आर्यसमाज व वैदिक धर्म के सिद्धान्तो के विरुद्ध है। अपने उक्त तर्क को लेकर मेहता ने 9 जुलाई को दिन मे कई बार स्वामी अग्निवेश को नाथद्वारा पदयात्रा स्थगित करने हेतु कहा किन्तु उन्होने दृढतापूर्वक ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इससे पूर्व मेहता

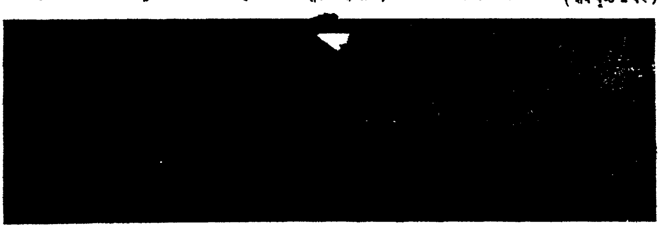
—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

8 जुलाई की शाम को ही 'पदयात्रा' के विरोध मे अपना वक्तव्य जारी कर चुके थे और आर एस एस समर्थक दैनिक राजस्थान पत्रिका ने इसे सुर्खियो मे छापा। 9 जुलाई की सुबह श्री छोटूसिंह के कहने पर उदयपुर आर्यसमाज की कार्यकारिणी की 'पदयात्रा के सम्बन्ध मे बैठक आयोजित की गई।

जे एस मेहता के अनुसार बैठक मे प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटूसिंह के निर्देश व आग्रह के बावजूद कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से नाथद्वारा पदयात्रा को समर्थन न देने का प्रस्ताव पारित किया। जबकि पदयात्रा मे सम्मिलित उदयपुर आर्य समाज के मन्त्री श्री हरिनारायण शर्मा प्रचारमन्त्री हजारीलाल जाटोलिया व कोषाध्यक्ष कार्यकारिणी के सर्वसम्मत निर्णय पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। वैसे बाद मे मेहता के विरोध के कारण का भी पता चला कि जनाब उदयपुर की विश्व हिन्दू परिषद के उपप्रधान हैं। उदयपुर आर्यसमाज (या फिर जे एस मेहता एन्ड कम्पनी) के पदयात्रा के विरोध को प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह दबा नही पाए इससे उनकी भी छवि एक अशक्त और नाम मात्र के प्रधान के रूप मे ही उभरी। बाद मे कई आर्य महानुभावो ने उनकी इस कमजोरी के लिए उन्हे जी भर के कोसा भी। आर्यसमाज की मण्डी, कोटा के मन्त्री श्री रामदेव शर्मा के शब्दो मे, 'प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह ही नही अपितु सार्वदेशिक के प्रधान स्वामी आनन्दबोध भी एक कमजोर और प्रभाव हीन प्रधान हैं।'

स्वामी अग्निवेश की नाथद्वारा पदयात्रा ने मानवाधिकारो के विषय मे चली बहस को जहा एक नई दिशा दी, वही इसने आर्यसमाज के सुधारवादी स्वरूप को जन साधारण मे व्यापक प्रचार दिया। भगवे वस्त्रों मे आर्य सन्यासियो के नेतृत्व मे पदयात्रा उन सुदूर ग्रामीण अचलो म आर्यसमाज का नाद गु जाते हुए निकली जहा आर्यसमाज का कोई प्रचारक सामान्य रूप मे कभी जाने की कल्पना भी नही कर सकता। भारत के ही नही अपितु दुनिया भर के समाचार माध्यमो ने पदयात्रा की समालोचना करके आर्यसमाज को व्यापक प्रचार दिया। आचार्य दत्तात्रय आर्य के शब्दो मे 'स्वामी अग्निवेश की पदयात्राओ से ही आज जन साधारण को यह महसूस होता है कि आर्य समाज अभी जीवित है। भले ही वे हरिजनो को श्रीनाथ के मन्दिर मे प्रवेश नही करा पाए,

(शेष पृष्ठ 2 पर)



स्वामी अग्निवेशजी अजमेर के आर्यसमाज-भवन में पदयात्रियो को सम्बोधित करते हुए।

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य प्रधान सपादक : राजसिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य फोन कार्या 21010

आर्यसमाज का पुन[illegible] और आर्यसमाज में घुसपैठिए

ज्यों-ज्यों आर्यसमाज की कलेवर वृद्धि हो रही है, त्यों-त्यों इसमें गति शैथिल्य बढ़ रहा है। इस गति शैथिल्य अथवा आन्तरिक टूटन का एक मुख्य कारण है कि आर्यसमाज के हरे भरे क्षेत्र में घुसपैठिए रूपी चालाक शृगाल घुस गए हैं जो निर्बाध रूप से इसकी हरियाली चर रहे हैं। ये घुसपैठिये दो प्रकार के हैं - (1) राजनैतिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति (2) धन लोलुप गृध्र। विभिन्न राजनैतिक दलों से सम्बद्ध व्यक्ति आर्यसमाजों के अधिकारी पदों पर येन केन प्रकारेण आसीन होकर यहां की धन व जन शक्ति का दलगत स्वार्थ सिद्धि में मनमाना उपभोग कर रहे हैं। एक प्रकार से आर्यसमाज का मंच उनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का अखाड़ा बना हुआ है। इन्हें आर्यसमाज के रचनात्मक कार्य, वेद प्रचार, वैदिक शोध, आर्य संस्थाओं की प्रगति, तथा आर्यों की कठिनाइयों का ध्यान नहीं है, न ही आर्यसमाज के भविष्य की इन्हें चिंता है। ये निष्ठावान् आर्यों को चुन-चुन कर समाज से बाहर निकालते हैं, उन्हें कुछ करने नहीं देते हैं, यदि वे आग्रह पूर्वक कुछ करते भी हैं, तो उन्हें लांछित करते हैं, तथा ऐसी परिस्थितयां उत्पन्न कर देते हैं कि उन्हें या तो अपने सत्प्रयासों को स्थगित कर देना पड़ता है या वे विवश हो कर समाज को ही छोड़ बैठते हैं। ऐसी दशा में गतिरोध न हो तो क्या हो?

वर्तमान में आर्यसमाज में पल्लवित गुटबन्दी की विष बेल भी इन्हीं राजनीतिक लुटेरों की देन है। क्या सुन्दर कर्म बना है कि आर्यसमाज को राजनीति के प्रलोभनों के कीचड़ से बचाने के लिए राजार्य सभा का गठन नहीं किया गया, जिस के द्वारा वैदिक राजनीति का पक्ष कुछ तो उजागर होता, पर विभिन्न राजनीतिक दलों की अनुगामिता की परिधि में ओजस्वी आर्यसमाज की अग्रगामी पद गति को कैद कर दिया गया है। अनेक उदाहरणों में आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न दलों के स्वार्थों की टकर में चूर-चूर कर दिया जाता है। परिणामतः आर्य समाज शक्ति संपन्न होते हुए भी वेद प्रचार के क्षेत्र में निष्प्राण बना है, अमित धन व परिश्रम व्यय करके भी प्रभावहीन है कुछ ऐसी स्थिति धन लोलुपों द्वारा भी उत्पन्न कर दी गई है। इन्होंने भी आर्यसमाज को अपनी लिप्सा की पूर्ति का अखाड़ा बना रखा है। कई बार ये अत्यन्त घृणित हथकण्डे अपनाने से भी नहीं हिचकते, जिससे आर्यसमाज की बदनामी होती है। इस प्रकार इन तथाकथित बनावटी आर्यों (घुसपैठियों) के पापकर्मों का कुफल आर्यसमाज को भोगना पड़ रहा है। आर्य समाज बदनाम भी होता है, और इसमें निष्क्रियता तथा गतिरोध भी होता है, जिसका परिणाम हो रहा है कि आर्यसमाज में आंतरिक शिथिलता, परस्पर उदासीनता व्याप्त हो रही है, और आर्यसमाज महर्षि के उद्देश्यों से दूर-दूर चला जा रहा है, और ये घुसपैठिये चैन की बंसी बजा रहे हैं आर्य-समाज की बर्बादी के दृश्य को देख कर सन्तोष की सांस ले रहे हैं।

आर्यसमाज की भावी प्रगति के लिए इन आदर्शों के हत्यारों से आर्यसमाज की शुद्धि करनी होगी, अवश्यमेव करनी होगी। पर यह हो कैसे? आर्यसमाज के कर्णधार दिशा निर्देशन करेंगे।

—डा. पुष्पावती आचार्या,
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी

पृष्ठ 1 का शेष

[illegible] कुधारवादी स्वरूप [illegible] में व्यापक प्रचार [illegible] हुआ ही है।

पदयात्रा में स्वामी जी का नाथद्वारा के क्षेत्र में [illegible] हिंसक रूप से जोरदार विरोध किया। [illegible] समर्थक [illegible] धिक सनातनी [illegible] सभी राजनैतिक [illegible] धर्मान्ध व [illegible] का खुलकर [illegible] लिया। और तो और [illegible] न्यायाधीश श्री गुलाबचन्द सोनी भी [illegible] पार्टी के [illegible] विरोध पर पदयात्रा में शरीक नहीं हुए (राजनीति अच्छे से अच्छे ईमानदार की [illegible] — जरूरी होता आइए!)। 9 जुलाई को जब उदयपुर में स्वामी अग्निवेश की सभा में पथराव व आगजनी करने वाले युवकों में [illegible] का एक नव निर्वाचित सरपंच भी था। कांग्रेस की [illegible] व [illegible] की स्थानीय इकाईयां भी [illegible] रूप से पदयात्रा को विफल करने में लगी हुई थी ही। भाजपा के पूर्व विधायक विजय [illegible] ही पदयात्रा को रुकवाने के लिए स्वामी अग्निवेश से मिले। कांग्रेस के पूर्व विधायक मनोहर कोठारी तो 'नाथद्वारा समर्थ समिति' के शिष्टमंडल के नेता के रूप में मिले और पदयात्रा का विरोध कर क्षेत्रीय जनता की धार्मिक व जातीय भावनाओं को भड़का कर पुनः अपनी राजनीतिक छवि को उभारने की कोशिश करते हुए प्रतीत हुए। नाथद्वारा क्षेत्र के वर्तमान प्रगतिशील? कांग्रेसी विधायक सी. पी. जोशी धार्मिक परम्पराओं के नाम पर हरिजनों के मन्दिर प्रवेश का विरोध कर रहे थे तो दूसरी ओर राजस्थान के मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर केन्द्रीय मंत्री डा. राजेन्द्र कुमारी वाजपेई के स्पष्ट निर्देश के बावजूद भी पदयात्रा को मंजिल तक न पहुंचने देने पर आमादा थे। उत्तर प्रदेश से अपनी दो युवा साथी सहयोगिनियों (कुमारी रेखा व कुमारी भावना) के साथ पदयात्रा में सम्मिलित 'उत्तराखंड समर्थ समिति' के महामंत्री श्री पी. सी. तिवारी के शब्दों में, "हरिजन मन्दिर प्रवेश के मसले पर देश की [illegible] विरोधी है।"

[illegible]

[illegible] वर्षीय (25) [illegible] पुष्टि [illegible] कि नाथद्वारा मंदिर में [illegible] जाता है। दोनों महिलाओं ने [illegible] स्वामी जी [illegible] पूरी बात, जिसमें [illegible] नहीं है, वे एक [illegible] युवक का कहना है कि वास्तव में नाथद्वारा में हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने नहीं दिया जाता। लेकिन यह हमारी धार्मिक परम्परा है। [illegible] समाजी कौन होते हैं? इसके साथ ही वह यह भी कहता है कि स्वामी अग्निवेश एक अच्छे और साहसी व्यक्ति हैं और वे यह पदयात्रा केवल बिना किसी राजनैतिक स्वार्थ के कर रहे हैं। इसलिए उसकी हार्दिक कामना है कि पदयात्रा के दौरान उन्हें कोई शारीरिक नुकसान न पहुंचे। बाद में इस युवक की उक्त हार्दिक कामना पूर्ण भी हुई और, नाथद्वारा से लगभग 13 कि. मी. पूर्व ही 12 जुलाई को क्षेत्रीय जनता में तनाव को दृष्टिगत रखते हुए पदयात्रा के काफिले को आगे बढ़ने से रोक दिया गया। बाद में पदयात्रा में सम्मिलित अग्निवेश के निकट सहयोगी सार्वदेशिक युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीर सिंह ने पदयात्रा के इस तरह के पटाक्षेप पर असन्तोष प्रकट किया व दलित सेना संघ के पदाधिकारी धर्मवीर ने तो इसे स्वामी अग्निवेश व राज्य सरकार की मिलीभगत ही करार दिया।

श्री धर्मवीर का कहना है कि स्वामी जी को पदयात्रा करने से पूर्व [illegible] और [illegible] के अतिरिक्त नाथद्वारा क्षेत्र के हरि[illegible] तथा [illegible] हरिजनों [illegible] था। वे [illegible] जी ने [illegible] है [illegible] जिसने के [illegible] पदयात्रा [illegible] हो [illegible] था [illegible]

[illegible]

—सम्पादकीय

सिद्धान्तों की रक्षा के खातिर आर्यसमाज का नेतृत्व स्पष्ट निर्णय ले।

अब समय आ गया है कि आर्य समाज के नेतृत्व वर्ग दिग्भ्रम एवं अस्पष्ट नीतियों का त्यागकर दो टूक निर्णय ले। "हां" में भी और 'न' में भी साथ-साथ नहीं चलेगा। सही समय पर सही दृष्टिकोण व्यक्त नहीं करने, सही कदम नहीं उठाने, समवेत आवाज नहीं उठने से स्वयं आर्यजनों में भी भ्रम उत्पन्न होता है और फिर स्थानीय इकाईयां अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग अलापती हैं।

अभी 'अग्निवेश' जी के द्वारा उद्घोषित अस्पृश्यता विरोधी नाथद्वारा मन्दिर प्रवेश पदयात्रा का ही ताजा उदाहरण लें। स्वामी जी की आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति अनन्य निष्ठा है। वे क्रांतिकारी, प्रगतिशील, वैदिक विचारधारा के पोषक हैं। उन्होंने एक कार्यक्रम की अपने स्तर पर घोषणा कर दी। अपने समर्थकों, प्रशंसकों, शुभचिंतकों और अनुयाईयों को कार्यक्रम भेज दिया और निकल पड़े पदयात्रा पर। हो सकता है वे आर्य समाज के एक वर्ग विशेष का अथवा गुट विशेष अथवा विचार धारा विशेष का प्रतिनिधित्व करते हों। उनका सर्वमान्य नेतृत्व न हो परन्तु वे अदम्य साहस और उत्साह तथा प्रभाव के कारण "एकला चलो रे" की नीति पर चलते हुए महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के नाम पर कार्यक्रम लेकर अपने मिशन हेतु कार्यक्षेत्र में कूद पड़ते हैं। कोई साथ आये या न आये, उससे अपेक्षित प्रचार प्रसार तो हो जाता है, हलचल भी थोड़ी मचती है, आर्यसमाज का नाम भी सुर्खियों में आ जाता है परन्तु सम्पूर्ण आर्यसमाज संगठन और नेतृत्व का सक्रिय सहयोग नहीं मिलने के कारण अपेक्षित सफलता नहीं मिलती है, कई बाधाओं एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसके बावजूद वांछित सफलता प्राप्त नहीं होने पर हताशा के भाव उभरते हैं। स्वयं संगठन में से विरोध के स्वर उभरते हैं जो कभी सिद्धान्तों का मुलम्मा चढ़ाये रहते हैं तो कभी कोरी आलोचनामात्र होती है।

जिस प्रकार हैदराबाद 1938-39 के सत्याग्रह तथा 1957 के हिन्दी रक्षा आन्दोलन अथवा 1967-68 में गौरक्षा आन्दोलन की भांति अगर आर्य समाज की सम्पूर्ण संगठनात्मक शक्ति तहेदिल से तन, मन, धन से दिवराला सतीप्रथा विरोधी पदयात्रा एवं नाथद्वारा की छुआछूत उन्मूलना एवं मन्दिर प्रवेश पदयात्रा में लग जाती तो जहां सरकार को मजबूर होकर घुटने टेकने पड़ते तथा आर्य समाज की विरोधी शक्तियों को भी उसकी शक्ति एवं तेजस्विता के आगे झुकना पड़ता, नत मस्तक होना पड़ता। जनतापर ज्यादाधाक जमती, सिद्धान्त प्रिय लोग भी हिम्मतकर के आगे आते। उदयपुर नगर की सभा से लेकर नाथद्वारा के पास नेगड़िया तक जिस प्रकार का अशोभनीय विरोध एवं हुल्लड़ बाजी तथा गुण्डागर्दी आ... विरोधियों द्वारा की गई ... नाथद्वारा मावली, कांकरोली, राजसमन्द, उदयपुर बन्द के आह्वान हुए यह सब आर्य समाज की आंख खोलनेके लिए पर्याप्त है। अकेले अग्निवेश जी और उनके साथ जाने वाले 100-200 पदयात्री अपनी जान की बिना चिन्ता किये कड़े पुलिस पहरे में सबकुछ कष्ट और विरोध सहन करते रहे तथा लाखों ... आर्यजन नेतागण सभा सम्मेलन और समागमों में गला फाड़-फाड़ कर भाषण देते तथा सहानुभूति के प्रस्ताव पारित करदे, इससे कुछ होना जाना नहीं है। इसस तो आर्यसमाज की फूट जग जाहिर होती है। आर्यसमाज जैसे तपस्वी एवं बलशाली संगठन की अकर्मण्यता और निकम्मापन ... के सामने आता है तथा ... भोगी लोगों का बौद्धिक दिवालियापन और खोखलापन ही दृष्टिगत होता है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

(पृष्ठ 2 का शेष)

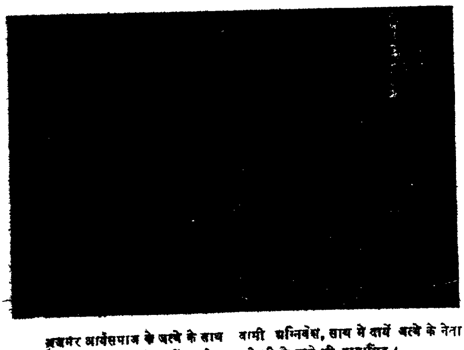
नाथद्वारा पदयात्रा

कितने हरिजनों ने भाग लिया? महंत प्रभुदास व उनके एक दो सहयोगियों के अतिरिक्त और कौन था? 'श्री धर्मवीर की राय में स्वामी जी को जेल भरो आन्दोलन चलाना चाहिए था।

स्वामी अग्निवेश के पुराने सहयोगी श्री जगवीरसिंह कहते हैं कि, "लगता है कि अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु स्वामी जी वैदिक सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। बाबा साहब अम्बेडकर वैदिक धर्म तथा कथित हिन्दू धर्म के कट्टर विरोधियों में से एक थे। उन्होंने वेद रामायण आदि शास्त्रों के अतिरिक्त राम व कृष्ण आदि महापुरुषों की कटु आलोचना की है। उन्होंने हजारों हिन्दुओं को बौद्ध मत में दीक्षित किया है। मैं मानता हूं कि उक्त सभी तथ्यों का दृष्टिगत रखते हुए अम्बेडकर की जय बोलना सरासर गलत है।"

श्री जगवीर सिंह हमारे इस कथन पर सहमति व्यक्त करते है कि स्वामी जी कुछ ऐसे लोगों को अपने आन्दोलन का अगुवा बना देते है कि जो सहयोग तो नाममात्र का ही देते हैं परन्तु उसकी कीमत पर अपने क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों की रोटी सेकना चाहते हैं। दिल्ली के धर्मेंद्र कहते हैं कि, 'शंकराचार्य का अपने बयान से मुकर जाना हमारी सबसे बड़ी जीत है।'

अलवर जिले से आए एक आर्य युवक का कहना था, "लगता है कि अग्निवेश अभी तक आर्यसमाजियों की नजरों में विश्वसनीय नहीं बन पाए हैं। अन्यथा पदयात्रा के आयोजन में धन व जन की इतनी कमी नहीं रहती। और जब देश के आर्यसमाजी भारी संख्या में पदयात्रा में आतेतो सरकार की उन्हें रोकने की हिम्मत नहीं होती।' अन्त में आचार्य गोविन्दसिंह के शब्दों में, "स्वामी अग्निवेश की नाथद्वारा पदयात्रा ने छुआ छूत की भावना को समाप्त करने के विषय में एक सार्थक बहस को जन्म दिया है। कालांतर में यह बहस हरिजनों को उनका समानता का अधिकार दिलाकर ही रहेगी।'



अजमेर आर्यसमाज के जत्थे के साथ स्वामी अग्निवेश, साथ में दायें जत्थे के नेता आचार्य गोविन्द सिंह और स्वामी जी के बायें श्री रामसिंह।

राजिस्ट्रार महोदय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ०प्र०)



बाये से दाये पदयात्रियो को सम्बोधित करते हुए आचार्य दत्तात्रेय आर्य, श्री रासासिह आचार्य, गोविन्दसिह। और स्वामी अग्निवेश का स्वागत करते हुए आचार्य दत्तात्रेय आर्य।

सिद्धान्तों की रक्षा

(शेष पृष्ठ तीन का)

चाहे पजाब मे आतकवाद की समस्या के उन्मूलन एव मुकाबला करने की बात हो, चाहे हरिजनों एव दलितो के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार करने की और छुआछूत को मिटाकर समानता का व्यवहार करने की बात हो, बालविवाह, सतीप्रथा, दहेजप्रथा शराबखोरी को नेस्तनाबूत करने की बात हो अथवा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, राष्ट्र की एकता और अखण्डता का सवाल हो या फिर भारतीय सस्कृति की रक्षा एव सुरक्षा तथा धार्मिकता का प्रश्न हो धर्मान्तरण रोककर विधर्मी बने लोगो को पुन स्वधर्म मे दीक्षित करने की समस्याओ वेद और एकेश्वरवाद तथा महर्षि दयानन्द के मानववाद के प्रचार प्रसार की बात हो, आर्य समाज के नेतृत्व की सामूहिक सगठनात्मक रूप से दो टूक निर्णय लेने होवे। या तो हिन्दू एकता एकता के नाम पर हम अपनी तेजस्विता, को समाप्त कर अकाट्य सिद्धान्तो को त्यागकर समझौतावादि रवैया अपना ले और 'कछुवा धर्म" अपनाकर सच्चाई से आखे मू दकर यथास्थितिवादी हो जाये अथवा फिर अपने सिद्धान्तो को श्रेष्ठ मानकर आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के मिशन के सच्चे सिपाही बनकर सत्य न्याय और तर्क तथा विवेक का सहारा लेकर अपनी प्रचण्ड शक्ति का समीक्षा को परिचय दें, अन्धविश्वासो एव सामाजिक कुरीतियो को नेस्तनाबूत करने को कटिबद्ध हो। जातिवाद के बन्धनो को तोडकर बुराईयो पर करारा प्रहार कर, "सत्यमेव जयते" का अटल विश्वास लेकर अपनी प्रसुप्त शक्ति को जाग्रत कर सर पर कफन बाधकर आगे बढने का साहस करे तो लोग अपने आप हमारे अनुयायी होगे अन्यथा हम भी अजायबघर की वस्तु अथवा इतिहास की घटना होकर ही रह जायेगा। काश हमारी, हमारे नेताओ की आखे खुल सकें।

—रासासिह

अग्निवेश तुम्हारी हिम्मत की बलिहारी

आर्य जाति की उदीयमान प्रतिभा तथा तेजस्वी एव क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की हिम्मत की बलिहारी है। एक आर्य जनोचित उनका साहस और पुरुषार्थ प्रशसनीय है। कोई साथ आये तो उन्हे साथ लेकर साथ कही प्रति दों उनके बिना भी और विरोध करें तो उसका मुकाबला करते हुए सामाजिक बुराईयो के उन्मूलन हेतु भले ही वह दिवराला का रूपकवर सतीकाण्ड हो अथवा नाथद्वारा के श्री नाथ मन्दिर मे हरिजनो के प्रवेश की समस्याओ अथवा शकराचार्य की की शास्त्रार्थ की चुनौती हो वे अकेले ही यह मानकर कि "यह मत कहो कि जन मे कर सकना क्या अकेला लाखो मे होता है सूरमा अकेला की नीति को अपनाकर आगे बढने को तत्पर हो जाते हैं। ज्यो ज्यो कार के आगे बढता है रास्ते के उतममयी आवंजन भी स्मित हो जाते हैं। पत्थरो, कालेझण्डो, विरोध प्रदर्शनो की तनिक भी चिन्ता न कर अपने प्राणो को जोखिम मे डालकर शेरदिल स्वामी जी निरन्तर सदियो के मूलचन्दन हेतु प्रयासरत है उनकी यह हिम्मत काबिले तारीफ है। यदि वे पूर्व तैयारी के साथ समूचे आर्य समाज के सगठन को विश्वास मे लेकर आगे बढे तो उनका मिशन और भी प्रभावोत्पादक तथा प्रबल बनेगा। महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के प्रति उनके दिल मे एकदर्द एक तडप, एक वेदना एक आग है जिसके। द्वारा वे लुप्त प्राय आर्यसमाज के एक जीवित जाग्रत औ क्रान्तिकारी सगठन के रूप मे देखना चाहते हैं।

ईश्वर उन्हें शक्ति प्रदान करें। सफलता प्रदान करें।

—रासासिह

निर्वाचन

आर्यसमाज, टकारा

सरक्षक- डा रतन जी भाम जी

प्रधान- डा अमृत लाल मेघाणी

मन्त्री- श्री हसमुखराय धरम जी भाई

कोषाध्यक्ष भगवान जी देव जी भीमाणी

आर्यसमाज, उदयपुर

प्रधान- श्री जे एस. मेहता

मन्त्री- श्री हरनारायण शर्मा

मातृ मन्दिर में प्रवेश प्रारम्भ

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल नई बस्ती रामापुरा वाराणसी मे ग्रीष्मावकाश के पश्चात् सब कक्षाओं मे यथावत अध्ययन आरम्भ हो गया है। नये भवन का निर्माण हो चुका है। आर्ष पाठविधि से वेद अष्टाध्यायी, हिन्दी, गणित, भूगोल, सगीत आदि का उच्च स्तरीय शिक्षण हो रहा है। इस वर्ष से समाज सेवियो, उपदेशको तथा पजाब के पीडित परिवारो की मेधाविनी पुत्रियो के लिए नि शुल्क भोजन आवास तथा शिक्षण की सुविधाए की गई हैं। वैदिक शोध (पी एच डी) की भी सुविधाए है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

आचार्य

उप समिति के सुझाव

महोदय,

वर्तमान आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रचारक नही रहा। ऐसे आर्यसमाज से सच्चे आर्य अलग हो गए है अनार्य लोग प्रधान व मत्री तक बन गए है कहीं-कहीं आशा की किरण दिखती है, बाकी सब जगह अन्धेरा है। मैंने ऐसी समाजें देखी है, जहा के प्रधान व मत्री मूर्ति पूजक है, केवल सम्पत्ति के कारण आर्य समाज से जुडे हुए हैं। ऐसो को दूर करना किसके हाथ मे है? आपने (आ दत्तात्रेय आर्य ने) जो योजना सार्वदेशिक सभा के पास रखी है, वह ठीक लेकिन उसका पालन कौन करायेगा? 'आर्य पुनर्गठन' का इन्तजार रहता हैं, कुछ समय के लिए शान्ति मिलती है।

—हरमुख राय, मन्त्री, आर्य समाज (टकारा (गुजरात)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्यप्रिंटर्स स मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिह ने आर्यसमाज भवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत 1972949088

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र
"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म।।"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
मकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एव भविष्य मे पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 शनिवार 30 जुलाई 1988
अक 14 प स -43338/84 II

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु।।

श्रावण कृ 2 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

गुजरात में पुलिस हड़ताल

—वीरेन्द्र कुमार आर्य

गुजरात के पुलिसकर्मी अपनी मागो को लेकर पिछले कई दिनो से हड़ताल पर हैं। यद्यपि राज्य के मुख्यमन्त्री फरमाते हैं कि राज्य के केवल कुछ हिस्सो मे ही पुलिसवालों ने हड़ताल की है। बाकी जगह कामकाज ढग से चल रहा है। लेकिन उनके उक्त कथन के खोखलेपन का आप इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि इन पक्तियो के लिखे जाने (बुधवार 27 जुलाई) तक लगभग 71 थाना के पुलिसकर्मी हड़ताल पर जा चुके हैं।

पुलिसकर्मियो की हड़ताल की व्यापकता को इस आधार पर भी मापा जा सकता है कि हड़ताल के कारण उत्पन्न कानून व्यवस्था की समस्या से निपटने के लिए राज्य मे भारी सख्या म केन्द्रीय रिजर्व पुलिस एव सीमा सुरक्षा बल को मिलाकर लगभग 50 कम्पनी तैनात की गई है। उपद्रवियो पर काबू पाने के लिए सेना द्वारा फ्लैग मार्च भी कराया जा रहा है।

पुलिस कर्मियो की इस हड़ताल से यह प्रश्न भी उठ खड़ा है कि क्या पुलिस जैसी प्रशासनिक इकाई जिस पर कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी है स्वय भी ऐसा व्यवहार कर सकती है कि जिसके चलते सारी कानून व्यवस्था ही चौपट हो जाए। गुजरात के हड़ताली पुलिस कर्मी जो आचरण कर रहे है उसे कदापि उचित नही कहा जा सकता। कानून की पालना कराने वाले ही ट्रेड यूनियनो के सदस्यो की तरह जब तोड़ फोड़ जैसे असवैधानिक कृत्यो मे लिप्त हो जाए तो इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।

गुजरात राज्य सरकार भी पुलिस कर्मियो के प्रति उपेक्षा बरतने के आरोप से बरी नही हो सकती। यह एक सुविदित तथ्य है कि राज्य पुलिस मे पिछले काफी दिनो से असतोष की भावना अन्दर ही अन्दर बलवती हो रही थी। यदि सरकार तनिक भी विवेक से काम ले लेती तो वह उस असतोष के लावे का फूटने से पूर्व ही शमन कर सकती थी। पुलिस कर्मियो की उचित मागो पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके उन्हे स्वीकार किया जा सकता था। लेकिन सरकार की तो आज ये मानसिकता बन चुकी है कि वह बिनाकिसी आन्दोलन के कोई भी सुविधा देन के विषय मे सोच ही नही सकती। और इसलिए कई बार नाजायज मागो को लेकर भी विभिन्न विभागो के कर्मचारी सगठन सड़को पर आ जाते है।

गुजरात के पुलिस कर्मियो की हड़ताल से केन्द्र और सभी राज्य सरकारो को सबक लेना चाहिए।

धर्म के नाम पर बहा खून

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

अभी तक मुर्शिदाबाद के साम्प्रदायिक दगे मे मरे व्यक्तियो के परिवारो के आसू भी सूख नही पाए थे कि तीन-चार जुलाई को उत्तरप्रदेश के ऐतिहासिक नगर इलाहाबाद मे भी दगो की आग भड़क गई।

इलाहाबाद मे दगा एक मस्जिद के अवैध निर्माण को लेकर हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार एक स्थानीय कब्रिस्तान मे अदालत के स्थगनादेश के बावजूद कुछ मजहबी जुनूनी लोग मस्जिद का अवैध निर्माण कर रहे थे, उस पर उन्हे प्रशासन ने रोकने की कोशिश तो वे उत्तेजित हो उठे और इसी से दगा भड़क उठा।

क्षेत्रीय मुसलमानो की शिकायत है कि सरकार हिन्दुओ को तो सार्वजनिक स्थलों पर मदिर बनाने से नही रोकते है दूसरी ओर वह अल्पसख्यको का अपने किसी धार्मिक स्थान का निर्माण नहीकरनेदेनीजबकि हिन्दुओ का कथन है कि सरकार अल्पसख्यको के प्रति ही तुष्टीकरण का रवैया अपनाती है।

लेकिन बुद्धिजीवियो का कथन है कि क्या सरकार इन दोनोही वर्गों के लोगो से एक समान व्यवहार कर दोनो की शिकायत को दूर नही कर सकती।

दरअसल ये भी एक वास्तविकता कि है गत वर्षों से केन्द्रीय सरकार ने जिस तरह मुस्लिम कट्टरपथियो के सामने घुटने टेके हैं, उससे एक ओर जहा उनमुस्लिम नेताओ के हौंसले बुलद हुए हैं वही दूसरी ओर मुस्लिम कट्टरवाद की प्रतिक्रिया मे हिन्दू कट्टरवाद की उत्पत्ति भी हुई है। इसे राजीव सरकार की उपलब्धि ही कहा जाएगा कि वह आरिफ मोहम्मद जैसे प्रगतिशील व्यक्ति का तो तिरस्कृत करती है और असारा जैसे रूढीवादी और कट्टरपथी व्यक्ति को पुरस्कृत करती है। इसी सब का ये परिणाम है कि शहाबुद्दीन अयोध्या मार्च की घोषणा खुले आम कर रहे हैं तो विश्व हिन्दू परिषद इसके जवाबी मार्च का एलान कर रही है।

क्या अपने को धर्मनिरपेक्ष कहने वाली सरकार के पास इस धार्मिक उग्रवाद को समाप्त करने का कोई कारगर उपाय नही है?

आज वि प्र सिंह को भावी प्रधानमंत्री माना जा रहा है। इसलिए हम उनसे कहना चाहेगे कि जिन सिद्धाता का नाम लेकर वे प्रधानमत्री की कुर्सी तक पहुचना चाहते है, उन्हे व्यवहारिक जीवन मे भी पूर्ण रूप से अपनाए। उत्तर प्रदेश के अपने मुख्य मत्रित्वकाल में भी उन्होंने उर्दू को राज्य की उपभाषा बनाने की घोषणा करके मुस्लिम तुष्टीकरण बात की और अब फिर उन्होने इलाहाबाद के लोकसभा उपचुनाव मे अपने वरिष्ठ सहयोगी श्री आरिफ मोहम्मद को इसलिए दूर रखा कि कहीं उनके आने से कट्टरपथी मुसलमान मतदाता नाराज न हो जाए।

निश्चित रूप से श्री सिंह ने दगाग्रस्त क्षेत्र मे बिना किसी सुरक्षा प्रहरी के दौरा कर साहस का परि-

(शेष पृष्ठ 2 पर)

निदेशक : दत्तात्रेय आर्य   प्रधान सपादक : रामसिंह   सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य   ☎ कार्या 21010

सपादकीय—

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे

आज दुर्भाग्यवश आर्यसमाज मे यह स्थिति पैदा हो गई है कि लीडरो की धूम है—फोलोवर कोई नही अर्थात् हर आर्यसमाज का थोडा सा भी ज्ञान रखने वाला कार्यकर्त्ता अपने आपको नेता समझने लगता है। वह तर्क जाल मे फसकर सगठन के स्थान पर विघटन के बीज बोने लग जाता है। प्रेमभाव के स्थान पर वैरभाव के सस्कारो को पल्लवित करता है। केवल सुनी सुनाई बातो के आधार पर बिना तथ्यो की गहराई मे पहुचे अथवा दूसरे पक्ष की बात जाने ही वह शख की तरह बजने लग जाता है। नाम दयानन्द और आर्य समाज का लेगा, भगतसिंह और चन्द्रशेखर की बात भी कहेगा परन्तु उसका कार्य उसके सर्वथा विपरीत होगा।

समाज के सत्सगो मे उसकी नियमित रूप से उपस्थिति का भी अभाव रहता है। सत्सगो मे हो रहे कार्यक्रमो मे उसका जी नहीं लगता। वह अपने आपको सत्पुरुषो, विद्वानो के ससर्ग मे बैठकर अपने को सस्कारित करने का, आत्म सस्कार का शिष्ट, और सदाचारी बनने का प्रयत्न नही करता है। वह नया जोश और उत्साह दिखाकर, भावुकता का शिकार होकर एकदम अधिकारियो के विरुद्ध निष्क्रियता अथवा शिथिलता का आरोप लगाकर वहा व्याप्त गुटबन्दी या विरोहबन्दी की जकडन मे फंस जाता है, एकदम उसकी महत्वाकाक्षा जाग्रत हो जाती है और वह अधिकारी बनने की लालसा से छटपटाता रहता है। यदि अवसर नही दिया अथवा लिया नही गया तब वह आलोचना करना शुरू कर देना है। जहा पहने उसको सब ही गुण दिखते थे वहा अब उसे दोष ही दिखते हैं। वह यह भूल जाता है कि छिद्रान्वेशण एक भयकर दुर्गुण है तथा कोरी आलोचना, काट छाट भी आग की चिन्गारी है इससे बचना बहुत आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश का उपकार और निर्माण करने तथा अपने 'मिशन का अपने निधन के बाद भी प्रचार प्रसार करने हेतु आर्यसमाज नामक सगठन की स्थापना की थी, जिसके सिद्धात और नियम सार्वभौमिक, सार्वकालिक एव सनातन तथा अकाट्य है। महर्षि दयानन्दजी ने समाज के नियमो मे जहा 'सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने'' का उल्लेख किया है वही ''सबसे धर्मानुसार प्रीतिपूर्वक यथायोग्य व्यवहार करने की बात भी कही गई है। सामाजिक प्रेम, सद्भावना को बढाने, एकता पैदा तथा निर्लोभता एव नि स्वार्थता बनाये रखने के लिये महर्षि ने "प्रत्येक को 'अपनी ही उन्नति से सतुष्ट नही रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये।' ''सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन करने मे सब परतन्त्र हैं तथा प्रत्येक हितकारी नियम पालन करने मे सब स्वतन्त्र हैं।'' ऐसा कहकर उन्होने सब प्रकार के टकराव, अवरोध, सघर्ष प्रतिद्वन्दिता, ईर्ष्या, द्वेष आदि सब को मिटाने का प्रयत्न किया है।

अत आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने नेताओं, साधु सन्यासियो, पदाधिकारियो, विद्वानों का मान सम्मान करें। उनके प्रति श्रद्धा रखे। अपनी महत्वाकांक्षाओ को सीमित रखें। पहले योग्य बनें, सेवा कार्य मे बढचढ कर भाग लें। निस्वार्थभाव से कार्य करें। पदलोलुपता को कभी पास नहीं फटकने दें। यदि हम सही और सच्चे आर्य हैं, सेवाभावी हैं, कर्तव्य निष्ठ हैं तो आगे आप लोग हमारी योग्यता से प्रभावित होंगे, हमारा मार्ग प्रशस्त होगा और हम जो चाहेंगे वही बन सकेंगे। 'जहा चाह वहां राह'। परन्तु भूलकर भी घर की लडाई, विवाद, दलबन्दी, गुटपरस्ती और फूट को बाहर उजागर न करें। मन की व्यथा मन मे रखें। घर मे बैठें तब बात करें।

खेद है कि आज आर्यसमाज के सगठनात्मक पत्रो मे अथवा पत्रको में एक दूसरे को छीछालेदार और कीचड उछालने की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। जो सगठन के लिये अत्यन्त घातक एव हानिप्रद है।

हम सत्सग के अन्त मे सगठन सूक्त का पाठ करते हैं तथा अन्त में शान्ति पाठ भी बोलते हैं। यदि हम स्वय ही शान्ति का परिचय नही देंगे, मानसिक एव आत्मिक शान्ति का परिचय नही देंगे तो फिर हम दूसरो को क्या आदर्श दिखलायेगे।

आओ हम दयानन्द की फौज के सेनापति और नेता बनने के स्थान पर सैनिक और अनुयायी बनें और प्रेम से बोलें **"दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे"**

—रासासिंह

वेदामृत—

संकल्प समारोह

अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा च विशन्त्युशतीरुशन्तम्॥१२॥

(सामवेद, पावमान पर्व)

(मनीषा) सकल्प (सोमम् अच्छ) वीर-रस की ओ (अपाम्) पानी की (तर्तुराणा) उछल रही (उर्मय इव इत) तरगो की तरह (प्र-ईरते) बढ रहे हैं। (उशती) चाव-भरी (उशन्तम्) उस चाव के माते को (नमस्यन्ती) नमस्कार करती हुई (उप च यन्ति) उसके निकट जाती हैं। (सम्विशन्ति आ विशन्ति च) उसमे समाविष्ट हो-हो कर आवेश ला रही हैं।

क्रान्ति के दिनो मे वीर-रस ही प्रधान रस होता है शेष रस उसमे समा जाते हैं। जनता की मनोवृत्तियां सब वीरता के रग मे रग जाती हैं। हृदय-मण्डप मे इन वृत्तियो का उस मधुर रस से एक सुन्दर गठजोडा-सा रहता है। उस अलौकिक यज्ञ स्थली मे हो रहे वर सत्कार का दिव्य दृश्य देखने की वस्तु है। किस प्रकार से उस सघर्षकाल के, जन्मोत्सव, वेदारंभ समावर्तन, विवाह उस एक रस के नशे मे सिर से पैर तक सराबोर होते हैं। यह देखने ही की वस्तु है। सारा देश वीरता के मद का मस्ताना है। सारी जाति के हृदयो मे वीर रस का आवेश सा उद्रेक-सा हो रहा है। वीर रस अगी है और शेष सब रस अग। रसो की एक बाढ सी आई हुई है। पति पत्नी का गुरु शिष्य का, पिता पुत्र का—ये सब सम्बन्ध धर्म-युद्ध को ही लक्ष्य मे रख कर हो रहे हैं। कैसा पुण्य-यज्ञ है! एक विश्व व्यापी रस-पुण्य वीरोत्सव है। बच्चा पैदा हुआ, उसे वीर रस की लोरिया दे रहे हैं। वह गुरुकुल मे प्रविष्ट हुआ, उसे देश सेवा के आशीर्वाद दिये जाते हैं। शिक्षा समाप्त कर वह गुरुकुल से लौटने लगा, उसका स्वागत देश तथा जाति की रक्षा के लिए किया जाता है। विवाह के मण्डप मे वीर कन्या एक देश के परवाने को अपना हृदय पेश कर कह रही है--इसकी लाज रखिए सब ओर सोम ही सोम बरस रहा है। वीर-रस की बाढ-सी आई हुई है।

खेल रही अलबेली फाग।
लाखो रसों का एक वीर-रस,
उठा हृदय मे जाग॥
सौंप दिया सर्वस्व वीर को,
फिर क्या गृह-अनुराग।
मा आया है? पति है? सुत है?
कहती है "रण में भाग।
भाग लौट वेदि से गुरु की?
चलो वीर! बन आग।"
नाच रहा नेत्रो की अणि पर
मा का मन बे-लाग।
भेंट-भेंट क्षण-क्षण बलि नूतन,
कहती "अहो सुहाग!"
खेल रही अलबेली फाग॥

—चमूपति (सोम सरोवर मे)

(शेष पृष्ठ 1 का)

धर्म के नाम

चय किया है, और आज उनकी लोकप्रियता भी इतनी है कि वे बिना सुरक्षा के ऐसे सवेदनशील क्षेत्रो में भी जा सकते हैं, परन्तु मात्र लोकप्रियता को बनाए रखने के लिए उन्हें कट्टर पथियों का विरोध करने से नहीं बचना चाहिये, भले ही वे लोग किसी भी धर्म से सम्बन्ध क्यो न रखते हों।

यज्ञ और वृष्टि के सम्बन्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

1 (क) 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' (28) मे यज्ञ सम्बन्धी अपना मन्तव्य व्यक्त करते हुए ऋषि लिखते हैं— अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है, इसको उत्तम मानता हू'— वृष्टि का होना नही, वृष्टि की पवित्रता-मात्र।

(ख) एक विराट यज्ञ भी है, जिसका उल्लेख यजुर्वेद के 31 वें अध्याय में है—

यस्मात् यज्ञात सर्वहुतऽऋच सामानि जज्ञिरे (7) तस्मादश्वाअजायन्त (8)

यत्पुरुषेण हविषा देव यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्मऽइध्म शरद् हवि ॥ (4)

यज्ञाद्भवति पर्जन्य —इसी विराट् यज्ञ के सम्मबन्ध मे कहा गया है—न कि हमारे हव्यद्रव्य यज्ञ के सम्बन्ध मे।

(ग) शतपथ ब्राह्मण का वचन है - यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म (1-7-15) महर्षि दयानन्द के अनुसार प्रत्येक श्रेष्ठतम कर्म (सर्वहितकारि निस्वार्थ भाव मे किया गया कर्म यज्ञ है किन्तु अन्धविश्वास प्रेरक 'यज्ञ' श्रेष्ठ कर्म या वास्तविक यज्ञ नही है।

(घ) यजुर्वेद, अध्याय 18 के मन्त्रो मे आए शब्द 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' के विशिष्टार्थ ऋषि के भाष्य मे देखिए।

2 हव्य यज्ञ करने मात्र से कोई कोई इष्ट सिद्ध नही होती (वायु की पवित्रता के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता)। गर्भाधान सस्कार और विवाह सस्कार करने मात्र से सन्तानोत्पत्ति नही होती, जब तक मैथुन न किया जाय। पुत्रेष्टि यज्ञ करने मात्र से पुत्र नही उत्पन्न होता जब तक नियोग न किया जाय। सस्कार विधि में नवसस्येष्टि और शस्येष्टि का उल्लेख है अच्छी फसल होने पर शस्येष्टि की जाती है (अच्छी फसल तैयार करने के लिए नही)।

हैदराबाद के श्री वेदभूषण मेरे स्नेह-भाजन हैं। मैं दिल्ली मे था। एक दिन प्रात काल हैदराबाद से उनका फोन मेरे पास आया। उन्होने कहा—'हैदराबाद मे मैं वृष्टि-यज्ञ करवा रहा हू। सायकालीन कथा के लिए अवश्य आइए—'मैंने विनम्रता से क्षमायाचना की'— मेरी वृष्टि-यज्ञ में आस्था नहीं है, अत जब आप बुलायें कथा के लिए मैं आ सकता हू, पर वृष्टि-यज्ञ के अवसर पर नही।'

4 हैदराबाद (आन्ध्र) के युवको ने 20,21 और 22 मई को पालमूर नगर मे महबूब नगर (जो हैदराबाद शहर से 100 कि मी की दूरी पर है मेरी अध्यक्षता मे टाउन हाल मे एक विचार गोष्ठी रक्खी थी, जिसका विषय ही यज्ञ और विज्ञान था। विज्ञान की दृष्टि मे यज्ञ' पर तीन दिन तक निष्पक्ष विचार विनिमय हुआ गोष्ठी के कुछ निष्कर्ष निम्न थे—

उचित हव्य-सामग्री के प्रयोग से वायु का प्रदूषण दूर हो सकता है। अग्निहोत्र दैनिक कृत्यों मे आवश्यक है पर अग्निहोत्र करने से पूर्व नालियां शौचालय आदि शुद्ध होने चाहिए। खुली हवा मे सूर्य की रश्मियो के आगमन पर हरे-भरे पौधो के सामीप्य मे अग्निहोत्र किए जावे।

उस वायु के सपर्क मे जो यात्री या वृष्टि आयेंगे केवल वही पवित्र हो सकेंगे। नदियो के प्रदूषणो को दूर करने के लिए रासायनिक विधियो से प्रदूषणो की परीक्षायें करनी होगी, और तदनुकुल उपायो का आश्रय लेना होगा। केवल दैनिक अग्निहोत्र से जल के प्रदूषण दूर नही हो सकते। शौचालय की हवा के प्रदूषण को दूर करने के लिये भी समस्त उपयोगी साधनो का व्यवहार करना पड़ेगा।

5 वैदिक देवयज्ञ के कई 'गौण' उपयोग भी है—

(क) वेद मन्त्रो की रक्षा।

(ख) प्राचीन समय मे मनुष्य ने जनता के हित के लिये जो अविष्कार किये थे उनकी स्मृति।

(ग) मूर्ति पूजा से बचा रहना (अग्निहोत्र के आधार पर 16 सस्कारो का प्रचलन)।

6 हव्य-यज्ञ से वृष्टि कराने का किसी प्राचीन साहित्य मे कही विशिष्ट विधान नही है। अगर ऐसा अभीष्ट होता तो शाकल्य विशेष और पद्धति विशेष का उल्लेख अवश्य होता।

7 यज्ञ का धूम 100-200 फुट से ऊपर नही जाता। हमारे बादल धरती से लगभग 1 मील दूर होते हैं।

8 40-50 वर्ष (पूर्व वैज्ञानिको ने सिल्वर आयोडाईड के चूर्ण का बादलो मे हवाई जहाज द्वारा) वपन करके वर्षा कराने के कुछ प्रयोग किये थे। पर इन प्रयोग के असदिग्ध परिणाम नही निकले - कोई बादल कहा पर कब बरसेगा इसको निश्चित करने का कोई उपाय नही था। अभी मैंने समाचार-पत्रो मे गुजरात सरकार के वृष्टि प्रयास की चर्चा पढी। उन्होने भी बादलो के बीच मे सिलवर-लवण और साधारण नमक का चूर्ण वपन करने का प्रयास किया—वे अभीष्ट वर्षा कर न पाये।

9 मथुरा नगरी मे वैज्ञानिको की सहायता उपलब्ध करके वृष्टि विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष श्री हरप्रसाद जी ने कुछ प्रयोग किये (मई 24 1988) उन्होंने डिपार्टमेंट आव् साइन्स एण्ड टेकनोलोजी (डी एस टी) के व्यक्तियो को आमन्त्रित किया। वैज्ञानिको ने रिपोर्ट दी है, उससे स्पष्ट होता है कि अग्निहोत्र (या यज्ञ) के धूम से कोई बादल नही बन पाये।

मैं इन प्रयोगो की विस्तृत आलोचना नही करू गा। मे केवल इतना कहू गा, कि आर्यसमाज के कतिपय आचार्यों और पुरोहितो का यह अन्ध-विश्वास मात्र है, कि यज्ञ से वर्षा कराई जा सकती है। यह अन्धविश्वास 20-25 वर्षों मे अधिक फैला है। शायद निकट भविष्य मे हमारे कोई कर्मकाण्डी विद्वान् यज्ञ से अतिवृष्टि और नदियो की बाढ आदि को आदि को रुकवाने की भी घोषणा करने लगे।

ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण को हमे समझना चाहिये। कर्म-प्रेरक यज्ञ और सत्यविद्याओ के पोषण मे वेद का महत्त्व बढता है। अन्धविश्वासो के पोषण के लिए यज्ञ और वेद की ऋचाओ का प्रयोग यज्ञ और वेद की प्रतिष्ठा को घटायेगा ही।

उत्सव

आर्य समाज अनारकली" मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनाक 18, 19, 20 नवम्बर 1988 (शुक्रवार, शनिवार रविवार) को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

सोमवार 14 नवम्बर 1988 से प्रतिदिन 19 नवम्बर तक रात्रि को वेद प्रवचन होगा और प्रात गायत्री महायज्ञ होगा।

मन्त्री

"ज्ञान प्रवीण प्रतियोगिता 1988"

राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न होने वाली ज्ञान प्रवीण प्रतियोगिता प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष 25 सितम्बर 1988 को आयोजित होगी। आवेदन की अन्तिम दिनाक 10 सितम्बर 1988 है। विस्तृत नियमावली के लिये शीघ्र सम्पर्क करे -

—मन्त्री, आर्य युवक परिषद्

पो लाडनूं पिन-341306 (राज)

मन्त्री

पत्र बोलते हैं !

हिन्दूघाती षड्यन्त्र से सावधान !

महोदय,

हरिजनो के मन्दिर प्रवेश के सम्बन्ध मे शंकराचार्य निरन्जन देव तीर्थ के द्वारा दिये गये एक बयान पर चारो ओर खूब निन्दा हो रही है। आश्चर्य किसी नेता को यह नही सूझा कि शंकराचार्य के पास जाकर उससे मिल लें और पूछे कि आपने ऐसा बयान क्यों दिया है ? स्व-प्रेरणा से दिया या सत्ता के किसी सहायक, नायक या किसी अन्य के ऐसा करने के [illegible] शामिल किया ? जहां किसी नेता को यह नहीं सूझा, वहा समाचार-पत्रो ने इस मामले को इतना व इस ढंग से उछाला है जैसे देश मे कोई विस्फोट हो गया हो।

लगभग एक वर्ष पूर्व राष्ट्रपति भवन के सामने खड़े होकर जामा-मस्जिद के इमाम ने साम्प्रदायिक उत्तेजना व पृथकता की भावनाए फैलाने वाली तकरीर की थी, लेकिन तब किसी के कान पर जू तक नहीं रेंगी। क्यों ?

यह भी तो सम्भव है कि सत्ता के किसी पहलू ने शंकराचार्य को उकसा कर हिन्दुओं को लड़ाने की कोशिश की हो। मुझे तो यही आभास हो रहा है। ऐसे षड्यंत्रों से सतत सावधान रहने की जरूरत [illegible] मेरी जानकारी के अनुसार [illegible] बैठे लोगो ने हिन्दुओं को आपस में भिड़ाने के उद्देश्य से कई संस्थाओ व संगठनों को शुरू करा रखा है। इसी तरह की एक संस्था [illegible] के कृष्णनगर में काम कर रही है जो कथित रूप से हिन्दू संगठन के नाम पर हिन्दुओं को त्रिशूल धारण कराती है। शंकराचार्य का मामला तो विशेष रूप से इसी उद्देश्य से प्रेरित साफ दिख रहा है कि अनुसूचित जातिया पूरी तरह से हिन्दू समाज से कट जाए। हिंदू समाज आपसी नफरत के बोझ से छिन्न-भिन्न हो जाए। अत जरूरी है कि हिन्दुओ मे बिखराव पैदा करने के कामो मे लगे 'हाथ' को हम समय रहते ठीक से पहचान ले।

—विशन स्वरूप गोयल
करोल बाग, नई दिल्ली।

अमीर खुसरो के नाम पर दुष्प्रचार

दूरदर्शन की अमीर खुसरो श्रृंखला द्वारा खुसरो जी के विषय मे सीधे न दर्शाकर, उनको माध्यम बनाकर यवन-ईसाई आक्रान्ताओ को भारत मे ऐश्वर्य एव सत्ता के लिये नही अपितु ज्ञान की महत्ता के लिए आने वाला सिद्ध किया जा रहा है। ऐतिहासिक तथ्य को झुठलाने का प्रयत्न दिनाक 29-6-88 को प्रसारित श्रृंखला द्वारा किया गया है। शक-कुषाण हूण भले ही आक्रमण की दृष्टि से आये, किन्तु उन्हे यहां की संस्कृति भा गई और वे इसी मे विलीन हो गए। अब उन्हे नाम-धाम-काम किसी चिन्ह से पहचाना नही जा सकता। यवन ईसाइयों के प्रवेश का उद्देश्य यहां की सम्पत्ति ही नहीं संस्कृति के विनाश का भी था। उन्होने यहां की मिट्टी मे एक रस होने के स्थान पर भारत के मूल निवासियो को ही प्रलोभन या बलपूर्वक यवन-ईसाई बनाया। हर प्रकार से सिद्ध तथ्य "आर्य भारत के मूल निवासी हैं" को काटकर बाहर से आया सिद्ध किया गया। मुस्लिम आक्रान्ता यदि भारत के बन गये होते पाकिस्तान का निर्माण नहीं होता। भूतकाल को छोड़ दिया जाये। भविष्य मे भी उनकी ऐसी मनोवृत्ति बन जाये तो भी श्रेयस्कर है, [illegible] रामजन्म भूमि का प्रकरण ही [illegible] हो जाये। सम्प्रति दूरदर्शन को [illegible] परीक्षण के उपरान्त नाटिकाएँ स्वीकार करनी चाहिये। उसे एक स्वस्थ रंगमंच बनना चाहिए, न किसी कस्बे की सब्जी मण्डी का चबूतरा, कि जब जो चाहे उस पर रखकर कुछ भी बेचने लगे।

—दर्शनदेवी, अलीगढ़

महोदय,

स्वामी निरंजनदेव ने मन्दिरों में हरिजनो के प्रवेश को निषेध ठहराकर अपनी मूर्खता का परिचय दिया है। जब हिन्दुओ का धर्मगुरु ही मूर्खों जैसी बात करे तो इस हिन्दू धर्म को कौन बचाएगा ?

शिवनाथ आर्य,
देहरादून।

महोदय,

'आर्य पुनर्गठन' द्वारा आप आर्यसमाज मे नवजीवन फूकना चाहते हैं यह सर्वथा स्वागत योग्य प्रयत्न है। इस दिशा मे मेरी दृष्टि में प्रथम विचारणीय बिन्दु यह है कि हम निर्णय करें कि हम आर्य हैं या हिन्दू। यदि हम आर्य एव वैदिक धर्मी हैं तो हमें निरपवाद रूप से वैदिकों के उन प्रश्नों का ही उत्तर देना चाहिए जो हमारे क्षेत्र का स्पर्श करते हैं। जो बातें हमारे क्षेत्र के बाहर हैं उनमे उलझने का क्या औचित्य है ? मेरा प्रश्न है कि क्या पौराणिकों के मन्दिर और मान्यताएं हमारे क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। वे अपने मन्दिरों में उल्टे लटक कर पूजा करें या आकाश मे लटककर, इससे हमें क्या सरोकार है।

किसी को आने देते हैं या नहीं। इससे भी हमें क्या मतलब ? जिसे जाना हो, वह कानून का सहारा लेकर (प्रतिबन्ध की स्थिति मे) अन्दर जाये। कोई हिन्दू सन्यासी उसकी सहायता करे तो ठीक है। एक [illegible] सन्यासी जो मूर्तिपूजा करता ही नहीं क्यों किसी की मूर्तिपूजा मे सहायता करे।

महर्षि के युग मे [illegible] का पर आज तो है। हमें [illegible] आर्यसमाज मे बुलाना चाहिये। उन्हें वेद पढ़ाना चाहिये, अपनी संस्थाओं में शिक्षित करना चाहिये। हमारे पास समय है, हम पौराणिकों के लिये क्यों व्यर्थ करें ?

धर्मवीर शास्त्री
BI/51 पश्चिम विहार
नई दिल्ली 63

सम्पूर्ण आर्यसमाज का सहयोग नहीं मिला

स्वामी अग्निवेश नेता हैं कि नहीं, उनकी हरिजन [illegible] की मुहिम आर्यसमाज की रीति नीति के अनुकूल है या नहीं। उनके अपने कोई निहित स्वार्थ हैं या नहीं — ये सारी शंकाएँ उस समय ध्वस्त हो जाती हैं जब हम यह देखते हैं कि

भारतीय संविधान मे स्वीकृत उन अधिकारो को हरिजनो को दिलाने के लिये वे अपना सिर हथेली पर लिये घूम रहे हैं, जिन्हें देश की सरकार तथा जनता हरिजनों को आजतक नही दिला सकी है। निर्विवाद [illegible] जन सत्ता सरल देवों द्वारा जो अपरिमित श्रम हमारे देश में किया जा रहा है, और यह हिन्दू जाति पर जो सकट उत्पन्न कर रहा है, उसे स्वामी अग्निवेश ने भली प्रकार समझा है। उनकी यह मुहिम मात्र इस लिये है कि हिन्दू समाज में हरिजनों को समान मानवीय अधिकार दिये जावें अन्यथा वे एक दिन अन्य धर्म मे [illegible], हिन्दुओं को हिन्दुओं के [illegible] में अल्पसंख्यक बना देंगे। [illegible] की प्रशंसा [illegible] और [illegible] हिन्दू ने की है। [illegible] इस सच्चाई को स्वीकार किया है कि उनका [illegible] के लिये अत्यन्त लाभकारी है।

अग्निवेश जी को अपने इस अभियान मे आर्यसमाज के चार छ बड़े नेताओं का समर्थन मिला परन्तु आर्यसमाज की संस्था अर्थात् संगठन का नहीं। आर्यसमाज की सार्वदेशिक [illegible] सभा ने इस मुहिम के [illegible] आर्यसमाज की देश भर मे [illegible] इकाइयो को भी इस सम्बन्ध मे [illegible] निर्देश प्रसारित नहीं किया था। [illegible] है कि इस मुहिम मे [illegible] सभा के प्रधान उपस्थित थे। [illegible] यह हुआ कि आर्य समाजियों में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि यह मुहिम व्यक्तिगत है या आर्यसमाज की है ? [illegible] आर्यसमाज मे जो कुछ हुआ वह इस भ्रम का ही परिणाम था और इसके आर्यसमाज के संगठन को [illegible] ठेस ही लगी है। प्रश्न यह है कि स्वामी जी द्वारा चलाई गई मुहिम को आर्यसमाज की ही मुहिम कैसे माना जावे ? जब तक कि उसका आयोजन इसी प्रकार न हो जैसे कभी हैदराबाद सत्याग्रह का आयोजन किया गया था। यदि हमारा नेतृत्व आर्यसमाज की रीति-नीति तथा कार्यप्रणाली की इस प्रकार तिलांजलि देकर कार्य करेगा तो आर्यसमाज की विश्व विख्यात मर्यादा इसी प्रकार ध्वस्त होती रहेगी। यदि किसी ने इस मुहिम के लिए आर्यसमाज के संगठन से अपेक्षा की थी तो यह भी अनुचित थी। आशा है स्वामी जी तथा आर्यसमाज के कर्णधार [illegible] नाम-[illegible] मुहिम के कुछ सबक सीखेंगे।

—[illegible] प्रकाश शर्मा
आर्यसमाज [illegible]

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाजभवन, [illegible] अजमेर से प्रकाशित किया।

23/8/88

ओ३म

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत 1972949088

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 सोमवार 15 अगस्त 1988
अक 15 प स -43338 84 II

अभय मित्रादभयन ममित्रादभय ज्ञात दभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

श्रावण शु 3 सवत 2045,
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

राजा रणंजय सिंह : पुण्य स्मरण

वीरेन्द्र कुमार आय

7 अगस्त की सुबह दैनिक समाचार पत्रो मे यह हृदय विदारक समाचार पढने को मिला कि राजा जी नही रहे। मेरे लिए यह अप्रत्याशित समाचार था। अभी 2 अगस्त को ही मैंने आचाय दत्तात्रेय जी आय के सयोजकत्व वाली उपसमिति द्वारा सार्वदेशिक आयप्रतिनिधि सभा को प्रस्तुत आयसमाज के पुनगठन सम्बन्धी रिपोट पर उन्हे अपनी सम्मति भेजने हेतु पत्र लिखा था। मैं अपने पत्र की प्रतीक्षा कर ही रहा था कि



स्व राजा रणजय सिंह

आय पुनगठन से राजा जी को विशेष स्नेह था उनका कहना था कि सभी आयपत्रो मे आर्य पुनगठन का स्थान ऊचा है। समय-समय पर उनके स्वलिखित प्रो साहन पत्र हम मिलते रहते थे। इतना वृद्ध आयु म सब साधन सम्पन्न होते हुए भी, उनका स्वय हाथ से लिखा हुआ पत्र हमे रोमाचित कर देता था।

श्री रणजयसिंह जी आय जगत के मूधन्य नेता थे इससे कौन इकार कर सकता है। जहा हम अन्य आय नेताओ को आय पुनगठन नि शुल्क भेजते थे उन्हे भी भेजते थे। परन्तु राजाजी को यह स्वीकार नही था कि आय समाज के मौलिक स्वरूप को अक्षुण्ण बनाए रखने की लडाई लड रहे आर्थिक विपन्नता के शिकार 'पत्र' को वे नि शुल्क पढ़े। वे सदैव समय से पूव अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क हमे भेज देते थे। अभी कुछ समय पूव ही एक उत्साहवधक पत्र सहित उनका वष 88-89 का वार्षिक सदस्यता शुल्क हमे मिला था।

राजाजी आयसमाज के सिद्धान्तो के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा जग जाहिर है। स्वय भी वे हिन्दी के अच्छे कवि थे। उनके हिन्दी प्रेम के सम्बन्ध मे मै एक प्रसग को यहा उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हू।

श्रीपति मिश्र की सरकार द्वारा उन दिनो उर्दू को उत्तर प्रदेश की द्वितीय राज्य भाषा बनाने की चर्चाये चल रही थी। स्व प्रो वासुदेवसिंह इसका कडा विरोध कर रहे थे। उस समय मेरे पिताश्री श्रीपाल आय ने राजाजी को प्रदेश सरकार मे मत्री उनके पुत्र श्री सजयसिंह की इस विषय मे चुप्पी के विरोध मे पत्र लिखा। राजाजी ने उन्हे उत्तर दिया सजय सिंह एक आय पुत्र है। वह स्वय हिन्दी मे एम ए, पी एच डी है। हिन्दी के प्रति उसकी निष्ठा असदिग्ध है। मेरा मानना है कि अभी उर्दू का प्रदेश की द्वितीय राज्य भाषा बनाने की केवल चर्चा ही चल रही है इस सम्बन्ध मे कोई निणय सरकार लागू नही करने जा रही।

यदि ऐसा न होता तो सजयसिंह हिन्दी के पक्ष म अपनी आवाज अवश्य उठाता।

श्री रणजय सिंह जी का कहना सत्य निकला और उत्तर प्रदेश मे अभी तक उर्दू को द्वितीय सरकारी भाषा का दर्जा नही मिल सका है।

आय पुनगठन परिवार अपने एक शुभ चिन्तक, मूधन्य आय नेता, स्वाधीनता सेनानी के निधन पर अपनी भावभीनी श्रद्धाजली अर्पित करता है और परमपिता परमात्मा से उनकी स्वर्गीय आत्मा को शांति देने प्राथना करता है।

स्व. श्री रणंजयसिंह का एक कवित्त

काशी शास्त्रार्थ

काशी मे हलचल मच गयी सन्यासी एक
दयानन्द आये हैं जिनकी ललकार है।
विद्वज्जन शास्त्रार्थ करके यह सिद्ध कर,
मूर्ति पूजन वैदिक सिद्धान्तानुसार है,
ईश्वर निराकर कभी होता साकार नही
लेता न रणजय अजन्मा अवतार है।
शास्त्रार्थ हुआ पण्डित काशी के परास्त हुए
मानना ही पडा विद्या स्वामी मे अपार है।

जाली डिग्रियों के धंधे के विरुद्ध याचिका विचारार्थ स्वीकार

जयपुर 9 अगस्त। राजस्थान में जाली प्रमाण पत्रो व डिग्रियो का व्यापार और उसके आधार पर नौकरी पाने के धन्धे के विरुद्ध राजस्थान शिक्षक सघ की याचिका राजस्थान उच्च न्यायालय ने विचारार्थ स्वीकार कर ली है। याचिका की सुनवाई न्यायाधीश सुरेश चन्द अग्रवाल व पानाचन्द जैन की खण्डपीठ म होगी।

राजस्थान शिक्षक सघ के महामत्री तेजपाल शर्मा ने बताया कि याचिका मे सरकार की ओर से फर्जी डिग्रियो को मान्यता देने पोल खुलने पर मान्यता को अनुचित तरीके से वापिस लेने, मान्यता रद्द करने के कारण एव कागजों को छुपाने उच्च न्यायालय एव शिक्षक सघ के नोटिसो को जानबूझकर दबाने तथा उनका जवाब न देने को बेपर्दा किया गया है। याचिका मे आरोप लगाया गया है कि यह सब सरकार व उसके शीष अधिकारियो ने लाखो रुपए अवैधानिक रूप से कमाने की नीयत से किया।

(राजस्थान पत्रिका से साभार)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य   प्रधान सपादक रासासिंह   सपादक वीरेन्द्र कुमार आर्य   ☎ कार्या 21010

संपादकीय—

अमर रहे स्वाधीनता हमारी

मनुस्मृति में ठीक ही कहा गया है कि "सर्वं आत्मवश सुख सर्वं परवश दुःख" अर्थात सब प्रकार से अपने अधीन रहना सुख है तथा सब प्रकार से दूसरे के अधीन रहना दुःख है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में स्पष्ट प्रतिपादन किया है 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहि' अर्थात् परायी अधीनता में स्वप्न में भी सुख का अनुभव नहीं होता है। मोती एवं अनमोल पदार्थों का सेवन करने वाला पिंजरबद्ध पक्षी भी पिंजड़े से मुक्त होने को छटपटाता रहता है तथा मौका पाते ही वह निकलकर उड़ जाता है तथा उन्मुक्त गगन में पंख फैलाकर किलकते हुए, चहकते हुए तथा वृक्षों की डाल पर सूखे पत्ते खाकर भी चहकते हुए उसे जिस अनुपम आनन्द की प्राप्ति होती है वह अवर्णनीय है। वह स्वाधीनता का आनन्द है।

दीर्घकालीन पराधीनता के पश्चात् 15 अगस्त, 1947 ई० को हमारा प्राणप्यारा भारत देश स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रता के लिए हजारों स्वाधीनता सेनानियों ने नींव की ईंटें बन कर अपनी कुर्बानियां दीं अंग्रेजों की यातनाएं सहीं, लाठी गोली के प्रहारों को झेला। हजारों माताओं और बहनों का सिन्दूर हमेशा के लिये पोंछ दिया गया कई नौजवानों ने अपनी जवानियां शहादत की राह पर न्यौछावर कर दीं। अनेक बलिदानों के पश्चात् प्राप्त स्वाधीनता की रक्षा करना हम सबका परम पुनीत दायित्व है। 15 अगस्त 194 ई० का दिन स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

15 अगस्त 1947 ई० के पश्चात् हम प्रतिवर्ष स्वाधीनता दिवस के रूप में इस दिवस को समारोह पूर्वक मनाते हैं। आज आजादी प्राप्त हुए 40 वर्ष हो गये हैं तथा 41वीं वर्षगांठ मनाते हुए हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

खेद के साथ कहना पड़ रहा है इतने वर्षों के पश्चात् हमने अभी आजादी का महत्व नहीं समझा है राष्ट्रनिर्माण के लिये अपनी शक्ति को नहीं लगाया है।

स्वार्थ परायणता के शिकार होकर मूल्य विहीनता से ग्रसित हो गये, नैतिकता से शून्य बनकर राष्ट्रवाद के स्थान पर प्रान्तीयवाद, भाषावाद जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रीयतावाद और इन सब से बढ़कर पृथकतावाद, उग्रवाद और आतंकवाद जैसे बेबुनियाद एवं विध्वंसकारी वादों को गले लगाने लग गये परिणाम स्वरूप आज हमारे महान् राष्ट्र की एकता और अखण्डता और स्वतन्त्रता और स्वत्वता खतरे में पड़ गई है। राष्ट्रीय आदर्शों — लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता, समाजवाद, सर्वधर्म समभाव आदि का संकटों का सामना करना पड़ रहा है।

वेद हमें आदेश देता है कि "वयराष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिता" अर्थात् हम राष्ट्र के प्रबुद्ध जन सदैव जागरूक और कटिबद्ध रहें। वेद आह्वान करता है 'यतेमहि स्वराज्य अर्थात् स्वराज्य के लिये निरन्तर प्रयत्नशील हो। अंत में वेद इस आशावादी दृष्टिकोण को भी सार्थक करता हुआ प्रेरणा देता है कि "वय जयेम" अर्थात् हम विजयी हैं विजयी होंगे। बाधाओं पर जीत हमारी होगी।

आओ हम सब मां भारती के सच्चे सपूत बन कर इसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करने का संकल्प ग्रहण करते हुए इसके निर्माण में अपने आपको समर्पित कर दें। वेद के शब्दों में हमारा आदर्श होना चाहिये माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं। "हमारी भारतमाता है' भला ऐसा कौन कृतघ्न पुत्र होगा जो अपनी माता की सेवा सुश्रूषा और रक्षा नहीं करना चाहेगा।

"भारत माता की जय हो"

—रत्नसिंह

स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा

अस्पृश्यता-निवारण और मूर्तिपूजा

-डा आनंद प्रकाश-

10 अगस्त को राजस्थान सरकार की अगुवाई में नाथद्वारा में हरिजन प्रवेश का नाटक हुआ। मंदिर मर्यादा के नाम पर उन्हें कंठी-डोरा पहना कर प्रवेश कराया गया और एक विधायक डा राजकुमार जयपाल के अनुसार इस हरिजन प्रवेश के बाद मंदिर को दूध से धो कर शुद्ध (?) किया गया।

- सम्पादक

आर्यसमाज के संघर्षशील सन्यासी अग्निवेश द्वारा नाथद्वारा मंदिर में हरिजनों के सामूहिक एवं सार्वजनिक प्रवेश के प्रश्न पर आरम्भ की गई पदयात्रा को राजस्थान सरकार ने 'कानून और व्यवस्था को खतरा" बताकर जिस प्रकार भंग करा दिया उससे पता चलता है कि भारतीय जनमानस अभी भी रूढ़िवादिता और अंधविश्वास से चरम सीमा तक ग्रसित है। केन्द्रीय सरकार की कल्याण मंत्री माननीय डा राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी ने उसके 2 दिन पूर्व ही एक वक्तव्य प्रसारित कर राजस्थान सरकार को निर्देश दिया था कि वह स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा में कोई व्यवधान न पड़ने दे। उन्होंने यह भी स्मरण कराया कि भारतीय संविधान एवं अस्पृश्यता निवारण कानून के रहते कोई भी धर्माचार्य हरिजनों को मन्दिर-प्रवेश से नहीं रोक सकता। इतने स्पष्ट वक्तव्य के कारण, यह आशा बंधी थी कि स्वतन्त्र भारत में अब मानसिक अस्पृश्यता को धराशायी कर देने वाले नये युग का आरम्भ हो रहा है। संविधान के संकल्प, कानून की धारायें, प्रशासन और पुलिस की व्यवस्थायें तथा राजनैतिक दलों की आस्थाये सब विफल होकर मूक दर्शक बनी रह गयी और तथाकथित "धार्मिक मर्यादाओं की रक्षा के नाम पर, निहित-स्वार्थ से प्रेरित यथास्थिति वादियों ने अपना उग्र आतंकवादी स्वरूप दिखाकर परिवर्तन की लहर को रोक दिया। आश्चर्य की बात है कि बड़े-बड़े आदर्शों की बात करने वाले विरोधी दलों के नेताओं ने भी स्वामी अग्निवेश की पदयात्रा के उद्देश्य के समर्थन में कोई वक्तव्य नहीं दिया। इसे आत्मप्रवञ्चना ही कहा जाएगा कि कांग्रेस के एक संसद सदस्य, विश्व शान्ति की सद्इच्छा से हिरोशिमा से नागासाकी की पदयात्रा कर रहे हैं, कुछ विपक्षी नेता जन जागरण के लिये पिछले वर्षों में कन्याकुमारी से राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि तक की पदयात्रा कर चुके हैं, और पंजाब में साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना के लिये तो अनेक महानुभावों ने पदयात्राओं के दौर चलाये, परन्तु "अस्पृश्यता" जैसे मानवगरिमा के कलंक को मिटाने के लिये पदयात्रा करने की बात उन्होंने नहीं सोची। सामाजिक कुरीतियों के मामले में तो अधिकांश ऐसे विचारक और समाजसेवी तटस्थ ही बने रहते हैं। दयानन्द के भक्तों ने धार्मिक क्रान्ति को समस्त सामाजिक एवं आर्थिक सुधारों का मूल स्वीकार करते हुये, इसे ही वरीयता दी और अपने प्राणों की आहुति देकर भी सामाजिक शोषण के शिकार दलित वर्ग के धार्मिक अधिकार की रक्षा का आन्दोलन चलाते रहे। स्वामी अग्निवेश ने इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुये, आर्यसमाज के क्रान्तिकारी इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है।

सरकारी कार्यवाही के समर्थन में समाचार पत्रों और दूरदर्शन के माध्यम से जो दलीलें दी जा रही हैं, उनका आशय यह है कि नाथद्वारा मन्दिर में सभी को प्रवेश की अनुमति है जो वास्तव में सत्य से परे है) और इस प्रकार के आन्दोलन से जातीय तनाव उत्पन्न होता है। इन बिन्दुओं पर अनेक पक्ष प्रस्तुत किये जा चुके हैं। मेरी दृष्टि में, सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 और अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम 1955 की धारा 410के अन्तर्गत "अस्पृश्यता का केवल मात्र शाब्दिक अर्थ लेना उचित नहीं होगा। कोई भी मानसिकता, धार्मिक रूढ़ि अथवा सामाजिक व्यवहार, जो किसी व्यक्ति या समुदाय की "योग्यता" अथवा अधिकार को सीमित कर देता हो तथा विधि सम्मत सामाजिक-समता के विपरीत आच-

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भावी ख़तरे को पहचानो !

— कृष्णदत्त —

भारत सरकार की ओर से प्रति 10 वर्ष की जनगणना के पश्चात् धर्म के आधार पर भारत की जनगणना से सम्बधित आकडे प्रकाशित होते रहते हैं। यदि हमभूल नहीकर रहे हैं, तो सन् 1881 ई से भारत मे जनगणना आरम्भ हुई। सन् 1881 ई से 1941 के आकडो का अध्ययन करने पर ज्ञात होना है कि इस काल, मे हर दसवे वर्ष मे प्रति दस हजार के पीछे 94 के हिसाब से हिन्दुओ की सख्या घटी। आजादी के बाद 1951 से 1971 के काल मे हर दसवे वर्ष मे प्रति दस हजार के पीछे हिन्दुओ के घटाव की यह सख्या 143 रही। इन आकडो से यह ज्ञात होना है कि भारत मे धम परिवर्तन बहुत तीव्र हो गया। हिन्दू जाति पर चारो ओर से तीव्र प्रहार हो रहा है। ऐमा लगता है मानो हिन्दू जाति एक चारा गाह हैं, खडी हुई फसल है और इमको चारो ओर से नि शक होकर लोग काटे जा रहे हैं। हिन्दू जाति रूपी इस चारागाह मे फसल की अबाध लूट से किसी को दु ख नही हो रहा है, और दु ख हो भी रहा है तो विवशताए सामने खडी हैं।

मोटे रूप से यह कहा जा सकता है कि धर्म के आधार पर जनसख्या मे वृद्धि तीन कारणो से होती है — (1) जन्म (2) स्थलान्तर (3) धर्म परिवर्तन, ईसाइयो को छोडकर शेष सभी धर्मावलम्बियो मे वृद्धि तीनो कारणो से हुई है। ईसाई, बौद्ध और मुसलमानो ने भी धम परिवतन के द्वारा भी अपनी सख्या बढाई है और निश्चित ही इन तीना धर्मावलम्बियो ने हिन्दुओ का ही धम परिवर्तन करके अपनी सख्या बढाई है। हिन्दुओ की जो भी सख्या वृद्धि हुई है उसका आधार जन्म और स्थलान्तर मात्र है। परिवार नियोजन को प्राय हिन्दुओ ने ही अपनाया है अत हिन्दुओ की जनसख्या की वृद्धि का सब से बडा कारण पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू ही हैं। इस तथ्य के प्रकाश मे हिन्दुओ के अन्य धर्मों मे सम्मिलित होने की गति की कल्पना की जा सकती है। ईसाई करीब 74 लाख से एक करोड सवा लाख हो गये हैं। बौद्ध भी दो लाख से 32 लाख को पहुँच गये हैं। इन दोनों धर्मावलम्बियों की सख्या वृद्धि का मुख्य साधन धर्म परिवर्तन है। पाकिस्तान से आने वाले मुसलमानो की सख्या भी इतनी अधिक हो गई है कि वे भी एक करोड से अधिक बढ गये हैं।

धम के आधार पर सख्यावृद्धि के अत्यन्त दूरगामी राजनैनिक परिणाम प्रकट होते हैं। पजाब और बगाल मे मुस्लिम बहुमख्या के आधार पर दोना प्रदेशो का विभाजन धर्म परिवतन का ही परिणाम है। नागालैड की अशाति और नागाओ का पृथक स्वतत्र प्रदेश की माग करना वहा ईसाई धम के प्रचार का ही परिणाम है। इस धर्म-परिवर्तनके कैस राजनैनिक परिणाम प्रकट होते हैं, इमका एक रूप दक्षिणी वियतनाम मे हमने देख लिया। अत इन उदाहरणो से हम इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि भविष्य मे ऐसे ही सकट भारत मे आ सकते हैं। निसकोच भाव से यह कहा जा सकता है कि विगत काल मे धर्म परिवर्तन तीव्र न होता तो पाकिस्तान न बनता और देश का विभाजन न होता। पाकिस्तान बनने पर उत्तरप्रदेश विधानसभा के एक मुस्लिम लीग सदस्य ने खुले आम कहा था कि भविष्य मे हम इसी बचे हुए भारत से एक नवीन पाकिस्तान का निर्माण करेंगे। वस्तुस्थिति का अध्ययन करने पर उक्त मुस्लिम लीगी विधायक की यह बात काफ़ी वजनदार लगती है। 1881 ई से 1971 के 90 वर्षों के बीच हिन्दुओ की सख्या मे जो घटाव हुआ है, उस हिसाब से भारत मे हिन्दू सन् 2200 ई मे अल्पसख्यक बन जायेंगे। पूर्वी पाकिस्तान से आसाम मे लाखो की सख्या मे बगलादेश से या तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तानी मुसलमानो की घुसपैठ और चुपचाप हिन्दुओ का इस्लामीकरण क्या भविष्य मे हमारे लिये ऐसे भयानक परिणाम पैदा करने वाले नही होगे? और क्या ईसाइयो की सख्यावृद्धि भारतीय भाषा, सस्कृति, सभ्यता और धर्म को सुरक्षित रखेगी? जिस भारतीय सस्कृति सभ्यता और धर्म का गौरवगान स्वामी विवेकानन्द जी ने विदेशो मे किया था और जिस पर हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डा राधाकृष्णनजी भी विदेशो मे जाकर गौरवपूर्ण उद्गार निकालते रहे है। क्या ईसाइयो का यह धर्म परिवर्तन हमारे लिये नवीन नागालैड की समस्याओ का द्योतक नहीं बनेगा?

हम मे किसी धर्मावलम्बिया को दोष देना व्यर्थ है। हम तो उनकी प्रशसा करते है कि उन्होने अपने धर्म को प्रचार-धर्म बनाया और तदनुसार इसका वे प्रचार और प्रसार भी करते हैं। दोषी तो हिन्दू नेता है। हमारी हालत यह है कि हम दूसरे धर्मावलम्बिया को अपने मे दीक्षित करने का न तो साहस करते हैं और न हम मे इसकी क्षमता भी है। दूसरो को धम प्रचार देखा भी नही जाता। हम इसाई और मसलमानो के धम परिवतन को भाषणो, लेखा और प्रस्तावो द्वारा रोकना चाहते है, जो असम्भव है। न तो हमने मुसलमानो का सा ममता का भाव अपने अदर पैदा किया और न ईसाईयो का सेवा भाव। पुरी के शकराचार्य का जयपुर वाला वक्तव्य इसका उदाहरण है

महर्षि दयानद ने इसको एक सदी पूर्व ही अनुभव किया था और इसके निवारणार्थ उन्होंने शुद्धि की प्रेरणा दी थी, जिसको शहीद प लेखराम जी और हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी ने बडे जोर से चलाया था। किन्तु उनके बाद यह आदोलन शिथिल और समाप्य प्राय हो गया। इसका विरोध स्वय हिन्दुओ ने भी किया। जात—पात की सुदृढ प्राचीरो मे घिरी हुई हिन्दू जाति का सख्या बल मे ऐमा शोचनीय ह्रास एक स्वाभाविक परिणाम है। उस पर हमारी राजनैतिक चिंतन शैली भी हिन्दुओ के सख्या बल के ह्रास का कारण बनी है। आज हमारे राजनैतिक नेता, जो हिन्दू कहला कर मत्रीपद, अधिकार पद और अन्य नागरिक अधिकार प्राप्त करते हैं, उनमे ही यह भावना है कि हिन्दू जाति के लिये कुछ करना साम्प्रदायिकता है अराष्ट्रीयता है, अत यह महापाप है। शुद्धि आदोलन को हिन्दुओ की जात-पाँत ने नष्ट किया। आज हिन्दू विरोधी भावना भी राष्ट्रीयता की कसौटी मानी जा रही है।

आर्य समाज, जिसके सामने महर्षि ने जन्ममूलक जात-पात को समाप्त करने का कार्यक्रम रखा था, उसी ने अपने आपको इस विभीषिका मे ऐसा जकड लिया है कि उसका शुद्धि आदोलन समाप्त हो गया। शुद्ध होने वाले व्यक्ति और परिवार का समाज मे आज क्या स्थान है, जबकि आर्य समाज मे प्रवेश करने वाले राजपूत राजपूत रहे, कोमटी—लिंगायत, कायस्थ—खत्री, मराठा—कान्यकुब्ज, अग्रवाल—महेश्वरी ज्यो के त्यो बने रहे। जन्म मूलक जाति को छोड नही सके। जन्ममूलक जाति को छोडना बहुत साहस की बात है। अपने नामो के साथ जाति सूचक नामो को तक तिलाजली नही दे सके। दिल्ली मे आयोजित आर्य समाज स्थापना समारोह मे बाबू जगजीवन राम ने इसी बात पर आर्य समाजियो के कार्य की आलोचना की थी जिस पर आर्य समाज के एक मूर्धन्य नेता ने घोषणा की थी कि वे भविष्य मे अपने नाम के साथ लगे जाति सूचक नाम का प्रयोग नही करेंगे, पर अभी तक वे उस से मुक्ति नही पा सके। परिणाम यह हुआ है कि आर्य समाज ने भी शुद्ध होने वालो को हजम नही किया। महर्षि दयानद ने जिस आर्य समाज को जन्मभूलक जाति-पाति, सम्प्रदायो को तथा मत-मतातरो का भेदभाव मिटाने का कार्य सौपा था वही आर्य समाज उसमे बुरी तरह फस गया है। आर्य समाजी स्वामीजी महाराज के निम्न शब्दो को गम्भीरता से पढने की कृपा करे —

'सब सज्जनो को श्रम उठाकर इन सम्प्रदाओ को जड-मूल से उखाड डालना चाहिये। जो कभी उखाड डालने मे न आये, तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नही।' (शिक्षा पत्री ध्वान्तनिवारणम्)।

महर्षि के इस आदेश का पालन जन्ममूल जात-पात की दीवारो को गिराकर रोटी-व्यवहार और बेटी व्यवहार को प्रोत्साहित किये बिना नही हो सकता।

धर्म के आधार पर 1971 की जनगणना के आकडो को लक्ष्य मे रखकर महर्षि दयानद के इन शब्दो को आर्य समाज ही नही, अपितु वैदिक धर्म मे विश्वास रखने वाले सभी भारतीयो को ध्यान से पढना चाहिये।

(शेष पृष्ठ चार पर)

पत्र बोलते हैं !

आर्यसमाज के कर्णधारो से

महोदय

आज कल समाचार पत्रा एव समाज के कार्य कर्त्ताओ द्वारा एक दूसर के ऊपर दोषारोपण कुठाराघात एव धन सम्पति हडपने के पत्र अक्सर समाज म मिलत रहत हे मगर हमारे आय समाज के सावदेशिक प्रतिनिधियो का यह हाल है कि उनक पास पत्रो का जवाब तक देने का समय नही है, तो फिर य लाग इतन ऊचे पद पर आसीन होकर देश व समाज का क्या भला कर सकत है गत 15/20 सालो मे किसी भी उच्च अधिकारी ने किसी भी आय समाज की जाकर सुध बुध नही ली न इनको यह जानकारी है कि प्रदेश म किस आय समाज के पास चल एव अचल सम्पत्ति है। उनके रख रखाव का काय कैसे व कौन चला रहा है न समय पर प्रचारक ही आकर प्रचार करत हे। प्रचारक कभी कभार आत है तो सिफ ढोलक पेटी बजाकर दो तीन गायन गान से प्रचार मात्र करके रवाना हो जाते है। इस प्रकार आय समाज के पद पर आसीन रह कर समाज एव देश का भला नही हो सकता न आने वाली पीढियो म किसी प्रकार की चेतना ही जाग्रत हो सकती है। अत मे सावदेशिक एव प्रादेशिक अध्यक्ष महोदय से प्राथना करता हू कि आय समाज के प्रचार प्रतिष्ठा एव सगठन लिये हुए आय समाज को विश्वास म एव हमारे समाज पर होन वाले कुठारो पर अपनी नजर रखो ताकि इस आने वाले समय म धर्मान्धता रूढिवादी एव नय नये धम पैदा करने वालो पर अकुश लग सके इसके लिये कठिन परिश्रम एव सच्चाई ईमानदारी की आवश्यकता है। एक दूसर पर आक्षप लगान से समाज मे कमजोरिया व्याप्त होगी समाज अग्रसर होने क बजाय पीछे धकेल दिया जावेगा एव महर्षि दयानन्द का झण्डा एक दिन समाप्त हो जावेगा व हिन्दू समाज अधेरे मे चला जायगा जिसका प्रकाशित करना बहुत ही मुश्किल होगा।

—नेमीचन्द दाधीच,
मत्री आयसमाज, मेडता

आचार्य दत्तात्रेय के नाम

मै चाहता हू कि आयसमाज का सैद्धान्तिक मौलिकता को अक्षुण्ण बनाय रखने का आपका अभियान चलता रहे। भले ही थोड व्यक्ति सहा परन्तु विचार-विमर्श का यह फोरम बना रहे।

—डा आनन्द प्रकाश,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी।

सत्यार्थप्रकाश महाभाष्य

अन्य य आर्य ग्रन्थो की तरह महर्षि दयानन्द क ग्रन्थो के भी भाष्य होन चाहिय थे। परन्तु इस दिशा म जैसा प्रयत्न अपेक्षित था वैसा हमने नही किया। ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर किये अपन सकल्प के अनुसार मैने निरन्तर तीन वर्षो तक परिश्रम करके ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का भाष्य लिखा बडे आकार 20X30 क 600 पृष्ठ। 8 म उसका प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है और [illegible] उतना ही बडा दूसरा भाग [illegible] है। [illegible] रिसर्च इन्स्टीट्यूट [illegible] बई द्वारा प्रकाशित [illegible] भूमिका भाष्य [illegible] नाम म प्रकाशित [illegible] ग्रन्थ के प्रकाशन पर एक लाख [illegible] से अधिक व्यय हुआ है।

आय जगत के मूर्धन्य विद्वानो द्वारा प्रशंसित इस महान काय म मिली सफलता से प्रोत्साहित होकर अब मै ऋषि दयानन्द क दूसरे महत्वपूण ग्रथ सत्याथ प्रकाश की विस्तृत व्याख्या करने जा रहा हू। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो म सत्याथप्रकाश पर भाष्य लिखना सबसे कठिन काय है। वैदिक विद्वानो की सहायता तथा आय पुरुषो के सहयोग क बिना यह अत्यन्त दुष्कर है।

इन पक्तियो क द्वारा म सम्पूण आय जगत से अनुरोध करता हू कि सभी अपने अपन सामथ्य क अनुसार इस पुण्य काय मे सहयोग देन की कृपा करे। मैं चाहता हू कि—

1 सत्याथप्रकाश से सबधित जो भी शकाय किसी को हो तत्काल लिखभेज।

2 जिन्हें व्याख्याओ, शास्त्रार्थो, लेखो आदि के माध्यम से समय समय पर उठी शकाओ और उनके समाधान की जानकारी हो, मुझ तक पहुचाने की कृपा करे।

3 इस काय म सहायक पुस्तको ट्रैक्टो पत्र-पत्रिकाओ आदि की जानकारी दे तथा जिनके पास इस प्रकार की सामग्री हो उसे देकर अनुग्रहीत कर। काय सम्पन्न होने पर सुरक्षित लौटा दी जायेगी।

4-यथासमय मै पत्र-पत्रिकाओ के द्वारा जो शकाये प्रस्तुत करू गा यथामति उनका समाधान करने की चेष्टा करें।

—स्वामी विद्यानन्द स्वामी
दयानद मठ दीनानगर (पजाब)

रथयात्रा मेले में प्रचार

छोटा नागपुर आय प्रतिनिधि सभा राची डोरण्डा धुर्वा और आदर्शनगर आय समाजो के सहयोग से राची से 10 किलोमीटर दूर रथ यात्रा मेल मे एक प्रचार कैम्प स्थापित किया गया। इस अवसर पर प गोविन्द प्रसाद आय विद्यावारिधि (चतरा) पडित शिवधर आय व श्री सत्यप्रकाश आय (पन्ना) श्री सत्यानन्द (पात्थर डीह) श्री इन्द्रदव आय (राजधनवार) और श्री हरिप्रसाद ज्वाल (जहानाबाद) ने भाग लिया। इस अवसर पर वैदिक साहित्य का बिक्री क अतिरिक्त सभा द्वारा क्या ईसा मुक्तिदाता है ? नामक पैम्फलेट का वितरण किया गया। इस मेले मे इस वष तीन लाख लोगो ने भाग लिया।

—दयाराम पोद्दार
(मत्री)

निर्वाचन

आय समाज पानीपत प्रधान-श्री बाबूराम मित्तल मन्त्री राम मोहन राय एडवोकेट कोषाध्यक्ष-राजकुमार लोहवाले पुस्तकालयाध्यक्ष-दीपचन्द निर्मोही।

शोक व्यक्त

आयसमाज अजमेर ने परोपकारिणी सभा के उपप्रधान श्री पूनमचन्द के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

—मत्री

[illegible] खतरे

(शेष पृष्ठ 3 का)

'देखो, तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढते आते हैं। तनिक भी तुमसे अपने घर की रक्षा, और दूसरो का मिलाना नही बन सकता बने तो तब जब तुम करना चाहो। जबलो (जब तक तुम) वतमान और भविष्यत् मे उन्नतिशील नही होते तबलो आर्य्यावत और अन्य मनुष्यो की वृद्धि नही होती।

धम परिवतन कुचक्र के राजनैतिक परिणामो का लक्ष्य मे रखकर हिन्दुओ को और विशेषत आयसमाज को गम्भीरता से सोचना चाहिय और कोई प्रभावशाली तथा परिणामकारक कायक्रम बनाने का यत्न करना चाहिये।

पता— भू पू प्रिन्सीपल,
हिन्दो महाविद्यालय,
हैदराबाद

स्वामी अग्निवेश

(शेष पृष्ठ 2 का)

करने पर बाध्य करना हो इस दीवार म ही तोडी जायगी और उस दृष्टि म हमारा समाज अभी बहुत पीछे है।

इस सदभ म एक विचारणीय प्रश्न (विशेषकर आयसमाज की दृष्टि से) यह भी है कि क्या मूर्ति-पूजा से अस्पृश्यता का कोई सीधा सम्बन्ध है ? अस्पृश्यता की प्रथा के आरम्भ के विषय मे अनेक मान्यताये है—कई विद्वान इस विदेशी आक्रमण की देन भी मानते हैं। मेरी दृष्टि म हिन्दू समाज मे अस्पृश्यता के प्रचलन का मूर्तिपूजा स गहरा सम्बन्ध है। जो व्यक्ति या जाति मूर्ति के जितना अधिक निकट है वह उतना ही पवित्र श्रेष्ठ और उत्कृष्ट है। न कारो का मानो उत्पत्ति वहीं स होती है। जिसमे योग्यता सत्कर्म और आचरण को कोई स्थान नही दिया गया है तथाकथित मन्त्रो, प्राणप्रतिष्ठा इस आडम्बर से जड वस्तु कुछ समय चेतन म कही श्रेष्ठ बन जाता है और समाज का बहुत बडा हिस्सा इस मूर्ति-पूजा के चक्र मे जीवन-पर्यन्त पिसता रहता है। वह सभी प्रकार के अत्याचार सहन कर लेता है क्योंकि वह मूर्ति (जड) से भयभीत है। अस्पृश्यता का पूर्ण निराकरण तो मूर्ति-पूजा की समाप्ति मे ही निहित है। अत आयसमाज के दर्शन द्वारा इन दोनो को ही समाप्त करना होगा।

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री प्रार्यप्रिटर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिह ने आर्यसमाजभवन, केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

वेद ही समस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163

सृष्टि सम्वत 1972949088

ओ३म्

इन्डिया

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म, हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सकल जगत को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 मंगलवार 30 अगस्त 1988 अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात। भाद्रपद कृ 4 संवत 2045

अंक 16 प स 43338/84 II अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥ वार्षिक मू 5, एक प्रति 60 पैसे

<u>आर्य समाज का भविष्य क्या होगा ?</u>

जब काबे में कुफ्र होगा

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

आर्यसमाज आर्यसमाज रह कर ही देश धर्म की सेवा कर सकता है। हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं का यदि आर्यसमाज में भी समावेश हो जाए तो फिर आर्यसमाज का मूल स्वरूप ही नष्ट हो जायगा। लेकिन लगता है कि आर्यसमाज के वर्तमान कर्णधार इस सत्य से पूर्ण रूप से आंख मूंदे हुए हैं और आर्यसमाज के अस्तित्व को हिन्दू धर्म की नमक की खान में विलीन करने का आत्मघाती कार्य कर रहे हैं।

पौराणिक मान्यताओं के प्रति श्रद्धालु ये लोग प्रच्छन्न पौराणिक ही हैं। जब आर्यसमाज के संगठन के सर्वोच्च पदों पर ही पौराणिक मान्यताओं के समर्थक आसीन हो जाए तब आर्यसमाज का भविष्य क्या होगा इसकी कल्पना आप कर सकते है ?

अभी कुछ माह पूर्व ही आर्यसमाज के पुनर्गठन के लिए गठित उपसमिति की सिफारिश पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वीकार किया कि आर्यसमाज में प्रविष्ट होने वाले प्रत्येक व्यक्ति का निम्न लिखित प्रण लेना होगा— **मैं ईश्वर के प्रतीक स्वरूप किसी मूर्ति या जड़ वस्तु अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं करूंगा ना ही मृतक श्राद्ध या स्थान विशेष को तीर्थ मानूंगा तथा किसी अवैदिक या पौराणिक विधि विधान को नहीं मानूंगा** अर्थात वेद विरुद्ध आचरण नहीं करूंगा। मैं जन्मगत जाति-पाति या छूआछूत को नहीं मानूंगा। मैं किसी भी सम्प्रदाय विशेष या जाति संगठन का सदस्य या अधिकारी नहीं बनूंगा तथा आर्यसमाज के उपनियमों में वर्णित उपनियमों का पालन करूंगा। यदि मैं इनके विपरीत आचरण करूंगा तो मेरी आर्य सभासदी समाप्त कर दी जाए। उपसमिति की उक्त प्रण संबंधी सिफारिश अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है इस प्रण से हिन्दू धर्म और आर्य समाज की पृथकता का उत्तर होना है और आर्यसमाज के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी भी मिलती है। वस्तुत इस प्रण को पूरी तरह लागू करके ही वैदिक धर्म और आर्य समाज के मौलिक स्वरूप को अक्षुण्ण रखा जा सकता है परन्तु ऐसा लगता है कि आर्य समाज के वर्तमान नेता ही आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान नहीं है फिर साधारण आर्य समाज से क्या अपेक्षा की की जा सकती है ?

गत कई माह पूर्व अनूप संदेश व दयानन्द संदेश में एक समाचार प्रकाशित हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने अपनी स्वर्गीय माता की तेरहवीं की। समाचार में कहा गया था कि इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती भी उपस्थित थे। हमारे लिए यह एक अप्रत्याशित समाचार था।

हमने समाचार की सत्यता जानने हेतु श्री इन्द्रराज जी व स्वामी जी को पत्र लिखे। हमारे पत्र के उत्तर में स्वामी जी ने तो मात्र इतना लिखा कि उन्होंने हमारे पत्र को जानकारी देने के लिए श्री इन्द्रराज जी के पास भेज दिया है। जबकि श्री इन्द्रराज का 8 अगस्त का पत्र हमें मिला जिसमें कहा गया था कि मैंने कोई वेद विरोधी कार्य नहीं किया। यदि किसी को एतराज हो तो सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा के सम्मुख उपस्थित करे।

श्री इन्द्रराज के उक्त उत्तर से हम संतुष्ट नहीं हुए और उनसे इस संबंध में पूर्ण जानकारी की मांग करते हुए हमने उन्हें दूसरा पत्र लिखा जिसमें हमने इस तथ्य का

(शेष पृष्ठ चार पर)

स्वामी आनदबोध सरस्वती के नाम हमारा पत्र

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान नई दिल्ली–2

माननीय स्वामी जी

सादर नमस्ते।

आशा है कि आप प्रभु कृपा से स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। सूचनार्थ निवेदन है कि 'दयानन्द संदेश' व 'अनूप संदेश' आदि पत्रों में आर्य प्रतिनिधि सभा (उ प्र) के प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा आपकी उपस्थिति में अपनी माताजी की तेरहवीं करने का समाचार प्रकाशित हुआ है।

निश्चित रूप में प्रत्येक आर्य समाजी के लिये यह खेद का विषय है।

हमारे अनेक पाठकों से इस संबंध में लिखने के आग्रह पत्र हमें प्राप्त हुए हैं लेकिन हम चाहते हैं कि लिखने से पूर्व आपसे भी जानकारी कर लें।

कृपया यथा शीघ्र संबंधित जानकारी देकर सहयोग करें।

सादर। भवदीय
(वीरेन्द्र कुमार आर्य)
सम्पादक

स्वामी आनदबोध जी का उत्तर

श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य,

नमस्ते।

आपका 22 7 88 का पत्र प्राप्त हुआ। मैंने आपका पत्र श्री इन्द्रराज जी के पास आपको समुचित जानकारी देने के लिए भिजवा दिया है। सूचनार्थ।

भवदीय
(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
प्रधान

श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
आर्यसमाज कैसरगंज अजमेर।

निदेशक दत्तात्रय आर्य प्रधान सम्पादक रासासिंह

गीत

ओ आँधियो ! तुम न सनसनाओ
निशक हमने दिया जलाया ।
प्रभजनो की चुनौतियो पर ।
पवन झकोरो के पालने मे, झुलाई नव ज्योति की कलायें ।
प्रकाश पल-पल प्रखर हुआ है, घिरी है जब-जब प्रलय घटायें ।
ओ बिजलियो ! तुम न तमतमाओ,
खुली डाल पर, नीड बनाया--
अनल घनो की चुनौतियो पर !
अपार विष हम, पचा चुके है, धरा को उससे बचा चुके हैं,
हमारे कुरुक्षेत्र को पता है, प्रलय स्वयम्वर रचा चुके हैं ।
कुवृत्तियो ! तुम न कुनमुनाओ,
अनय का हमने नशा उतारा,
अधम जनो की चुनौतियो पर ।
कुशासनो के पते नहीं हैं, मिटा असुरता का दर्प सारा ।
मिला धूल क्रूरता कस की मनुष्यता को सदा उबारा,
ओ विषधरो ! तुम फनफनाओ,
कन्हैया को नाचना सिखाया,
उठे फणो की चुनौतियो पर,
हमारा पथ तो प्रकाश का है, ध्येय तिमिर के विनाश का है,
सभी का ममत्व लिए हृदय मे, हमारा हर पग विकास का है,
हमे न रण दुदुभी सुनाओ,
नये सृजन का बिगुल बजाया,
प्रलय क्षणो की चुनौतियो पर,

—लाखनसिंह भदोरिया 'सौमित्र'

सम्पादकीय--

"यादें आती हैं आज जियालाल जी की"

अजमेर के लौह पुरुष, दयानन्द कालेज, अजमेर के सस्थापक तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह एव पजाब मे हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे स्पेशल रेल गाडियो द्वारा हजारो सत्याग्रहियो को भेजने वाले कर्मवीर पण्डित जियालाल जी का जन्म दिवस प्रतिवर्ष श्रावणी उपाकर्म पर्व पर आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान मे समाज भवन में तथा समाज के अन्तर्गत सचालित शिक्षण सस्थाओ मे समारोह पूर्वक मनाया जाता है । कर्मवीर पण्डित जियालाल जी का जीवन सार्वजनिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है । वे जब तक जीवित रहे समाज और देश के लिए निरन्तर सघर्षरत रहते हुए जिये । यही कारण था कि उनका जीवन सेवा और सघर्ष का प्रतीक बन गया था ।

कर्मवीर पण्डित जियालाल जी का जन्म सन् 1889 ई मे श्रावणी (रक्षा बन्धन) के ही दिन बुलन्दशहर, उत्तरप्रदेश मे हुआ था । सचमुच पवित्र रक्षा बन्धन का दिवस पण्डित जी के जीवन मे हिन्दू आर्य जाति की रक्षा करने मे सार्थक होकर चरितार्थ हो गया । जिस बालक ने रक्षा बन्धन के दिन जन्म लिया उसने जाति और धर्म की रक्षा मे अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ।

19 दिसम्बर, 1961 ई को कर्मवीर पण्डित जियालाल जी के निधन से अजमेर के सार्वजनिक जीवन और सेवाभाव का एक युग समाप्त हो गया ।

"हजारो वर्षों तक नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है
बडी मुश्किल से होता है चमन मे कोई दीदावर पैदा"

1912 मे जियालाल जी ने कुछ मारवाडी युवको के साथ [illegible] प्रवेश किया था और तब से अपनी मृत्यु तक के पचास वर्ष के लम्बे समय तक अजमेर के बेताज बादशाह बने रहे, उनका ध्येय था कि

"जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है
मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं ।"

यह पचास वर्ष का इतिहास उनके अदम्य उत्साह, तजस्वी व्यक्तित्व असाधारण लगन और अनुकरणीय आत्म समर्पण का एक ऐसा इतिहास है जिसका उदाहरण अजमेर के सार्वजनिक जीवन मे मिलना कठिन है कई लोग इतनी बडी "सेवा" के बाद म उसके बदले मे बहुत बडा "मेवा" (प्रतिफल) भी प्राप्त करते है । परन्तु बाबूजी के उपनाम से सुपरिचित कर्मवीर पण्डित जियालाल जी ने अपने घर-बार-परिवार सब कुछ खोकर अपना सम्पूर्ण जीवन केवल मात्र अपने आपको 'दयानन्दी' और 'सच्चा आर्य' बताकर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति अर्पित कर दिया । वे स्वय रेलवे मे एक साधारण लिपिक के रूप म नौकरी करके सेवानिवृत्त हुए परन्तु नौकरी के साथ-साथ उन्होने निर्भय और निस्वार्थ रहकर दीन-दुखियो की जन-सेवा का विलक्षण कार्य किया । लाखों रुपये उन्होने संस्थाओ के लिये एकत्रित किये । पर व्यक्तिगत हित के लिए कभी सार्वजनिक पैसा खर्च नही किया ।

कट्टर अहिंसा और साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की महात्मा गांधी की नीति से उनका मतभेद था । परन्तु फिर भी एक निर्भीक आर्य समाजी के नाते देश की स्वाधीनता के राष्ट्रीय आदोलन के साथ सहानुभूति रखते हुए निष्कपट और दृढ स्वभाव के कारण राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ को सक्रिय सहयोग प्रदान करते थे । छुआछूत उन्मूलन सबधी आर्य समाज के कार्यक्रम मे कर्मवीर पण्डित जियालाल जी ने आनासागर के किनारे बडे-बडे विशाल सार्वजनिक प्रीतिभोजो का आयोजन किया जिनमे ब्राह्मण और भगी को एक साथ बैठाकर दस-दस हजार तक की सख्या वाले सभी वर्णों के व्यक्तियो को एक पक्ति मे भोजन करवाया । 1939-40 म निजाम हैदराबाद के विरुद्ध छेडे गये सत्याग्रह मे स्पेशल ट्रेनें भरकर सत्याग्रहियो को प्रचार-प्रसार की धूम मचाते हुए हैदराबाद भेजा । 1940 मे ही द्वितीय महायुद्ध मे उत्पन्न अनेक कठिनाईयों के बावजूद तथा अजमेर के आर्य समाजी क्षेत्रो मे दलबन्दी अपनी चरम सीमा पर होते हुए तथा कई विरोधो के बावजूद अपनी अटूट लगन और निष्ठा से जियालाल जी ने दयानन्द कालेज स्थापित किया । देश विभाजन के समय अनेक साम्प्रदायिक दगो के दौरान हिन्दुओ के जान-माल की हिफाजत करने वाले दीन-दुखियो की मदद करने वाले, अनाथ और विधवाओ को शरण देकर पालन-पोषण करने वाले अपना सब कुछ देकर भी परोपकार का व्रत निबाह करने वाले कर्मवीर पण्डित जियालाल जी ही थे । उनका जीवन युवको तथा नई पीढी के लोगो के लिए अत्यन्त प्रेरणा दायक उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

हकीकत तो यह है कि कर्मवीर पण्डित जियालाल जी जैसा प्रखर, [illegible] जोशीला, कर्त्तव्य परायण व्यक्ति तथा निडरता एवं साहस में बेजोड नेता राजस्थान मे अब तक न हुआ और न निकट भविष्य मे ऐसा कोई दिखाई देता है ।

उनके जन्म दिवस पर श्रद्धानत होकर भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं ।

—रासासिंह

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमें वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके । इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धाता का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणो विचारो और मान्यताओ का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तको और उनके अनुयायी विद्वानों द्वारा लिखी गई है । उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्तिपूजा के विरुद्ध, इस्लाम विरुद्ध

(शेष पृष्ठ चार पर)

आर्य समाज और हरिजनों का मंदिर प्रवेश

विगत जुलाई माह में स्वामी अग्निवेश द्वारा नाथद्वारा के प्रसिद्ध पुष्टिमार्गीय (श्रीनाथ जी के) मंदिर में हरिजनों को साथ लेकर मूर्तियों के दर्शनार्थ जाने के असफल प्रयास की ओर सभी देशवासियों का ध्यान आकृष्ट हुआ था। अन्ततः राजस्थान सरकार ने स्वामीजी को नाथद्वारा पहुंचने के पहले ही गिरफ्तार कर लिया और राज्य से बाहर कर दिया। उधर नाथद्वारा, उदयपुर, कांकरोली तथा अन्य निकटवर्ती स्थानों के जन समुदाय ने स्वामी अग्निवेश के इस अभियान का पुरजोर विरोध किया। उनके जबरन मन्दिर प्रवेश के विरोध में बन्द आयोजित हुए, जुलूस निकाले गए, हड़ताल की गई और प्रतिरोध का जबरदस्त वातावरण बनाया गया। दूरदर्शन पर सरकार समर्थक जो बयान आये तथा नाथद्वारा मन्दिर से सम्बद्ध लोगों के जो वक्तव्य प्रसारित किए गए वे भी नितान्त एकपक्षीय तथा दोषपूर्ण ही थे। अब जबकि पिछले दिनों एक बार और मंदिर के महन्त के हाथों तुलसी माला और डोरा पहना कर नाथद्वारे के हरिजनों को श्रीनाथजी के दर्शन कराने की जो मिलीभगत राजस्थान सरकार के संरक्षण में की गई है उसके कारण भी इस सारी समस्या पर विस्तारपूर्वक किन्तु आर्यसमाज की दृष्टि से विचार किया जाना आवश्यक है।

प्रथम बात तो यह है कि मूर्ति पूजा जैसे भ्रष्ट आचरण को प्रोत्साहन देने वाले मन्दिरों का आर्यसमाज की दृष्टि से न तो कोई महत्त्व है और न औचित्य। हम बात को कदापि स्वीकार नहीं करते कि हरिजनों के मंदिरों में जाने से उनमें धार्मिक या आध्यात्मिक भावों की अभिवृद्धि होगी। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में मूर्ति पूजा से उत्पन्न १६ हानियां तो ऐसी गिनाई हैं जो हमारे देश की आर्थिक और राष्ट्रीय बरबादी का कारण बन गई हैं। ऐसी स्थिति में हरिजनों को इन्हीं महन्तों, पुजारियों और धर्म के नाम पर व्यवसाय करने वाले पण्डों की शरण में जाने के लिए प्रेरित करना अथवा इसके लिए सत्याग्रह अभियान चलाना आर्य समाज के मौलिक मन्तव्यों के नितान्त प्रतिकूल है।

हमारे मित्र शायद यह कहें कि चाहे आर्यसमाजी होने के कारण हमें मन्दिरों में जाने में स्वयं की कोई दिलचस्पी न हो किन्तु एक स्वतन्त्र देश के नागरिक के नाते और संविधान में प्रदत्त अधिकारों को प्राप्त करने की दृष्टि से यदि हरिजन मन्दिर प्रवेश करना चाहें तो क्या हमारा फर्ज नहीं बनता कि हम उनकी मदद करें तथा उनके मन्दिर प्रवेश अभियान का नेतृत्व करें। यहां पुनः हमें आर्य समाजी दृष्टि से ही सोचना पड़ेगा। यदि मन्दिरों में प्रवेश भारत के एक नागरिक का मौलिक अधिकार है और हमारे दलित भाई भी संविधान प्रदत्त अपने इस अधिकार का उपभोग करना चाहते हैं और वे मंदिरों के मालिकों और अर्चकों को इसमें बाधक पाते हैं तो उनके लिये न्यायालय का दरवाजा खुला है। संविधान में प्रदत्त नागरिकों के मौलिक अधिकारों को प्राप्त कराना सरकार और न्यायालय का काम है। मन्दिर प्रवेश के इच्छुक हरिजनों को चाहिए कि उनके प्रति होने वाले भेदभाव पूर्ण व्यवहार की वे पुलिस में शिकायत करें और वैधानिक लड़ाई लड़ें।

एक अन्य विचारणीय प्रश्न यह भी है कि प्रत्येक मत सम्प्रदाय के धर्म स्थानों में भिन्न भिन्न मर्यादाएं, अनुशासन और नियम लागू हैं। यथा गुरुद्वारे में प्रवेश करते समय आपका सिर अनिवार्यतः ढका होना ही चाहिए। काशी विश्वनाथ मंदिर के बाहर शिला पट्ट पर लिखा है अन्य [illegible] आर्य (हिन्दू) धर्म से व्यतिरिक्त अन्य मतावलम्बी वहां प्रवेश नहीं कर सकते। अर्थात् ईसाई एवं मुसलमानों का प्रवेश विश्वनाथ मन्दिर में कदापि नहीं हो सकता। पारसियों की अग्यारी (अग्निवेदी और पूजा स्थली) तो गैर पारसियों के लिये सर्वथा अगम्य ही है। कोई भी पारसी भिन्न व्यक्ति अग्यारी में प्रविष्ट नहीं हो सकता। ऐसी ही मर्यादाओं का बहाना नाथद्वारा के महन्त ने भी ले रक्खा है। तभी तो उसने कहा कि कोई भी हरिजन जो विधिवत पुष्टि मार्ग की दीक्षा लेकर तुलसी माला या डोरा धारण कर लेगा उस मंदिर में प्रविष्ट होने का पूरा अधिकार है। किन्तु हरिजनों को तुलसी डोरा लेने की अनिवार्य शर्त लगाने वाला वल्लभमत का यह आचार्य भूल जाता है कि श्रीनाथजी के मंदिर में नित्य प्रति जो हजारों दर्शनार्थी सवर्ण हिन्दू जन, आर्यसमाजी, शैव, शाक्त, नास्तिक आते हैं क्या वे सभी तुलसी माला लेकर पहले पुष्टि मार्ग की दीक्षा लेते हैं और तब मंदिर में प्रविष्ट होते हैं? यदि अन्य दर्शनार्थियों के लिये तुलसी डोरा का कोई बंधन नहीं है तो केवल हरिजनों के लिये ही ऐसा बंधन क्यों? सच तो यह है कि हिन्दू धर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्दिर में अपने आपको हिन्दू कहने वाला व्यक्ति प्रवेश पाने का अधिकार है। अतः दूरदर्शन पर जो दो वक्तव्य वल्लभ सम्प्रदाय के नेताओं द्वारा दिलाये गये वे भारत सरकार की घोषित नीति के नितान्त प्रतिकूल थे जिनमें कहा गया था—

(१) नाथ द्वारा के हरिजन स्वयं मंदिर की मर्यादा की कद्र करते हैं इसलिये वे मन्दिर प्रवेश के लिये कभी आग्रह ही नहीं करते।

(२) पुष्टिमार्गीय परम्परा के अनुसार यदि हरिजन भी तुलसी माला लेकर तथा आचार्य से विधिवत दीक्षा ग्रहण कर मंदिर में आना चाहें तो आ सकते हैं।

स्पष्ट है कि उपरोक्त दोनों ही बातें मूल समस्या का समाधान नहीं करतीं। यदि मंदिर प्रवेश के पहले आचार्य से दीक्षा लेना अनिवार्य हो तब तो वह प्रत्येक के लिये लाजमी होगा, केवल हरिजन ही इस बंधन में क्यों बंधेंगे। अस्तु अब इस समस्या पर एक अन्य दृष्टि से विचार करें। क्या स्वामी अग्निवेश को इस [illegible] संगठनगत नीतियों का भी सहयोग या संरक्षण प्राप्त था या नहीं। अतीत काल में आर्यसमाज ने जो भी देशव्यापी आन्दोलन चलाये और सत्याग्रह किये उन्हें इस संस्था की शिरोमणि सभा की सहमति और आशीर्वाद प्राप्त रहा, चाहे हैदराबाद का सत्याग्रह हो या पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन। ये सभी अभियान आर्यसमाज ने सामूहिक रूप से चलाये इसलिये इनमें हजारों लाखों की संख्या में आर्य समाजियों ने भाग लिया। किन्तु स्वामी अग्निवेश का आन्दोलन तो स्वयं उन्हीं के द्वारा संचालित था। इसके औचित्य या अनौचित्य की जांच के लिये उन्होंने आर्य समाज के शीर्षस्थ नेताओं, विद्वानों और नीति निर्माताओं से परामर्श करने तक की आवश्यकता नहीं समझी। इसी का परिणाम था कि उदयपुर की आर्य समाज ने उनके इस कार्य का विरोध किया और राजस्थान के मुख्य मन्त्री को यह कहने का अवसर दिया कि स्वामी अग्निवेश के साथ तो उनकी अपनी संस्था आर्य समाज भी नहीं है। वस्तुतः व्यक्ति केन्द्रित आन्दोलन की नियति यही होती है।

यदि स्वामी अग्निवेश सार्वदेशिक सभा का मार्ग दर्शन और सहयोग की आकांक्षा रखते तो प्रथम तो उन्हें सही ढंग की सलाह मिलती और यदि आर्य समाज संस्थागत रूप में हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को उचित ठहराते हुए इस अभियान को चलाने की स्वीकृति देता तो यह आन्दोलन एक देशव्यापी विराट आन्दोलन का रूप ले लेता और तब उससे इतनी सस्ते ढंग से निपटना राजस्थान सरकार के लिये भी कठिन होता जैसा उसने स्वामी अग्निवेश और उनके जत्थे के साथ किया। जब एक के बाद एक आर्य समाज के जत्थे नाथ द्वारा की ओर बढ़ते तो न तो महन्त या उसके पिछलग्गुओं की ही हिम्मत होती कि वे उनका रास्ता रोकते और न सरकारी मशीनरी का ही इन जत्थों को राज्य से निष्कासित करने का साहस होता।

किन्तु मैं तो इस समस्या को दूसरे पहलू में ही देखना चाहता हूं। आर्यसमाज के लिये तो यही उचित है कि वह अपने दलित भाइयों को ईश्वर के निर्गुण निराकार रूप की उपासना करने के लिये ही प्रेरित करे, उन्हें संध्या गायत्री जप तथा [illegible] चार आडम्बर और दुराचार के अड्डे तुल्य मन्दिरों में उन्हें ले जाना हमें कदापि इष्ट नहीं है और वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिर तो सदा से ही बदनाम रहे हैं। तन मन धन गोसाईं जी के अर्पण कराने वाले इस सम्प्रदाय के महन्तों का इतिहास यदि जानना चाहें तो बम्बई के महाराज लाइबल केस के विवरण को पढ़ें या स्वामी श्रद्धानन्द लिखित वल्लभ कुल छलकपट दर्पण पढ़ें। इन्हीं व्यभिचार के केन्द्र स्थलों को लक्ष्य में रखकर राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त को भी भारत भारती में लिखना पड़ा था—

भक्तस्त्रियां हैं गोपियां गोस्वामि ही गोपाल है।

—डा. भवानी लाल भारतीय

(शेष पृष्ठ 1 का)

अब काटे मैं

जानकारी माँगी कि आपने तेरहवी की है या नहीं जब तक यह मालूम नहीं होता हम धर्मार्य सभा के पास कैसे जा सकते हैं।

हमारे उक्त पत्र के उत्तर में श्री इन्द्रराज ने जो लिखा उससे यह पूर्णतया स्पष्ट हो गया कि उन्होंने अपनी स्वर्गीया माताजी की तेरहवी की। (देखें बाक्स श्री इन्द्रराज जी का पत्र)

आखिर माताजी के स्वर्गवास के हवन (ग्यारह या बारह) दिन के अंतराल के बाद शान्तियज्ञ के आयोजन व 200 आदमियों को न्यौता देने का अर्थ क्या है?

अब तेरहवी-मृतक श्राद्ध आदि के विषय में ऋषि दयानन्द जी महाराज के क्या विचार हैं इन्हें देखिये। 'संस्कार विधि' के अन्त्येष्टि प्रकरण में ऋषिवर कहते हैं

प्रश्न—जो गरुड़ पुराण आदि में दशगात्र, द्वादशाह, सपिण्डीकर्म मासिक वार्षिक गयाश्राद्ध आदि क्रिया लिखी है, क्या ये सब असत्य हैं?

उत्तर—हां अवश्य मिथ्या है क्योंकि वेदों में इन कर्मों का विधान नहीं है इसलिए अकर्त्तव्य हैं। और मृतक जीव का सम्बन्ध पूर्व सम्बन्धियों के साथ कुछ भी नहीं रहता न जीते हुए सम्बन्धियों का, वह जीव अपने कर्म के अनुसार जन्म पाता है।

—अन्त्येष्टि प्रकरण में ही ऋषि लिखते हैं

'तत्पश्चात् जब तीसरा दिन हो तब मृतक का कोई सम्बन्धी श्मशान में जाकर, चिता से अस्थि उठा के, उस श्मशान भूमि में ... आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है, क्योंकि पूर्व 'भस्मान्तं शरीरम्' यजुर्वेद के मन्त्र के प्रमाण से स्पष्ट हो चुका है कि दाहकर्म और अस्थि सञ्चयन से पृथक् मृतक के लिये दूसरा कोई भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। हां यदि वह सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरे पीछे उसके सम्बन्धी वेद विद्या वेदोक्त धर्म का प्रचार अनाथ पालन वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिए चाहे जितना धन प्रदान करें बहुत अच्छी बात है।"

जबकि उपनिषद् यह उद्घोष करते हैं कि जीवात्मा 'तृणजलायुका' न्याय से अपने लिए उत्तर शरीर का चयन करने के उपरान्त ही पूर्व शरीर का परित्याग करता है—अर्थात् जीव के पूर्व शरीर छोड़ने और उत्तर शरीर ग्रहण करने में कोई अन्तराल नहीं होता तो—मरणोपरान्त बन्धु-बान्धवों के द्वारा तदर्थ किए हुए कर्म का फल उसे नहीं मिलता—और जब जीव शरीर का परित्याग कर ही देता है तो उसके भस्मावशेष-हड्डियां आदि का उससे क्या सम्बन्ध हो सकता है?

उपर्युक्त शास्त्रोक्त निर्देशों के आलोक में श्री इन्द्रराज जी द्वारा किया गया तेरहवी नामक कर्मकांड वेद विरोधी और आर्यसमाज सिद्धांतों के विपरीत सिद्ध होता है। तेरहवी-मृतक श्राद्ध करने व ऐसे आर्यसमाजियों पर लिखी स्व प नाथूराम जी शंकर की एक व्यंग्य कविता की दो पंक्तियों को उद्धरित कर हम अपनी लेखनी को विराम देंगे—

दो मतों को मार खाने
इनमें
घी घना फूंके चिता में तेरहवीं
करते रहें।

(शेष पृष्ठ 2 का)

वैदिक धर्म.

कबीर तथा नानक और तेरापंथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताएं। इसी प्रकार जात-पात, छुआछूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध में उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारों का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ में प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबंधों और लेखों के लिए उचित पारिश्रमिक निश्चित किया गया है। जो विद्वान इस कार्य में सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रेय आर्य, निदेशक, दयानन्द शोधपीठ दयानन्द कालेज अजमेर से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

—मन्त्री

आर्यसमाज शाहपुरा का निर्वाचन

संरक्षक—राजा सुदर्शनदेव आर्य
प्रधान—श्री रामस्वरूप वैसी
मन्त्री—श्री अम्बालाल आर्य सिद्धान्त भास्कर
कोषाध्यक्ष—श्री सत्यनारायण छीपा
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामजीवन छीपा

श्री इन्द्रराज जी को हमारा पत्र

प्रिय महोदय
सप्रेम नमस्ते।

सूचनार्थ निवेदन है कि 'दयानन्द सन्देश' 'व प्रभुत सन्देश' आदि पत्रों में आप द्वारा अपनी माताजी की "तेरहवी" करने का समाचार प्रकाशित हुआ है निःसन्देह आप जैसे आर्य समाजी व्यक्ति द्वारा यह सिद्धान्त विरुद्ध कृत्य किया जाना अत्यंत ही खेद का विषय है।

हमारे पाठकों से इस विषय में लिखने के निरन्तर पत्र आ रहे हैं परन्तु हम चाहते हैं कि हम लिखने से पूर्व आपसे वास्तविकता की जानकारी कर लें।

कृपया यथा शीघ्र पत्रोत्तर देकर सहयोग करने का कष्ट करें।

भवदीय
(वीरेन्द्र कुमार आर्य) सम्पादक

श्री इन्द्रराज, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

श्री इन्द्रराज जी का उत्तर

श्रीयुत वीरेन्द्र कुमार जी आर्य, 8.8 88
सम्पादक
आर्य पुनर्गठन अजमेर।

श्रीमन् नमस्ते। आप का पत्र मिला। कतिपय विरोधी लोगों का षड्यन्त्र मुझे बदनाम करने के लिए है। मैंने कोई वेद विरोधी कार्य नहीं किया। पूज्या माताजी के निधन पर इनमें से किसी ने सहानुभूति के रूप में दो शब्द भी नहीं लिखे। परन्तु अब उन की अस्थियों से खिलवाड़ करना चाहते हैं। सार्वदेशिक सभा में धर्मार्य सभा गठित है। उस में शिकायत लिख कर भेज। जो निर्णय होगा सबके सामने आ जाएगा। मुझे भी वह सर्वथा मान्य होगा। परन्तु यदि मुझे बदनाम करना ही अभिमत है तो उनकी इच्छा। वे कर मुझे कोई प्रतिरोध नहीं करना है।

सूचनार्थ। भवदीय
(इन्द्रराज) प्रधान

श्री इन्द्रराज जी को हमारा द्वितीय पत्र

प्रिय महोदय 12 8 88

आपका 8 अगस्त का पत्र मिला। खेद है कि आपके पत्र से हमें संतुष्टि नहीं हुई।

सूचनार्थ निवेदन है कि धर्मार्य सभा में भी तभी जाया जा सकता है, जबकि इस सम्बन्ध में हम इस तथ्य की जानकारी हो कि आपने अपनी माताजी की मृत्यु पर तेरहवी नामक रस्म कर्मकाण्ड का आयोजन किया या नहीं।

कृपया इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी देकर सहयोग करें।

भवदीय
(वीरेन्द्र कुमार आर्य) सम्पादक

श्री इन्द्रराज जी का उत्तर

श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य 20 8 88
सम्पादक आर्य पुनर्गठन।

श्रीमन् नमस्ते। आप का पत्र मुझे आज मिला। जो किया गया वह माताजी के निधनोपरान्त उसकी प्रारूप साथ सलग्न है। इस अवसर पर जिन्होंने श्रद्धांजलियां दीं उनके नाम निम्नलिखित हैं —

(1) श्री मुक्त वेद प्रकाश जी सेवा निवृत्त प्राचार्य (मेरे मौसाजी तथा मेरे गुरुजी)
(2) श्री मास्टर सुन्दर लालजी (नगर के सम्भ्रान्त नागरिक)
(3) श्री स्वामी विवेकानन्दजी (आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम)
(4) श्री स्वामी आनन्दबोधजी (प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली)

जो बाहर से लगभग 200 सम्बन्धी आए उन्हें भोजन करवाया गया। शान्तियज्ञ में नगर के हमारा नागरिक उपस्थित थे।

भवदीय
(इन्द्रराज)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स अजमेर के लिए सक्सेना प्रिंटर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

वेद ही समस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म, हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 बृहस्तिवार 15 सितम्बर 1988 अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। भाद्रपद शु 4 सवत 2045

अक 17 प स -43338/84 II अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥ वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

हिन्दू धर्म की अराजकता उसकी निर्बलता का कारण

बहुदेवतावाद और मूर्ति पूजा हिन्दू एकता में बाधक

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

हिन्दू समाज के समर्थक और अनुयायी अक्सर उसकी उदारता पर अभिमान और गौरव अनुभव करते है। उनका कहना है कि हिन्दू धर्म मे अनेक मत-पन्थ देवी-देवता और मन्दिर इस बात के प्रमाण हैं कि वह एक प्रकार से धर्म निरपेक्षता का पक्ष पोषक है और अपने भीतर धार्मिक भिन्नताओ को उदारता पूर्वक स्वीकार करता है।

अनेक देवी-देवताओं के सम्बन्ध मे साधारण हिंदू उनके पृथक अस्तित्व को स्वीकार करता है किन्तु उसके कुछ दार्शनिक और आधुनिक समर्थक ये कहकर एकेश्वरवाद को अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करते हैं कि ये सब देवी-देवता एक ही ईश्वर के स्वरूप या भिन्न रूप हैं और उनकी उपासना एक ही लक्ष्य के अलग-अलग साधन है। जिसे हमारे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ व विश्व हिन्दू परिषद के भाई केवल भिन्न पूजा पद्धति कहकर हिन्दू धर्म की एकता प्रदर्शित करना चाहते हैं।

किन्तु हिन्दू धर्म ग्रन्थो और विशेषकर पुराणो के अध्ययन से स्पष्ट है कि ये सब दलीले अवास्तविक है और केवल आधुनिक विचारधारा की पृष्ठ भूमि मे हिन्दू धर्म की अराजकता और विभिन्नता को गलत सिद्ध करने के असफल प्रयत्न हैं। वस्तुत आधुनिक युग मे ऋषि दयानन्द ही ऐसे पहले महापुरुष थे जिन्होने वेदो के आधार पर एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया और वरुण इन्द्र आदि लगभग 100 नामो से हिन्दू जिन देवी-देवताओ की उपासना करते हैं, उन्हे एक ही ईश्वर के भिन्न-2 गुणवाचक नाम हैं ऐसा सिद्ध किया। स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द के इसी तर्क के बाद पौराणिक हिंदुओ ने और विशेषकर आधुनिक समर्थको ने भी ये सब बात कहना प्रारम्भ कर दिया। किंतु व्यवहार मे हम स्पष्ट देखते है कि हिन्दू धर्म के भिन्न-2 अनुयायी अपने अपने देवता और मन्दिरो को एक ही ईश्वर के प्रतीक नही समझते हैं अपितु उनका पृथक अस्तित्व मानते है। यही कारण है कि जात-पात छुआछूत आदि अपनी सामाजिक भिन्नताओ के अतिरिक्त उनकी ये धार्मिक मान्यताए भी एक सगठन मे बाँधने मे सर्वथा असमर्थ सिद्ध हुई। आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की इसीलिए दृढ मान्यता थी कि शास्त्रीय और तार्किक आधार के अतिरिक्त व्यवहारिक दृष्टि से भी हिन्दू तब तक सगठित और एक नही हो सकते जब तक उनकी देवी-देवताओ, मूर्तियो सबधी ये अनेक भिन्नताए दूर नही होती। जो उन्हे एक राष्ट्र तो क्या एक सगठित धर्म और समाज बनाने मे सर्वथा बाधक हैं।

मेरी स्वय की भी सदैव यह दृढ मान्यता रही है कि हिंदुओ की मूर्ति-पूजा और उससे सबधित अन्य धार्मिक अधविश्वासो और जात-पात छुआछूत आदि सामाजिक कुरीतियो का निराकरण किए बिना हिन्दू राष्ट्र तो क्या हिंदुओ की एकता और किसी सगठन तक का निर्माण असम्भव है। यह कार्य एक स्वय गतिशील और प्रभावशाली आर्य समाज जैसे क्रान्तिकारी सगठन द्वारा ही किया जा सकता है। इसीलिए इस सम्बध मे मेरा यह कहना है कि स्वामी दयानद द्वारा निर्देशित सार्वभौम वैदिक धर्म के सिद्धांतो को पूर्ण रूप मे अपनाकर ही हम हिन्दू एकता के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है।

पुराणो के प्रमाण

'दयानद सदेश' के सितम्बर, 1988 के अक मे वाराणसी के डा रामकृष्ण आर्य ने पुराणो से कुछ प्रमाण देकर ये सिद्ध कर करने का प्रयत्न प्रयत्न किया है कि भारत मे हिन्दुओ के विघटन का मुख्य कारण ये ही पुराण हैं। और उसमे प्रतिपादित अनेक देवी देवताओ की मूर्तियो की पूजा हमारे देश और धर्म का पतन का मुख्य कारण है। इतना ही नही इन पौराणिक ग्रन्थो से यह स्पष्ट होगा कि शिव, विष्णु आदि एक ईश्वर के ही नाम न होकर न केवल पृथक या अलग देवता है अपितु उनके अनुयायी एक-दूसरे के घोर विरोधी और निदक भी हैं। स्पष्ट है कि जब हिन्दुओ के उपास्य देवताओ का एक दूसरे से इतना वैमनस्य-विरोध है तो उनके अनुयायी किस प्रकार सगठित और एक हो सकते हैं?

पुराणो के प्रमाण निम्न है—

अथ मे दक्षिणे पार्श्वे ब्रह्मलोक पितामह॥ वामे पार्श्वे च मे विष्णुर्विश्वात्मा हृदयोद्भव॥

(लिंग पु० 19/2, 3)

अर्थ—(महादेवजी कहते है कि) मेरे दाहिने पार्श्व (पसली) से लोक पितामह ब्रह्मा तथा बाये पार्श्व पसली से विश्व के आत्मा विष्णु उत्पन्न हुए।

मन्नाभि-पकजात् जात पुरा ब्रह्म चतुर्मुख। तत्ललाट समुत्पन्नो भगवान् वृषभध्वज॥

(लिंग पु० पूर्वार्द्ध 96/31)

अर्थात नरसिंहजी (जो विष्णु के साक्षात अवतार थे) कहते है कि मेरी नाभि मे कमल, कमल से ब्रह्मा तथा ब्रह्मा के मस्तक से शकर पैदा हुए।

प्रात काले शिव दृष्ट्वा निशि पाप विनश्यति। आजन्म कृत मध्याह्ने साय सप्त जन्मनाश॥

अर्थात् शिवजी (लिंग) का प्रात दर्शन करने पर रात भर के, दो पहर मे दर्शन करने पर जिन्दगी भर के तथा शाम को देखने पर जन्म के पाप दूर हो जाते हैं।

सर्वेषामपि अघवता, इदमेव सुनिष्कृतम्। नाम व्याहरण विष्णोर्यतस्तद्विषयामति। (भागवत् पु 6।2।10)

अर्थात सभी प्रकार के पाप करने वाले पापियो के पापो का विनाश विष्णु के नाम लेने मात्र से हो जाता है।

यदि पा परत क्रूर स्वाश्रमाचारवर्जित:। वैष्णवाना सहस्रेभ्य शिवभक्तो विशिष्यत॥ सौर पु 11।9

श्वपचोऽपि मुनिश्रेष्ठ शिवभक्तो द्विजाधिक। शिवभक्ति विहीनस्तु द्वि-

(शेष पृष्ठ 3 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य प्रधान सम्पादक रासासिह सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य ☎ कार्या 21010

सम्पादकीय—

हिन्दी कब तक उपेक्षित रहेंगी ?

14 सितम्बर 1949 का दिन भारतीय इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखा जायेगा। जिस दिन संविधान का धारा प्रवाह वाचन होते हुए संविधान सभा द्वारा इस देश की राष्ट्र भाषा देवनागरी लिपि मे लिखित हिन्दी होगी तथा राज भाषा का दर्जा भी इसे ही प्राप्त होगा' का निश्चय सर्वसम्मति से किया गया था। 26 जनवरी 1950 को भारत को सवसत्ता सपन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया और भारतीय संविधान लागू हुआ था। एक स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी राष्ट्र के लिये यह अत्यन्त आवश्यक था कि देश के राजकाज का समस्त काय इसकी अपनी राष्ट भाषा हिन्दी के माध्यम से ही हो परन्तु दक्षिण के राज्या विशेषकर तमिलनाडु तथा पूव के नागालैण्ड जैसे राज्यो की सन्तुष्टिकरण के नाम पर तथा देश के बड़े-बड़े पदो पर सेवारत आग्ल भाषा पारगत अधिकारियो के निहित स्वार्थो के कारण अग्रेजी को भी 15 वष के लिये सखी भाषा मान लिया गया और जब तक हिन्दी उसका स्थान न ले ले तब तक उसके प्रयाग करने की आज्ञा दी गई।

परन्तु इस देश का दुर्भाग्य ही रहा कि आजादी के चालीस वर्षो के बाद भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ को उनका समुचित स्थान नहीं मिल पाया और आज अग्रेजी भारत के जनमानस पर पहले से अधिक छायी हुई है। और राजकाज का समस्त काय अग्रेजी मे ही चल रहा है। यहा तक आय समाज जैसी सुप्रसिद्ध एव क्रान्तिकारी, राष्ट्रवादी एव भारतीय सस्कृति की पुरोधा सस्था के अनुयायियो का भी एक वग डी ए वी पब्लिक स्कूलो के नाम पर अग्रेजी और अग्रजीयत का जाल ही फैला रहा है तथा भारतीय घरो मे आन्टी मम्मी पापा डैडी के रूप मे बोल-चाल, खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार सर्वत्र अग्रेजी और अग्रेजीयत का बोलबाला बढ रहा है।

आर्य समाज के प्रवतक महर्षि दयानद सरस्वती की मातृ भाषा गुजराती थी और वे स्वय सस्कृत के महान पडित थ। परन्तु उन्होने देश म सवत्र घूम-घूम कर वेदो का प्रचार-प्रसार करते हुए यह अनुभव किया था कि हिन्दी ही इस देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है। अत उन्होने हिन्दी को आर्य भाषा नाम दिया और इस ही अपने सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार का माध्यम बनाया। अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्याथ प्रकाश भी हिन्दी भाषा मे लिखा और वेदो का भाष्य भी हिन्दी मे किया तथा अपने समस्त ग्रन्थ हिन्दी (आर्य) भाषा म लिखे। आय समाज के प्रत्येक सभासद के लिये सस्कृत और हिन्दी जानना आवश्यक घोषित किया। स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय, महात्मा हसराज आदि ने हिन्दी के लिये भरपूर प्रयत्न किये। आर्य समाज द्वारा सस्थापित स्कूलो, कालेजो, मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी का बनाया तथा अपने समस्त प्रचार-प्रसार का माध्यम हिन्दी को बनाकर भारत के कोने-कोने मे तथा विश्व के मौरीशस, गियाना, फिजी, ट्रिनीडाड, इगलैंड अमेरिका आदि विभिन्न देशो मे हिन्दी के सदेश को पहुचाया। आज आजादी के 40 वर्षो के बाद आर्य समाज के कधो पर यह गुरुतर दायित्व है कि हिन्दी को उसका सम्मानपूर्ण स्थान दिलाये तथा राष्ट्र को अग्रेजी के सम्मोहन से मुक्त कराकर भारत को सच्चे अर्थो मे भारत बनाये।

हिन्दी भारत माता के भाल की बिंदी है। हिन्दी देश की हृदय भाषा है। हिन्दी देश के बहुमत की भाषा है हिन्दी कोटि-कोटि जनो की आशा है। हिन्दी देश प्रेम और राष्ट्रीयता की सवाहिका रही है। देश की आजादी की लडाई हिन्दी के माध्यम से लडी गई है। गाधी तिलक गोखले, सुभाष, चन्द्रशेखर आजाद भगत सिंह आदि सबने हिन्दी भाषा के माध्यम से ही देश मे स्वाधीनता की अलख जगाई थी। अत स्वतत्र स्वाभिमानी राष्ट के लिये एक राष्ट्र भाषा हिन्दी का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब चीन मे चीनी रूस मे रूसी जापान मे जापानी है तो हिन्दुस्तान म हिन्दी क्यो नही ? हमारा 'स्व जागृत होना चाहिये। तभी हिन्दी के प्रति उपेक्षा दूर हो सकेगी।

अत आज के दिन अपनी भाषा से प्यार करने का सकल्प लें।
जिसको न निज भाषा और निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु निरा और मृतक समान है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा

'निज भाषा उन्नति है सबै उन्नति का मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल'

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी का कथन था कि

बिन एक व्यापक वाणी के राष्ट्र की सत्ता क्या ?
किसी देश मे पाती है निजता का पद परवशता क्या ?

इसलिए हम सभी आर्य जन आज सकल्प करें कि—

हिन्दी-हिन्दी राष्ट्र की भाषा कोटि-कोटि जनों की आशा।
धुले हृदय के दाग
"जय हिन्दी जय नागरी

—रासासिंह

इमर्जेन्सी की ओर बढ़ते कदम

मानहानि विधयक लाकर राजीव गाधी ने निश्चित रूप से आत्मघाती कार्य किया है। हमे प्रधानमन्त्री के सलाहकारो की बुद्धि पर तरस आता है कि उन्होने ऐसा करने की सलाह कैसे दे दी! वैसे मे भी विश्वास नहीं होता कि सुमन दुबे और मणिशकर अय्यर जैसे लोगो ने उन्हे ऐसी सलाह दी होगी।

विधयक मे मानहानि के अपराधी के लिए जहा पूव से अधिक सजा और जुर्माने का प्रावधान किया गया है वहीं जब तक किसी भी असवैधानिक कार्य करने वाले के विरुद्ध आपके पास पुख्ता प्रमाण नही है, तब तक आप उस व्यक्ति के विरुद्ध कोई आरोप नही लगा सकते। अधूरे सबूतो के साथ यदि समाचार पत्र मे लिखा जाता है तो पत्र के सम्पादक को इस पर लेने के देने पड जायेगे। अधिकाश मामलो मे पुख्ता सबूत होने पर भी न्यायालय मे उन्हे साबित कर पाना असभव होता है।

मानहानि विधयक की एक अत्यन्त खतरनाक धारा है कि यदि कोई समाचार पत्र किसी के विरुद्ध कोई समाचार प्रकाशित करता है तो पत्र को सम्बन्धित व्यक्ति का विरोध पत्र (भले ही वो उलजलूल जैसा भी हो) भी प्रकाशित करना पड़ेगा। यदि सम्पादक विरोध पत्र को प्रकाशित नही करता है तो उसे मानहानि के मुकदमे की पेशी के समय स्वय के स्थान पर अपने वकील को भेजने की छुट नही मिल सकेगी। अर्थात् या सपादक को अवैधानिक कृत्य मे लिप्त व्यक्ति के अनगल प्रलाप को अपने पत्र मे स्थान देना पडेगा अन्यथा न्यायालय मे पेशी पर जा जाकर अपना बहुमूल्य समय नष्ट करना पडेगा।

जो पत्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं वे तो किसी भडाफोड समाचार को प्रकाशित करने का थोडा साहस कर सकगे परन्तु छोटे तहसील और जिले स्तर पर प्रकाशित होने वाले पत्र तो अब किसी भ्रष्टाचारी का पर्दाफाश करने का साहस कदापि नही जुटा पायेंगे।

सरकार द्वारा जिस जल्दबाजी मे उक्त मानहानि विधयक लाया गया वह उसकी नीयत मे सदेह उत्पन्न करता है। कम से कम इसके मसौदे को वरिष्ठ विधिवेत्ताओ, राजनीतिज्ञो और पत्रकारो के पास विचाराथ तो भेजना ही चाहिये था।

देश का प्रेस एक जुट ही कर इस काले कानून का विरोध कर रहा है यह प्रसन्नता का विषय है। कार्य म सरकार की चमचागिरी करने वाले पत्रो और पत्रकारो को भी अपने तात्कालिक स्वार्थो को तिलाजलि देकर इस विधेयक के विरुद्ध अपनी आवाज उठाना चाहिए। ऐसे सरकार भक्त पत्रकारो को यह नही भूलना चाहिये कि सरकारे तो बदलती रहती है।

—धीरेन्द्र आर्य

स्वामी अग्निवेश की विदेश यात्रा

विदेशों में आर्य समाज के बढ़ते कदम

"विदेशों आर्य समाज का प्रचार बढ़ रहा है ।'

ये उद्गार है युवा आर्य सन्यासी स्वामी अग्निवेश के जो पूरे एक महीने की विदेश यात्रा से 26 अगस्त को प्रात काल स्वदेश लौटे हैं ।

स्वामी अग्निवेश की यात्रा का मुख्य उद्देश्य सयुक्त राष्ट्र सघ [यू एन ओ] की मानवधिकार आयोग के समक्ष भारत के पचास लाख से अधिक गरीब बधुआ मजदूरो की दर्द भरी दास्तान रखना था । स्विटजरलैण्ड की नगरी जिनेवा स्थित 'पैलेस आफ नेशन्स' मे अगस्त के प्रथम सप्ताह मे हर वर्ष की नरह इस बार भी "वर्किंग ग्रुप आन कन्टेम्पोरेरी फार्म्स आफ स्लेवरी' (गुलाम प्रथा के आधुनिक तरीको पर कार्य समिति) स्वामी अग्निवेश ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और अपनी बात की सपुष्टि मे ससदीय उप समिति की खेतिहर मजदूरो की हालात पर ताजा रिपोर्ट को विस्तृत तरीके से पेश किया । साथ ही भारत के 15 करोड हरिजनो के साथ हो रहे अमानवीय छुआ छात के व्यवहार की कहानी के सदर्भ मे स्वामी अग्निवेश ने मानव अधिकार आयोग को बताया कि किस तरह राजस्थान सरकार ने अपने देश के सविधान को कुचलते हुए उदयपुर से आर्य समाज के नेतृत्व मे निकली पदयात्रा को नाथद्वारा मदिर प्रवेश से पहले गिरफ्तार कर लिया ।

जिनेवा जाने पहले आर्य समाज लदन मे स्वामी अग्निवेश का स्वागत हुआ और श्री सुशील आनन्द श्री जगदीश शर्मा, श्रीमती सावित्री छाबडा (वेद पाठी ग्रुप) श्री बोवेन्द्र बीर वर्मा,श्री देवशरण समरु,श्रीमती वेदवती शर्मा आदि ने भारत मे चल रहे नारी उत्पीडन विरोधी अभियान तथा जातिवाद के विरुद्ध सघष को अपन पूरे समर्थन का आश्वासन दिया ।

दि हेग के बाद स्वामी अग्निवेश का स्वागत स्टारडम की प्रभाकर आर्य समाज मे भी हुआ जहा यज्ञ एव भजन के पश्चात अपने जोशीले भाषण मे स्वामी अग्निवेश ने आर्य समाज को भवनो से बाहर निकल कर परमाणु युद्ध के खिलाफ प्रदूषण के खिलाफ और जातिभेद एव रगभेद की जहरीली नीतियो के खिलाफ आदोलन का आह्वान किया और भारत मे आर्य की नई भूमिका से अवगत कराया ।

आगे चलकर अमेरिका की राजधानी वाशिगटन मे पहुँचकर स्वामी अग्निवेश ने रेवरेण्ड जैसी जैक्सन की सस्था 'रैन बो कोयलीशन मे वरिष्ठ अधिकारियो से अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर चर्चा की तथा अमरिका मे रगभद नीति के खिलाफ गाधीवादी नेता मार्टिन लूथर किंग के नेतृत्व मे लडी गई लडाई की समीक्षा की । भारत मे आर्य समाज द्वारा लडी जा रही अहिंसक लडाई का इन नेताओ ने स्वागत किया और अपना नैतिक समथन दिया ।

न्यूयाक म स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय के डाक्टरेट के छात्रा ने "धर्म एव समाज परिवतन विषय पर स्वामी अग्निवेश स तीन घण्टे विशद चर्चा की और वैदिक मान्यताओ को आर्य समाज द्वारा की गई व्याख्या की सराहना की इस दल ने भारत के धर्माचार्यो को पत्र डालकर और अमेरिका जाने पर सवाल पूछ कर अपन सामाजिक दायित्वो के प्रति सचेत करने का सकल्प किया ।

स्वामी अग्निवेश ने लदन के लिए प्रस्थान करते समय फिजी के फौजी राष्ट्रपति श्री रम्बूका के उस वक्तव्य की निन्दा की थी जिसमे रम्बूका ने धमकी दी थी कि फिजी के लगभग पचास प्रतिशत से अधिक भारत मूल के गैर ईसाइयो को ईसाई धम स्वीकार करना पडेगा अन्यथा फिजी छोडना पडेगा । जिनेवा मे स्वामी अग्निवेश न 'वल्ड कौन्सिल आफ चर्चेस के मुख्यालय म जाकर उनके अन्तर्राष्टीय मामला के प्रधान श्री नैनान कोशी से दो घण्टे मुलाकात की और फिजी के राष्ट्रपति के उस वक्तव्य की आलोचना करते हुए माग की कि वल्ड कौसिल आफ चर्चेस भी इसकी निन्दा करे और रम्बूका की चाल को ध्वस्त कर । (वि)

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

प्रो0 दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1 देश, धम और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2 हमारी राष्ट्रीयता का आधार—मूल्य रु 1 00
३ आचार सहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4 दी आर्य समाज हिन्दू विदाउट हिन्दूइज्म (अग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 7 500
5 आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही मूल्य—50 रु

अन्य प्रकाशन—

आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु, अजिल्द 16 00

—ल लाला लाजपतराय

2 धम शिक्षा (भाग 1 स 11 तक) —पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
3. दयानद कथा सग्रह—मूल्य रु 3 00
4 परिचय निर्देशिका (समस्त देश-विदेश की आय शिक्षण सस्थाओ का परिचय)—मूल्य रु 12 00

शिक्षक सम्मानित

आर्य कुमार सभा के तत्वावधान मे दयानन्द बाल सदन के छात्र-छात्राओ ने अपने शिक्षक सर्वश्री आचार्य गोविन्द सिह, रासासिह व नवीन कुमार शर्मा को शिक्षक दिवस पर सम्मानित किया ।

जीवनसिह (मत्री)

शोक व्यक्त

आर्य समाज, अजमेर और दयानन्द बाल सदन ने डा (श्रीमती) प्रेम बहुबा के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त किया है ।

—प्र मत्री

(शेष पृष्ठ 1 का)

बहुदेवतावाद और..

जोऽपि श्वपचाधम । सौर पु 47।43

अर्थात् चाह पापरत क्रूरकर्मा आश्रम धम रहित हो तो भी ऐसा शैव हजारा वैष्णवा स अच्छा है । हे श्रेष्ठ मुनियो ! शिव भक्त श्वपच (कुत्ते का मास खाने वाला डोम) भी ब्राह्मणा से श्रेष्ठ है । और शिवभक्ति रहित ब्राह्मण भी नीच और डोम है ।

कि अत्र बहुना उक्तन ब्राह्मणा येऽपि वैष्णवा । न स्पृष्टव्या न वक्तव्या न द्रष्टव्या कदाचन ।।

पदम पु उत्तरार्द्ध 235।12

अनहम मम् नैवेद्य पत्र पुष्प फल जल । मह्यम् नैवेद्य सकल कूप सर्व विनिक्षिपत् ।।

पदम पु पाताल खड 114।204

अर्थात जो ब्राह्मण वैष्णव नही है, जो शिव के उपासक है उनको न तो छना चाहिए (अछूत है) न उनसे बात करनी चाहिए और न ही उनकी शक्ल देखनी चाहिए । (स्वय शिवजी कहते हैं मेरे नैवेद्य पत्र पुष्प फल और जल को भी ग्रहण करने योग्य नही हैं । मेरे ऊपर (लिग पर) चढाया हुआ नैवेद्य (प्रसाद) कुएँ मे फेंक दो ।

तेन तुल्यो यदि विष्णु ब्रह्मा वा यदि कथ्यते । षष्ठी वर्ष सहस्राणि विष्णया जायत कृमि

सौर पु 40।17

अर्थ—यदि कोई व्यक्ति विष्णु (व ब्रह्मा आदि देवताओ) को शिव के समान कहता है तो वह 60 हजार वर्ष तक टट्टी का कीडा बनता है ।

निर्माल्य शकरादीनां स चाण्डालो भवेद् ध्रुवम् । कल्प कोटि सहस्राणि पच्यते नरकाग्निना ।।

पदम पुन 30252।98

अर्थात जो ब्राह्मण एक बार (भूलकर) भी शकर आदि (काली, गणेश भैरव) का प्रसाद खा लेता है वह निश्चित ही चाण्डाल बन जाता है और हजारो करोडो कल्पो तक नरक की अग्नि मे दु ख भोगता है ।

शिव निन्दाकर दृष्ट्वा घातयित्वा प्रयत्नत । हत्वाऽत्मान पुनयस्तु सयाति परमा गतिम ।। सौर पु 66।33

शिवनिन्दारत हन्तुमशक्तो य स्वय मृत । सद्य एव प्रमुच्येत् त्रिसप्तकुलसयुत ।। शिव पु

अथ—यदि शैव किसी को शिव की निन्दा करता देखे तो किसी भी तरह से उसे मारकर स्वय मर जाय तो वह मोक्ष को प्राप्त होता है । यदि शिव निंदक को मारने मे असक्त होने से उसके साथ लडकर स्वय मर जावे तो अपनी 21 पीढिया सहित वह तत्काल मुक्त हो जाता है ।

आचार्य दत्तात्रेय आर्य के नाम श्री जे. एस. मेहता का पत्र

श्रीमान माननीय महाशय जी

सादर नमस्ते ।

आपका 30 अक्टू 87 को, आपके पत्र मे छपा 'मूर्तिपूजा का अभिशाप' लेख पढा उसमे लिखित पंक्तियां "मन्दिरों और मूर्ति के दर्शन के लिए लम्बी यात्राएं करके जहा अनेक दु:ख और कष्ट होते हैं तथा धन और समय नष्ट होता है आदि आदि पढ कर बहुत उत्साहित हुआ। फिर इसी पत्र के 15 जुलाई के अंक मे मन्दिर प्रवेश कराये जाने वाले पदयात्रीदल का सम्मानित एवं माल्यार्पण कराते आपका चित्र देखकर आश्चर्य हुआ। प्रश्न उठा कि जब मन्दिर एक असामाजिक अज्ञान का गढ है, फिर वहा निरीह भोले भाले दलित भाइयो को लेकर जाना क्या उचित है ? इनके उद्धार के अन्य भी प्रतीक, जैसे कुआ से पानी भराना, नाइयो से बाल कटाना आदि लिये जा सकते हैं। फिर जिस कार्य एवं स्थान को आर्य अंध विश्वास, जडता, पाखंड का गढ मानते है। उसमे इन निरीह लोगो को लेकर आर्य क्यो जावे ? स्व स्वामी श्रद्धानंद जी ने अछूतोद्धार का जो कार्य किया वह सर्वविदित है। इस बारे मे आप अपना दृष्टिकोण पुन पत्र मे प्रकाशित करें ताकि औरों का मार्गदर्शन हो।

स्नेहाधीन
(जयसिंह मेहता)
प्रधान आर्य समाज, उदयपुर

आचार्य जी का उत्तर

प्रिय श्री मेहता जी,

सप्रेम नमस्ते ।

आपका पत्र मिला। मेरी अपनी अभी यह निश्चित मान्यता है कि मूर्ति पूजा हिंदू समाज का ही नही, देश का एक बडा अभिशाप है।

स्वामी अग्निवेश के स्वागत से मेरी इस मान्यता मे कोई अन्तर नही हुआ है। स्वामी जी ने आर्य समाज के तत्वावधान मे हरिजनो के साथ किये जा रहे भेदभाव और अन्याय के विरुद्ध जो पदयात्रा आयोजित की थी उसमे सहयोग देना मैं आर्य समाज की दृष्टि से सर्वथा उचित और उपयुक्त समझता हू।

स्वामी जी स्वयं नाथद्वारा मन्दिर मे पूजा के लिए प्रवेश नही करना चाहते थे। इसलिए उनके द्वारा मूर्ति पूजा के समर्थन की बात तक संगत नही है।

आपको स्मरण होगा कि अजमेर मे मदार गेट पर बालाजी के मन्दिर पर जब मुसलमानो ने घंटा घडियाल बजाने के प्रश्न को लेकर आक्रमण किया तो स्वर्गीय पण्डित जियालाल जी ने स्वयं वहा जाकर उनका मुकाबला किया और गम्भीर रूप से घायल हुए।

स्पष्ट है कि आततायियो द्वारा हिन्दुओं के मन्दिर की रक्षा का प्रयत्न मूर्ति पूजा का समर्थन नही समझा जा सकता। हरिजनो के प्रवेश से यदि मूर्ति पूजा भंग होती है तो ऐसा करना भी मूर्ति पूजा के खंडन का एक तरीका है। वैसे भी स्वामी अग्निवेश जी ने मन्दिर प्रवेश की घोषणा से पूर्व मुझसे विचार-विमर्श नही किया था। सम्भव है मैं उन्हे हरिजनो के अधिकारों के लिए इसके स्थान मे कोई और अभियान या आन्दोलन करने की सलाह देता क्योंकि एक आर्य सन्यासी के नेतृत्व मे मन्दिर प्रवेश के आन्दोलन का यह गलत अर्थ लगाना सम्भव था। किन्तु एक बार आर्य समाज के नाम पर इस आन्दोलन की घोषणा हो जाने के बाद राजस्थान निवासी हम सब आर्य समाज के व्यक्तियो का यह कर्त्तव्य हो गया है कि हम उसका समर्थन करें।

उदयपुर आर्य समाज के नाम से इस अवसर पर असहयोग की घोषणा से कट्टर पंथी सनातनियो के विरोध को ही समर्थन मिला जो संभवत स्वयं आपके उद्देश्य के अनुकूल नहीं था। अस्तु।

आशा है मेरे इस स्पष्टीकरण से मेरी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होगें।

आपका
(दत्तात्रेय आर्य)

श्री जयसिंह मेहता
प्रधान, आर्य समाज,
उदयपुर (राज)

प्रतिलिपि सूचनार्थ
स्वामी अग्निवेश जी,
7 जन्तर मन्तर रोड,
नई दिल्ली-1

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानंद शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धांतो का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणो, विचारो और मान्यताओं का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तको और उनके अनुयायी विद्वानो द्वारा लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम, कबीर तथा नानक और तेरापंथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताए। इसी प्रकार जात-पात छुआछूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध मे उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारो का समावेश करने की योजना है। ग्रंथ मे प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबंधो और लेखो के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य मे सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रेय आर्य, निदेशक, दयानंद शोधपीठ दयानंद कालेज अजमेर से संपर्क करने का कष्ट करें।

वृष्टि यज्ञ असफल

विज्ञान और तकनीकी विभाग के द्वारा अभी हाल ही मे मथुरा मे वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया जो पूर्ण रूप से असफल रहा।

वृष्टि विज्ञान मंडल को विभाग के द्वारा 10 000 रु. की राशि दी गयी। यह परीक्षण करने के लिए कि लकडी जलने से जो राख और गैस उठी क्या उससे वातावरण मे कुछ परिवर्तन हो सका या उसके प्रभाव से कृत्रिम वर्षा की जा सकती है।

वृष्टि विज्ञान मंडल के अनुसार 24 से बहत्तर घंटो के बीच अर्थात 28 मई से 31 मई के बीच वर्षा होने की संभावना घोषित की गयी थी किन्तु वर्षा नही हुई।

विज्ञान और तकनीकी विभाग ने इस यज्ञ के प्रभाव से वातावरण मे क्या परिवर्तन होते हैं देखने के लिए ताजमहल पर वेधशाला का भी प्रबन्ध किया।

प्राकृतिक विभाग के द्वारा यह घोषणा की गयी कि 31 मई से 1 जून तक वातावरण मे विभिन्न परिवर्तन हुए और परिणाम स्वरूप 1 6 cm वर्षा भी हुई।

किन्तु चूंकि वर्षा 28 से 31 मई तक न होकर 1 जून को हुई इसलिए उसको इस वृष्टि यज्ञ से नही जोडा जा सकता। अतएव वह तो एक प्राकृतिक प्रक्रिया थी।

अत यह यज्ञ पूर्ण रूप से असफल रहा। (यू एन आई)

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर के लिए सक्सेना प्रिन्टर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्यसमाज भवन, केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदो खिलोधर्ममूलम्
वेद ही ममस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म, हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देय : समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 शुक्रवार, 30 सितम्बर 1988 | अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञानादभय परोक्षान्। | आश्विन कृ 5 सवत 2045
अक 18 प स -43338/84 II | अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम् मित्र भवन्तु॥ | वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

पहले अपना घर

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

पिछले दिनो ईसाई मिशनरियो द्वारा प्रकाशित और प्रसारित 'प्रभु की अनमोल सहायता' नामक एक लघु पुस्तिका पढने को मिली। इस पुस्तक मे ईसाईयो के पवित्र शास्त्र से चुने हुए विषय उद्धरित किए गए हैं।

पुस्तिका के पृष्ठ 46 पर प्रकाशित विषय का शीर्षक है— परमेश्वर हमे तलाक के बारे मे बताता है। परमेश्वर इस विषय म क्या बताता है? इसका उल्लेख इस प्रकार से किया गया है

'परन्तु मैं तुमसे यह कहता हू कि जो कोई अपनी पत्नी का व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से से छोड दे, तो यह उससे व्यभिचार करवाता है, और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे वह व्यभिचार करता है।

—मत्ती 5 32

जो कोई अपनी पत्नी को त्याग-कर दूसरी से ब्याह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से ब्याह करता है वह भी व्यभिचार करता है।

—लूका 16 18

क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उससे बधी है, परन्तु यदि पति मर जाए तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहा तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए तो भी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।

—रोमियो 7 2,3

जिनका ब्याह हो गया है उनको मैं नही वरन प्रभु आज्ञा देता है, कि पत्नी अपने पति से अलग न हो। और यदि अलग हो भी जाए, तो बिन दूसरा ब्याह किए रहे या अपने पति से फिर मेल कर ले और न पति अपनी पत्नी को छोडे।

1 कुरिन्थियो 7 10 11

ईसाइयो के पवित्र धर्मशास्त्र की उक्त शिक्षाओ के बारे मैं कोई टिप्पणी नही करना चाहता। लेकिन 'प्रभु की अनमोल सहायता' के प्रकाशक वाटसन गुडमन और उन जैसे उन असख्य विदेशी ईसाई मिशनरियो से मेरा यह निवेदन अवश्य है कि भारत मे अपने धर्मशास्त्र की इन शिक्षाओ का प्रचार प्रसार करने के स्थान पर उन्हे अपने स्वय के देशो मे इनका प्रचार करना चाहिए।

ईसाई धर्मावलम्बी देशो मे जितना व्यभिचार है, उसकी तुलना मे भारत मे तो कुछ भी नही है। इगलैण्ड और अमेरिका मे प्रतिवर्ष लाखो तलाक होते हैं। हजारो कुवारिया माए बनती है। इन देशो मे 'गर्ल फ्रैण्ड' और 'ब्याय फ्रैण्ड' के नाम पर किस तरह व्यभिचार का खेल होता है, इससे कौन अपरिचित है। सो इन देशो को ईसाई प्रचारकों का अपने व्यभिचार पीडित देश को छोडकर भारत जैसे देश मे सदाचार का प्रचार करना ऐसा है—'जैसे कि एक शराबी परिवार के मुखिया द्वारा सदाचारी पडौसी को मद्यपान न करने की सलाह देना।'

जातीय श्रेष्ठता के नाम पर

—वीरेन्द्र कुमार आर्य

गत दिनो राजस्थान के पाली जिले की रायपुर तहसील के आसन जिलेलाव गाव मे अनुसूचित जाति के 45 गरीब परिवारो पर सवर्ण जाति के लोगो ने बबर अत्याचार कर अपनी जातीय श्रेष्ठता को झूठी अहम् तुष्टि की कोशिश की।

भारत वर्ष मे राजस्थान के सवर्ण लोगो मे सबसे अधिक जातीयता की भावना देखने को मिलती है। राजपूत समाज, गुजर समाज, जाट सभा एव ब्राह्मण परिषद आदि नामो मे इन तथाकथित सवर्ण जातियो के विभिन्न सगठन बने हुए हैं।

इन सगठनो का काम क्या है? मात्र दूसरी जाति के लोगो के विरुद्ध सगठित लडाई लडना। अपनी जाति के लोगो के लिए उचित-अनुचित तरीकों से अधिक से अधिक सुख-सुविधा के साधन जुटाना। आसन जिलेलाव गाव मे सुख-सुविधा के साधन स्वजातीय लोगो को उपलब्ध कराने मे जब सवर्ण जाति के एक कथित सगठन को बाधा आई तो वह निरीह दलित लोगो के विरुद्ध हिंसा पर उतर आया।

जातीय सगठनो को स्वजातीय राजनीतिबाजो का सरक्षण भी खूब मिलता है। आसन जिलेलाव गाँव का ही उदाहरण लीजिए। जब जब प्रदेश के पूव मुख्यमत्री हरिदेव जोशी ने पीडित लोगो के पक्ष मे आवाज उठाई तो सवर्ण जाति के आतकवारी लोग 'रावत राजपूत सघर्ष समिति' के बैनर तले स्थानीय भाजपा विधायक हीरा-सिह चौहान की अगुवाई मे सडको पर उतर आए। बहुत खूब! एक तो चोरी, ऊपर से सीना जोरी। अब विधायक चौहान अपनी कुर्सी की खातिर अपनी जाति लोगो के प्रत्येक उचित-अनुचित कार्यों मे सहयोग देने के लिए बाध्य तो हैं ही। अन्यथा श्रीमान का हलुआ-माडा खतरे मे जो पड जाएगा।

भाजपा का हिन्दू राष्ट्र उसके ऐसे विधायको के रहते क्या कभी बनना सभव है, जो हिन्दुओ के दो वर्गों को ही परस्पर लडाने की राजनीति करते हैं।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानद शोधपीठ की ओर स एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। जो विद्वान इस कार्य मे सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रेय आर्य, निदेशक, दयानद शोधपीठ दयानद कालेज अजमेर से सपर्क करने का कष्ट करें।

निदेशक दत्तात्रेय आर्य | प्रधान सम्पादक रासासिह | सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य | ☎ कार्या 21010

सम्पादकीय—

शताब्दी के संदर्भ में एक ऐतिहासिक दस्तावेज

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और आर्य समाज-अजमेर

आर्य मार्तण्ड मे प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने दिसम्बर, 1988 ई के अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया है। विगत दिनो प्रतिनिधि सभा के पूव मन्त्री श्री भगवती प्रसाद जी सिद्धान्तभास्कर ने अपनी एक विज्ञप्ति मे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्थापना काल के बारे मे अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया था। जिससे कुछ भ्रम पैदा हुआ, कि प्रतिनिधि सभा का स्थापना वर्ष कौनसा है।

समस्त आर्य जगत, और विशेषत राजस्थान की आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का स्थापना वर्ष 1888 ई है और इसकी स्थापना तिथि 28 व 29 दिसम्बर, 1888 ई है तथा उक्त तिथि को आर्य समाज (केसरगज) अजमेर के मदिर मे ही इस की स्थापना हुई थी। स्थापना काल से लेकर 1 जुलाई, 1906 तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का रिकोर्ड आर्य समाज अजमेर के पास आज भी मूल रूप में सुरक्षित है।

प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्थापना से पूव पृष्ठभूमि तैयार करने का सारा कार्य तथा राजपूताना के समाजो मे परस्पर सम्पर्क बढाने का कार्य आर्य समाज अजमेर द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। 1883-84 ई के बाद से ही मेरठ मे निर्मित पूव प्रतिनिधि सभा श्री पडित गौरीशकर शर्मा को उपदेशक तथा निरीक्षक के रूप मे नियुक्त कर राजपूताने के विभिन्न समाजो मे उपदेशार्थ तथा सम्पर्क बनाने हेतु नियुक्त किया था। परोपकारिणी सभी की ओर से भी वे उपदेशक एव प्रचारक थे। मेरठ की सभा प्रतिनिधि आर्य समाज पश्चिमोत्तर और अवध देश कहलाती थी। इससे पूर्व भी पजाब मे आर्य प्रतिनिधि सभा गठित हो चुकी थी। श्री गौरीशकर जी की प्रचार व्यवस्था आर्य समाज अजमेर के ही अधीन थी। आर्य समाज अजमेर की अन्तरग सभा ने दिनाक 1-1-1888 ई को बैठक मे निम्न निश्चय किया—' The Executive Committee of Arya Samaj resolved that If P Gauri Shankar Sharma accepts the Post on Rs 40/–per month his services may be utilized for the present.

His last services in N W Pritinidhi Sabha as well those in our province recommend him for the appointment in the Dayanand Ashram "

उपरोक्त पडित जी को आर्य समाज द्वारा सर्वप्रथम राममढ, चुरू शेखावटी, रेवाडी, उदयपुर, मसूदा, शाहपुरा, चित्तौड, ब्यावर, पाली जोधपुर क्षेत्रो मे प्रचारार्थ भेजा गया।

उपदेशको के लिये आय फण्ड—

5 फरवरी 1888 ई को सम्पन्न आर्य समाज अजमेर की अतरग सभा ने पाठशाला स्थापना के लिय जिस आटा फण्ड का शुभारम्भ किया था, उसी प्रसग मे यह भी निर्णय लिया।

'इस आटा फण्ड का शेष उपदेश फण्ड मे जमा हो। एक उपदेशक राजपूताने मे रखा जावे। इसमे सहायता के लिये राजपूताने की समाजो को प पड्या मोहन लाल जी और मसूदाधीश जी को लिखा जावे।'

"प्रतिनिधि" विषयक नियम—

5 फरवरी, 1888 रविवार को दिन के 2 बजे सम्पन्न आर्य समाज अजमेर की अतरग सभा बैठक स 51 मे प्रथम प्रस्ताव स 3 के अनुसार प्रतिनिधि विषयक नियम बनाने के लिये तीन व्यक्तियो की एक उपसमिति गठित की–(1) बाबू रामविलास जी (2) प श्यामसुन्दरजी (3) शिवप्रसाद जी।

इसी क्रम मे 17 मार्च 1888 की सम्पन्न समाज की बैठक के प्रस्ताव स 3 मे उल्लेख स्पष्ट है 'राजपूताने की प्रतिनिधि सभा विषयक एक पत्र इस निमित्त जो महाशय नियत हुए थे उनकी सम्मति का पढा गया। आज्ञा हुई कि तदनुसार कार्य किया जावे और इसकी प्रति जयपुर भेजी जावे।'

प्रतिनिधि सभा बनाने का निश्चय—

दि 17-11-1888 ई शनिवार को बाबू मथुरा प्रसाद जी के मकान पर आर्य समाज अजमेर की अतरग सभा का नैमित्तिक अधिवेशन प्रतिनिधि सभा बनाने के सबध मे हुआ। जिसमे सर्व श्री प श्यामसुन्दर जी मथुराप्रसाद जी, शिवप्रसाद जी, रामविलास जी, हरविलास जी, बा. नन्दकिशोर जी सम्मिलित हुए। विचार हुआ कि राजपूताने की प्रतिनिधि सभा बनाना बहुत ही आवश्यक और लाभदायक है। प श्यामसुन्दर और बाबू मथुराप्रसाद जी को जयपुर समाज मे ठाकुर नन्दकिशोर सिंह जी तथा अन्यो मे विचार विमर्श एव सहमति प्राप्त करने हेतु भेजा।

राजस्थान की समाजो के प्रतिनिधि आमत्रित—

28 एव 29 दिसम्बर, 1888 ई को अजमेर मे परोपकारिणी सभा का वार्षिक अधिवेशन होने वाला था। अत उसी अवसर पर आर्य समाज अजमेर द्वारा राजपूताने की आर्य समाजो को परोपकारिणी के अधिवेशन पर उचित पत्रो सहित अपने-अपने प्रतिनिधि भेजने का सदेश भेजा गया ताकि प्रतिनिधि सभा का गठन हो सके। आर्य समाज अजमेर ने समाजो के प्रतिनिधियो के अधिवेशन हेतु तैयारी प्रारम्भ की। सब समाजो को पत्र भेज गय। आर्य समाज की अजमेर की ओर से प्रतिनिधि सभा हेतु प्रथम प्रतिनिधि श्री प श्यामसुन्दर जी नियुक्त हुए।

।। ओ३म ।।

कार्यवाही आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का तारीख 28 व 29 दिसम्बर सन् 1888 ई० को आर्य समाज अजमेर के मदिर मे हुई स्थापना

उपस्थित सभासद प्रतिनिधि

1 प श्याम सुन्दर जी पाडे, उप प्रधान आर्य स अजमेर प्रतिनिधि आर्य समाज अजमेर।
2 प शम्भूलाल जी शुक्ल, उप मन्त्री आर्य समाज इन्दौर प्रतिनिधि आर्य समाज इन्दौर।
3 प रामचन्द्र जी मत्री आ स अजमेर, प्रतिनिधि आर्य समाज अजमेर।
4 प सूर्यप्रसाद जी शुक्ल, मन्त्री ग्वालियर, प्रतिनिधि आ स ग्वालियर
5 प हमीरमल जी पुस्तकाध्यक्ष आ स शाहपुरा, प्रतिनिधि आ. स शाहपुरा।
6 प गुलाबचद जी उपमन्त्री आ स. ब्यावर, प्रतिनिधि आ स ब्यावर
7 प रामनाथ जी उपदेशक आ स जयपुर, आ स प्रतिनिधि जयपुर
8 बा मथुरा प्रसाद जी मन्त्री आर्य समाज अजमर, प्रतिनिधि आर्य समाज बाडीकुई।
9 प पन्नालाल जी सभासद् आ स जोधपुर, प्रतिनिधि आ स जोधपुर।

प्रथम दिवस

1 सर्व सम्मत्यानुसार निश्चय हुआ कि इस समय कार्य करने के लिये प श्यामसुन्दरजी प्रधान और प शम्भूलाल जी मन्त्री नियत हो।
2 निश्चय हुआ है कि राजस्थान के आर्यसमाजो की प्रतिनिधि सभा आज से ही स्थापित हो।
3 निश्चय हुआ है कि वे नियम स्वीकार किये जावे जो श्रीयुत राय मूलराज जी एम ए. उपसभापति श्रीमती परोपकारिणी सभा व सब जज् झग ने बनाये और अजमेर मे कई आर्य समाजो के प्रति-

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारत सरकार द्वारा प्रदर्शित दयानन्द की जीवनी पर रोक क्यों

—ठाकुर प्रेम सिंह (सेवा निवृत रा प्र सेवा)

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ समय पूर्व राष्ट्र के नवजागरण मे योगदान देने वाले महापुरुषो की सक्षिप्त जीवनी लेखन का कार्य भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मन्त्रालय द्वारा प्रारम्भ किया गया है। इस प्रसग मे "स्वामी दयानन्द सरस्वती" नामक पुस्तक फरवरी 1988 मे प्रकाशित हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के पुस्तकालयो मे यह पुस्तक अधिक नही पहुच सकी है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इस पुस्तक का विक्रय बद करा दिया है। अत मेरी इच्छा हुई कि मैं भी इस पुस्तक को पढ कर देखू कि स्वामीजी या आर्य समाज के प्रति क्या आपत्ति जनक लेख है। जिसके कारण इस पुस्तक को बद करा दिया गया।

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान डा भवानी लाल जी भारतीय, जिन्होने स्वामीजी का जीवन चरित्र परिश्रम और खोज पूवक लिखा है और जो प्रमाणिक है ने भी उपर्युक्त पुस्तक पर आलोचनात्मक लेख साप्ताहिक देशिक साप्ताहिक मे लिखा है। जिसमें आवश्यक त्रुटियो को प्रदर्शित किया है और छापे की अनेक त्रुटियो का होना लिखा है। यह त्रुटिया अवश्य ध्यान देने योग्य हैं। परन्तु डाक्टर साहब ने लेखक के प्रति जो लिखा है उसकी भाषा कुछ कठोर प्रतीत होती है। इतना कुछ होने पर भी पुस्तक म कुछ विशेषतायें भी हैं। पुस्तक के अन्त मे तीन परिशिष्ट एक Glossory, विदेशी एव राजददेशीय विद्वानो के स्वमीजी के प्रति विचार bibliogyaphy और India बहुत उपयोगी है। स्वामीजी मे राष्ट्र निर्माण मे जो महत्वपूर्ण विचार दिये हैं तथा राष्ट्रीय भावना एव प्राचीन वैदिक साहित्य के लिए जो अपने विचार दृढता पूवक प्रस्तुत किये हैं उन विषयो पर इस पुस्तक मे अच्छा प्रकाश डाला है। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा प्रकाशित करान एव अग्रेजी मे लिखी होने के कारण अहिन्दी भाषी शिक्षितो के लिये अवश्य उपयोगी प्रतीत होती है। यदि इस पुस्तक मे दर्शाई हुई त्रुटियो को सुधार कर इस का द्वितीय सस्करण प्रकाशित करा दिया जावे तो उत्तम होगा। परन्तु इस पुस्तक का विक्रय बद कर देने से आर्य समाज का क्या हित हुआ है, यह मेरी समझ से परे है। इतना अवश्य हुआ है कि महापुरुषो की जीवनी से सबधित पुस्तकमाला की सूची का यह पुष्प समाप्त हो गया। इस पुस्तक का शुद्ध सस्करण यदि प्रकाशित हो जाता है तो अति उत्तम है। अन्यथा इस पुस्तक को बेचने में भी क्या आपत्ति है क्योकि सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सस्करण की भी बिक्री जिसमे लेखको द्वारा धोखा दे कर कुछ बातें स्वामीजी के मत के विरुद्ध छपा दी गई थी, बद नही की गई थी। इस पुस्तक के विषय में आर्य आय समाज के उच्च कोटि के विद्वानो को विचार करना चाहिये।

(शेष पृष्ठ दो का)

आर्य प्रतिनिधि सभा — — — — —

निधियो ने सन् 1885 मे उन पर विचार किया और जिनको पजाब देस की आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वीकार किये।

4 निश्चय हुआ कि अभी तो मुख्य स्थान इस सभा का अजमेर ही रहे।

5 निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सभासद इस सभा की अतरग मे हो।

१ प श्यामसु दर जी पाडे अजमेर।

२ मु शी शिवप्रसाद जी अजमेर।

३ बा राम जीवन जी अजमेर।

४ पडित रामचन्द्र जी अजमेर।

५ पडित रामनाथ जी जयपुर।

६ पडित गुलाबचद जी ब्यावर।

७ पडित पन्नालाल जी जोधपुर।

जो आर्य समाज चाहे वह विशेष व्यवस्था मे अपना प्रतिनिधि बदल सकता है।

6 निश्चय हुआ कि यह महाशय अधिकारी हो।

पडित श्यामसु दर जी पाडे	प्रधान
मु शीशिव प्रसाद जी	मत्री
बा. रामजीवन जी	कोषाध्यक्ष
पडित रामचन्द्र जी	पुस्तकाध्यक्ष

7 निश्चय हुआ कि उपदेशक फड नियत किया जावे।

8 स्थिर हुआ कि मुन्शी दामोदर दास जी जोधपुर वालों ने उपदेश फड मे 11) मासिक देने का पत्र लिख के पेश किया सो स्वीकार धन्यवाद सहित हो।

द्वितीय दिवस की कार्यवाही

1 निश्चय हुआ कि वैतनिक उपदेशक रखे जा सकते है परन्तु जो अवैतनिक उपदेशक हो वे निम्नलिखित शर्तों को स्वीकार करने पर रखे जा सकते हैं।

१ आर्य समाज के नियमोपनियम मानने वाले हो।

२ किसी आर्य समाज के सभासद हो।

३ प्रवास मे भोजनादि का आवश्यक खर्च तथा रेल का भाडा दिया जावेगा जो सदैव तीसरे दर्जे का होगा।

४ उपदेशक को भेंट की रीति से जो धन समाज का पुरुष विशेष से प्राप्त हो वह इस सभा को भेज दें। परन्तु देने वाले उन्ही की सेवा के लिये दे और यदि वह चाहे तो 5/- रुपये तक अपने हाथ खर्च के वास्ते रख सकते हैं, अधिक नही।

2 निश्चय हुआ कि किसी विशेष दशा मे अत्यन्त आवश्यकता पडने पर अतरग सभा को अधिकार होगा कि उपर लिखे नियमो मे से किसी को शिथिल कर कार्य निर्वाह करले और सभासदो को उसकी सूचना करदे। परन्तु यह अधिकार एक वर्ष ही के लिए होगा।

3 निश्चय हुआ कि जो उपदेशक नियत किये जाय उनकी परीक्षा आदि सभा के चारो अधिकारी करके प्रधान और मत्री के हस्ताक्षरो की एक प्रति उनको दे दे और इसकी सूचना समाजो को भी करदे।

4 निश्चय हुआ कि वर्तमान वर्ष के अतरग सभा और प्रतिनिधि सभाओ से पत्र व्यवहार कर वैतनिक उपदेशको के नियम स्थिर करें।

5 निश्चय हुआ कि जब इस सभा का और उपदेशक फड उत्तम दशा को प्राप्त होगे तब वैतनिक उपदेशक भी रख लिये जावेगे।

ह०/-	ह०/-
शिवप्रसाद	श्यामसु दर पाडे
मत्री	प्रधान
आर्य प्रतिनिधिसभा राजस्थान	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

उपरोक्त सम्पूर्ण विवरण से स्पष्ट है कि आर्य समाज अजमेर के पदाधिकारी और सभासद ही प्रतिनिधि सभा के प्रधान मत्री आदि थे। यही पर 1906 तक कार्यालय रहा।

दि 7-1-89 ई को प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार तीन सभासद् आर्य समाज अजमेर के होने चाहिए थे। अत श्री शिवप्रसाद जी तथा रामजीवन जी को भी प्रतिनिधि चुनकर भेजा गया। बीसियो वर्षों तक प्रतिनिधि सभा का कार्यालय भी आर्य समाज अजमेर में ही रहा।

उपरोक्त विवरण विस्तार से इसी कारण से दिया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्थापना में भी आर्य समाज अजमेर ने किस प्रकार सक्रिय योगदान दिया था। अच्छा होता कि यह शताब्दी समारोह अजमेर नगर मे होता अथवा राजधानी जयपुर मे होता।

—रासासिंह

आचार्य दत्तात्रेय आर्य के नाम अम्बाप्रसाद शर्मा का पत्र

आदरणीय श्री बाब्ले जी,

सादर नमस्ते। गत 15 के आर्य पुनर्गठन मे श्री जयसिंह मेहता द्वारा आपको लिखा गया पत्र तथा आपके द्वारा उन्हे दिया गया उत्तर पढने को मिला। यह स्वाभाविक है कि प्रकाशन के बाद उन पर पाठको की प्रतिक्रियाएँ होगी ही। आप जिस आसन पर विराजमान हैं उस पर कभी कमवार जियालाल जी भी थे। उनके जीवन काल से अब तक इस आसन के प्रताप से राजस्थान मे आर्य समाज का सर्वाधिक कार्य अजमेर मे हुआ है। कर्म क्षेत्र तथा ज्ञान क्षेत्र दोनो मे आपकी महानता को आर्य जगत स्वीकार करता है। अत हम अल्प बुद्धि वाले सामान्य आर्य समाजी मार्ग दर्शन के लिये आपको छोड कर किसका सहारा लें ?

स्वामी श्री अग्निवेश जी हरिजनो को मन्दिर प्रवेश के लिये ले गये थे। भारत जैसे धर्म प्रधान देश में हिन्दुओ के मन्दिर मे आने का प्रयोजन एक मात्र दर्शन करना माना जाता है। यदि कोई उसका कोई अन्य प्रयोजन सिद्ध करना भी चाहे तो भारतीय जन मानस उसे स्वीकार नहीं करेगा। और मूर्ति का दर्शन आर्य समाज के व्यक्ति के लिए सिद्धान्त विरुद्ध है। यही बात सैकडो लोगो द्वारा नाथद्वारा कांड के समय सभी प्रमुख पत्र पत्रिकाओ मे व्यक्त की गई थी। अत स्वामी जी की यह गलती थी और आर्य समाज के नियम 4 के अनुसार उन्हे अपनी भूल स्वीकार कर लेनी चाहिये।

आप जब यह लिखते है कि आप स्वामी जी को मन्दिर प्रवेश के बजाय कोई अन्य ऐसा उपाय सुझाते जिससे भी हरिजनो को उनका समता का अधिकार उन्हे मिल सकता था, तो इससे ध्वनि तो यही निकलती है कि मन्दिर प्रवेश को सही तो आप भी नही मानते है।

अब बात यह आती है कि स्वामी जी ... इस मुहिम को कौन समर्थन दे। आपने तो समर्थन दे दिया। उदयपुर आर्य समाज ने नहीं दिया। सार्वदेशिक आ. प्र सभा ने नही दिया। ये दो पक्ष बन जाते हैं। इनकी समीक्षा आवश्यक है —

समर्थन देना अनुचित है —

अधिकाश आर्य समाजी ऐसा मानते हैं कि स्वामी अग्निवेश को उनकी अनुचित गतिविधियो के कारण [illegible] के संगठन से पृथक कर दिया गया था और सभवत वे अब तक भी पृथक ही हैं। वे कोई मुहिम छेडने से पूर्व संगठन को न विश्वास मे लेते हैं और नही परामर्श करते हैं। ऐसी स्थिति मे वे जो भी स्याह या सफेद करें संगठन उसे क्यो स्वीकारे और क्यो उसके फलाफल का भागीदार बने ?

समर्थन देना उचित है.—

आर्य समाज के संगठन मे जग लग गई है। पदाधिकारी अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति मे लगे हैं। उसमें से अधिकतर को समाज की प्रगति से कोई लेना देना नही है। इसी कारण छोटे कार्यकर्ता निराश हो कर घरो में बैठे हैं। प्रतिनिधि सभाओ का समाजो से मात्र एक बंधी हुई राशि वसूल करने का सम्बन्ध है। समाजो की समस्याओ से उन्हें लेना देना नहीं है। प्रचार कार्य दिन-दिन कम होता जा रहा है और आपस की गुट बन्दी ने हमारी एक्य-भावना की अन्त्येष्टि कर दी है। अब हमें कहीं भी "सिर हथेली पर रख कर" अपने लक्ष्य के लिये मैदान में बढने वाले दीवाने अब देखने को नही मिलते। यदि कोई अग्निवेश जैसा हिम्मत करता भी है तो हम उसे सस्ती लोकप्रियता जाने वाला अपना उल्लू साधा करने वाला, समाज के सिद्धान्तो के खिलाफ चलने वाला मान लेते हैं।

आपसे अपेक्षा है कि आप कृपया प्रकाश डाले कि आप उपरोक्त दोनो पक्षो मे से किस पक्ष को ठीक समझते हैं।

आचार्य श्री दत्तात्रेय बाब्ले, प्रधान
आर्य समाज केसरगज, अजमेर

प्रेम से
अम्बा प्रसाद शर्मा

श्री बी. के. हूजा का पत्र

पूज्य बाब्ले जी,

मैंने श्री ज एस मेहता के नाम नाथद्वारा मे हरिजन प्रवेश के संबध मे आप का उत्तर पढा। सच कहूँ, मेरी तसल्ली नही हुई। स्वामी जी मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। उन के कार्यक्रम का शुभारम्भ मूर्ति पूजा खण्डन से शुरू हुआ। उदयपुर नरेश ने उन्हे मूर्ति पूजा का विरोध न करने को कहा और प्रलोभन दिया कि मैं आप को एकलिंग जी का महन्त बना दूगा। स्वामी जी का उत्तर स्पष्ट था, 'मैं आप का राज्य तो एक छलांग म छोड सकता हूँ—पर भगवान् के राज्य से बाहर नही जा सकता।' हम यदि सचमुच हरिजन उद्धार चाहते हैं तो हमे उन को आर्य समाज की शरण मे आने का निमन्त्रण देना चाहिए। नाथद्वारा मन्दिर म प्रवेश करने मे सहायता देने से तो हम उन्हे अज्ञान और पाखण्ड के गर्त मे धक्का दे रहे हैं। मै आप से सहमत नही हूँ कि एक बार आर्य समाज ने मन्दिर प्रवेश के कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया तो हमे उस का समर्थन करना चाहिए। यह एक बडी भारी गलती है जो आवेश मे आ कर हो गई है। आर्य समाज के सिद्धान्त स्पष्ट हैं और हमे उनका प्रचार करना चाहिए—जहा विज्ञानहीनता आ जाती है, हम निस्सकोच उसका विरोध करना चाहिए। अगर हमने मूर्ति पूजा को बढावा दिया तो वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता नष्ट हो जायगी।

भवदीय
बलभद्र कुमार हूजा
जयपुर

आचार्य दत्तात्रेय जी का उत्तर

श्री अम्बाप्रसाद जी जो ने मुद्दे उठाए है, उनके सम्बन्ध मे मेरी धारणा यह है कि आर्य समाज का संगठन और उसकी क्रियाशीलता दोनो आवश्यक है। और एक प्रकार से य एक दूसरे पर निर्भर है।

दुर्भाग्य से आर्य समाज के वर्तमान संगठन मे अनुशासन और सैद्धान्तिक निष्ठा दोनो दृष्टियो से गिरावट हो रही है। इसलिए आर्य समाज के पुनर्गठन की अत्यन्त आवश्यकता है। इस गभीर समस्या की ओर मैं इस पत्र तथा अन्य मचो से यहा तक कि सार्वदेशिक सभा के माध्यम से भी आर्य जगत का ध्यान आकर्षित करता रहा हूँ। स्वामी अग्निवेश जी तथा अन्य व्यक्तियो के विरुद्ध समय-समय पर की गई अनुशासन की कार्यवाही के औचित्य के संबध मे यहा कुछ न कहकर इतना स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस मामले मे भी न कोई स्पष्ट नीति और न ही कोई दृढ निश्चय का परिचय दिया जाता रहा है। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा आर्य समाज के तत्वावधान मे घोषित कुछ आन्दोलनों मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी के स्पष्ट समर्थन के उदाहरणो के बाद ये कहना अब युक्तिसंगत नहीं है कि स्वामी अग्निवेश जी के विरुद्ध तथाकथित अनुशासनात्मक कार्यवाही अब भी जारी है। चाहे जो हो, आर्य समाज के प्रति स्वामी अग्निवेश जी की लगन और निष्ठा से आर्य जगत को लाभ उठाना चाहिए। और विशेषकर उन कार्यों में सहयोग देकर जो आर्य समाज के सिद्धान्तों और कार्यक्रमो को [illegible] करत हे।

जहा तक मूर्ति पूजा का प्रश्न है मैं उसे सदा से ही न केवल हिन्दू समाज अपितु सारे देश के लिए एक अभिशाप मानता रहा हूँ। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा नाथद्वारा मदिर प्रवेश के सम्बन्ध मे मेरा और आर्य समाज का समर्थन मूर्ति पूजा का नही हरिजनो के समानाधिकार का समर्थन था। किन्तु स्वामी जी के हरिजन मंदिर प्रवेश के आन्दोलन के बारे मे जो प्रतिक्रियायें आर्य जगत् मे हुई हैं, उनमे श्री बी के हूजा, रिटायर्ड आई ए एस तथा पूर्व उपकुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय जैसे प्रबुद्ध व्यक्तियो की असहमति प्राप्त हुई है। इसलिए मैं समझता हूँ कि इस पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। मैं ये भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि स्वामी अग्निवेश जी द्वारा चलाए जा रहे इस इस आन्दोलन का विरोध करने वालो मे ऐसे भी कुछ व्यक्ति हैं जो आर्य समाज के सिद्धान्तो की आड मे किसी अन्य राजनीतिक निहित स्वार्थों के कारण इसका विरोध करते हैं। फिर भी जैसा मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूँ कि स्वामी अग्निवेश यदि अछूतोद्धार का आन्दोलन किसी अन्य रूप मे करें तो इस प्रकार की शका के लिए गुंजाइश नही रहेगी। और इस स्थिति मे उसे और अधिक समर्थन प्राप्त होगा।

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स, अजमेर के लिए सक्सेना प्रिन्टर्स, अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्य समाज भवन केसरगज अजमेर से प्रकाशित किया।

ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

वेद ही समस्त धर्म का मूल है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए:—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द . 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म, हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 शनिवार, 15 अक्टूबर 1988 | अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। | आश्विन शु 4 सवत 2045

अंक 19 प स -43338/84 ॥ | अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥ | वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

मंदिर प्रवेश और हरिजन

आर्य समाज के दरवाजे हरिजनों के लिए सदा खुले हैं

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य—

स्वामी अग्निवेश जी गत काफी समय से नाथद्वारा के श्रीनाथ मंदिर में हरिजनों के मंदिर प्रवेश को लेकर आन्दोलन चला रहे हैं। आन्दोलन के शुरुआती दौर में उन्होंने उक्त मंदिर में हरिजनों को प्रवेश दिलाने हेतु 10 जुलाई को उदयपुर से नाथद्वारा के लिये पैदल मार्च किया था। किन्तु इससे पूर्व कि उनका यह मार्च नाथद्वारा पहुंचता उसे बीच मार्ग में ही सरकार द्वारा कानून एवं व्यवस्था के नाम पर निषेधाज्ञा लगाकर रोक दिया गया।

इस प्रकार श्रीनाथ मंदिर में हरिजनों को प्रवेश दिलाने का स्वामी अग्निवेश का यह प्रथम प्रयास सफल नहीं हो सका। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि जहां स्वामी अग्निवेश जी का साथ इन आन्दोलन में अन्य किसी प्रमुख आर्य जन या समाज ने नहीं दिया था, वहीं दूसरी ओर मैं स्वयं एवं आर्य समाज अजमेर ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया था। यही नहीं उदयपुर से नाथद्वारा की पदयात्रा में अजमेर आर्य समाज का एक 60 सदस्यीय जत्था भी सम्मिलित हुआ था।

स्वामी अग्निवेश जी के हरिजन मंदिर प्रवेश के प्रथम प्रयास के असफल हो जाने के बाद राजस्थान सरकार द्वारा 10 अगस्त को श्रीनाथ मंदिर में तुलसी डोरा, कंठी देकर के हरिजनों को प्रवेश दिलाकर झूठा श्रेय लेने का असफल प्रयास किया गया। इसके बाद हाल ही में 3 अक्टूबर को स्वामी अग्निवेश जी द्वारा हरिजनों को उक्त मंदिर में प्रवेश कराने के द्वितीय प्रयास के समय किस तरह की दुखद घटना घटी, इससे आप परिचित ही हैं। राजस्थान उच्च न्यायालय के स्पष्ट आदेश के बावजूद हरिजन मंदिर में प्रवेश नहीं कर सके और यहां नहीं उनकी कट्टरपंथी आतंककारी तत्वों द्वारा पुलिस की उपस्थिति में ही जमकर पिटाई की गई।

मैं यह पहले ही लिख चुका हूं कि इस मंदिर प्रवेश के आन्दोलन में जहां एक ओर स्वामी अग्निवेश जी को कट्टरपंथी हिन्दुओं का कोप-भाजन बनना पड़ा वहीं दूसरी ओर उन्हें अनेक आर्य समाजियों के विरोध का भी सामना करना पड़ा। उक्त आर्य समाजी महानुभावों का तर्क था, क्योंकि आर्य समाज मूर्तिपूजा का सिद्धान्ततः विरोधी है अतएव स्वामी अग्निवेश का हरिजनों को मंदिर प्रवेश कराने का कदम आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के विरुद्ध है। यहां यह तथ्य भी विशेष उल्लेखनीय है कि कट्टरपंथी हिन्दुओं ने मंदिर प्रवेश के इस आन्दोलन का जो विरोध किया उसका भी यही आधार था कि स्वामी अग्निवेश जी एक आर्य समाजी हैं और मूर्ति पूजा के विरोधी हैं। इसीलिए उन्हें मंदिर प्रवेश के आन्दोलन का नेतृत्व करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

समानाधिकार के लिए संघर्ष

अजमेर आर्य समाज व मैंने व्यक्तिगत रूप से स्वामी अग्निवेश जी के "मंदिर प्रवेश" के उक्त आन्दोलन में सहयोग में दिया था इसीलिये अनेक प्रबुद्ध आर्यजनों द्वारा मुझे इस संबंध में पत्र प्राप्त हुए और अभी तक प्राप्त हो रहे हैं। यद्यपि कुछ चुने हुए पत्रों का उत्तर मैं 'आर्य पुनर्गठन' के गत अंकों में व व्यक्तिगत रूप से भी दे चुका हूं फिर भी प्राप्त प्रतिक्रियाओं को देखते हुए मंदिर प्रवेश के इस आन्दोलन से जुड़े सम्पूर्ण सवालों की समीक्षा करना आवश्यक समझता हूं।

एक बात जो मैं अपने पूर्व लेखों में भी लिख चुका हूं, उसे फिर स्पष्ट किये देता हूं कि स्वामी अग्निवेश जी हरिजनों को मन्दिर में मूर्ति-पूजा कराने के लिये प्रवेश नहीं दिला रहे थे अपितु वे हरिजनों को समानाधिकार दिलाने के प्रश्न पर संघर्ष कर रहे थे और यही वह कारण था कि जिसमें अजमेर आर्य समाज व स्वयं मैंने इस संघर्ष में उनका साथ दिया। इसके साथ यह भी सुविदित तथ्य है कि स्वामी अग्निवेश जी स्वयं मूर्तिपूजा करने के लिये मंदिर में प्रवेश नहीं कर रहे थे।

आर्यजनों का विरोध

मन्दिर प्रवेश के विरोधी आर्य-जनों का कहना है कि यदि हम हरिजनों को मूर्ति पूजा के गढ़ पौराणिक हिन्दुओं के मन्दिरों में प्रवेश करा भी दें तो इससे उनका का कोई भला होने वाला नहीं है। इसीलिये हमें हरिजनों को उक्त मूर्ति पूजकों के मन्दिरों में प्रवेश दिलाने के लिये परिश्रम व प्रयास करने के स्थान पर उन्हें आर्य समाज में लाने का प्रयास करना चाहिये जहां किसी प्रकार का जातीय भेदभाव प्रवेश देने में नहीं किया जाता है। मैं स्वयं भी आर्यजनों के उक्त सुझाव से सहमत हूं, लेकिन फिर भी यह मानता हूं कि स्वामी अग्निवेश जी के मन्दिर प्रवेश के आन्दोलन से आर्य समाज को प्रकारान्तर से लाभ ही पहुंचा है। नाथद्वारा के श्रीनाथ मन्दिर में प्रवेश के लिये गए हरिजनों के साथ 3 अक्टूबर को कट्टरपंथियों ने जो व्यवहार किया है उससे हरिजनों के मन में कट्टरपंथी पौराणिक समाज के प्रति घृणा अवश्य पैदा होगी। इसीलिये आर्य समाज के सामने यह एक स्वर्ण अवसर है कि वह परिस्थिति का लाभ उठाये और हरिजनों को अधिक से अधिक आर्य समाज के निकट लाने का जोरदार अभियान चलाए। स्वामी अग्निवेश जी के आन्दोलन के कारण आज हरिजनों के मन में आर्य समाज के प्रति मैत्री-भाव है।

मूर्ति पूजा का अभिशाप

आर्य जनों को चाहिए कि वे हरिजनों को मूर्ति पूजा की हानियों से अवगत कराएं और उन्हें बताएं कि पौराणिक युग में प्रारम्भ हुई मूर्ति पूजा और उसकी अनेक हानियों का ही हिन्दुओं और परिणाम स्वरूप भारत को पतन के मार्ग पर ला खड़ा करने का श्रेय प्राप्त है। देवी दव-

(शेष पृष्ठ 3 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य | प्रधान सम्पादक रासासिंह | सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य | ☎ कार्या 21010

सम्पादकीय—
"लगी चमन में है आग भारी, उसे बुझाओ तो हम भी जानें।"

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक स्व कविवर प प्रकाशचन्द्रजी कविरत्नजी के द्वारा रचित एक देश भक्ति पूर्ण रचना की ये पंक्तियां मुझे आज भी सत्य व सटीक प्रतीत होती है।

आज देश और धर्म भयावह स्थिति से गुजर रहे हैं। स्वार्थपरायणता इतनी प्रबल हो चुकी है कि किसी को भी देश, धर्म और समाज की चिन्ता नहीं उनकी दृष्टि में तो—

देश पड़े चूल्हे में, राष्ट्र जाय भाड में।
खेलत शिकार सभी कुर्सियों की आड में।

आज हर व्यक्ति येन-केन प्रकारेण तिकड़म लगाकर मसाधीशों का दुमहिलाऊ कुत्ता बनना चाहता है अथवा अर्थ लाभ प्रवृत्ति का शिकार होकर पैसे बनाने को ही सर्वस्व मान बैठा है।

पहले त्यागी तपस्वी सेवाभावी आदर्शों के प्रति निष्ठावान स्वयं कष्ट उठाकर भी समाज और राष्ट्र की सेवा करने वाले व्यक्तियों की मान प्रतिष्ठा होती थी परन्तु आज गलियों में आवारागर्दी करने वाले छोकरे राजनीति में घुस बैठकर सत्ताधीशों की जय जयकार करते हुए जन प्रतिनिधि बन बैठे हैं जिनको उनके पास पड़ौस वाले भी नहीं मानते और इधर समाज सेवा के मंच में तो भेड़ की खाल ओढे भेड़िये वृत्ति वाले प्रवेश कर गये हैं जिन्होंने व्यवसायात्मक वृद्धि बनाकर अपनी दुकान सजा ली है। खून देने वाले मजनू सब पीछे रह गये और उनके स्थान पर दूध पीने वाले मजनू आगे आ गये हैं। जिनके लिए एक रचनाकार ने कहा है—

'उनके तुरबत पर एक दिया नहीं
जिनके खू से जले थे चिरागे वतन।
आज दमकते हैं उनके मकबरे
जो बेचते थे शहीदों के कफन॥'

इसीलिये हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि
'अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु व्यतिक्रम।
त्राणि तत्र वर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयं॥

अर्थात् जो आदर-मान सम्मान के पात्र नहीं है उनको तो आदर दिया जाता है और वास्तविक पूजा के पात्र है उनका तिरस्कार किया जाता है। वहां तीन वस्तुएं सदैव व्याप्त रहती है—घोर अकाल, बाढ, मृत्यु एवं भय का वातावरण। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज हम किस स्थिति से गुजर रहे हैं।

इसलिये इस चमन में जलता हुई ईर्ष्या विद्वेष, भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी, बेईमानी अकर्मण्यता स्वार्थपरस्ता मूल्यहीनता विश्वासघात एवं हरामखोरी रूपी अग्नि को बुझाने के लिये आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिपाहियों को तथा अन्य देशभक्त सगठनों को दृढता के साथ आगे आकर करना होगा—

'सजा दो मौत की
जो वतन के साथ चाल करे।
यह सर जमीन नहीं
ऐसे बदचलन के लिये॥

देश की पौराणिक जनता शक्ति की इन दिनों आराधना के नाम पर नवरात्रि के व्रत को पालना कर रहा है रामलीलाओं के मेलों में शरीक हो रहा है और फिर विजयदशमी (दशहरा) का पावन पर्व मनायेगा परन्तु वास्तविक शक्ति की प्रधारणा तो देश के प्रत्येक नागरिक के शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास द्वारा संभव होगी। हम व्यायाम एवं योगाभ्यास करें कर्मपथ पर अग्रसर होकर शक्ति सम्पन्न बनना होगा तभी राष्ट्र धर्म और समाज वीर भोग्या वसुन्धरा के सपने को साकार करते हुए समाज की दुर्बलताओं रूपी आसुरी शक्तियों रावणों और कुम्भकरणों पर विजय पा सकेंगे। अन्यथा कोरे पुतले फूंक दिये और तमाशा देख लिया तो फिर हो गया राष्ट्र का कल्याण। बहुत हो चुका अब इन सब की इतिश्री करनी होगी।

आओ हम सब मिलकर प्रतिज्ञा करें—

"प्रण करते हैं संस्कृति का
नाम नहीं होने देंगे
वीर शहीदों की निशानी
बदनाम नहीं होने देंगे
जब तक रग में एक बूंद भी
गरम लहू की बाकी है
भारत की आजादी का हम
नीलाम नहीं होने देंगे।

—रामसिंह

बीमार मानसिकता

राजस्थान के बयाना क्षेत्र के कांग्रेसी विधायक ब्रजेंद्र सिंह के परिवार में नवजात कन्याओं की हत्याएं किये जाने की परम्परा का मामला इन दिनों सुर्खियों में है। कन्या हत्या के इस प्रकरण को लेकर प्रतिदिन समाचार-पत्रों में रपटें प्रकाशित हो रही हैं। गत दिनों राज्य विधान सभा में भी इस मामले को लेकर जोरदार बहस हुई। प्रतिवादी ब्रजेंद्रसिंह इस बात से पूरी तरह से इंकार करते है कि उनके परिवार में कन्याओं की हत्या की जाती हैं। उनका कहना है कि उनके परिवार में अभी तक जब किसी कन्या ने जन्म ही नहीं लिया तो फिर उनकी हत्या का प्रश्न ही कहां उठता है।

परन्तु भले ही विधायक ब्रजेन्द्रसिंह कुछ भी कहें समाचार पत्रों की रपटों में दिए प्रमाणों के आधार पर उनके परिवार पर लगे आरोप में काफी सच्चाई नजर आती हैं। वैसे वे इस मामले में दोषी हैं या नहीं इसका निर्णय करना तो न्याय तंत्र के अधीन है।

ब्रजेन्द्रसिंह परिवार पर लगे कन्या हत्या के आरोप ने यह सिद्ध कर दिया है कि अभी तक भारतीय समाज अपने को रूढ़िवादी और दकियानूसी विचार धारा की कैद से मुक्त नहीं कर पाया है। कन्या जन्म को अपनी प्रतिष्ठा हानि से जोड़ने वालों को आज के युग में मानसिक रूप से दिवालिया होने का प्रमाण-पत्र दिया जा सकता है।

—प्रज्ञ

पर उपदेश कुशल..

पिछले दिनों हिन्दी के प्रख्यात कवि श्री हरिवंशराय बच्चन की आत्म कथा क्या भूलूं क्या याद करूं [illegible] पढ़ने को मिला। इसमें श्री बच्चन ने जातिवाद और अस्पृश्यता के विरोध में भी अपने कुछ विचार व्यक्त किए है।

श्री बच्चन लिखते है कि यदि हम जातीय उपनामों का प्रयोग न करें तो अस्पृश्यता और जातिवाद को समाप्ति में बड़ी मदद मिलेगी। आगे वे लिखते है कि मैं जब प्राध्यापक था तो अपने विद्यार्थियों को जातीय उपनामों का प्रयोग न करने के लिए प्रेरणा दिया करता था।

निश्चित रूप से जातीय उपनामों का प्रयोग न करने की अपने विद्यार्थियों को प्रेरणा देने का श्री बच्चन का काम सराहनीय कहा जाएगा। परन्तु हमारी समझ में यह नहीं आ रहा है कि अपने दोनों नौनिहालों (अमिताभ और अजिताभ) को उन्होंने ऐसी प्रेरणा दी थी या नहीं। क्योंकि श्री बच्चन के अनुसार ही उनके दोनों पुत्र बड़े ही आज्ञाकारी है। सो यदि उन्हें प्रेरणा दी जाती तो अपने नाम के साथ बच्चन कभी न लगाते।

—वीरेन्द्र आर्य

आर्य समाज के---

(शेष पृष्ठ एक का)

ताओ के मन्दिरो ने न केवल मूर्तिभंजक इस्लाम के आक्रमणों को निमन्त्रित किया बल्कि उनसे सम्बन्धित अंधविश्वासो और काल्पनिक चमत्कारो ने इन आक्रमणकारियो की विजय को भी सुनिश्चित कर दिया। मथुरा, काशी और अन्त मे सोमनाथ की इन तथाकथित चमत्कारी मूर्तियो के टुकड़े करने वाले यवनों को मन्दिरो मे संचित अपार धनराशि तो मिली ही साथ म उनके मुट्ठी भर सहधर्मियो को 33 करोड़ देवी देवताओ के इस विशाल देश पर सदियो तक राज्य करने का वरदान भी मिला। सभवत वेदो के एक मात्र निराकार ईश्वर के सैकड़ो साकार प्रतिस्पर्धी बनाकर उनकी अनेक कृत विकृत मूर्तियो द्वारा ईश्वर का उपहास करने का ही हमारे देशवासियो को यह घोर दड मिला और साथ ही अपने इन नादान भक्तो की नास्तिकता सिद्ध करने वाले आक्रमणकारियो को राज्य सम्पत्ति का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

पौराणिक हिन्दुओ के मन्दिर में प्रवेश पाकर मूर्तिपूजा करने के इच्छुक हरिजनो को यह समझ लेना चाहिए कि मूर्ति पूजा मे मात्र हानियां ही हानियां हैं, लाभ कुछ भी नहीं है। मूर्ति पूजा करने वाले हिन्दुओ के मन्दिर अतीत मे भी देश धर्म के पतन में सहायक रहे हैं और आज भी हैं। आज भी ये मन्दिर तथाकथित सवर्ण वर्ग की स्वार्थ पूर्ति एवं जन साधारण मे अंधविश्वास फैलाने तथा आपसी वैमनस्यता के भाव उत्पन्न करने के केन्द्र बने हुए हैं। अनेक मन्दिरो मे देवदासियो पुजारिनो की कुसंगति के कारण व्यभिचार फैल रहा है।

रूढ़ीवादी हिन्दुओ के मूर्ति मे विद्यमान भगवान (?) कितने शक्तिशाली हैं, इसका पता तब लगा था, जब गजनवी सोमनाथ के मन्दिर को लूट कर ले गया था। आज भी प्रतिदिन किसी न किसी तथाकथित भगवान (मूर्ति) की चोरो द्वारा दुर्दशा की जाती ही रहती है। इसी सदर्भ मे मैं पिछले दिनो दूरदर्शन पर दिखाए गए धारावाहिक 'हिमालय दर्शन' का उद्धरण देने के लोभ का सवरण नही कर पा रहा हूं। इस धारावाहिक के एक भाग मे दिखाया गया कि साने के भगवान को कुछ चोर बड़ी बेदर्दी से उखाड़कर ले गए और भगवान अपने बचाव मे कुछ भी न कर सके। पुजारी महाशय बाद मे पता चलने पर भगवान की बरामदगी कराने हेतु पुलिस के पास रोते हुए यह चिल्लाते हुए कि भगवान चोरी हो गए, प्रार्थना पत्र लेकर पहुंचे। मूर्ति पूजको के भगवान का इससे अधिक निरादर और क्या हो सकता है ? मगर अफसोस, किसी भी मूर्ति पूजा के समर्थक ने दूरदर्शन के निदेशक मे विरोध प्रकट नही किया कि आप हमारे भगवान की ऐसी दुर्दशा न दिखाए ! आखिर वे लोग वास्तविकता को अनदेखी कर भी कैसे सकते हैं !

'आर्य' उपनाम लगाए

निश्चित रूप से हरिजनो को आर्य समाज मे आने से हिन्दू समाज म फैली छुआछूत की बीमारी से छुटकारा मिलेगा। आर्य समाज जन्मना जाति न मानकर कर्म से जाति का निर्धारण करता है। ऐसे अनेक व्यक्तियो के नाम गिनाये जा सकते हैं जो कि जन्म से हरिजन होते हुए भी आर्य समाज द्वारा उनके कर्मों के अनुसार ब्राह्मण की उपाधि से विभूषित किये गये। आर्य जनो म जन्मना जातीयता का कोई भी चिह्न शेष न रहे और सबमे समानता का भाव जाग्रत हो, इसके लिये आवश्यक है कि सभी आर्य जन अपने नामो के साथ कोई जातीय उपनाम न लगाकर उसके स्थान पर आर्य लगायें।

हरिजनो को भी नाम के साथ 'आर्य' उपनाम का ही प्रयोग करना चाहिये। इस सबध मे वे निश्चिन्त रहें, "आर्य" उपनाम का प्रयोग करने से उन्हे आरक्षण आदि की सुविधा से वंचित नही किया जा सकता। यह भी खेद का विषय है कि कुछ प्रबुद्ध आर्य जन भी, जो कि सवर्ण जाति से सबध रखते हैं, अपने जातीय उपनामो का प्रयोग करते हैं। जब कि सार्वदेशिक सभा भी एक प्रस्ताव पारित कर सभी आर्यजनो को जातीय उपनामो के स्थान पर आर्य उपनाम का प्रयोग करने का स्पष्ट निर्देश दे चुकी है।

हरिजनो में भी छुआछूत

यह उल्लेखनीय है कि जन साधारण मे एक भ्रान्ति भी प्रचलित है कि मात्र हरिजन एवं जाट आदि जाति के लोग ही अपने नाम के साथ 'आर्य' उपनाम का प्रयोग करते हैं। जब कि सत्यता तो यह है कि इनके अतिरिक्त भी जन्मना ब्राह्मण जैसी उच्च सवर्ण जाति से सबध रखने वाले मेरे जैसे व्यक्ति भी आर्य उपनाम का प्रयोग करते हैं। हमारे तथाकथित जन्मना सवर्ण जाति के आर्य जनो को सबके, समाज हित म अपने जातीय उपनामो को तिलांजलि देकर आर्य उपनाम का प्रयोग आरम्भ कर देना चाहिये। तभी हरिजन उन से प्रेरणा ले सकेंगे।

यह भी एक कटु सत्य है कि स्वय हरिजनो मे भी छुआछूत कम नही है। ऐसी एक दुखद घटना तो स्वय मेरे सामने ही कुछ वर्षों पूर्व घटी, जब दयानन्द कालेज के निर्माण कार्य में लगे कुछ हरिजन श्रमिको ने दूसरे हरिजन श्रमिको के पानी पीने के बर्तन से पानी पीने से इन्कार कर दिया था, कि वे उनसे उच्च जाति से सबध रखते हैं। अतएव हरिजनो का सर्वप्रथम यह कर्तव्य बनता है कि वे अपने घर मे भी समानता का वातावरण बनाए।

स्वामी दयानन्द और 1857

—डा० भवानीलाल भारतीय—

14 अगस्त के सार्वदेशिक मे पिलानी के श्री यादराम आर्य का एक लेख ' 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम मे महर्षि दयानन्द ने भाग लिया था। शीर्षक छपा है। इसमे उन्होंने महापंडित राहुल साकृत्यायन के लेख के आधार जो बाते प्रस्तुत की हैं मैं उन्हें बिन्दुसार लिख रहा हूं। पाठक इसे पढ़कर स्वय निष्कर्ष निकाल लें क्यो कि राहुल जी के इन कथनो से लेख के शीर्षक की पुष्टि होती है या नही। राहुल जी का कथन निम्न प्रकार है-

1 स्वामी दयानन्द का जन्म 1824 मे हुआ।

2 गदर के समय वे पूर्ण युवा थे।

3 नाना साहब से उनकी भेंट बिठूर म हुई थी।

4 नाना साहब के महल के समीप एक गुरुकुल था।

5 उस गुरुकुल मे नाना साहब, तान्त्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई आदि विद्यार्थी रूप म रह रहे थे।

6 पेशवा बाजीराव अंग्रेजो से अपना खोया राज्य वापस लेना चाहते थे।

7 ऋषि दयानन्द को पेशवा का यह प्रयास अच्छा लगा था।

8 स्वामी दयानन्द ने भी भारत को विदेशी सत्ता म मुक्त करने की प्रतिज्ञा की थी।

9 स्वामीजी ने 1857 के विद्रोह को विफल होते हुए देखा।

10 उन्होने यह भी देखा कि 1857 मे किये गये हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रयासो को दिल्ली के मुल्लाओ ने किस प्रकार विफल कर दिया है।

11. ऋषि दयानन्द सच्चाई से मुह मोड़ने वाले नही थे।

12 उनकी धारणा बनी कि नाना सम्प्रदायो म विभक्त, विभिन्न पूजा-पद्धतियो को स्वीकार करने वाला हिन्दू समाज सदा पददलित ही रहेगा।

13 उन्होने समस्त भारतवासियो को एक सूत्र म करने के लिए एक ईश्वर, एक शास्त्र वेद तथा आर्य जाति का नारा दिया।

14 इसी हेतु उन्होने आर्य समाज की स्थापना की।

15 स्वामी दयानन्द के तर्कों के समक्ष मुल्ला-मौलवी, पण्डित और पादरी सभी मौन हो गये।

राहुलजी के लेख का यही सारांश है जो उपर्युक्त 15 बिन्दुओं मे श्रेणी बद्ध किया गया है। अब पाठक स्वय सोचें कि इसमें क्या स्वामीजी की 1857 के काण्ड मे लिप्त होने की कोई ध्वनि निकलती है। श्री यादराम ने तो इससे यही निष्कर्ष निकाला है कि स्वामीजी ने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम मे अवश्य भाग लिया था। किन्तु उक्त 15 बिन्दुओं मे तो इस कथन की पुष्टि नही होती। तथापि श्री यादराम के हम आभारी हैं क्योंकि उन्होंने आर्य विद्वत मण्डल से आलोच्य विषय पर आगे

(शेष पृष्ठ चार पर)

दयानन्द बाल सदन का ६३वां वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न

बाल कल्याण के क्षेत्र में विगत 93 वर्षों से सेवारत तथा अनाथ एवं निराश्रित बालक बालिकाओं का पालन पोषण एवं शिक्षित दीक्षित करने का प्रसिद्ध स्थान तथा संस्था दयानन्द बाल सदन का साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन विगत रविवार दिनांक 9 10 88 को प्रधान श्री दत्तात्रय जी आर्य की अध्यक्षता में सब सम्मति से सम्पन्न हुआ। इसमें लगभग 3 लाख का वार्षिक आय-व्यय का विवरण तथा 150 बालक बालिकाओं के भोजन शिक्षा प्रशिक्षण आदि सम्बन्धी वार्षिक कार्य विवरण प्रस्तुत होकर सब सम्मति से स्वीकृत हुआ।

आगामी वर्ष के लिये प्रबंध समिति के पदाधिकारी निम्न प्रकार से निर्वाचित हुए

सर्व श्री दत्तात्रय आर्य — प्रधान श्री कृष्णराव वाले वरिष्ठ उप प्रधान श्री रासासिंह — उप प्रधान श्री देवदत्त तनेजा — मंत्री श्री वेदरत्न आर्य — व्यवस्थापक प्रो. जी.एल. जोशी — कोषाध्यक्ष

इसके अतिरिक्त 16 अन्तरंग सदस्य चुने गये श्री आचार्य गोविन्द सिंह एवं श्री शिवचरण सिंह विशेष आमंत्रित सदस्य चुने गए। —मंत्री

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला-५१ भाग

[प्रत्येक समुल्लास पर स्वतंत्र ट्रैक्ट]

1 ईश्वर एक नाम अनेक	9 स्वर्ग और नरक कहां है ?
2 आदर्श माता पिता	10 चौके चूल्हे में धर्म नहीं है
3 शिक्षा और चरित्र निर्माण	11 हिन्दू धर्म की निर्बलता
4 गृहस्थाश्रम का महत्व	12 बौद्ध और जैन मत
5 संन्यासी कौन और कैसे हैं	13 वेद और ईसाई मत
6 राज्य व्यवस्था	14 इस्लाम और वैदिक धर्म
7 ईश्वर और वेद 8 जगत की उत्पत्ति	15 सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के जाने माने विद्वानों के द्वारा लिखित हैं एवं ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रय आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सेट का मूल्य 8/ रुपये है।

(शेष पृष्ठ तीन का)

स्वामी दयानन्द और —

सोचने के लिए कहा है। यहां मैं श्री आर्य से यह निवेदन कर दूं कि स्वामी दयानन्द की कलकत्ता में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक से तथाकथित भेंट अभी इतिहास से पुष्ट नहीं हो पाई है। अम्बाला के स्व. दीवान अलखधारी द्वारा फैलाया यह प्रवाद यद्यपि लाखों की जबान और वाणी पर तो चढ़ गया है किन्तु उसकी सत्यता का अनुसंधान करने का साहस किसी माई के लाल ने अभी तक नहीं दिखाया है। हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब कि आर्य समाज के इतिहासकार उक्त घटना की पुष्टि भारतीय गवर्नर जनरलों के पुराने अभिलेखों या दिल्ली एवं लंदन स्थित पुरातत्व सामग्री के आधार पर करेंगे। मेरा अपना इन समस्याओं पर कोई पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण नहीं है। प्रमाणाधारित और प्रमाणपुष्ट तथ्यों को स्वीकार करने में कोई संकोच होना भी नहीं चाहिए।

श्रीमती प्रेमवती दिवंगत

अजमेर। आर्य समाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रय आर्य की धर्म पत्नी की माताजी श्रीमती प्रेमवती का 6 अक्टूबर 1988 को 90 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया स्वर्गीया श्रीमती प्रेमवती जी आर्य विचारों की एक विदुषी महिला थी यह कारण रहा कि जब उनकी दूसरी पुत्री और आचार्य दत्तात्रय जी आर्य के पति की बहन जो कि एक उच्च सैनिक अधिकारी की पत्नी हैं ने अपने सेनाधिकारी पुत्र को अपनी नानी की अस्थियां हरिद्वार ले जाने के लिए अजमेर भेजा तो आचार्य दत्तात्रय आर्य व उनकी धर्म पत्नी ने उनके आर्य समाजी विचारों का हवाला देते हुए ऐसा नहीं होने दिया और स्वर्गीया की इच्छानुसार उनके भस्मावशेष किसी खेत में विसर्जित कर दिये।

अजमेर आर्य समाज ने श्रीमती प्रेमवती के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर में राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमें वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धान्तों का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणों, विचारों और मान्यताओं का समावेश किया जायगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तकों और उनके अनुयायी विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम, कबीर तथा नानक और तेरापंथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताएं। इसी प्रकार जात पांत छुआछूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध में उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारों का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ में प्रकाशित किए जाने वाले विद्वतापूर्ण निबंधों और लेखों के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान् इस कार्य में सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रय आर्य निदेशक दयानन्द शोधपीठ दयानन्द कालेज अजमेर से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

पत्र और विचार

आप नेतृत्व करें

आदरणीय सम्पादक जी

सादर नमस्ते। 30 सितम्बर के आर्य पुनर्गठन में स्वामी अग्निवेश जी की पदयात्रा के सम्बन्ध में श्री अम्बाप्रसाद शर्मा एवं श्री हुड्डा के पत्र और आपके उत्तर पढ़े। अब यह हरिजन प्रवेश का मामला और भी आगे बढ़ गया है। जैसा कि स्वामी अग्निवेश का आपने इस पदयात्रा में पूरा सहयोग दिया एवं हरिजनों को समानाधिकार दिलाने का एक प्रयास किया परन्तु 2 अक्टूबर को फिर स्वामी अग्निवेश ने नाथद्वारा मन्दिर में प्रवेश का प्रयत्न किया लेकिन इस बार कहीं भी आर्य समाज का नाम नहीं था। उन्होंने आर्य समाज के नाम पर पहले पदयात्रा कर आर्य समाज का सहयोग प्राप्त कर लिया और अब उसमें से दलित मुक्ति मोर्चा नाम का नया संगठन जो उनको मानवाधिकार के नाम पर विदेशी पैसा दिलाने में सहायक हो सके पैदा कर लिया। स्वामी अग्निवेश जी बहुत बड़ी साजिश कर रहे हैं।

उनका विदेशी षड्यन्त्रकारी ताकतों से समझौता लगता है। क्योंकि सती प्रथा विरोधी दिल्ली से देवराला पदयात्रा भी उन्होंने आर्य समाज के नाम से की और उसमें से महिला मुक्ति मोर्चा पैदा कर लिया। ईसाई मिशन के बड़े बड़े चर्चों में जाते हैं। उनसे सहायता लेते हैं। अनेकों विदेशी संस्थायें भी इन्हें आर्थिक सहायता करती हैं। इन लक्षणों से इन पर सन्देह स्वाभाविक है अन्यथा अब पुनः नाथद्वारा में यह नाटक करने की क्या आवश्यकता थी? समाचार पत्रों में जो फोटो छपे हैं उनमें कोई कहीं का हरिजन नहीं था। एक कैलाश सत्यार्थी ब्राह्मण और तीन उनके बन्धुआ मजदूर जिसको वे अपने ही संगठन बन्धुआ मुक्ति मोर्चा में बंधक बनाये हुए हैं नजर आते हैं।

इसलिए अग्निवेश जैसे व्यक्ति से आर्य समाज को सावधान रहना चाहिये और आप जैसे विवेकशील को निर्णय तो अवश्य विचार पूर्ण हो आप पुनः विचार करें।

आर्य समाज के नेता अवश्य अब किसी भी ऐसे अत्याचार अन्याय पर खुलकर सामने नहीं आते आप स्वयं अब नेतृत्व सम्भालें।

आर्य पुनर्गठन से आर्य समाज को इकट्ठा होने की प्रेरणा मिलती है। इसका प्रयास सराहनीय है। शुभकामनाओं सहित—

वेदप्रकाश विद्रोही
ग्रोवर मार्केट रेवाड़ी

श्री रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स अजमेर के लिए सक्सेना प्रिंटर्स अजमेर से मुद्रित कराकर प्रकाशक रासासिंह ने आर्य समाज भवन केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।
सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

पाक्षिक पत्र

"आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥"

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत् को आर्य बनाए

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 रविवार, 30 अक्टूबर 1988 | अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात्। | कार्तिक कृ 6 सवत 2045
अंक 20 पं स -43338/84 II | अभय नक्तमभय दिवान सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥ | वार्षिक मू 15/-, एक प्रति 60 पैसे

शहाबुद्दीन द्वारा हाल के भयंकर मारक भाषण अभियान को रोकने की तुरन्त आवश्यकता है

—सीताराम गोयल—

शहाबुद्दीन के हाल के भाषणों से प्रतीत होता है कि वे किस छल पूर्ण युक्तियों से, जो देश को गर्त मे ले जाने वाली हैं देश को विघटन की ओर ले जाने को उद्यत हो रहे हैं। इन सब बातों को यथाशीघ्र ही रोकने की महती आवश्यकता है। उन्हें चाहिये कि वे स्वय को अपनी धर्म मान्यताओं मे ही रखें न कि इस तरह की अनगल कटुविग्रह, उत्पात पूर्ण बातो–समस्याओ मे उलझे रहे।

वे भारत के सविधान की धारा 153, 153 A 295, 295A तथा 298 का बखान तो करते हैं किन्तु वे भूल जाते हैं कि ये सब धारायें (कानून) अंग्रेजो की देन मात्र हैं। उनकी यह बात तो अति विचित्र एव विश्वास से बहुत दूर है कि अंग्रेजों से पूर्व भारतीय समाज असभ्य एव जगली जैसा था। वे भूल जाते हैं कि इस्लाम धर्म के पहले कौन क्या था ? और इस्लाम धर्म तो अभी एक नवीन पथ जैसा ही है। हमारा-भारतीयो का धर्म-इतिहास तो हजारों-लाखो वर्ष पुराना है जिसमें अपार साहित्य दर्शन, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एव सास्कृतिक मूल्यो का समावेश है। हमारे देश-समाज मे महान गुरुओ-आचार्यों के अद्भुत विचार ज्ञान का सगम है। उन्होने अपने विचारो-मान्यताओ से देश-विदेश के विद्वानो को प्रभावित किया है।

गौतम बुद्ध के विरोध मे उनके समय मे अनर्गल अनेक बातो का प्रचार किया गया किन्तु वे शान्ति-मूर्ति थे और उन्होने कभी ऐसे लोगो का अहित करना तो क्या सोचा तक नही—यह है भारतीय सस्कृति परम्परायें। शहाबुद्दीन को अवश्य ज्ञान होगा कि भारतीय सस्कृति कितनी उदार और महान है। वह कभी दूसरो पर इस तरह अनर्गल बातो पर अपना समय नष्ट नही करती जैसा कि वे कर रहे हैं। वे जिन धाराओ (भारतीय सविधान की) की दुहाई देते हैं भूल जाते हैं कि वे सभी गोटी अंग्रेजो द्वारा गढ़ी हुई हैं, जो दुर्भाग्य से आज तक बिना सुधारे चली आ रही हैं। मैं उनको विश्वास दिलाना चाहूँगा कि मुस्लिम भाई अपने धर्म को मानें, चले और अपनी धार्मिकतानुसार कार्य करे, वे इस हेतु पूर्ण स्वतन्त्र है, किन्तु वे इन्ही बातो के लिए अन्य अमुस्लिम भाईयो के प्रति दुराग्रही क्यो बनते हैं। उन्हे भी अपनी पद्धति अनुसार स्वतन्त्रता है—और होनी चाहिये।

जब कि मुस्लिम अपना अधिकार मांगते हैं-चाहते हैं कि वे अपने धर्मानुसार चले, व्यवहार करें अमुस्लिमो को मुस्लिम बनाये, तो फिर जब अमुस्लिम धर्म के अनुयायी अपने धर्म में मुस्लिम को ले लें—क्या आपत्ति है—फिर विरोध क्यो व कैसा ? बड़ी विचित्र दलील व बात है कि वे जो चाहें सो करें किन्तु अन्य नहीं कर सकते हैं— विचारणीय है। मुस्लिम पुजारी, राजनीतिज्ञ अक्सर शिकायत करते हैं कि उनके धर्म के विषय मे उनकी पुस्तको का उद्धरण त्रुटि पूर्ण किया जाता है किन्तु वे भूल जाते हैं कि वे स्वय ऐसा ही नहीं अपितु बढ़-चढ़ कर यही काय करते है—यह तथ्य उनकी दृष्टि म नही आता।

भविष्य में ऐसा न हो, इनके लिए मेरा सुझाव है कि धर्म के सभी सम्बन्धित विषय पर खुले मन-हृदय से वार्तालाप स्पष्टत कर ली जावे ताकि सभी जाने-अनजाने लोगो को स्पष्ट बातो का ज्ञान हो जावे। यही तरीका हिन्दु-मुस्लिम धर्म अनुयायियो के हित मे होगा। इस सम्बन्ध में ईसाइयो ने सभी का ह्रास मे आह्वान भी किया है। ईसाई लोग कम से कम उनके धर्म-विरुद्ध यदि कुछ है तो बात करने-सुनने को तत्पर तो रहते हैं।

(टाइम्स ऑफ इंडिया से साभार)

कुरान वास्तव में क्या कहती है ?

इण्डियन एक्सप्रेस दैनिक पत्र दिनांक 19-10-88 में प्रकाशित एक लेख के विरुद्ध सैयद यूसुफ लिखते हैं कि जो कुछ लिखा गया है, वह तोड़-मरोड़ कर तथा पूर्ण सम्बन्धित उद्धरणों के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए नहीं लिखा गया है। ऐसे लेखो से राष्ट्रीय एकता नही अपितु उल्टा कटुता ही बढ़ेगी। किन्तु लेखक यह मानता है कि कुरान के अनुसार अमुस्लिमों को या तो मुस्लिम बना दिया जाय अथवा उन्हें कत्ल (मार डाला) कर दिया जावे अर्थात् अमुस्लिमों को सहन न किया जावे। वैसे कुरान आम अमुस्लिमो को मारने की हिदायत नही करती। कुरान तो उनको मारने की कहती है जो कि युद्ध की घोषणा अथवा युद्ध करते हो मुस्लिमों को नष्ट करना चाहते हो-साथ ही ऐसे लोगों को वह अल्लाह के नाम पर मारने को कहती है।

हथियारों का प्रयोग

कुरान में किन्ही विशेष-स्थितियो म ही हथियारो के प्रयोग हेतु कहा गया है। मक्का से मदीना जब लोग (मुस्लिम) आये तब तक उन्हे हथियारो का प्रयोग वर्जित था। किन्तु जब उन नए बने मुस्लिमो पर अत्याचार अन्य लोग करने लगे तभी उनके प्रयोग की बात सामने आई।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

निदेशक दत्तात्रेय आर्य | प्रधान सम्पादक . रामसिंह | सम्पादक वीरेन्द्र कुमार आर्य | कार्या 21010

विश्वास

अंधेरे जितने ही गहरायेंगे,
सूरज को करीबतर ले आयेंगे।
रोशनी रोकने की कोशिशों में,
खुद अंधेरे ही फना हो जायेंगे।

सम्पादकीय–

आर्यसमाज क्रान्तिकारी एवं तेजस्वी संगठन बने

आर्य जगत् मे समय-समय पर विभिन्न पर्व, वार्षिकोत्सव, शताब्दी समारोह आदि आयोजित होते रहते हैं परन्तु उन समारोहो से दो चार दिन की चहल-पहल तो दृष्टिगत हो जाती है परन्तु उसके बाद फिर वही पुरानी चाल शुरू हो जाती है। एक जिन्दा दिल क्रान्तिकारी एव तेजस्वी सगठन मे जो सतत जागरूकता, गतिशीलता तथा विकासोन्मुखी, प्रवृत्ति होनी चाहिये उसका सर्वथा अभाव दृष्टिगत होता है। क्रान्तिकारी व्यक्तित्व क धनी श्री स्वामी अग्निवेश जी न अपन ढग से दिवराला काण्ड तथा नाथद्वारा मन्दिर हरिजन प्रवेश आदि समस्याओ को उजागर करने एव समाज की जडता एव निष्क्रियता को झकझोरने के लिय जनचेतना उत्पन्न करन का साहस किया है परन्तु उनके इन कायक्रमो मे आय समाजी कितने जुड पाये यह आप और हमसे छिपा नही है। यद्यपि उनके इन कार्यक्रमो से देश-विदेश मे तथा यहातक कि सुदूर गावो मे भी महर्षिदयानन्द, आर्य समाज, वेद आदि की अनुगू ज सुनाई पडी, सम्पूर्ण समाज एक चिन्तन को उन्मुख हुआ।

परन्तु आज चाहे बिहार के हरिजनो की नृशस हत्याए हो अथवा पजाब मे आतकवाद द्वारा खेली जा रही खूनी होली हो या काश्मीर घाटी में स्वाधीनता पर्व पर राष्ट्रीय ध्वज जलाया जाता हो तथा पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगते हो अथवा राजस्थान के बृजेन्द्रसिंह विधायक के परिवार मे निरन्तर नवजात कन्याओ की हत्या का मामला हो या मेडता काण्ड की मूलकी नामक बनजारिया जाति की महिला के साथ पुलिस द्वारा किया गया पाशविक एव राक्षसी व्यवहार हो अथवा दहेज के नित्य प्रति रोमाचक एव दिल दहलाने वाले घटना काण्ड हो, कान्वेण्टी सस्कृति का परिवारो म घुलता हुआ जहर हो अथवा अग्रेजियत का बढता हुआ माया जाल हो, वनवासी एव गिरिजनो आदिवासियो का ईसाई–मुसलमाना द्वारा धर्मान्तरण हो, राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद हो अथवा चरित्र हीनता, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, बेईमानी की घटनाए हो, गिरते हुए सामाजिक एव मानवीय मूल्यो की समस्या हो, इन सबके समाधान के लिये दयानन्द के हर सच्चे सिपाही को स्वामी अग्निवेश बनना होगा। क्रान्तिपथ अपनाना होगा। सघर्ष की राह चुननी होगी। आर्य समाज कछुआ वृत्ति अथवा शुतुर्मुर्गी प्रवृत्ति अपना कर जिन्दा नहीं रह सकता।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक आर्य समाज मे सघर्ष और क्रान्ति की लो जलती रही तब तक आर्य समाज एक जीवित, जाग्रत जीवन्त एव क्रान्तिकारी सगठन था। ज्यो ही कोरे अखबारी और कागजी नेताओ का जोड तोड के आधार पर आर्य समाज में वर्चस्व बढा त्योही आर्य समाज एक शिथिल सगठन हो गया। जो कौमे या सभ्यताए अथवा सगठन अपनी कमजोरी को कहने और जानने की हिम्मत नही करते वे धीरे-धीरे धराशायी हो जाते हैं। उनका नाम लेवा और पानी देवा भी नहीं बचता। याद करो ऋषि दयानन्द के तपस्या पूर्ण जीवन और महाबलिदान को, स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा खायी गई पिस्तौल की गोलियो को, निजामशाही के अत्याचारो के विरुद्ध जूझने वाले सत्याग्रही वीरो को। लेखराम द्वारा खाये गये छुरे के वार को अथवा सजपाल के बलिदान को, लाला-लाजपतराय द्वारा खायी हुई लाठियो की मार को।

अत आज प्रत्येक आर्यवीर को अपनी निष्क्रियता, जडता, शिथिलता दूर कर तेजस्विता, सक्रियता, ओजस्विता एव जागरूकता को धारण करना होगा। अन्यथा आर्य समाज को आगे आने वाला इतिहास माफ नहीं करेगा।

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत। उठो, जागो और कर्म क्षेत्र मे प्रवृत्त होकर श्रेष्ठवरो को प्राप्त करो।

यदि आर्यसमाज वर्तमान विषम परिस्थितियो मे भी सोता ही रहा तो फिर सोने वालो का भगवान ही मालिक है। अत आर्यवीरो को कवी के शब्दो मे मेरा कहना है कि—

'उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब-रैन कहा जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।'

—रामसिंह

दंगों की राजनीति

चन्द स्वार्थी धार्मिक धन्धेबाजो की बातो मे आकर कुछ नादान लोग अपनी जान पर खेल गए। पिछले दिनो से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर और खतौली साम्प्रदायिक दगो की आग मे झुलस रहे हैं।

दगा क्यो भडका ? वही कथित राम-बाबर भूमि का मुद्दा। एक जमीन के टुकडे पर दोनो पक्षों के कट्टरपथी मरने मारने पर तुले हुए हैं। जबकि कितनी मस्जिदें-मंदिर बिना सही रख-रखाव के खडहर बन रहे है। उनकी किसी को चिन्ता नही है। कुछ धर्म के नाम पर अपनी राजनीतिक रोटिया सेकने वाले इस कार्य म आ जुटे हैं।

ये धन्धेबाज चदा बटोरू अभियान भी खूब चला रहे हैं। भारत मे अन्य किसी जनकल्याणकारी कार्य के लिए चदा नही मिलेगा लेकिन धर्म के नाम पर यहा दुकानदारी आराम से की जा सकती है।

एक जरा से जगह के टुकडे के लिए आपस मे ही लड मरने के लिए कमर कसने वाले ये हिन्दू-मुस्लिम सूरमा, हजारो वर्ग किलोमीटर भूमि पर कब्जा करने वाले चीन से बात करे तो उचित रहेगा।

—वीरेन्द्र शर्मा

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला-15 भाग

[प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट]

1 ईश्वर एक नाम अनेक	9 स्वर्ग और नरक कहा है ?
2 आदर्श माता पिता	10 चौके चूल्हे मे धर्म नहीं है
3 शिक्षा और चरित्र निर्माण	11 हिन्दू धर्म की निर्बलता
4 गृहस्थाश्रम का महत्व	1 बौद्ध और जैन मत
5 सन्यासी कौन और कैसे हों ?	13 वेद और ईसाई मत
6 राज्य व्यवस्था	14 इस्लाम और वैदिक धर्म
7 ईश्वर और वेद 8 जगत् की उत्पत्ति	15 सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत् के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित है एव ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के पूरे सैट का मूल्य 8/- रुपये है।

वेद का सार्वभौम स्वरूप

—डा आनन्द प्रकाश—

सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुये मनुष्यों को, जीवन क्रम को आगे बढ़ाने के लिये, आयु-स्वास्थ्य-बुद्धि-स्मृति- इन चार वस्तुओं की आवश्यकता थी, जिसे उन्होंने ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान द्वारा प्राप्त नैमित्तिक विवेक से प्राप्त किया। परम पिता परमात्मा आदि गुरु है तथा उनका ज्ञान अनादि अनन्त, नित्य, शाश्वत और दिव्य है। मनुष्य में नैमित्तिक ज्ञान अनायास उत्पन्न नहीं हो सकता, यह परम्परा से मिलता रहता है- यही वैज्ञानिक सिद्धान्त है। युगान्त में लुप्त हुये वेदों को, दैव्य ऋषि अपने पूर्व संचित तप से प्राप्त करते हैं जो श्रुति के रूप में ऋषि-गुरु परंपरा से सदा प्रवाहित होता है। वर्तमान सृष्टि में मानव इतिहास करोड़ो वर्ष पुराना है और वेद ज्ञान की अवधि भी उतनी ही प्राचीन है। वेद ज्ञान को कुछ हजार वर्ष प्राचीन मानने वाले विद्वानों ने इसकी सार्वभौमिकता, ग्राह्यता और उपादेयता को संकुचित और सीमित बना दिया है।

वेद प्रतिपादित धर्म ही मानव मात्र का धर्म कहा जा सकता है, जो सभी मनुष्यों की भूमि माता की सन्तान और एक ईश्वर का पुत्र स्वीकार करते हुये, उन्हें जीवन में उत्तरोत्तर श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता लाने का पावन सन्देश देता है। यह सन्देश सृष्टि के प्रारम्भ में जिस समय मनुष्य को प्राप्त हुआ था, उस समय कोई मत सम्प्रदाय अस्तित्व में नहीं था। धर्म व सम्प्रदाय में विभेद न कर पाने के कारण ही संसार में धार्मिक विद्वेष और उन्माद व्याप्त है। मानव मात्र का धर्म अर्थात् जीवनादर्श के वे मौलिक तत्व जो धारण करने योग्य है—सबके लिये समान हैं। वेदों में जिन उदात्त सिद्धान्तों, कर्त्तव्यों और गुणों का वर्णन मिलता है, उनका विरोध कोई भी आस्तिक सम्प्रदाय आज भी नहीं कर सकता। वेदों की इन व्यापक शिक्षाओं के कारण ही धर्म शब्द स्वयं इतना व्यापक अर्थ अपने गर्भ में समा बैठा है। वैदिक धर्म के व्यापक अर्थ में नैतिकता के वह सभी सिद्धान्त समाहित हैं, जिनसे केवल मानव-समाज का ही नहीं, अपितु परमेश्वर की समस्त प्रजा (सम्पूर्ण चेतन जगत) का कल्याण तथा उपकार होता है। इस प्रकार वैदिक धर्म का सार्वभौम रूप प्रकट होता है। किन्हीं विशेष पूजा पद्धतियों और आडम्बर जनित विश्वासों की सीमा में बंधे सम्प्रदाय, सर्वहितकारी मानव-धर्म का स्थान नहीं ले सकते। यह सभी सम्प्रदाय कुछ हजार वर्षों से ही अस्तित्व में आये हैं।

मोटे तौर पर, मानव चिन्तन की तीन विशिष्ट अवधारणायें हुआ करती हैं—(1) वह अमरत्व को प्राप्त करना चाहता है, (2) वह विवेकी और तार्किक होना चाहता है और (3) वह सामाजिक परिवेश में ढलना चाहता है। वेद के सार्वभौम चिन्तन द्वारा आत्मा को अमरत्व का सन्देश दिया गया है, प्रकृति के रहस्य में रचनाकार का साक्षात्कार करने के लिये सूक्ष्म दृष्टि प्रदान की गयी है, और विश्व-समाज-रचना को सर्वहितकारी एवं कल्याणकारी बनाने की योजना प्रस्तुत की गयी है।

वेदों के सार्वभौमिक (सम्प्रदाय विहीन) स्वरूप को स्पष्ट रखने के लिये यह कह देना भी परम आवश्यक है कि (1) वेदों में इतिहास नहीं है—इनके शब्द यौगिक है, जिनके भीतर इतिहास होने की सम्भावना नहीं हो सकती, (2) वेदों में बहुदेवता अथवा जड़पूजा का विधान नहीं है, (3) इसमें संग्रामों में शत्रुओं पर विजय का वर्णन नहीं है, तथा (4) यह केवल मात्र हिन्दुओं की धर्म पुस्तक या मात्र भारतवासियों के लिये नहीं है।

पता—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी—5

राजस्थान प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह 30-31 दिसम्बर 1988 और 1 जनवरी 1985 को अलवर में आयोजित किया जाएगा।

—मन्त्री

संतराम बी. ए. पर डाक टिकट की मांग

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने भारत सरकार से स्व श्री संतराम जी बी ए पर डाक टिकट जारी करने की अपील की है।

आचार्य जी ने केन्द्रीय संचार मन्त्री को लिखे अपने पत्र में श्री संतरामजी के सामाजिक व साहित्यक कार्यों का स्मरण कराते हुए, उन पर डाक टिकट जारी कर उन्हे सम्मान देने का अनुरोध किया है।

आचार्य जी ने मन्त्री महोदय को स्मरण दिलाया है कि आपने श्रीयुत् संतराम जी के जीवन काल में उन पर डाक टिकट जारी करने में इस आधार पर असमर्थता व्यक्त की थी कि जीवित व्यक्तियों पर टिकट जारी करने की परम्परा नहीं है। श्री संतराम जी का अब देहान्त हो चुका है इसीलिए अब उन पर डाक टिकट जारी कर देना चाहिए।

आर्यसमाज दरभंगा की अपील

गत दिनों बिहार में आये भूकम्प से आर्यसमाज मन्दिर दरभंगा पूर्णतया ध्वस्त हो गया है।

समाज का कार्य फिर से सुचारु रूप में शुरू करने के लिए आर्य दानवीरों, मानवतावादी संस्था और अपनी ओर से आर्यसमाज शिक्षा संस्था, डी ए वी और अन्य सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक दान राशि भेज कर पुण्य के भागी बनें।

—प्रधान

ऋषि-निर्वाण-दिवस समारोह

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली के पावन पर्व पर बुधवार दिनांक 9 नवम्बर 1988 को प्रात 8 बजे से केसरगंज स्थित आर्यसमाज भवन में भारतीय स्वतन्त्रता के अग्रदूत वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 105वां निर्वाण दिवस श्री प वेदरत्न जी आर्य की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

—मन्त्री

कुरान वास्तव—

(शेष पृष्ठ एक का)

कुरान ने कहा है, 'जो लोग तुम्हे सताये उन्हे तुम अल्लाह के नाम पर मार डालो।" इस तरह से कुरान में जो लिखा गया है, वह न्याय संगत एवं उचित है।

अपवाद के लिए

कुरान में आता है कि जो लोग अल्लाह, उसके अनुयायी-भक्तों की खिलाफत करते हैं, उन्हे खत्म कर दो, हाथ-पैर काट डालो, फांसी पर लटका दो। आगे आता है कि जो मुस्लिम भी धर्म के विरुद्ध बातें करते है उनकी चालों में मत आओ और उनके साथ भी अल्लाह के नाम पर अमुस्लिमों जैसा व्यवहार करो।

बदलती दुनिया

मुझे मेरी बीवी से बचाओ!

परिस्थितियां कब किस ओर करवट लेंगी, इसकी कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। अब देखिए, कभी वे भी दिन थे कि जब स्त्री को पुरुष पैरों की जूती समझता था। उसे उत्पीड़ित करता था। घर की चार दीवारी में कैद रखता था और उसके समस्त मौलिक अधिकारों का हनन कर उस पर एक तानाशाह की तरह हुक्म चलाता था। तब पुरुष की ही तूती बोलती थी। परन्तु अब वो दिन लद चुके हैं।

वर्तमान समय स्त्री जाति का समय है। आज पुरुष को स्त्री उत्पीड़न का शिकार होना पड़ रहा है। यह सब सम्भव हुआ है, नारी अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए पिछले तीस वर्षों में बनाए गए विभिन्न कानूनों के कारण। स्त्री जाति के प्रति एक बार जो सहानुभूति लहर चली तो वह सीमा का अतिक्रमण कर गई और नारी को पुरुष के समान दर्जा दिलाते-दिलाते पुरुषों के मौलिक अधिकारों का ही सफाया कर दिया गया।

अब साहब, जब स्त्रियों के अत्याचार अधिक बढ़े तो पुरुषों को उसके विरुद्ध आवाज उठाने पर विवश होना ही पड़ा। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि पति-पत्नी का सम्बन्ध ही एक ऐसा है कि जिसके माध्यम से पूर्व काल में पुरुष स्त्री जाति पर अत्याचार करता रहा है और वर्तमान में स्त्रियां पुरुषों को उत्पीड़ित कर रही हैं। [illegible] अब पत्नियां ही पतियों पर अत्याचार करती हैं, इसलिए पीड़ित पुरुषों ने अपने संगठन का नाम रखा-'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा।'

अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा का प्रथम अधिवेशन गत दिनों दिल्ली में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में काफी संख्या में पत्नी पीड़ित पुरुष सम्मिलित हुए। इन सभी ने यह सर्व सम्मत प्रस्ताव पारित किया कि हमें अपनी पत्नियों के अत्याचारों से बचाया जाए।

मोर्चा सदस्यों का कहना था कि अधिकांशतः दहेज के मामलों में स्त्रियां दोषी होती हैं परन्तु दंडित उन्हें होना पड़ता है। उनके अनुसार स्त्रियां उन्हें परेशान करती हैं, घर में क्लेश रखती हैं और बात-बेबात बच्चों को पीटकर अपना गुस्सा उतारती रहती हैं। वे हमें (पतियों को) धमकी देती हैं कि यदि उन्होंने उनका कहना नहीं माना तो वे आत्महत्या कर लेंगी, जिस पर हमें [illegible] पड़ेगी।

यही नहीं वे दहेज न लाने का झूठा आरोप लगाकर हमें पुलिस द्वारा परेशान भी कराती हैं और ऐसे मामलों में उन्हें (स्त्रियों को) हर शहर में बने तथाकथित स्वयं सेवी संगठनों का भी प्रश्रय हो जाता है। जिससे हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा भी गिरती है और जिसके फलस्वरूप हमें अपनी बहन-बेटियों के विवाह आदि संबंधों में रुकावटों का सामना करना पड़ता है। मोर्चा सदस्यों ने कहा कि इन सभी कारणों को दृष्टिगत रखते हुए अधिकांश पति अपनी पत्नियों के अत्याचारों को चुपचाप सहन करते रहते हैं। जिसका कि वे और भी अनुचित लाभ उठाती हैं, वे पतियों को धमकाती ही नहीं पीटती तक हैं।

मोर्चा ने उक्त स्थिति को देखते हुए सरकार व सभी से गम्भीरतापूर्वक इस नाजुक मामले पर विचार करने को कहा है, ताकि पत्नी अत्याचारों से पुरुषों को बचाया जा सके।

और चलते-चलते कुंवारे लोगों को एक सलाह, जो हमें हमारे पत्नी पीड़ित मित्र ने गत दिनों दी थी—

'समस्त अविवाहित पुरुषों को चाहिए कि वे शादी से पूर्व ही 'अखिल भारतीय पत्नी अत्याचार विरोधी मोर्चा' के सदस्य बन जाएं। बाद में क्या मालूम कि पत्नी मोर्चा की सदस्यता लेने दें या नहीं।"

—वीरेन्द्र कुमार शर्मा

पत्र और विचार

वैदिक समाज का पुनर्गठन करें

आर्य पुनर्गठन 30 सितम्बर अंक मिला।

जिस प्रकार के आर्य पत्र की कामना मैं विगत कई वर्षों से करता आया हूं आज प्रथम बार मैंने विशेष प्रकाश में देखने पर आपके पत्र में पाया—वीरेन्द्र शर्मा जी का लेख उत्तम है, अन्य सम्पादकीय लेख भी उत्तम स्तरीय है।

परमात्मा करे कि विगत अनेक वर्षों से विस्मृत हुई आर्य जाति को संस्कार, स्वाध्याय, नियमपालनहीनता के क्रम को समाप्त कर आप अपने वैदिक समाज की पुनर्रचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। पत्रिका नियमित भेजते रहें—

शेष सेवा लिखें। सभी को नमस्ते।

भवदीय

डा. [illegible] सिंह, [illegible]

क्रांति का बिगुल

"आर्य पुनर्गठन" पाक्षिक पत्रिका पढ़ने का सौभाग्य मिला।

लगा कि वास्तव में आपने क्रांति का बिगुल बजा दिया है। निराश हुए हृदय को आशा की झलक दिखाई दी। सार्वदेशिक एवं ऐसे [illegible] प्रधान, आर्य प्र० नि० सभा उ. प्र. पर ऐसे तथाकथित प्रधान यदि बने रहेंगे तो समाज ही पूरा पौराणिक कुछ दिनों के पश्चात हो जाने का भय है। स्वयं यदि व्यवहार में नहीं लायेंगे तो दूसरे पीछे के अथवा नवीन समाज के सभासद क्या अनुसरण करेंगे।

मान्यवर,

सार्वदेशिक के तथा प्रान्त के सभा प्रधान बने व्यक्ति ने मिर्जापुर में भी फर्जी पौराणिकों की भस्म रज को मान्यता दे दी है, जिसके प्रधान, शिवालय में प्रतिदिन पूजा अर्चना करते हैं। क्या अब समाज इन्हीं के बल पर आगे बढ़ेगा?

—[illegible] गुप्ता, मंत्री

आर्य समाज, मिर्जापुर।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर में राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया है जिससे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धान्तों का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणों, विचारों और मान्यताओं का समावेश किया जायेगा जो अन्य मतों की धार्मिक पुस्तकों और उनके अनुयायी विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम, कबीर तथा नानक और तेरापंथी, जैन सम्प्रदाय की मान्यताएं। इसी प्रकार जात-पांत, छुआछूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध में उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारों का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ में संकलित किये जाने वाले विचारपूर्ण निबन्धों और लेखों के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य में सहयोग दे सकें वे कृपया श्री [illegible], निदेशक, दयानन्द शोधपीठ दयानन्द महाविद्यालय अजमेर से सम्पर्क करने की कृपा करें।

श्री रतनलाल शर्मा द्वारा श्री आर्य प्रिंटर्स, अजमेर के लिए [illegible] प्रिंटर्स, अजमेर से मुद्रित करवाकर प्रकाशक [illegible] ने आर्य समाज भवन केसरगंज अजमेर से प्रकाशित किया।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द . 163
सृष्टि सम्वत् 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म ।।'

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनायें ।

हमारा उद्देश्य :
समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 4 मगलवार 15 नवम्बर 1988
अक · 21 प स -4·338/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

कार्तिक शु 6 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

महर्षि दयानन्द और श्री भगवानदेव

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

गत कई वर्षों से श्री भगवान देव (पूर्व मामद) द्वारा महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाये जाने के समाचार प्रकाशित हो रहे हैं। समाचारो के अनुसार इसमे महर्षि की भूमिका भी स्वय श्री भगवान देव करेंगे ।

निस्सदेह फिल्म प्रचार का एक सशक्त माध्यम है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने के एक प्रस्ताव को कई वर्ष पूर्व स्वीकृति दी थी। किन कारणो से सभा यह कार्य नही कर सकी, इसकी जानकारी मुझे नहीं है और न ही उस पर यहा चर्चा करना मेरा अभीष्ट है । मैं इस प्रश्न को लेकर भी बहस करना उचित समझता कि महर्षि दयानन्द जैसे विशाल व्यक्तित्व के धनी का अभिनय श्री भगवानदेव कर सकेंगे या नही ।

पिछले दिनो हमे देखने को मिला कि श्री भगवानदेव अपने व्यक्तिगत पत्रो पर न अपने चित्र के नीचे 'भगवान दयानन्ददेव के रूप मे' प्रकाशित कराते है । हमारी सम्मति में उनका यह कार्य आर्यसमाज के सिद्धान्तो के पूर्णतया विपरीत है। इससे अवतारवाद जैसी पौराणिक मान्यता को बढावा मिलेगा ।

फिल्म मे दयानन्द की भूमिका करना और बात है, लेकिन अपने व्यक्तिगत पत्रो पर 'दयानन्द के रूप मे प्रकाशित करना वैदिक सिद्धान्तो के सर्वथा विरुद्ध कृत्य है। और दयानन्द के नाम का दुरुपयोग है । इस सदर्भ मे यह भी उल्लेखनीय है कि रामानन्द सागर की 'रामायण' मे राम की भूमिका करने वाले अभिनेता अरुण गोविल को अपने व्यक्तिगत पत्रो पर 'राम के रूप मे 'अरुणगोविल' प्रकाशित कर स्वय को राम का नया अवतार प्रचारित करने की इजाजत नही दी जा सकती। फिर श्री भगवानदेव तो अपने को आर्य कहते है । उन्हे हमारा यही परामर्श है कि वे अपने पत्रो पर यह चित्रादि का प्रकाशन अविलम्ब बन्द करे ।



गजल

अय दुनिया बता इससे बढकर अब और हकीकत क्या होगी ।
आ देदी तलाशे हक के लिये अब और इबादत क्या होगी ।।
औरो के लिये मरने वाले मर कर भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत पे दुनिया रश्क करे उस मौत की कीमत क्या होगी ।।
यू तो हर रोज की तारीकी लाती है पयाम उजाले का।
जिसने यह जहा पुर नूर किया, उस रात की कीमत क्या होगी ।।
खजर भी चलाये अपनो ने, जहरे भी पिलाई अपनो ने।
अपनो के ही एसाँ क्या कम है, गैरो से शिकायत क्या होगी ।।
सदियो की खिजा के बाद खिला एक फूल उसे भी तोड दिया ।
कलियो के मसलने वालो से फूलो की हिफाजत क्या होगी
उस जुर्रत हिम्मत के सदके उस जज्बए सादिक पै कुर्बा।
इससे बढकर हक की खातिर कातिल से बगावत क्या होगी ।।

— स्व. पं चमूपति एम ए.

पुण्य स्मरण

महान दयानन्द



आग को ऐसा सहेजा, क्राति फू की थी निराली ।
वेद की जलती ऋचा से, जिन्दगी तुमने जलाली ।
साधना आलोक की अभिव्यक्तियो मे लय हुई यो—
तुम जले तो भोर आया, तुम बुझे तो थी दीवाली ।

—सौमित्र

पिछले सौ डेढ सौ वर्षों मे जिन महापुरुषो ने भारत भूमि को पवित्र किया है उनमे स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान बहुत ऊचा है । सैकडो वर्षो से सोये हुये हिन्दू समाज की आत्मा को उद्‌बुद्ध करने का बहुत बडा श्रेय उनको है। उनके दार्शनिक विचारो से असहमत होना सम्भव है, वेदो की उन्होने जो व्याख्या की है उसको बहुत से स्थलो मे स्वीकार न करना सभव है परन्तु उनका उज्ज्वल चरित्र, ज्वलन्त देश प्रेम, गम्भीर विद्वत्ता और हिन्दुओ के अभ्युदय के प्रति अनन्य निष्ठा के सम्बन्ध मे दो राय नही हो सकती। यदि आज हिन्दू समाज अपनी बहुत सी रूढियो और सामाजिक कुरीतियो को छोड सका है तो इसमे सन्देह नही कि यह बहुत दूर तक स्वामी जी के उपदेशों का प्रभाव है । जो उनके विचारो से पूर्णतया सहमत नहीं हैं, उनके हृदय मे भी स्वामी दयानन्द के प्रति आदर की भावना है । मैं भी इस अवसर पर आपके साथ उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पित करता हूं ।

—स्व. डा सम्पूर्णानन्द, पूर्व राज्यपाल राजस्थान द्वारा 81 वें निर्वाण दिवस पर दी गई श्रद्धांजली

सम्पादकीय

ऋषि निर्वाण दिवस पर संकल्प ग्रहण करें

महर्षि का अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ेंगे-पढ़ायेंगे

आधुनिक युग के महान ऋषि, स्वराज्य के प्रथम उन्नायक, सामाजिक एव धार्मिक क्राति के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थो मे सत्यार्थ प्रकाश का महत्वपूर्ण स्थान है। यह आर्यो का अमर ग्रन्थ है। लाला लाजपतराय, पडित गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महापुरुषो की जीवनधारा को बदल देने वाला तथा भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारियो का जनक यही सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की रचना करके महर्षि ने मानव जाति का बहुत उपकार किया है। सत्य को ग्रहण और झूठ को छुडवाना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है और यही सब सामाजिक एव धार्मिक सुधारो का मूल सूत्र है। स्वय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस ग्रन्थ की भूमिका मे लिखा है कि 'सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है। सच्चाई के साक्षात्कार से ही मानव जीवन का कल्याण हो सकता है।

सत्यार्थ प्रकाश आर्ष ग्रन्थो की कोटि मे आता है क्योकि इसमे मानव मात्र की भलाई करने वाली प्रामाणिक बात है तथा मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी महत्वपूर्ण विषयो को बहुत सरलता से इस ग्रथ मे ऋषि द्वारा समझाया गया है। सत्यार्थ प्रकाश का अर्थ यह है कि सत्य के अर्थ का प्रकाश अत इसमे कोई भी जिज्ञासु अपना जीवन सफल बना सकता है। ऋषि के सब ग्रथो का सार भी इसी मे आ गया है। किसी नवीन मत की कल्पना इस ग्रथ मे लेशमात्र भी नही है। यह ग्रथ ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक ऋषि मुनियो के वेद प्रतिपादित मान्य विचारो का सग्रह है। वेद आदि ग्रन्थो को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुजी का कार्य करता है। इस ग्रन्थ को पढने से सभी भ्रान्तियो का निराकरण हो जाता है तथा अधविश्वास मिट जाते हैं। इसी ग्रन्थ से ऋषि के मन्तव्यो और उनके कार्यक्रमो को भली प्रकार से जाना जा सकता है।

महर्षि ... यह कह सकते हैं कि जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जीवन की इस लोक की और परलोक की समस्त समस्याओ को सुलझाने के लिए यह ग्रन्थ एकमात्र ज्ञान का भण्डार है।

सत्यार्थ प्रकाश में चौदह समुल्लास हैं जिनमें से दस समुल्लास मडन के अन्तिम चार खण्डन के हैं। जिस प्रकार से किसी फोडे को ठीक करने के लिए उसकी चीर फाड करनी पडती है जिससे बहुत पीडा भी होती हैं परन्तु अन्त मे रोग समूल नष्ट हो जाता है, ठीक इसी प्रकार से अन्तिम चार समुल्लासो मे से ऋषि ने अपने घर की (अपने धर्म की) तथा बाहर के-मतमतान्तरो की कमजोरियो पर विस्तार से प्रकाश डाला है और मानव मात्र से पक्षपातरहित होकर सत्य को ग्रहण करने का आह्वान किया है।

सत्यार्थ प्रकाश वैचारिक क्राति का मूल स्रोत है। इसे जितनी बार हम मनोयोगपूर्वक पढ़ेगे उतनी ही बार नई-नई बाते हमे सीखने को मिलेगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के कल्याण हेतु तथा सत्य धर्म का स्पष्ट दिग्दर्शन कराने हेतु इस अमर ग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रथ ऋषि ने आर्यभाषा हिन्दी मे इसलिए लिखा था कि इसका जन साधारण मे अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो।

इसी ग्रन्थ को पढकर हम सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा वैचारिक क्राति अपने जीवन मे ला सकते हैं। सच्चे आर्य का निर्माण तथा सगठन की कसौटी भी यही ग्रन्थ है। अन्धकार मे एक प्रकाश यही सत्यार्थ प्रकाश है। अन्धविश्वासो एव जडीभूत रूढियो को मूलोच्छेदन करने वाला ग्रन्थ।

आओ आप और हम सब ऋषि के निर्वाण दिवस के अवसर पर यह पुनीत सकल्प ग्रहण करे कि सत्यार्थ प्रकाश को स्वय पढेंगे, दूसरो को पढायेंगे, इसकी शिक्षा स्वय ग्रहण करेंगे, दूसरो को धारण करायेगे। इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करेगे। यदि हमे बन्धनो से छुटकारा पाना है, जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद की जकडन से मुक्ति पानी है, दहेज, बालविवाह, अनमेल विवाह, सतीप्रथा जैसी कुप्रथाओ के जाल से पीछा छुडाना है, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, पोपलीला और पौंगापन्थी से अपना पीछा छुडवाना है तो सत्यार्थ प्रकाश को पढना होगा और उसकी शिक्षाओ का अनुसरण करना होगा। अन्यथा नमक की खान मे हम भी पूरी तरह नमक की खान हो जायेगे।

—रासासिंह

दहेज का दानव दनदना रहा है

वीरेन्द्र कुमार आर्य

गत कुछ माह पूर्व कानपुर मे तीन अविवाहित सगी बहनो ने इसलिए आत्म-हत्या कर ली थी कि दहेज देने मे असमर्थ होने के कारण उनके माता-पिता उनकी शादी नही कर पा रहे थे। ये लडकिया नही चाहती थी कि उनके अभिभावक उनके कारण परेशान हो।

4 नवम्बर को केरल के पालघाट के अलापुल्ली मे कानपुर की घटना की पुनरावृत्ति हुई। वहा चार अविवाहित सगी बहनो (मथा सुमिति, अनाका व शशिकला) ने आत्महत्या कर ली, क्योकि बडी बहन को शादी दहेज के कारण लम्बे समय से नहीं हो पा रही थी।

भारत मे दहेज देने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। पुराणो आदि ग्रन्थो मे भी दहेज दिये जाने का उल्लेख मिलता है। लेकिन दहेज ने समस्या का रूप इधर कुछ दशको से ही लिया है। वस्तुत लडके से अधिक दहेज के मामले मे लडकी वालो का दोष है। हर माता-पिता अपनी लडकी का सबध अधिक से अधिक सपन्न व्यक्ति के साथ करना पसन्द करता है। इसके लिए वह लडके वालों को पटाने के लिए दहेज का सहारा लेता है। आखिर इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि दहेज व लडकी को मानने लडके वाले लडकी वालो के घर नहीं जाते हैं। ये तो लडकी वाले ही हैं कि लडकी के साथ दहेज देने की पेशकश को लेकर लडके वालो के घर पहुचते हैं। क्या ऐसा सम्भव नही है कि परिस्थितियाँ ऐसी उत्पन्न की जाए कि लडकी वाले को इस तरह लडके वाले के घर न जाना पडे? सच तो यह है कि ऐसे बाप, जो अपनी लडकियो की शादी अच्छे और सपन्न घर मे करने के लिए भारी दहेज का सहारा लेते हैं, सामाजिक अपराधी हैं।

इन्हीं लोगों के कारण योग्य एवं खूबसूरत गरीब लडकी को भी किसी अयोग्य ऐरे गैरे लडके के पल्ले बधना पडता है, क्योकि योग्य लडको को खरीदने की सामर्थ्य उनके अभिभावको मे नही होती।

दहेज की समस्या का समाधान कठोर कानूनो से सभव नहीं है। लडकी को पिता की सम्पत्ति मे से हक दिलाना भी इस रोग का निदान नही हो सकता। सम्पत्ति भी तो दहेज ही है। लडके लडकियो की आर्थिक निर्भरता, अन्तर्जातीय विवाह (परस्पर सहमति से विवाह) ही दहेज के दानव से समाज को मुक्ति दिलाने में सफल हो सकते हैं।

यह भी एक विडम्बना ही है

(शेष पृष्ठ चार पर)

धार्मिक भावनाओं का शिखण्डी

सलमान रुश्दी के अब प्रकाशित उपन्यास द सैटेनिक वर्सिज (शैतानी स्तोत्र) पर प्रतिबंध लगा कर भारत सरकार ने साँप्रदायिक तत्वों को खुश करके वोट बटोरने की अपनी देशघाती नीति का एक और प्रमाण दिया है मुस्लिम शायद भारत में सर्वाधिक अल्प शिक्षित धार्मिक वर्ग है जिसमें निरक्षरों की बहुत बड़ी संख्या है लेकिन कुछ मुल्ला मौलवी और सामन्तों ने कहीं सुन लिया कि सात समुन्दर पार छपी एक किताब में उनके धर्म और पैगम्बर का अपमान होता है तो हमारी निर्मल छवि सरकार ने तुरत मान लिया और पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया गरीब और पिछड़े हुए मुसलमानों की आर्थिक प्रगति में किसी का वास्ता लेना देना सिर्फ उनके धर्म की रक्षा होनी चाहिए।

महंगे विदेशी उपन्यास भारत में कोई विरला ही पढ़ता है अतः प्रकट है कि न इन धर्म के व्यापारियों ने यह उपन्यास पढ़ा है न प्रतिबंध लगाने वालों ने। लेकिन वोटों की राजनीति चलाने के लिए जरूरी होते हैं—विवाद शैतानी स्तोत्र को विवाद का मुद्दा बना लिया गया लेकिन सभी बुद्धिजीवियों लेखकों और जागरूक पाठकों के लिए जिन्हें वोटों में रुचि नहीं है यह इस लिए एक महत्वपूर्ण मामला है क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक आघात है। प्रबुद्ध नागरिकों का इस प्रतिबंध का डटकर विरोध करना चाहिए।

धार्मिक भावनाओं को ठेस न लगाने के नाम पर सरकार सभी रूढ़िवादी प्रतिगामी व कट्टरपंथी शक्तियों का पृष्ठपोषण कर रही है। नाथद्वारा के मंदिर में हरिजनों के प्रवेश करने पर उन्हें पीटा जाता है और सरकार मौन रहती है सती-प्रथा के विरोध के लिए स्वामी अग्निवेश आवाज उठाते हैं तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता है और इस्लाम के ठेकेदार जिनको किसी बात की परवाह नहीं है। क्योंकि सरकार को कट्टर हिंदू के वोट से भी उतना ही प्यार है जितना कट्टर मुस्लिम के वोट से। सच्ची धर्म निरपेक्षता!

सलमान रुश्दी खुद एक मुसलमान हैं एक विचारशील प्रबुद्ध मुसलमान। उनका यह उपन्यास एक महत्वपूर्ण गम्भीर साहित्यिक कृति माना गया है। इसके पीछे उनका पाँच वर्ष का गहन शोध निहित है। उन्होंने स्वयं कहा है कि इस उपन्यास में इस्लाम विरोधी कुछ नहीं है। यह भी ध्यातव्य है कि इस लेख के लिखने तक भारत छोड़ कर विश्व के किसी भी देश में पाकिस्तान में भी—उपन्यास पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है अपने इस कदम से भारत सरकार ने एक और सकीर्ण साम्प्रदायिक शक्तियों के हाथ मजबूत किये हैं और दूसरी ओर विचार तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन किया है।

सरकार के इसी पृष्ठ पोषण से धार्मिक भावनाओं को ठेस लगने का बीमारी—विशेषतः अल्पसंख्यकों में गम्भीरतर होती जा रही है उत्तेजना और राजनीतिज्ञ धार्मिक भावनाओं की टट्टी की आड़ में अपने स्वार्थ मजबूत करने में लगे हैं।

वैचारिक स्वातन्त्र्य का तकाजा है कि धार्मिक भावनाओं के शिखण्डी का खेल हमेशा हमेशा के लिये समाप्त कर दिया जाये सड़ी गली पोथियों और कट्टर व धर्मांध पण्डित मुल्ला पादरियों के कोष में सभी जहाँ लत भूठ अंधविश्वास व प्रपंच भरे पड़े हैं जिन्हें वे अपने धार्मिक विश्वास की संज्ञा देते हैं। यदि झूठ फरेब और मक्कारी के इस तिलिस्म को गिराना है तो यह इन धार्मिक विश्वासों पर चोट किये बिना कैसे सम्भव है?

सतीप्रथा और हरिजनों का दमन हिंदुओं के धार्मिक विश्वास में शामिल है। क्या आप हिंदू की इन भावनाओं को ठेस नहीं लगाना चाहते? ईसाइयत आर्य समाज सिक्खी व इस्लाम के अनुसार मूर्ति पूजा पाप और पाखंड है। क्या इसे हिंदू भावनाओं के लिए अनुचित मानकर आप इन धर्मों की पुस्तकों पर प्रतिबंध की माँग करेंगे? देवी देवताओं की मूर्तियों को नैवेद्य और सम्मान लोकिक या साधारण प्रतीक ही सुनकर क्या किसी मुसलमानों को ठेस लगती होगी तो क्या आप मूर्तिकला, मूर्तिपूजा और संगीत पर प्रतिबंध लगायेंगे? आज अनेक इस्लामी राष्ट्रों ने बहुपत्नी प्रथा समाप्त कर दी है। क्या यह भावनाओं को छेड़े बिना सम्भव होता धार्मिक भावनाओं की सीमा कहाँ है? समुद्र यात्रा का निषेध अस्पृश्यता बुर्का पर्दा व घूँघट दहेज सती कन्यावध देवदासी वेश्यावृत्ति पशु बलि नर बलि पत्थरों से मार कर प्राण दण्ड विधर्मियों का संहार बाल विवाह दास प्रथा—ऐसी कौन सी बुराई है जिसके लिए धार्मिक ग्रंथों किताबों और धार्मिक लोगों से समर्थन नहीं जुटाया जा सकता

विज्ञान की लगभग हर स्थापना धार्मिक विश्वासों के विरुद्ध है। कुरआन कहता है कि जमीन चपटी है और बाइबिल कहती है कि जमीन स्थिर है।

हम समझते हैं कि गलत या सही सभी विश्वासों पर सब को खुलकर विचार करने की और उन विचारों को अभिव्यक्ति देने की छूट होनी चाहिये। यह कोई बड़ी माँग नहीं है बल्कि एक नितांत सहज अनिवार्यता है। धार्मिक विश्वास दीपक की ज्योति होने चाहिये दुखते हुए फोड़े नहीं जिन्हें आप पट्टियाँ लपेटे फिरें।

इन तथाकथित धार्मिक भावनाओं को पोसते रहने से ही राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद जैसे विवाद चलते हैं खालिस्तान जैसी माँगें उभरती हैं। मूढ़ताओं मूर्खताओं और अंधविश्वासों की मालिश करते रहकर आप देश में साम्प्रदायिकता को समाप्त नहीं कर सकते। साम्प्रदायिकता, ख्वाह वह किसी धर्म की हो समाप्त करने के लिए धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध एक संग्राम छेड़े बिना कोई उपाय नहीं है।

—उर्मि कृष्ण

भूतल पर स्वर्ग की साकार कल्पना

वेद व साहित्य में यज्ञ महिमा पढ़कर यज्ञ के विषय में गहराई से विचारने को मन विवश हुआ है स्वर्ग कामो यजेत् इस मीमांसा वाक्य ने यज्ञ के प्रति और अधिक आकृष्ट किया। वैज्ञानिक गवेषणाओं ने इस जिज्ञासा को तीव्रतर किया अपना प्रथम शोध प्रबंध ग्रन्थ The Methods of the Interpretation of the vedas लिखते समय भी यज्ञ पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता अनुभव हुई पन्द्रह बीस वर्षों के छिटपुट विचार प्रवाह के परिणाम स्वरूप प्रायोगिकी यज्ञशाला का निश्चय हुआ अभी भी यज्ञ सबंधी अनेक तथ्य विचार ही नहीं अपितु गवेषणा कोटि में ही हैं क्योंकि उन पर विद्वानों का अभी ध्यान नहीं गया है।

यह कार्य भारी व्यय साध्य है। आरम्भ में 5 लाख आनुमानिक व्यय है जो उक्त यज्ञशाला के बाह्य भवन (यज्ञ वेदियों आदि के) निर्माण वैज्ञानिकों व विद्वानों से परामर्श संगोष्ठी प्रारंभिक परीक्षण यन्त्र क्रय आदि पर व्यय होगा विद्वानों के उत्साहजनक परामर्श प्राप्त हो रहे हैं। यह अपने आप में नूतन प्रयास व मौलिक विचारणा है जिसके क्रियान्वयन पर समस्त विश्व जातिगत व सम्प्रदायगत भेद भाव भूल कर वेद की शरण में आ जायेगा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न पूरा करने का यह अप्रतिम साधन है व ऋषि दयानन्द को यह सच्ची श्रद्धाञ्जली है।

समस्त प्रबुद्ध धार्मिक परोपकारी सज्जनों से अनुरोध है कि वे धन की कमी न रहने दें। यज्ञ में दिया धन सहस्त्र गुणा होकर मिलता है। आप जी खोलकर दान दें।

अनुरोध कर्त्री :
डा. पुष्पावती
अध्यक्षा मातृ मंदिर (कन्या गुरुकुल)
नई बस्ती रामापुरा वाराणसी

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर में सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिससे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धान्तों का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणों, विचारों और मान्यताओं का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तकों और उनके अनुयायी विद्वानों द्वारा लिखी गई है। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम कबीर तथा नानक और तेरापंथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताएं। इसी प्रकार जात-पात छुआ-छूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध में उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारों का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ में प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबंधों और लेखों के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य में सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रय आर्य निदेशक दयानन्द शोधपीठ दयानन्द कालेज अजमेर से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य

प्रो. दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1. देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—मूल्य 0 50 पैसे
2. हमारी राष्ट्रीयता का आधार-मूल्य रु 1 00
3. आचार संहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4. दी आर्यसमाज हिन्दू विदाउट हिन्दुइज्म (अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5. आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं मूल्य—50 रु

1. आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00 ले लाला लाजपतराय
2. धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
3. दयानन्द कथा संग्रह मूल्य रु 3 00
4. परिचय निदर्शिका (समस्त देश-विदेश की आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु 12 00

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतन्त्र ट्रैक्ट)

1 ईश्वर एक नाम अनेक	9-स्वर्ग और नरक कहां है ?
2 आदर्श माता-पिता	10-चौके चूल्हे में धर्म नहीं है
3-शिक्षा और चरित्र निर्माण	11-हिन्दू धर्म की निर्बलता
4-गृहस्थाश्रम का महत्व	12-बौद्ध और जैनमत
5 सन्यासी कौन और कैसा हो ?	13 वेद और ईसाई मत
6 राज्य व्यवस्था	14-इस्लाम और वैदिक धर्म
7-ईश्वर और वेद	15-सत्य का ग्रहण तथा प्रकाश
8-जगत की उत्पत्ति	

विशेष सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित है एवं ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

दहेज का [illegible]

(शेष पृष्ठ-[illegible] का)

कि अन्तरजातीय विवाह को अभी तक हमारे समाज में मान्यता नहीं मिल सकी है। आर्य समाज जैसे प्रगतिशील संगठन के लोग भी अन्तरजातीय विवाह से दूर भागते हैं। मेरे परिचित एक सम्पन्न आर्य सज्जन की 35 वर्षीय लड़की, जो राजकीय सेवा में कार्यरत है, की शादी इसलिए नहीं हो पा रही कि योग्य सजातीय लड़के भारी दहेज की इच्छा रखते हैं और विजातीय लड़के से ये महाशय तैयार नहीं हैं। फलस्वरूप लड़की जवानी से प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ रही है। यदि ऐसे में लड़की के कदम बहकते भी हैं तो अभिभावकों के अतिरिक्त और कौन इसका दोषी होगा।

अन्तरजातीय विवाहों के संबंध में एक कटु अनुभव अभी पिछले दिनों ही हुआ। एक तथाकथित आर्य-समाजी नेता (श्रीमान सार्वदेशिक के सभासद् रह चुके हैं) मुझसे मिलते ही इस बात पर लाल पीले हो उठे कि आप अपने लेखों में अन्तरजातीय विवाह की वकालत करते हो। मैंने इन सज्जन को काफी समझाने की कोशिश की लेकिन आखिर में वे अपने इस तर्क पर कायम रहे कि विभिन्न जातियों का खान पान एक दूसरे से नहीं मिलता है इसीलिए अन्तरजातीय विवाह की असफलता निश्चित है। मैंने उनके इस कुतर्क के जवाब में कहा कि आजकल तो सभी का खान-पान सांझा हो गया है, फिर भी वे इसे मानने के लिए तैयार नहीं हुए और मुझे धर्महीन, नास्तिक आदि की उपाधियों से विभूषित कर चलते बने। ऐसे में दहेज की समस्या का अंत कैसे हो सकेगा।

पत्र और विचार

राजस्थान सभा का समारोह

महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का शताब्दी समारोह [illegible] सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन अलवर में क्यों ?

अगस्त 1988 के आर्य मार्तण्ड में सूचना प्रकाशित हुई है कि, सभा का शताब्दी समारोह [illegible] सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन अलवर में आयोजित किया जा रहा है। जबकि इसके लिए उपयुक्त स्थान अजमेर है। यह ऋषि की निर्वाण-स्थली है। अलवर में यह समारोह करने का केवल मात्र यही औचित्य है कि सभा प्रधानजी छोटू सिंह वहां विराजते हैं और वहां उनका एक विद्यालय है।

-[illegible]
पूर्व प्रधान आर्य समाज,
शाहपुरा, भीलवाड़ा

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर

आवश्यकता

(1) द्वितीय ग्रेड अंग्रेजी अध्यापक— न्यूनतम योग्यता-बी ए (अंग्रेजी विषय सहित) बी एड -वेतन शृंखला 1140-2250

(2) तृतीय ग्रेड अध्यापक— न्यूनतम योग्यता हायर सैकण्ड्री, एस टी सी , बी ए -बी एड , बी एस सी -बी.एड को वरीयता, वेतन शृंखला-880-1680

(3) स्टेनोग्राफर - हायर सैकण्ड्री-स्टेनोग्राफी मान्यता प्राप्त डिप्लोमाधारी।

आवेदन मन्त्री के नाम 10/- रु के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र करें।

संगठन सचिव
आर्य समाज शिक्षा सभा
केन्द्रीय कार्यालय, अजमेर

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिये प्रकाशक एवं सम्पादक रोशनसिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स कानू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

हरद्वार

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म।

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
समस्त जगत को आर्य बनायें।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है।

वर्ष 4 बुधवार 30 नवम्बर 1988
अंक 2 पृष्ठ 4 33/81

अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु॥

मार्गशीर्ष कृ 7 संवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

दयानन्द की कल्पना का स्वराज्य यह नहीं है

-आचार्य [illegible]तात्रेय आर्य-

स्वराज्य [illegible] [illegible] स्वराज्य [illegible] पूर्ण [illegible] अमर [illegible] कोई [illegible] से भी श्रेष्ठ बताया

यह भी एक [illegible] है कि [illegible] स्थापना का उद्देश्य स्वराज्य नहीं था। [illegible] की [illegible] कि [illegible] भारतीयों को [illegible] उस समय [illegible] स्वराज्य [illegible] था। यही नहीं प्रारम्भ [illegible] वर्षो तक कांग्रेस [illegible] फहराया [illegible] ब्रिटिश राज्य के [illegible] होने [illegible]।

[illegible] मांग ही [illegible] [illegible] जैसे [illegible] के समान डोमिनियन स्टेटस प्राप्त [illegible]।

[illegible] और पूर्ण स्वराज्य की कल्पना तो सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द [illegible] थी। [illegible] प्रश्न [illegible] क्या हमारा वर्तमान [illegible] नहीं है जिसकी कल्पना [illegible] की थी? [illegible]

राज्य नहीं। हम मात्र भारतीय शासक [illegible] स्वभाषा [illegible] पर आधारित [illegible]। [illegible] मूल्य [illegible] हमारा [illegible] दूसरे [illegible] भिन्नता सिद्ध होता था हम नहीं [illegible]।

ऋषि [illegible] जानते थे कि मात्र राजनैतिक सत्ता का प्राप्ति [illegible] नहीं है। वे मानते थे कि राष्ट्रीयता का आधार सामाजिक एव धार्मिक नवचेतना है। इसीलिये उन्होंने केवल मात्र राजनैतिक [illegible] मांग नहीं की अपितु सामाजिक एव धार्मिक सुधार [illegible] दिया जिससे कि सांस्कृतिक मूल्यों [illegible] पुनर्स्थापना हो सके।

इस सत्य से भला कौन इन्कार कर सकता है कि राष्ट्रीयता का [illegible] एक [illegible]। इसी [illegible] देश के नागरिक [illegible] अनुभव [illegible] यह [illegible] समस्या है। [illegible] महिमामण्डित [illegible] [illegible] है [illegible] भावात्मक [illegible] नहीं।

देश के [illegible] में जब तक धार्मिक अन्धविश्वास एव सामाजिक [illegible] और [illegible] रहा तब तक सच्ची राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न नहीं हो सकता। [illegible] भी इस सत्य को समझा था और इसीलिए धार्मिक एव सामाजिक अन्धविश्वासो तथा कुरीतियो के निराकरण को अपने राष्ट्रीय आन्दोलन [illegible] था। [illegible] है कि स्वतन्त्रता

के पश्चात राजनीतिज्ञो ने सामाजिक एव धार्मिक कुरीतियो के विरुद्ध अभियान के स्थान में [illegible] पुन प्रोत्साहित करना प्रारम्भ कर दिया।

स्वाधीन भारत के [illegible] देश का एक भाषा का होना व इन कुरीतियो [illegible] उन्मूलन [illegible] नहीं समझा। ऐसा प्रतीत होता है कि [illegible] इस सत्य का तनिक भी आभास नहीं [illegible] एक भाषा के न होने और जनता मे व्याप्त सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियो के उन्मूलन किए बिना राष्ट्रीय एकता [illegible] हो सकती और [illegible] किसी भी राष्ट्र [illegible] दीर्घ [illegible] सकती।

हमारे देश के [illegible] नेताओं ने [illegible] सामाजिक एव धार्मिक [illegible] अपने [illegible]

[illegible] परिणाम [illegible] रहा है कि यह देश जो [illegible] बनने [illegible] में एकता का [illegible] विखण्डन की [illegible] हो [illegible] अन्धविश्वास [illegible] राज [illegible] सामाजिक एव धार्मिक कुरीति [illegible] प्रचार प्रसार में सरकारी प्रचार माध्यम [illegible] शिरडी वाले साई बाबा जैसे फिल्म भारतीय दूरदर्शन द्वारा प्रसारित करके अन्धविश्वास को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकार द्वारा [illegible] [illegible] जा रहा है।

[illegible] स्थिति को देखो [illegible] प्रतीत [illegible] प्राप्त [illegible] अभी तक स्व[illegible] नहीं मिल पाया।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध [illegible] की योजना

दयानन्द [illegible] [illegible] तथा [illegible] द्वारा [illegible] पठ का आरम्भ [illegible] किया गया है जिसमे वैदिक [illegible] सिद्ध [illegible] सके। इस [illegible] ऋषि दयानन्द [illegible] प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धान्तों [illegible] सब [illegible] विचार और [illegible] जाएगा जो अन्य धर्मों के [illegible] द्वारा लिखे गये हैं [illegible] और मूर्ति पूजा विरुद्ध इस्लाम [illegible] तथा [illegible] और तेरापथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताए। इसी प्रकार जातपात छुआ छूत के विरुद्ध तथा [illegible] और [illegible] सम्बन्ध मे उपलब्ध तथा इस धर्म [illegible] है। [illegible] प्रकाशित किये जाने [illegible] निबन्धों और लेखों के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। [illegible] कृपया [illegible] दयानन्द कालेज अजमेर से सम्पर्क [illegible]

निदेशक दत्त [illegible] आर्य | प्रधान सम्पादक रासासिंह | सम्पादक [illegible] आर्य | [illegible] 21010

सम्प्रदाय और मानवीय मूल्य

सिख धर्म (जो कभी नानक के मानवीय और दार्शनिक विचारो का प्रतिरूप था) आज कहां है ? इस 'तेरा तेरा' से 'मेरा-मेरा' तक कैसे पहुच गए ? हमने कोई बीच का मार्ग तक तय नहीं किया।

' ' सम्प्रदाय कभी भी मानवीय मूल्यों के लिए नहीं लड़ते, वे लड़ते है अपनी अलग-सत्ता, अलगपन और विस्तार के भूखी कौड़ी की सार्थकता के लिए और जब इस काम के लिए बैठे है तो आपस में लड़ते है—उपलब्ध इतिहास के बटवारे को लेकर। अयोध्या के मस्जिद-मन्दिर-विवाद के अंतर्गत कुछ पंडों ने देखा कि फैसला हिन्दुओ के हक में ही रहा है तो वे आपस में लड़ने लगे—चढ़ावे और हैसियत पर अधिक से अधिक कब्जे के लिये। कमाल है !

—सर्वेश

सम्पादकीय

आतंकवाद का विस्तार

हरियाणा के कैथल मे आतकवादियो ने नानक जयती की पूर्व सध्या पर अधाधुध गोलिया बरसाकर निरीह-निहत्थे 22 लोगो की जानें ले ली और लगभग 35 लोगो को घायल कर दिया। शायद इन तथाकथित नानकभक्तो ने गुरु जयन्ती पर जनता को यही नायाब भेट देनी उपयुक्त समझी हो।

भरे बाजार मे दिन-दहाडे हत्याए कर हत्यारो का सुरक्षित बच निकल जाना बताता है कि अब हरियाणा भी आतकवादी गतिविधियो के लिये निरापद नही रह गया है। भले ही राज्य के मुख्यमत्री देवीलाल केन्द्र सरकार पर आतकवादियो सम्बन्धी सूचनाओ के आदान-प्रदान मे ढिलाई का आरोप लगाकर राज्य सरकार की अकमण्यता को छिपाना चाहे, लेकिन वास्तविकता यह है कि कि हिंसाग्रस्त पडौसी राज्य पजाब से उन्होने कोई सबक नही सीखा है और यही कारण है कि अभी तक हरियाणा मे भी लगभग 100 लोग आतकवादियो द्वारा मौत के घाट उतारे जा चुके हैं। देवीलाल को अपने प्रशासन को दुरुस्त करने की अत्यत आवश्यकता है।

जो लोग पजाब के सिख आतकवाद से लिए केन्द्र सरकार व पजाब के राज्यपाल शासन को कोसते हैं, वे गलती पर हैं। वे लोग आतकवाद की आत्मा को समझने मे भूल कर रहे हैं।

भारतवर्ष में धर्म के नाम पर सब कुछ किया जा सकता है—काफिरों को मौत के घाट उतारा जा सकता है, तथाकथित विधर्मियो को मौत की नींद सुलाया जा सकता है और इसके लिए खालसा सेना और बजरग सेना का गठन भी किया जा सकता है। जहा धर्म के नाम पर निरीह-निहत्थे लोगों की हत्याए करने वालो को धर्मरक्षक व इस मानवताद्रोही कार्य मे जान देने पर शहीद की उपाधि से भी विभूषित किया जाता हो, वहा कोई सरकार आखिर आतकवाद पर काबू पा भी कैसे सकती है।

जी भर के लोगो को लूटना, स्त्रियो से बलात्कार करना और लोगों की हत्याए कर मनोरजन करने की सुविधा, आवश्यकता पडने पर गुरुद्वारो व आम धर्मान्ध लोगों द्वारा सरक्षण और मरने पर सम्मान जो धर्म उपलब्ध कराता हो, ऐसे धार्मिक राज्य (?) से कोई सरकार आतकवाद को समाप्त नही कर सकती।

जब तक मानवता के पुजारी गुरु नानक के नादान भक्त, क्रूर हत्यारों को धार्मिक प्रश्रय देते रहेगे तब तक आतकवाद का दानव यो ही बलबलाता रहेगा।

समाचार पत्र पंजीयन कानून

केन्द्र सरकार समाचार पत्र पजीयन कानून मे सशोधन करने जा रही है। सशोधन का कारण सरकार द्वारा यह बताया जा रहा है कि लगभग डेढ लाख ऐसे पत्रो के नामों का पजीयन है जो कि कभी के बन्द हो चुके हैं। ऐसे पत्रो के कारण नये समाचार पत्रो के पजीयन मे नामो के अभाव के कारण समस्या उत्पन्न हो गई है।

वस्तुत नामो का अभाव एक समस्या है। लेकिन इसके अतिरिक्त भी कई ऐसी गम्भीर समस्याए हैं जिनके सम्बन्ध में भी पजीयन कानून मे सशोधन करते समय विचार किया जाना चाहिए।

आज अखबार निकालना भी एक व्यवसाय हो गया है। बडे-बडे धनपतियो ने अखबारो के प्रकाशन से जुडकर अपने व्यापारिक हितो को सुरक्षित कर लिया है। यही नही छोटे-मोटे व्यवसायी भी समाचार पत्र पजीयन कानून एव पत्रकार मान्यता सम्बन्धी कानून की खामियो को अपने पक्ष मे बखूबी भुना रहे हैं।

ऐसे अनेक लोग हैं जो पाक्षिक या साप्ताहिक समाचार पत्र के स्वय मालिक, प्रकाशक, सम्पादक के रूप मे अधिस्वीकृत पत्रकार बनकर विशेष सुविधाओ का उपभोग कर रहे हैं। ऐसे लोगों को पत्रकारिता का क ख ग भी नहीं आता। ये लोग चार पृष्ठों मे दैनिक पत्रो की कतरनें व सरकारी प्रेस नोटस् प्रकाशित करते हैं। प्रूफ पढने का न तो इनके पास अवकाश है और न ही इन्हें प्रूफ पढना आता है।

सरकार को चाहिए कि ऐसे तथाकथित पत्रकारों की पत्र पजीयन ले और पुन. इनका अधिस्वीकरण करने से पूर्व परीक्षा लेना आरम्भ करे। अन्यथा सही हकदार के स्थान पर गलत व्यक्ति लाभ उठाते रहेंगे।

—वीरेन्द्र शर्मा

संदर्भ 17 नवम्बर-बलिदान दिवस

लाला लाजपतराय

लाला लाजपतराय एक ही समय में सब कुछ थे—शिक्षा-शास्त्री भी, राजनीतिज्ञ भी, नेता भी, नागरिक भी विचारक भी और प्रचारक भी। उनके विचार से एक अच्छा नेता वही है जो अपने से जनता को सन्तुष्ट कर सकता है और प्रभावशाली है। जो निर्भीक और साहसी है जिसको जनता हर समय अपने साथ देखती है और सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसका हर काम सन्देह से ऊंचा हो। लालाजी कहते थे कि एक बार नेता बन जाने वाला हमेशा नेता नहीं रहता। जब तक उसमें नेतागिरी के गुण मौजूद है तभी तक वह नेता है। वह उन्नतिशील हो और जातियो का नेतृत्व समय-समय पर बदलता रहता है। नेताओं का तप त्याग और बलिदान ही किसी देश के भाग्य के निर्माता हैं।

लालाजी सदा सहयोगात्मक नीति से काम लेते थे। वे दूसरो से सहारा कम लेते थे जबकि इस विषय में देने का पलड़ा ही भारी रखता था। उनका दावा था कि आज की दुनिया में कोई भी राष्ट्र स्वतन्त्र रूप से अकेला रहकर जीवित नहीं रह सकता। क्योंकि भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के कार्यों का दूसरे राष्ट्रों पर प्रभाव पड़ता है, वे एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। सहअस्तित्व की नीति के वे समर्थक थे।

लाला लाजपतराय सदैव त्याग और बलिदान मे विश्वास रखते थे। उनका प्रत्येक क्षण इसी कार्य मे बीतता था। वे हर समय अपने समक्ष मानवता का लक्ष्य रखते थे। किसी भी अवस्था मे मानवता से घिर जाना उन्हें सहन नहीं था। वे सुख-दुःख को बराबर बांटने मे विश्वास रखते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि एक राष्ट्र सबसे अधिक अन्न उत्पन्न करने पर भी यदि अपने देश के भागो में समान वितरण नहीं कर पाता तो यह मानवता की क्षति है। कोई भी राष्ट्र अपनी उपज को नियमित करने के



स्वाधीनता के पुरोधा लाला लाजपतराय

लिए मानवता के सिद्धांत का हनन नहीं कर सकता। यदि देश के एक प्रदेश में अकाल है तो दूसरे प्रदेश की खपत कम करके भी अकाल पीड़ित प्रदेश मे भोजन की व्यवस्था करना देश की खाद्य नीति का द्योतक है।

लालाजी इतने व्यस्त रहने पर भी नैतिकता को नहीं छोड़ते थे। आस्तिक होने के साथ-साथ वे हमेशा दूसरो से भी कहा करते थे कि कभी भी अपने को अधिक बड़ा मत समझो। अपनी शक्तियो का अति मूल्यांकन न करो, अपनी कठिनाइयो को कम मत समझो। अपनी शक्ति और पथ की रुकावटो का ठीक-ठीक अनुमान करके अपने लक्ष्य की ओर प्रस्थान करो।

सहिष्णुता को लालाजी अच्छे सम्बन्धो के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते थे, क्योंकि एक-दूसरे को भली-भांति समझने से बढ़कर दूसरी वस्तु कोई नहीं है। दूसरो के प्रति दयालु और ममतावान होना ही सरल और उत्तम जीवन का साधन हैं।

निःस्वार्थ भाव से ही हम किसी काम को अधिक शीघ्र एवं प्रभावशाली ढंग से समाप्त कर सकते हैं। अपने पुनीत उद्देश्यो की पूर्ति के लिये आत्म-विस्मृत होकर अपने स्वार्थों को तिलांजलि देकर आगे बढ़ना होगा। जबकि किसी देश के नागरिको में यह भाव जागृत नहीं होते, तब तक उस देश की उन्नति सम्भव नहीं।

माण्डले जेल मे रहने के समय वे केवल एक ही बात का ध्यान रखते थे कि परमात्मा ने जन्म देकर हमे इस बात का अवसर प्रदान किया है कि हम अपने आपको सुधारे और सदचरित्र बनाये। जेल आवास के समय वे प्रसिद्ध विचारको और सन्तो की पुस्तको का अध्ययन करते थे।

लाला लाजपतराय जब तक जिये राष्ट्र के लिये अपने सद्प्रयासो मे कमी न आने दी। राष्ट्र के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने के अतिरिक्त वे स्वयं और कुछ नहीं चाहते थे। देश के लिए मर जाना ही उनके जीवन का लक्ष्य था जो उन्होंने प्राप्त किया। मृत्यु के विषय मे बहुत कम सोचते थे वे सम्मान से जीना चाहते थे और सम्मान से मरना। वे कहते थे -

'सम्मानपूर्वक मरने के लिये पहले हमे सम्मानपूर्वक जीना सीखना चाहिये। मातृभूमि और मानवता के सिद्धान्तो की रक्षा करते हुए जो जीवन-मृत्यु का आलिंगन कर वही जीवन और मृत्यु सर्वश्रेष्ठ है।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जनता के लिए अपना समग्र जीवन व्यतीत करने वाले सर्वश्रेष्ठ नेता लाला लाजपतराय को वही सर्वश्रेष्ठ मृत्यु प्राप्त हुई।

-वरिष्ठ पत्रकार स्व फतेहचन्द्र शर्मा द्वारा दी गई श्रद्धांजली

अग्निवेश किस ओर?

6 नवम्बर, 1988 के अंग्रेजी ट्रिब्यून मे समाचार छपा था कि चार नवम्बर 1988 के दिन दिल्ली मे नवम्बर 1984 के दंगा पीड़ितो को न्याय दिलाने के लिए किए गए मार्च मे स्वामी अग्निवेश जी ने भी भाग लिया। यह मार्च आल इंडिया सिख कान्फ्रेंस द्वारा आयोजित किया गया था। समाचार में यह भी लिखा था कि स्वामी अग्निवेश जी ने भारत सरकार को चेतावनी दी है कि यदि तीन मास के अन्दर अपराधियों को दण्ड न दिया गया तो वे (स्वामी अग्निवेश) इस विषय पर जागृति पैदा करने के लिए स्वर्ण मन्दिर से आरम्भ करके सारे देश का भ्रमण करेंगे।

नवम्बर 1984 में दिल्ली मे जो दंगे हुए निस्सन्देह वह एक दुःखद दुर्घटना थी जो राष्ट्र के प्रति अपराध तथा द्रोह को रोक पाने में सरकार की असफलता, अयोग्यता और निष्कर्मण्यता के कारण उस अपराध तथा द्रोह के प्रति आक्रोश था। परन्तु पिछले सात वर्षों से लगातार पंजाब मे विशेषकर तथा हरियाणा हिमाचल, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि स्थानो पर सिख उग्रवादियो द्वारा जो नरसंहार तथा लूटपाट की जा रही है उसके विरोध मे और उसके अपराधियों को दण्ड दिलाने के लिए तो स्वामी अग्निवेश जी ने कोई आन्दोलन अथवा जन जागृति का काम नहीं किया। सिख उग्रवादी हर रोज कितने ही परिवारों को उजाड़ रहे हैं, औरतों को विधवा तथा बच्चो को अनाथ बना रहे है, देश की अथाह सम्पत्ति नष्ट कर रहे है तथा देश मे विघटन और समाज मे विद्वेष पैदा कर रहे हैं। इतनी अपार हानि के खिलाफ तो स्वामी जी की आवाज नहीं उठ रही।

पिछले दिनो स्वामी अग्निवेश जी चण्डीगढ़ आये थे। अगले दिन अखबारो मे छपा था कि स्वामी जी मानते हैं कि पंजाब मे नरसंहार तथा लूटपाट का कारण बेरोजगारी है (आर्थिक है) जबकि सच्चाई यह है कि आर्थिक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

अग्निवेश किस...

(शेष पृष्ठ 3 का)

दृष्टि से पंजाब देश में सबसे अधिक सम्पन्न है तथा नरसंहार व लूटपाट करने वाले स्वयं कहते हैं कि उनकी लड़ाई सम्प्रदाय के आधार पर एक अलग राष्ट्र (सिखस्तान) स्थापित करने के लिए है। अगर बेरोजगारी के कारण नरसंहार व लूटपाट होती तो वह पंजाब में नहीं अपितु पंजाब से बाहर होती जहां बहुत अधिक गरीबी बेरोजगारी तथा भूख भरी है।

1981 में ब्लू स्टार आपरेशन से पहले जनता पार्टी के कुछ नेताओं ने अकालियों के साथ मिलकर स्वर्ण मंदिर अमृतसर का दौरा किया था। बाद में इन नेताओं ने बयान दिया था कि स्वर्ण मन्दिर में न कोई उग्रवादी है और न ही कोई अवैध हथियार। स्वर्ण मन्दिर में जाने वाले उस शिष्टमण्डल के एक सदस्य स्वामी अग्निवेश जी भी थे। स्वर्ण मंदिर में क्या था यह तो ब्लू स्टार आपरेशन से सारे संसार को विदित हो ही गया था।

1983 में जब अकाली आन्दोलन चल रहा था, स्वामी अग्निवेश जी ने एक रैली में जिसमें इन पंक्तियों का लेखक भी उपस्थित था अकाली मांगों का समर्थन किया था।

इन परिस्थितियों को देखते हुए लगता है कि इस विषय पर स्वामी अग्निवेश जी का चिन्तन और पक्ष वही है जो अकालियों का है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि आर्य समाज का चिंतन और पक्ष इसके बिल्कुल विपरीत है। स्वामी जी सात-आठ वर्ष तक जनता पार्टी में रहने के बाद उससे अलग हो गए हैं। अलग होने के बाद उन्होंने कहा कि जनता पार्टी में जाना उनकी सबसे बड़ी भूल थी। कुछ लोगों का कहना है कि जनता पार्टी में होने के कारण स्वामी जी अकालियों का पक्ष लेते थे। मगर समझा तो ऐसा जाता है कि आर्य सत्य का पक्ष लेने वाला होता है न कि किसी वर्ग विशेष से जुड़कर झूठ का।

—कृष्ण चन्द्र गर्ग
पंचकूला (हरियाणा)

डा. भारतीय सम्मानित

आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय का उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा ऋषि मेले के अवसर 13 नवम्बर 1988 का अभिनन्दन किया गया। इसी अवसर पर उन्हें आर्य समाज फुलेरा द्वारा दयानन्द पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

—संयोजक

-आर्यसमाज कावाखेड़ा के तत्वावधान में जिलाधीश भीलवाड़ा के संयोजकत्व में हरिजन बस्ती भीलवाड़ा में ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया।

—मंत्री

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८९

सघड विद्या ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कांगड़ी द्वारा दिया जाता है। यदि आपकी दृष्टि में कोई महानुभाव पुरस्कार के योग्य हो तो उसका नाम 31 दिसम्बर, 88 तक भेजने की कृपा करें।

—कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ. प्र.)

सत्यकेतु विद्यालंकार सम्मानित

हिण्डौन के प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पिताजी की स्मृति में स्थापित इस वर्ष का प्रथम पुरस्कार आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डा. सत्यकेतु विद्यालंकार को उन द्वारा लिखित, सम्पादित व प्रकाशित आर्यसमाज के इतिहास पर दिया गया है। एक समारोह में उन्हें अभिनन्दन पत्र, एक शाल एवम् 1501/- रु. की राशि समर्पित की गई।

—सचिव

आर्यो ! याद करो गौरवपूर्ण अतीत को

स्वराज्य, स्वधर्म, स्वत्व के पुरोधा एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 7 अप्रैल 1875 ई. को बम्बई नगरी में अपने बाद भी अपने मिशन का निरन्तर कार्य करते रहने, वेदों का प्रचार प्रसार करने, अंधविश्वासों तथा रूढ़ियों का मूलोच्छेदन करने सत्य का पुरजोर प्रबल प्रचार करने, विद्या की वृद्धि तथा अविद्या का नाश करने एवं संसार का उपकार करने हेतु सबका शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक विकास करने हेतु 'आर्य समाज' नामक संगठन की स्थापना की थी। आर्य समाज एक प्रजातांत्रिक प्रणाली पर आधारित निर्वाचन का सम्बल लिए हुए क्रांतिकारी विचारों से अनुप्राणित, ओजस्वी एवं तेजस्वी संगठन रहा है जिसने स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, गुरुदत्त, स्वामी दर्शनानन्द जी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाशय राजपाल जी रामप्रसाद बिस्मिल प्रभृति कई उज्ज्वल रत्न प्रदान किए जिन्होंने देश समाज और धर्म की सेवा में सर्वस्व अर्पित कर दिया था। स्थापना के एक सौ तेरह वर्षों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने, अराष्ट्रीय तत्वों का विरोध करने, विधर्मियों के सुनियोजित आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देने, राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार प्रसार करने, आजादी की लड़ाई में बढ़ चढ़ कर भाग लेने, ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों का देश और विश्व के कोने-कोने में संदेश फैलाने, गुरुकुल, डी ए वी स्कूल तथा पाठशालाओं का जाल बिछाने, निजाम हैदराबाद के घुटने टिकवाने, हिंदी रक्षा आंदोलन चलाने, गोरक्षा, संस्कृत रक्षा आदि प्रत्येक अच्छे काम में आर्य समाज ने स्तुत्य, श्लाघनीय एवं इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य महान कार्य किये हैं। गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण किया है।

परन्तु गत कुछ वर्षों से आर्य समाज के विशाल संगठन पर दृष्टि डालें तो घोर निराशा होती है। समाजों में निष्ठाहीन, ऋषि मन्तव्यों के विपरीत आचरण करने वाले, सामाजिक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों तथा जाति एवं सम्प्रदाय के बंधनों में आकण्ठ निमग्न लोगों का बोलबाला हो गया है। सर्व धर्म समन्वय की विचारधारा आर्यसमाज में चल पड़ी है। शास्त्रार्थ को भुला दिया है।

विश्व आर्य महासम्मेलन

महर्षि दयानन्द योगाश्रम सोसायटी (पंजीकृत) के तत्वावधान में निकट भविष्य में ही दिल्ली में विश्व आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। संयोजक श्री भगवानदेव के अनुसार इसमें विदेशों से भी काफी संख्या में आर्य विद्वान भाग लेंगे। विस्तृत जानकारी के लिए—2, पार्क एवेन्यू, महारानी बाग नई-दिल्ली-65 के पते पर लिखें।

—संयोजक

—दयानन्द बाल सदन अजमेर में 'अमर कुलपुरुष' हिन्दी पद के तत्वावधान में आर्य कुमार सभा द्वारा महर्षि दयानन्द पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

—वीरमसिंह (मंत्री)

—आर्य समाज पुनर्गठन नई दिल्ली का 27वां वार्षिकोत्सव दि. 26 दिसम्बर 88 से 1 जनवरी 1989 तक मनाया जा रहा है। —संयोजक

प्रतिक्रिया

भाई श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य,

महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने के आप पक्ष में हैं यह जानकर प्रसन्नता हुई।

सार्वदेशिक सभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके कोर्ट में एक गैर आर्यसमाजी को तीस हजार रुपये दिए थे। उस फिल्म और रुपयों का क्या हुआ? यह सार्वदेशिक सभा ही बता सकती है।

फिल्म के प्रचार की दृष्टि से यह लिखा गया है। मेरे जैसे व्यक्ति से आप ऐसी आशा न रखें। वैदिक विचारों को प्रोत्साहन मेरे माध्यम से नहीं मिलेगा। 'महर्षि दयानन्द' और 'भगवान-सिंह' अपने आप में ही अलग हैं। फिर भी आपके ध्यान रखूंगा।

भवदीय
भगवानदेव (पूर्व सांसद)

स्वत्वाधिकारी आर्य समाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक रतनसिंह हेतु पन्नालाल शर्मा द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स
बाबू मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धम का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सवदा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163
सृष्टि सम्वत 1972949088

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र
आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है सत्य हमारा कर्म ।

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आय बनाय ।

हमारा उद्देश्य ·
समाज की वर्तमान एव भविष्य में पैदा होनेवाली समस्याओ को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वष 4 गुरुवार 15 दिसम्बर 1988
अक 23 पंजी 43383/84

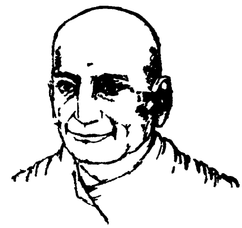
अभय मित्रादभयम अमित्रादभय ज्ञातादभय परोक्षात ।
अभयं नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।

मागशीष शु 7 सवत 2045
वार्षिक मू 15/ एक प्रति 60 पसे

मैं उस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ !

—प जवाहरलाल नेहरू—

1926 के आखिर मे हिंदुस्तान मे एक भारी दुखद घटना से अधेरा सा छा गया । इस घटना से सारा हिंदुस्तान घृणा व रोष से काप उठा । उससे पता चलता था कि जातीय वमनस्य हमारे लोगो को कितना नीचे गिरा सकता था । स्वामी श्रद्धानन्द को जबकि वह बीमारी मे चारपाई पर पडे हुए थे एक धर्मान्ध मुसलमान ने कत्ल कर दिया । जिस पुरुष ने गोरखो की सगीनो के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उनकी सगीनो का सामना किया था उसकी ऐसी मौत करीब करीब आठ बरस पहले इसी आय समाजी नेता ने दिल्ली की विशाल जामा मसजिद की वेदी पर खडे होकर हिन्दुओ और मुसलमानो की एक बहुत बडी सभा को एकता और हिन्दुस्तान की आजादी का उपदेश दिया था । उस विशाल भीड ने हिन्दू मुसलमानो की जय के शोर से उनका स्वागत किया था और मसजिद से बाहर गलियो मे उन्होने उस ध्वनि पर अपने खून की एक सयुक्त मुहर लगा दी थी । और अब अपने ही देश भाई द्वारा मारे जाकर उनके प्राण पखेरू उड गये हत्यारा यह समझता था कि वह एक ऐसा अच्छा काम कर रहा है जो उसे बहिश्त को ले जायगा ।



अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द
23 दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस है

विशुद्ध शारीरिक साहस का किसी भी अच्छे काम मे शारीरिक तकलीफ सहने और मौत की परवा न करनेवाली हिम्मत का मैं हमेशा से प्रशसक रहा हू । मेरा खयाल है कि हममे से ज्यादातर लोग उस तरह की हिम्मत की तारीफ करते हैं । स्वामी श्रद्धानन्द में इस निडरता की मात्रा आश्चयजनक थी । लम्बा कद भव्य मूर्ति सन्यासी के वेश मे बहुत उमर हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आंख और चेहरे पर कभी कभी दूसरो की कमजोरियो पर आने वाली चिडचिडाहट या गुस्से की छाया का गुजरना मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हू ! अक्सर वह मेरी आखो के सामने आ जाती है ।

(आत्मकथा मे)

संरक्षण के बहाने यौन शोषण

—वीरेन्द्र कुमार आय—

अजमेर मे समाज कल्याण विभाग का एक अधिकारी अजमेर की नारी शाला मे रह रही आवासनियो से वर्षों अपनी काम पिपासा शात करता रहा । इस सम्बन्ध मे एक राष्ट्रीय दैनिक ने एक विस्तृत रिपोट प्रकाशित की है ।

नारी शालाओ नारी निकेतनों व नारी अनाथालयो मे होने वाले यौन शोषण की यह पहली घटना नहीं है । इससे पूर्व भी समय समय पर ऐसी घटनाए प्रकाश मे आती रही हैं । समाचारो की सुर्खिया बनती रही हैं । ये दूसरी बात है कि समाज अपनी सवेदनशीलता खो चुका है कि उस पर ऐसे समाचारो का कोई प्रभाव नही होता ।

नारीशाला हो या महिला निकेतन हो इन सबमे निराश्रित समाज से बहिष्कृत स्त्रियो को आश्रय मिलता है । एक तरह से इन सब स्त्रियो की हालत परकटे पक्षी की तरह होती है । ऐसे मे प्रभारी वग के सभी अत्याचारो को चुपचाप सहन करने के अतिरिक्त उनके पास दूसरा कोई चारा नहीं होता । चंद कुछ माह पूव जयपुर के महिला निकेतन की आवासनियो का विवाह अनपढ अधेड विधुरो के साथ कर दिया गया । (बहुत खूब ! इसी तरह करती है सरकार—समाज का कल्याण !)

नारीशालाओं व निकेतनो में ऐसे यौन शोषण के समाचारो के कारण सरकार से स्त्रियो को ऐसे केन्द्रो की प्रभारी बनाने को कहा जाता है । लेकिन इससे यौन शोषण का यह सिलसिला रुकने वाला नहा है जो स्त्री सास के रूप मे दूसरी स्त्री को कम दहेज लाने के कारण जीवित जला कर मार सकती है वह स्त्री क्या अपनी पदोन्नति आर्थिक लाभ आदि के लिये अपने सरक्षण मे रहने वाली आवासनियो से पुरुषो को अपनी काम पिपासा शात करने की इजाजत नही दे सकती ।

महिला प्रभारी हो या पुरुष प्रभारी इस बात से कोई अतर नही पडता । जब तक सबधित व्यक्ति की स्वस्थ मानसिकता नही होगी तब तक नारीशालाओ मे आवासनियो का यौन शोषण होता रहेगा ।

निदेशक दत्तात्रेय आय प्रधान सपादक रासासिंह सपादक वीरेन्द्र कुमार आय ☎ कार्या 21010

पाकिस्तान से मुहब्बतनामा

पाकिस्तान के जनप्रिय कवि रईस अमरोवही वहां के सैनिक शासन के कट्टर आलोचक व विरोधी थे। सितम्बर मे कुछ उग्रवादियो ने उनकी हत्या कर दी यहां हम उनकी एक कविता की कुछ पंक्तिया उद्धृत कर रहे हैं। साम्प्रदायिकता और रूढ़िवाद के वर्तमान दौर मे मूलभूत मानवीय एकता की यह आवाज हमारे लिए भी मार्गदर्शक है।

ओ हिन्द जाने वाले मेरा सलाम ले जा
ये हिंदियो से कहना ओ हिंद जाने वाले
भूले से भी नही हम तुमको भुलाने वाले
मुनकिर न हो सकेंगे हरगिज जमाने वाले
हैं हिंदोपाक वाले सब एक घराने वाले
रस्मे सलाम ले जा कौमे अवाम ले जा।
ओ हिंद जाने वाले मेरा सलाम ले जा
वो खाक जिसपे हमने बचपन के दिन गुजारे
अब तक बसी हुई है अहसास मे हमारे
क्यो कर न याद आए क्यो हो न दिल को प्यारे
उस सरजमी के जर्रे उस आसमा के तारे
पैगाम दोस्ती के भारत के नाम ले जा
ओ हिंद जाने वाले मेरा सलाम ले जा

सम्पादकीय

"सर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म नहीं जावे"

एक समय था जब इस गान का आर्य जनो मे धूम मची रहती थी। आर्य समाज मे महात्मा के गीत गाना गौरव समझा जाता था। धर्म रक्षा की खातिर अपने तन मन धन सवस्व न्यौछावर करने की तत्परता रहती थी। दयानन्द के सिपाहियो मे एक दीवानापन था। जोश का सागर हिलोर लेता था। जुलूस मे इस गाने को गाते हुए आर्यजन भुज 2 कर अपने अदम्य उत्साह एव वैदिक धर्म के प्रति अटूट निष्ठा का परिचय देते थे। इसके पीछे भावना यही रहती थी कि प्रत्येक वैदिक धर्मी अपने आर्य धर्म के प्रति दृढ़ एव अगाध आस्था रखे।

वैदिक धर्म की जिसे आज सत्य सनातन धर्म भी कहा जाता है की रक्षा के लिए कभी हकीकत को अपना सिर काट कर विधर्मियो की तृप्ति हेतु अर्पित करना पडा था कभी गुरु तेग बहादुर को चोटो की खंग के प्रहार सहन करते-2 बलिदान देना पडा था कभी गुरु गोविन्दसिंह के दो युवा पुत्रो फतहसिंह और जोरावरसिंह को जिदा दीवार मे चुनवाने के लिए प्रस्तुत होना पडा था। जिस वैदिक (हिन्दू) आर्य धर्म की रक्षा करने के लिए महाराणा प्रताप ने घास की सूखी रोटियां खाना पसन्द किया था जिस धर्म की रक्षा के लिये छत्रपति शिवाजी ने लोहे के चने चबाकर भी शत्रुओ के दांत खट्टे करने का साहस दिखाया था जिस धर्म की रक्षा की खातिर आनन्दकन्द महर्षि दयानन्द ने भी 16 बार जहर मे विषपान किया था जिस धर्म के खातिर स्वामी श्रद्धानन्द जी को पिस्तौल की गोलियां खाना पडी थी प॰ लेखराम को छुरे का वार सहन करना पडा था आज उसी वैदिक धर्म के अनुयायी अपने धर्म को उपेक्षा तिरस्कार और हीनता की दृष्टि से देख रहे हैं। अपने आपको अधिक प्रगतिशील धर्मनिरपेक्ष और समाजवाद का रहनुमा सिद्ध करने के लिये उन्हे वैदिकधर्मी आर्य या हिन्दू कहने मे भी शर्म महसूस होने लगी है। भ्रष्ट्र जियत का जामा पहन कर आधुनिकता का लबादा ओढ़ कर वह धर्म और ईश्वर से मुख मोड़ने लगा है।

हर मुसलमान के घर मे कुरान की प्रति मिल जायेगी हर ईसाई के घर मे बाइबिल की पुस्तक मिल जायेगी परन्तु आर्य धर्म के अनुयायियो के यहा कठिनता से ही मूल धर्म पुस्तक वेद मिलना तो दूभर रहा धर्म की सामान्य पुस्तक भी नही मिल पायेगी। मुसलमान अपने बच्चो को मस्जिद मे अवश्य भेजता है। जहां उसे धर्म की शिक्षा मिलती है ईसाई भी अपने घरो पर पादरी को आमन्त्रित कर अथवा चर्च मे धर्म की शिक्षा दिलवा देते है, परन्तु आज अभागे हिन्दू को धर्म का आर्य धर्म की शिक्षा घरो या मन्दिरो मे देने वाला कोई नही है। करोडो अनपढो को धर्म का अ ब स द ज्ञान भी नही है। यही कारण है कि छुआछूत और सामाजिक निरादर से पीडित होकर तथा पैट्रोडालर के बल पर हरिजनो एव पिछडे वर्गों का इस्लाम धर्म मे धर्मान्तरण हो रहा है तो करोडो रुपये विदेशो से भेजकर गिरिजनो और वनवासियो को धर्म से पतित करने के लिये सफेदपोश पादरियो द्वारा व्यय किया जा रहा है। इस्लाम और ईसाईयत की आंधी के रथ पर पढे-लिखे नौजवान धार्मिक संस्कारो से शून्य रहकर, फिर बेरोजगारी से पीडित होकर साम्यवाद के शिकंजे मे कसते जा रहे हैं।

आर्यसमाज जैसी वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाली, वेदो के सदेश को घर घर पहुचानेवाली तथा मौलवियो और पादरियो का मुकाबला दृढ़ता से करने वाली राष्ट्रवादी संस्थाए कुछ काम कर रही हैं परन्तु वह आटे मे नमक भी नही है। योग्य उपदेशको, भजनीको, सेवा भावना वाले वानप्रस्थियो विद्वान सन्यासियो, साधुओ तथा प्रकाण्ड पण्डितो की कमी अनुभव हो रहा है साधनो का अभाव है। अर्थप्रधान युग हो जाने के कारण हर आदमी पैसा कमाने वाले धधे की ओर अग्रसर होना चाहता है तो फिर विश्व के इस प्राचीनतम एव महानतम धर्म वैदिक (आर्य धर्म हिन्दू धर्म) की रक्षा कौन करेगा। इसे अंधविश्वासो और बाह्याडम्बरो से कौन मुक्ति दिलवायेगा ? कलियुगी अवतारो की बाढ़ को कौन रोकेगा ?

प्राचीनकाल मे कुछ इसी प्रकार की विषम परिस्थितियाँ देखकर जब कुमारिल भट्ट ने यह सुना था — कि करोमि ? क्व गच्छामि ? को वेदान् उद्धरिष्यति ? क्या करू ? कहा जाऊ ? कौन वेदो का उद्धार करेगा ? तब आचार्य आद्यशकराचार्य तथा स्वय कुमारिलभट्ट ने इस चुनौती को स्वीकार किया था। उन्नीसवीं सदी मे महर्षि दयानन्द ने जिस वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया था, आज ऋषि दयानन्द के अनुयायियो मे पुन यह भावना भरनी चाहिये कि—

'स्वधर्मे निधन श्रेय पर धर्मो भयावह'

अर्थात अपने धर्म की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाना श्रेयस्कर है।

धन देकर तन राखिये, तन दे राखिये लाज ।
धन दे तन दे लाज दे, एक धर्म के काज ।।

—रामसिंह

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धातो का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणो विचारो और मान्यताओ का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तको और उनके अनुयायी विद्वानो द्वारा लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम, कबीर तथा नानक और तेरापथी जैन सम्प्रदाय की मान्यताए। इसी प्रकार जात-पात छुआ छूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध मे उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारो का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ मे प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबधो और लेखो के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य मे सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रय आर्य निदेशक, दयानन्द शोधपीठ, दयानन्द कालेज, अजमेर से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

नमस्ते शब्द वाचक है। वदिक होने के कारण यौगिक है। यौगिक कदापि रूढ़ि वाचक नहीं होता। अतः इसके विभिन्न अर्थ विभिन्न परिस्थिति मे होते हैं इसके अर्थ सामर्थ्य भिन्न और विशेष है।

नमस्ते शब्द दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। एक समय था कि यह शब्द अभिवादन के रूप में सब वर्गो और सब आयु के लोगो को प्रिय नही लगता था। पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की महती कृपा है कि उनका प्रभाव सब ओर और छा रहा है घर घर वेदध्वनि और नमस्ते का अभिवादन चलने लगा है। फिर मार्ग दुनिया से लेकर संसद व र राष्ट्रपति भवन तक इसका सम्मान होता है ग ... प्र ... म ... आदि में नमस्ते अभिवादन प्रचलित है ... तक य नतमस्तक विद्यालय में भी नमस्ते का अभिवादन हो चल पड़ा है

नमस्ते इस शब्द में दो पद हैं—नमः और ते। आपके प्रति हम झुकते हैं नमन करते है—ऐसा सुन्दर अर्थ है इसका

वेद मे तो परमपिता परमात्मा को भी नमस्ते कहा गया है यथा — नमो ब्रह्मणे नमस्ते अ य ... नमस्ते मन्यवे जगत्कारणाय देवी देवताओ को भी नमस्ते कहा गया है। यथा— भगवती भारती देवी नम वेदो ब्राह्मणो आरण्यकों उपनिषदो व स्मृति ग्रन्थो मे यह नमस्ते बार बार आता है। इतना ही नहीं वरन् महाभारत नमस्ते मुक्त भाव है यह शब्द ... के आर्ष ग्रन्था के अलावा लौकिक ग्रन्थों रामायण महाभारत गीता पुराण संस्कृत के अनेक काव्य एवं नाटकों मे आया है।

पंडित अयोध्या प्रसाद जी ने निम्नरूपेण नमस्ते की व्याख्या अंग्रेजी मे की है

With all powers of my heart and with all powers of my head I pay respect to you

नमस्ते अभिवादन आबालवृद्ध सबके लिए प्रस्तुत है। यदि कोई पुत्र अपने पिता को नमस्ते कहता है तो पिता भी उसे नमस्ते कहकर आशीर्वाद देता है। पुत्र ने तो सम्मान भाव से पिता को नमस्ते किया। इस पर पिता ने आशीर्वादात्मक नमस्ते किया।

ये दोनो भाव प्रयोजनवश नमस्ते पद मे ही अन्तर्निहित हैं। कोई समवयस्क व मित्र अपने

नमस्कार क्यों नहीं?

—ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्री—

मित्र को नमस्ते करता है तो यहा समान मैत्री भाव है। अतः नमस्ते शब्द के तीन अर्थ प्रयोजन सम्मानात्मक समानात्मक और आशीर्वादात्मक है।

नमस्ते की अनुशासनशीलता

आये दिन हम देखते हैं कि छात्र अपने शिक्षक को छूते अपने से बड़े का हाथ मे कोई वस्तु न रहने हुए भी अभिवादन करते ... कभी हाथ उठा ... पर उठाकर तो कभी चलते चलते केवल मुह से ही प्रणाम या नमस्ते शब्द कहकर या सिर हिलाकर अभिवादन करते है। पर यह उचित नही होता। नमस्ते शब्द का अपना अनुशासन है। उस अनुशासन का पालन किये बगैर नमस्ते करना नमस्ते शब्द की महत्ता पर बट्टा लगाना है। नमस्ते अभिवादन करने के पहले हाथो को जोड़कर उन्हें हृदय में सटाकर तब मस्तक को झुकाना चाहिये। इस प्रकार हाथ हृदय और मस्तक (Hand heart and head) तीनो से एक होकर श्रद्धापूर्वक नमस्ते करने का यथेष्ट लाभ प्राप्त हो सकेगा। प्रतिदिन वृद्ध विद्वजनो को नमस्ते अभिवादन करने से चार चीजो की वृद्धि स्वतः होगी—आयु विद्या यश और बल। द्रष्टव्य है—

अभिवादनशीलस्य
नित्य वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते
आयुर्विद्या यशोबलम्॥

मनु अ० 2

आज के प्रयुक्त अभिवादन

सैकड़ो वर्षो की गुलामी तथा मत पंथ व सम्प्रदायों के चलते हम हम अपनी वदिक सभ्यता की मर्यादा को भूलकर अनेक तरह के अभिवादन परस्पर करते हैं यथा—प्रणाम नमस्कार जयगुरु वन्दना जय रामजी की गुड मोर्निंग गुड इवनिंग गुड नाइट सलाम वालेकुम वा कुम सलाम सत श्री अकाल आदि। इनसे हमारी कमी हमारी एकता की कमी आपसी मतभेद भ्रान्ति परिणाम स्वरूप मन आते हैं हम क्यों न पुनः अपनी पुरातन वैदिक संस्कृति की शरण में और एकमात्र वदिक अभिवादन नमस्ते की शरण पकड़ें

(मधुर ... साभार)

नमस्कार या नमस्ते

प्राचार्य श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने दर्शन देवनी तथा गोस्वामी लक्ष्मन के हिंदी कार्यक्रमों मे नमस्कार के स्थान पर नमस्ते का प्रयोग करने के लिए पत्र लिखकर सुझाव दिया है उसके समर्थन में उन्होने जो तर्क दिया है उसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है—

आधुनिक भारत के पुनर्निर्माण में ऋषि दयानन्द के अनेक योगदानों में से नमस्ते भी एक है जो अब प्रायः सर्वसम्मत भारतीय संबोधन बन गया है जिसका विदेशी भी प्रयोग करते हैं।

सम्प्रदायों में राम राम सीताराम राधेश्याम जयमाता जय गोपाल सत श्री अकाल व खुदा हाफिज जैसे धार्मिक तथा साम्प्रदायिक भिन्नता को प्रदर्शित करने वाले अथवा गुड मोर्निंग गुड नाइट और सलाम अलैकुम जैसे विदेशी मूल के ... का प्रयोग किया जाता है ... नमो अधिकांश या तो किसी अवतार देव देवता के अथवा अपने 2 पंथ और सम्प्रदाय के वाचक सूचक नाम मात्र हैं। परस्पर भेंट या पत्र व्यवहार के समय इनमें से किसी का न कोई प्रासंगिकता है और न उपयोग। ऐसे अवसर पर इन नामवाचक शब्दों के स्थान पर किसी उपयुक्त संबोधन का ही उपयोग तर्कसंगत है। इनके अतिरिक्त उच्च शिक्षित और कुछ प्रबुद्ध वर्गों मे नमस्कार शब्द का भी संबोधन के रूप मे प्रयोग होता है किंतु ये शब्द संज्ञावाचक होने के कारण संबोधन के लिये अप्रामाणिक ही नही बल्कि उसके उपयोग की दृष्टि से अशुद्ध भी है। क्योंकि किसी से भेंट करते समय किसी महापुरुष देवी देवता या धर्म विशेष के समान नमस्कार का भी कोई साधक संबंध नहीं है। स्पष्ट है कि ऐसे अवसर पर केवल नमस्ते जैसा यौगिक संबोधन ही उपयुक्त हो सकता है जिसका अर्थ बड़ा के प्रति आदर और छोटों द्वारा नम्र प्रति नमन के रूप मे किया जाता है।

नमस्ते की सार्थकता उपयोगिता के अतिरिक्त इसका एक राष्ट्रीय महत्व भी है और वह यह कि हमारे देश की धार्मिक भाषायी प्रांतीय और वेशभूषा और खान पान व रहन-सहन का वर्तमान और अनेक नवीन विभिन्नताओं मे कम से कम नमस्ते जैसा एक स्वीकृत तथा समान संबोधन हमारी एकता का प्रतीक भी है।

आर्य समाज अजमेर द्वारा प्रकाशित साहित्य
प्रो० दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तक

1. देश धर्म और हिंदू समाज का आर्य समाज का देन—मूल्य 0 50 पैसे
2. हमारी राष्ट्रीयता के आधार मूल्य रु 1 00
3. आचार संहिता—मूल्य 0 50 पैसे
4. ... आर्यसमाज हिन्दू विरोधी ... (हिन्दी अंग्रेजी)—विशेष रियायती दर रु 75 00
5. आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं मूल्य—50 रु
1. आर्य समाज (हिन्दी) मूल्य सजिल्द 20 00 रु अजिल्द 16 00 ... नाला ... राय
2. धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) पूरे सैट का मूल्य रु 32 00
3. दयानन्द कथा संग्रह मूल्य रु 3 00
4. परिचय निर्देशिका (समस्त देश विदेश की आर्य शिक्षण संस्थाओं का परिचय)—मूल्य रु 12 00

सत्यार्थ-प्रकाश ग्रन्थ माला 15 भाग

(प्रत्येक समुल्लास पर स्वतंत्र ट्रैक्ट)

1 ईश्वर एक नाम अनेक
2 आदर्श माता पिता
3 शिक्षा और चरित्र निर्माण
4-गृहस्थाश्रम का महत्व
5 संन्यासी कौन और कैसा हो?
6 राज्य व्यवस्था
7 ईश्वर और वेद
8 जगत की उत्पत्ति
9 स्वर्ग और नरक कहां है?
10 चौके चूल्हे में धर्म नहीं है
11 हिन्दू धर्म का निबलता
12-बौद्ध और जैनमत
13 वेद और ईसाई मत
14 इस्लाम और वदिक धर्म
15 सत्य का अर्थ तथा प्रकाश

विशेष—सभी ट्रैक्ट आर्य जगत के चोटी के विद्वानों के द्वारा लिखित है एवं ग्रन्थमाला का सम्पादन आर्य समाज अजमेर के प्रधान प्रो दत्तात्रेयजी आर्य ने किया है। ग्रन्थमाला के सैट का मूल्य 8/ रुपये है।

दयानन्द उवाच

जिज्ञासु — परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम क्या है ? इन्द्र, मित्र, अग्नि, ब्रह्मा विष्णु एवं रुद्र तो विभिन्न देवताओं और भौतिक शक्तियों और पदार्थों के नाम हैं, इन्हें ईश्वर का वाचक कब और कैसे समझा जाय ?

दयानन्द — परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म् है। इसके तीन अक्षर अ+उ+म् हैं। अकार विराट्, अग्नि और विश्वादि का, उकार हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि का तथा मकार ईश्वर, आदित्य तथा प्राज्ञादि का वाचक है। परमेश्वर सबका रक्षक है, अत उसकी संज्ञा ओ३म् है (अवतीत्योम्)। देखो ! छान्दोग्योपनिषद् में उसी अविनाशी, सर्वरक्षक

प्रसन्नता की बात है कि 'दयानन्द वैदिक शोधपीठ' के निदेशक आचार्य दत्तात्रेय आर्य की प्रेरणा से दयानन्द वैदिक शोधपीठ के प्रोफेसर एवं कुलपति डॉ. बाबूराम शास्त्री, आचार्य, एम.ए., पीएच.डी., डी.लिट्. ने महर्षि दयानन्द के धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विभूतियों की सार्वजनता तक पहुंचाने के लिए 'दयानन्द उवाच' नाम से एक स्वतन्त्र स्तम्भ लिखना प्रारम्भ कर दिया है। यह स्तम्भ नियमित रूप से पाठकों की सेवा में प्रस्तुत होता रहेगा, ऐसी आशा है। — स

की उपासना करने का उपदेश है :
ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत ॥

माण्डूक्य उपनिषद् में भी कहा गया है कि परमेश्वर का प्रधान और निज नाम "ओ३म्" है, अन्य नाम गौण हैं जो उसके गुणों की व्याख्या करते हैं :

"ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम् ॥"

कठोपनिषद् का उद्घोष है कि सभी वेद जिस पद की महिमा गाते हैं, तपस्वी लोग जिसका वर्णन करते हैं और जिसको प्राप्त करने की इच्छा से साधकगण ब्रह्मचर्यव्रत धारण करते हैं—सक्षेप में वही पद 'ओ३म्' है। आकाश के समान व्यापक होने से इसे "खं" तथा सबसे बड़ा होने से ब्रह्म कहा गया है।

इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर का ग्रहण, प्रकरण विशेष और गुणविशेष से होता है। जहां-जहां स्तुति, प्रार्थना, उपासना (आदि प्रकरण) और सर्वज्ञ, सर्वव्यापक न्यायकारी और सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वहीं-वहीं इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है। किन्तु "ओ३म्" तो केवल परमात्मा का ही नाम है। किसी भी स्थिति में इस पद से अन्य का बोध नहीं होता। इसीलिए यह परमात्मा का सर्वोत्तम नाम है।

—डा. बाबूराम शास्त्री

बिक्री नहीं, विषय-वस्तु को देखें

प्रिय भाई वीरेन्द्र जी,

पत्र पत्रिकाओं में जो विषय-वस्तु या सामग्री छापी जाती है उसका चयन समाज, राष्ट्र तथा मानव हित को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो मैं समझता हूँ कि वह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। आप भी समाचार पत्रों की बिक्री की ओर अधिक ध्यान न देकर उसकी विषय वस्तु की ओर ध्यान दें तो वह सार्थक पत्र हो सकता है। आर्य पुनर्गठन परिवार को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

—स्वामी अग्निवेश
अध्यक्ष, बंधुआ मुक्ति मोर्चा
नई दिल्ली-1

पत्र और विचार

'आर्य बाहर से आए'-यह दुष्प्रचार कब तक ?

भारतीय दूरदर्शन पर कभी 'अमीर खुसरो' तो कभी 'भारत की खोज' धारावाहिकों में आर्य बाहर से आये यह दुष्प्रचार किया जाता है। विदेशियों के लिखे मिथ्या इतिहास के आधार पर यदि कभी प. जवाहरलाल नेहरू ने ऐसा लिख दिया था, तो न्याय पूर्ण, सतत खोजों के बाद जब यह सिद्ध किया जा चुका है कि आर्य ही भारत के मूल निवासी हैं—वे बाहर से नहीं आये हैं, फिर यह दुष्प्रचार क्यों किया जा रहा है। ऐसे अंशों को छोड़ कर और भी बहुत कुछ प्रसारण के लिये रह जाता है। विदेशी आक्रान्ताओं की क्रूर चाल थी कि उन्होंने यहां के मूल निवासियों को अपने ही समान बाहर से आया प्रचारित करके समान स्तर प्राप्त करने का प्रयास किया। अब हम उनकी इस चाल को जान गये हैं, तब तो हमें ऐसे दुष्प्रचार से बचना चाहिये। दूर-दर्शन से अपेक्षा है कि वह ऐसे आपत्ति पूर्ण अंशों का प्रसारण बन्द करे।

श्रीमती दर्शन देवी भारद्वाज आर्य समाज आजमगढ़

सच्चा शंखनाद

'आर्य पुनर्गठन' वर्तमान में ऋषिवर का सच्चा शंखनाद है, जो आर्यजगत् को निरन्तर आर्य पथ की ओर अग्रसर करता रहता है।

- देवनारायण भारद्वाज
नई बस्ती, आजमगढ़

आर्य जनता को सूचना

किसी भ्रामक मुजफ्फरनगर के साम्प्रदायिक दंगों में मुझे शारीरिक व आर्थिक क्षति पहुंचाए जाने का समाचार आर्य जनों में प्रसारित हो गया है।

प्रभु कृपा से मुझे दंगों में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँची है। मैं पूर्ववत् अपने प्रचार कार्य में रत हूँ।

कु. सत्यपाल आर्य प्रभाकर
भजनोपदेशक
2/24 केवलपुरी सरवट रोड,
मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

शोक व्यक्त

आर्य समाज अजमेर के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय आर्य व मन्त्री श्री रासासिंह ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग के पूर्व अध्यक्ष तथा विश्वविख्यात न्यायविद्, संविधान विशेषज्ञ एवं भारत सरकार से पद्म विभूषण से सम्मानित तथा आर्य समाज एवं डी ए. वी संस्थाओं के महान हितैषी डूंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह के अनुजभ्राता डा. नगेन्द्रसिंह के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है। और कहा है कि डा. सिंह की राष्ट्र तथा विश्व के प्रति की गई सेवायें सदैव चिरस्मरणीय रहेंगी। —का. मन्त्री

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स हड्डी मार्ग मोहल्ला केसरगंज, अजमेर में मुद्रित एवं आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य पुनर्गठन

आर्य समाज, अजमेर का हिन्दी पाक्षिक पत्र

'आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म ।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म ॥'

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्
वेद ही समस्त धर्म का मूल है ।

सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सवर्दा उद्यत रहना चाहिए
—महर्षि दयानन्द

दयानन्दाब्द 163

सृष्टि सम्वत् 1972949088

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सकल जगत को आर्य बनाय ।

हमारा उद्देश्य : समाज की वर्तमान एवं भविष्य में पैदा होने वाली समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आर्यसमाज का पुनर्गठन करना है ।

वर्ष 4 शुक्रवार 30 दिसम्बर 1988
अ क 24 प स -43383/84

अभय मित्रादभयम् अमित्रादभयं ज्ञातादभय परोक्षात् ।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ॥

पौष कृ 7 सवत 2045
वार्षिक मू 15/- एक प्रति 60 पैसे

आर्य समाज और हिन्दू यूनिटी फ्रन्ट

—वीरेन्द्र कुमार आर्य—

दिल्ली के एक दैनिक पत्र मे प्रकाशित खबर के अनुसार हिन्दू समाज के उत्थान के लिए विभिन्न हिन्दू सस्थाओ द्वारा एक 'हिन्दू यूनिटी फ्रन्ट' का गठन किया गया है। यद्यपि खबर के शीर्षक एव मुखडे को पढकर तो यही लगता है कि फ्रन्ट का गठन एक अच्छे उद्देश्य को लक्ष्य मे रखकर किया गया है, लेकिन पूरी खबर पढने पर जो तस्वीर उभरती है—वह दूसरी है ।

हिन्दुओ के उत्थान के लिए फ्रन्ट का गठन करना एक अच्छी बात है । आज हिन्दुओ मे अनेक सामाजिक कुरीतियो एव अध-विश्वासो ने अपनी जडे जमा रखी हैं । इनके विरुद्ध हिन्दुओ को जाग्रत करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु खेद है कि हिन्दुओ मे व्याप्त किसी भी सामाजिक बुराई या अधविश्वास के विरुद्ध चेतना पैदा करने के स्थान पर फ्रन्ट ने राम जन्मभूमि पर अधिकार करने एव समान नागरिक कानून बनवाने को अपना उद्देश्य बनाना अधिक बेहतर समझा है । इस सदर्भ मे यह भी विशेष उल्लेखनीय है कि फ्रन्ट के गठन मे जिन सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया—उनमे विश्व हिन्दू परिषद तथा राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के अतिरिक्त आर्य समाज के प्रतिनिधि भी थे ।

विश्व हिन्दू परिषद एव राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ द्वारा हिन्दुओ मे व्याप्त सामाजिक कुरीतियो के स्थान पर राम जन्मभूमि जैसे मुद्दे को प्रमुखता देना कोई आश्चर्यजनक नहीं है। लेकिन आर्य-समाज जैसी क्रातिकारी एव सुधारवादी सस्था द्वारा सामाजिक कुरीतियो के स्थान पर भूमि के लिए आदोलन करना अवश्य आश्चर्यजनक है ।

हम इन तथाकथित आर्य समाजियो से पूछना चाहते हैं कि आखिर वे ऐसा करके महर्षि दयानन्द के सिद्धात विरुद्ध कार्य नही कर रहे ? अयोध्या स्थित भूमि यदि हिन्दुओ को मिल जाए तो इसमे आर्य समाज को कोई आपत्ति नही, लेकिन हिन्दू उस भूमि की प्राप्ति के बाद एक और पाखण्ड के विशाल विस्तार केन्द्र के रूप मे उसे विकसित करेंगे ।

इसके लिये विश्व हिन्दू परिषद ने प्रत्येक हिन्दू से 'राम मदिर' के निर्माणार्थ सवा-सवा रुपया एव एक-एक ईट देने का आह्वान किया है । जाहिर है कि परिषद एक भव्य पाखण्ड विस्तारक केन्द्र का निर्माण करना चाहती है । आर्य समाजियो को क्या एक पाखड केन्द्र के निर्माण मे भागीदार बनना चाहिये ?

ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ नामधारी आर्यसमाजी आर्य-समाज जैसी सार्वभौम प्रेम की पक्षधर सस्था को अपने किन्ही क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति का माध्यम बना रहे हैं अन्यथा आर्यसमाज कोई हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही है जो विश्व हिन्दू परिषद एव स्वय सेवक सघ से मिलकर फ्रट बनाए ।

संस्कृत की उपेक्षा क्यों ?

—डा बाबूराम शास्त्री—

नई शिक्षा नीति मे "सेण्ट्रल बोर्ड आफ सैकेन्डरी एजूकेशन" के परिपत्र स ACAD/86/EO (HUM) दिनाक 16-9-1988 के अनुसार आगामी सत्र 1989 से विद्यालयो मे छठी से दसवी कक्षा तक पूर्ण विषय के रूप मे सस्कृत का अध्ययन समाप्त किया जा रहा है । सस्कृत हमारी सस्कृति का मूल आधार है । वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता व सहस्रो अन्य ग्रन्थो की भाषा सस्कृत ही है । हिन्दू धर्म, दर्शन, सस्कृति, इतिहास, पुरातत्व व प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का सम्यक् बोध सस्कृत ज्ञान के द्वारा ही सम्भव है। सस्कृत भारत की समस्त भाषाओं की जननी है ।

देश की एकता व अखडता तथा सनातन (वैदिक) धर्म की रक्षा के लिए सस्कृत का पठन-पाठन अपरिहार्य है । नैतिक मूल्यो मे जो गिरावट आई है—देश का जो चारित्रिक पतन हुआ है—या हो रहा है—आधुनिकता के नाम पर जो युवा पीढी गुमराह की जा रही है—इन सबका एकमात्र कारण है—सस्कृत, सस्कृति और सस्कारो की उपेक्षा । अगर इस देश मे सस्कृत, सस्कृति और सस्कारो की यही उपेक्षा बनी रही तो निश्चित ही एक दिन मानव मानव न रहकर मशीन बन जाएगा और शायद तब देश के युवा प्रधान-मत्री का देश को 21वी सदी में ले जाने का स्वप्न साकार हो जाएगा । हम सुनते आए हैं कि जगद्गुरु कहलाने वाले इस देश के ब्राह्मणो से भूलोकवासी सभी मनुष्य अपने-अपने चरित्र-कर्तव्य-आचरण की शिक्षा लेते थे। कारण क्या है कि आज हम अपने ही राष्ट्रीय चरित्र को भूलते जा रहे हैं । मैकाले को हम इसलिए दोषी ठहराते हैं कि उसने ईसाई धर्म की नीव दृढ करने के लिए और भारतीयो को ईसाई बनाने के लिए इस देश की शिक्षा नीति को विकृत किया । मोक्षमूलर पर हम इसलिए दोषारोपण करते है कि उसने भारतीय सस्कृति-धर्म-दर्शन का अवमूल्यन करने के लिए हमारे धर्मग्रथो की विकृत व्याख्या की । यह कैसी विडम्बना है कि भारतीय सस्कृति और सस्कृत की जड खोदने वाली वर्तमान सरकार की 'नई शिक्षा नीति' पर एक शब्द भी बोलने का साहस हम नहीं जुटा पा रहे हैं ? यह कैसी पराधीनता है कि दुःशासन भारत-माता का चीरहरण कर रहा है और हम मूक-दर्शक बने हुए है ? मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज कृष्ण, ब्रह्मर्षि वसिष्ठ, राजर्षि विश्वामित्र, जगद्गुरु शकराचार्य और महर्षि दयानन्द के आदर्शों, उपदेशो व आदेशो की सुदृढ नीव पर टिकी हुई यह आर्य जाति लडखडाती क्यो नजर आ रही है? आखिर क्या हो गया है सम्पूर्ण विश्व के मानवो को चरित्र की शिक्षा देने वाली ब्राह्मण जाति को ? क्या राज है उसकी कुम्भकर्णी निद्रा का ? समय रहते अगर देश का प्रबुद्ध नागरिक—बुद्धिजीवी वर्ग सचेत न हुआ तो सस्कृत और सस्कृति का सर्वनाश

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारत से मुहब्बतनामा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व उपकुलपति एवं भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री बी. के. हूजा, जिनका जन्म पाकिस्तान में हुआ था, ने रईस अमरोवही के पैगाम का उत्तर दिया है

ओ पाक जाने वाले मेरा सलाम ले जा
ये पाकियो से कहना ओ पाक जाने वाले
भूले से नही तुमको भुलाने वाले
मुनकिर न हो सकेंगे हरगिज जमाने वाले
भारत पाक वाले सब एक घराने वाले
रब्बे एहसास ले जा, शौके पयाम ले जा।
ओ पाक जाने वाले मेरा सलाम ले जा।
वो खाक जिस पे हमने बचपन के दिन गुजारे
अब तक बसी हुई है अहसास में हमारे
क्यो कर न याद आये क्यो हो न दिल को प्यारे
उस सरजमी के जर्रे उस आसमां के तारे
पैगाम दोस्ती के पाकियो के नाम ले जा।
ओ पाक जाने वाले मेरा सलाम ले जा।
—कुमार तौसवी 'हिन्दी'

सम्पादकीय

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खाई गोलियां....

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस प्रतिवर्ष 23 दिसम्बर को समस्त आर्य जगत में समारोह पूर्वक मनाया जाता है। आर्य समाज जैसे प्रबल राष्ट्रवादी तथा क्रांतिकारी सगठन के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द का अद्भुत बलिदान और त्याग स्वर्णिम अक्षरो में अंकित है।

किसी ने ठीक ही कहा है कि आसमान के सितारो को भी कोई व्यक्ति गिनने में समर्थ हो सकता है, रेगिस्तान के बालू के कणो को भी कोई व्यक्ति कभी गिनने में समर्थ हो सकता है, मूसलाधार वर्षा की बूंदो को भी कोई व्यक्ति कभी गिनने में समर्थ हो सकता है परन्तु भारत-माता की कोख से उत्पन्न होने वाले सपूतो की वीरगाथा का बखान करने में कोई व्यक्ति समर्थ नहीं हो सकता। ऐसे ही वीर सपूतो में से एक थे स्वामी श्रद्धानन्द जी, जिनका सन्यास लेने से पूर्व महात्मा मुंशीराम नाम था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सही अर्थों में सच्चे उत्तराधिकारी थे जिन्होने स्वामी जी के प्रति अनन्य आस्था रखते हुए उनके सामाजिक, शैक्षिक सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सगठनात्मक विचारो को कार्य रूप में अपने जीवन में ढाल कर राष्ट्रीय जीवन में भी क्रियान्वित किया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महान राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। महात्मा गांधी को महात्मा की उपाधि से सर्वप्रथम विभूषित करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। 1902 ई में भारतीय परिवेश में वैदिक परम्परा के अनुसार सस्कार और चरित्र निर्माण करने के लिए मानव निर्माणकारी संस्था गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना स्वामी जी ने करके "गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली" का बीजारोपण किया। इसी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने स्वामी जी की प्रेरणा से दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रह में सर्वप्रथम गांधीजी के आंदोलन को आर्थिक सहायता भिजवाई तथा वहाँ से मोहनदास गांधी जब पुन भारत लौटे तो उनका गुरुकुल कांगड़ी में आमन्त्रित कर अभिनन्दित किया तथा उन्हे "महात्मा" की पदवी से विभूषित किया जो शब्द आज गांधीजी के साथ अमर है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओ से उनका निकट का सम्बन्ध था। महात्मा गांधी उन्हे 'बड़ा भाई' कह कर सम्बोधित करते थे। जवाहर लाल नेहरू ने उन्हे "शक्ति का तेजस्वी पुंज" कहा था। स्वामी श्रद्धानन्द अपने सिद्धान्तो पर अडिग रहकर राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनता के प्रबल पक्षधर बने रहे। जलियावाला बाग काण्ड के पश्चात् मार्शल-ला के आतंक से शिथिल पड़े पंजाब में स्वाधीनता की चिंगारी को पुन प्रज्जवलित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अमृतसर में 1919 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया और स्वयं स्वागताध्यक्ष बनकर उसे जोरदार सफलता प्रदान की। स्वागताध्यक्ष के रूप में प्रथम बार कांग्रेस को सच्चे अर्थो में राष्ट्रीयता का जामा पहनाने हेतु अपना स्वागत भाषण जनता की भाषा हिन्दी में पढ़ा और इस प्रकार हिन्दी राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की संवाहिका बनी।

स्वामी श्रद्धानन्द जहा राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सौमनस्यता के प्रबल पोषक थे वहीं उन्हे कांग्रेस और महात्मा गांधी की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पसन्द नही आई और कांग्रेस के काकीनाड़ा अधिवेशन में अलीबन्धुओ द्वारा प्रस्तुत 6 करोड़ अछूतो के विभाजन का प्रस्ताव पसन्द नही आया और सिंह गर्जना की कि अछूत समझे जाने वाले लोग हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं, उन्हें हिन्दुओ से किसी भी हालत में अलग नही किया जा सकता, हम उन्हे समानता का दर्जा देंगे, गले लगायेंगे, ऊंचा उठायेंगे पर मुस्लिम बन जाने की मांग हरगिज नही मानेंगे। वहीं से उनका कांग्रेस और महात्मा गांधी से मतभेद शुरू हुआ तथा वे हिन्दू महासभा की ओर उन्मुख हुए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने "भारतीय दलितोद्धार सभा" की स्थापना कर दलितो के सुधार के लिये अनथक प्रयास किया। मुस्लिम नेतागण तब लीग की आड़ में हिन्दुओ को इस्लाम में दीक्षित कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का बिगुल बजाया और लाखो नवमुस्लिमो को पुन अपने मूल धर्म हिन्दू (आर्य-वैदिक) धर्म में दीक्षित किया तथा 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना की।

रोलेट एक्ट जैसे काले कानून की धज्जियां उड़ाने वाले, दिल्ली में उसके विरोध का नेतृत्व करने वाले, अंग्रेजो की संगीनो के सामने सीना खोलकर आगे बढ़ने वाले, जामा मस्जिद के मिम्बर पर खड़े होकर वेद मन्त्र से अपना भाषण प्रारम्भ कर राष्ट्रीय एकता का उद्घोष करने वाले, गुरु का बाग सत्याग्रह करने में शरीक होकर सिक्खो को हक दिलवाने के समर्थक अदम्य साहसी सन्यासी श्रद्धानन्द जी ही थे।

स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन ही आर्य समाज और देश की सेवा में अर्पित कर दिया। उनका व्यक्तित्व विराट, प्रभावशाली एवं प्रेरणादायी था। इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधानमन्त्री रैमजेमैकडानल्ड ने गुरुकुल कांगड़ी में दर्शन कर उन्हे "जीवित ईसामसीह" (Living Christ) के रूप में जाना था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की यह दृढ़ धारणा थी कि स्वराज्य प्राप्ति के लिये तथा बाद में उसकी दृढ़ता के लिए हिन्दू समाज में व्याप्त सामाजिक दुर्बलताओ को दूर करना भी अत्यन्त आवश्यक है। यही कारण था कि अस्पृश्यता को मिटाने तथा समानता लाने के लिये स्वामीजी ने रचनात्मक कार्य किया। हकीम अजमल खां

(शेष पृष्ठ 3 पर)

दयानन्द उवाच :

शिक्षा और शिक्षक

—डा बाबूराम शास्त्री—

जिज्ञासु स्वामी जी । वर्तमान काल मे युवा पीढी अपनी सास्कृतिक परम्परा से विमुख होती रही है, छात्र स्वेच्छाचारी हो चले हैं, क्या शिक्षा इसके लिये उत्तरदायी नही है ?

दयानन्द निश्चित ही शिक्षा के वर्तमान विकृत रूप के कारण ही युवा पीढी अपने गौरवपूर्ण अतीत को विस्मृत कर सास्कृतिक मूल्यो से दूर होती जा रही है और निष्ठावान, सदाचारी व कर्त्तव्यपरायण शिक्षको एव आचार्यो की कमी के कारण व राजनयिकों के अनुचित हस्तक्षेप के कारण छात्र स्वेच्छाचारी होते जा रहे है। बच्चो के जन्मदाता माता-पिता भी अपने-अपने कर्त्तव्यो का निर्वाह नही कर रहे हैं। वस्तुत जब तीन उद्दाम अथात एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है । जिसके माता-पिता सदाचारी, धर्मपरायण एव विद्वान है— वही सतान धन्य है । गर्भाधान के आदि-मध्य-अन्त म समुचित आहार-विहार का सेवन करने वाली माता ही उत्तम सतान को जन्म दे सकती है । गर्भाधानकाल से ही माता के सस्कार शिशु पर प्रतिफलित होने लगते है । अत उत्तम सतान की कामना करने वाली मा को सुसस्कृत होना चाहिए, सदाचारपूर्वक धर्म की मर्यादानुकूल ही कर्म करने चाहिए, राग-द्वेष से दूर रहकर सतान के निर्माणार्थ शिवसकल्पपूर्वक ही दैनन्दिन व्यवहार करना चाहिये । शैशवकाल मे माँ ही दुग्धपानादि के द्वारा बच्चे का पालन-पोषण करती है-इसलिए सवप्रथम बच्चे को मा का ही पूर्ण सान्निध्य प्राप्त प्राप्त होता है, मा के वात्सल्य से अभिभूत वह उसी का अनुकरण-अनुसरण करता है, मा के वाक्य ही उसे आचरण विशेष की ओर आकृष्ट करते है । जब बच्चा बोलने लगता है तो वर्णोच्चारण शिक्षा मा से ही से ही मिलती है सवप्रथम आचार-व्यवहार की शिक्षा भी मा ही देती ह और जन्म के पाचवे वष म वही अक्षरारम्भ कराती है । चू कि 'माता निर्माता भवति' मा हा बच्चे की वास्तविक निर्मात्री होती है और 'मातृमान् पुरुषो वद' जिस पुरुष की माता सुसस्कृत और धार्मिक है वही सुशिक्षित व ज्ञानवान् होता है ऐसा शास्त्र भी कहत है । अत शिक्षको म प्रथम स्थान रखने वाली और निर्मात्री माता ही जब अपने कर्त्तव्य व उत्तरदायित्व का सम्यक् परिपालन नही कर पा रही है तो सतान से उत्तम विद्या व उत्तम आचरण की आशा करना व्यर्थ है । जब पुरुष-प्रासाद की नीव ही कच्ची है तो वह ससार मे प्रतिष्ठित कैसे हो सकता है ?

पिता बच्चे का दूसरा गुरु है-शिक्षक है । जब बच्चा 5 वर्ष का हो जाये और वर्णोच्चारण शुद्ध शुद्ध करने लगे तो पिता उसे सदाचार, प्रिय मधुर यम लोक व्यवहार सत्सगति, अतिथि सेवा और अभिवादन का महत्व समझावे और इससे सम्बद्ध मत्र, श्लोक, सूत्र, गद्य-पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावे । क्योकि आचार्यो की मान्यता है कि जो अभिवादन का प्रकार जानता है और बडो का समुचित अभिवादन करता है- जो वृद्धो की सेवा करता है उसकी विद्या, उसकी आयु, उसकी कीर्ति एव उसका बल निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होत हैं । पिता बच्चो को मिथ्याडम्बर, छल-कपट व धूर्तो के माया-जाल से अवगत करावे, चोरी, आलस्य, प्रमाद, मिथ्याभाषण, हिंसा क्रूरकर्म, ईर्ष्या-द्वेष, लोभ-मोह आदि दोषो को छोडने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा दे । सब से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने, सज्जनो का सग करने व माता पिता व आचार्य की तन-मन-धन से सेवा करने का उपदेश करे । विद्या, बल एव विवेक की वृद्धि के लिए आरोग्यकारक भोजन व आच्छादन करने के लिए प्रेरित करे, मद्य-मासादि के भक्षण के दोष समझाए और वीर्य की रक्षा के उपाय हृदयगम करावे । आवश्यकता पडने पर बच्चे को सुसस्कृत एव सुशिक्षित करने के लिए पिता उसका ताडन भी करे किंतु इसके लिए पिता का सुसस्कृत व सुशिक्षित होना अनिवार्य है । एक सुशिक्षित,सदाचारी व धार्मिक पिता ही बच्चे को सदाचारी बना सकता है । इसीलिए शास्त्र भी कहते हैं कि जिस पुरुष का पिता सुसस्कृत, सदाचारी व धार्मिक होता है वही ज्ञानवान होता है ।
'पितृमान् पुरुषो वेद' ।

8 वें वर्ष के आरम्भ मे द्विज अपनी सतानो का उपनयन करके पुत्रो को पूर्णविद्या सम्पन्न गुरुजनो से सुशोभित गुरुकुल मे और पुत्रियो को विदुषी महिलाओ से विभूषित कन्या गुरुकुल मे विद्याध्ययन के लिए भेजें। दुष्टाचरण करने वाले अध्यापक या अध्यापिकाओ के पास बच्चो को न भेजे । पाठशाला ग्राम या नगर से चार कोस दूर एकान्त स्थान मे स्थित हो, कन्या पाठशाला मे 5 वर्ष का लडका लडको की पाठशाला मे 5 वर्ष की लडकी प्रवेश न करे । लडके लडकियो की पाठशाला एक दूसरे से दो कोस दूर हो, लडको की पाठशाला मे सभी शिक्षक व कर्मचारी पुरुष हो और लडकियो की पाठशाला मे सभी शिक्षिकाए व कर्मचारी स्त्री हो छात्रा-छात्राए व अष्टविध मैथुन से बचें ऐसा उपदेश दिया जाय । सब को समान भोजन वस्त्र दिये जायें। माता-पिता या सम्बधी अपनी सतानो से और सताने अपने माता-पिता से न मिल सके और न ही उनका पत्र व्यवहार हो। 5 वें और 8 वें वर्ष के बाद कोई माता-पिता अपने बच्चो को घर न रखे । पाठशाला अवश्य भेजे। और यदि न भेजे तो तो उन्हे राजा दण्ड देवे । सर्वप्रथम बच्चो का यज्ञोपवीत सस्कार कराया जाय पुन सध्योपासन के निमित्त स्नान, आचमन और प्राणायाम की विधि बतलायी जाय और पचमहायज्ञ की शिक्षा भी दी जाय । तत्पश्चात् छत्तीस वर्ष पर्यन्त यम-नियम का सेवन करते हुए ब्रह्मचर्यपूर्वक सागोपाग वेद का अध्ययन कराया जावे ।

मनुस्मृति, बाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के उपयुक्त प्रकरण, प्रसिद्ध दश उपनिषद षड्दर्शन, शतपथादि चार ब्राह्मण ग्रन्थ आदि आदि आर्ष ग्रन्थो की शिक्षा दी जाय, अनार्षग्रन्थ न पढाये जायें । इन शास्त्रो की उपयुक्त शिक्षा सदाचारी विद्वान ही दे सकता है, वही शिष्यो को आचार का ग्रहण कराता है, सदाचारी बनाता है, और जिसका आचार्य शिक्षक सुसस्कृत व सदाचारी होता है वही शिष्य सद्वृत्त व ज्ञानी होता है ।

शास्त्रो की भी यही राय है 'आचार्यवान् -पुरुषो वेद' । अत युवा पीढी की सस्कृति के प्रति उदासीनता, छात्रो की स्वेच्छाचारिता के लिए शिक्षा ही नही शिक्षक अर्थात् माता-पिता और आचार्य सभी समान रूप से उत्तरदायी हैं ।

श्रद्धा से...

(शेष पृष्ट 2 का)

तथा डा असारी जैसे मुस्लिम नेता एव सी एफ एण्ड्रूज जैसे अग्रेज नेता स्वामीजी से अत्यधिक प्रभावित थे तथा उनसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे । हिंदी मे 'सद्धमप्रचारक' और 'अर्जुन' जैसे अखबारो को भी स्वामी जी ने प्रारम्भ किया । कल्याण माग का पथिक उनकी जीवनी अत्यन्त प्रेरणादायी ग्रथ है ।

स्वामी जी के शुद्धि आदोलन से चिढकर कुछ धर्मान्ध मुसलमान उनके खून के प्यासे हो गये थे । 23 दिसम्बर 1926 ई. को दिल्ली मे (जहा आज श्रद्धानन्द बलिदान भवन है) जब स्वामी जी रुग्ण शैय्या पर थे, एक आततायी इस्लाम के अलम्बरदार ने धोखा करके स्वामी जी से कुछ शकाये समाधान करने के नाम पर झुकते हुए छिपाकर रखे हुये पिस्तौल की गोलियो से उनका सीना वेध दिया और वे बलिदान पथ के पथिक बनकर हुतात्मा बन गये । आज 62 वें बलिदान दिवस पर हम सब उनके अनुपम साहस, निर्भीकता, त्याग और सेवा के सम्मुख नतमस्तक हैं । जब तक सूरज चाद रहेगा, श्रद्धानन्द का नाम रहेगा ।

"गोलिया सीने पर खाके चल दिये,
प्यास कातिल की बुझाके चल दिये ।"

—रामसिंह

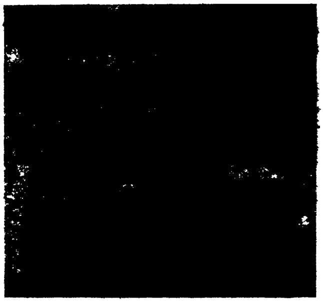
अकाल तख्त का हुक्मनामा

—वीरेन्द्र कुमार आर्य —

अकाल तख्त के जत्थेदार श्री दर्शनसिंह रागी ने अकाली दल (लौंगोवाल) के अध्यक्ष व पंजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री सुरजीतसिंह बरनाला को दण्डित करके एक नवीन परम्परा को जन्म दिया है।

जत्थेदार रागी द्वारा बरनाला को दण्डित किये जाने को किसी भी रूप में उचित नही ठहराया जा सकता। वस्तुत बरनाला को उनके धार्मिक कुकृत्य के लिये दण्डित नही किया गया है अपितु उन्हें अकाल तख्त के राजनीतिक आदेशो की पालना न करने के लिए दण्डित किया गया है। इस समस्त घटनाक्रम से यह सिद्ध होता है कि श्री रागी चाहते हैं कि अकाली दल का मुख्यमन्त्री अकाल तख्त द्वारा निदेशित हो। देश का कोई भी विवेकशील व्यक्ति अकाल तख्त के इस फैसले से सहमत नही हो सकता। देश का संविधान यह आज्ञा नही देता कि कोई पथ प्रमुख नीति सबधी मामलो मे किसी मुख्यमन्त्री को आदेश दे।

यदि भारत जैसे बहु-सम्प्रदाय वाले देश मे सम्प्रदाय प्रमुखो द्वारा इस तरह राजनीतिक हस्तक्षेप किया जाने लगे तो देश में अराजकता एव हिंसा का वातावरण बनते देर नहीं लगेगी। हमारे देश मे कोई एक सम्प्रदाय या पथ नही है। इसलिये किसी भी एक सम्प्रदाय का राजनीति मे दखल दूसरे सम्प्रदाय को जवाबी कार्रवाई के लिए प्रेरित कर सकता है। क्या ही अच्छा होता कि यदि जत्थेदार श्री दर्शनसिंह रागी बरनाला को दण्डित करने के स्थान पर निर्दोष लोगो के हत्यारे खालिस्तान समर्थक उग्रवादियो के विरुद्ध फतवा जारी करते।



वाल्ले दम्पति के साथ वर-वधू

जापानी पुत्रवधू

आचार्य दत्तात्रेय जी वाल्ले के परिवार में एक जापानी पुत्रवधू आई है, इस सबध मे कुछ लोगो ने अपनी उत्सुकता प्रकट करते हुए जानकारी चाही है, इसलिये इस बारे मे वस्तुस्थिति की जानकारी दी जा रही है।

आचार्य दत्तात्रेय जी की पुत्री अमेरिका मे रहती हैं जहा उनके पजाबी पति डाक्टर हैं। उनके निकट विश्वविद्यालय मे जापान आदि देशो की छात्र-छात्रायें पढती हैं, उसी विश्वविद्यालय मे श्री वाल्ले के पुत्र श्री अरविन्द वाल्ले की पत्नी के भाई भी प्रोफेसर हैं और उन्ही का विवाह जापान के एक उद्योगपति टोक्यो निवासी श्री ईवासाकी की पुत्री यूमी से वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ है। वर-वधू विवाह के बाद जब भारत आये तब उनके स्वागत मे देहली मे एक समारोह आयोजित किया गया था। उसी का समाचार कुछ पत्रो मे प्रकाशित हुआ है।

अन्तर्जातीय तथा अन्तरप्रातीय विवाह

श्री वाल्ले जी की यह मान्यता सब विदित है कि जन्मगत जातपात हिन्दू समाज का ही नहीं हमारे देश का एक अभिशाप है। आर्य समाज जैसे क्रांतिकारी आन्दोलन की शिथिलता का भी वे इसे प्रमुख कारण मानते है। विद्यार्थी काल से ही स्व श्री सन्तराम जी बी ए द्वारा स्थापित जात-पात तोडक मण्डल के अजमेर शाखा के मत्री के रूप मे उन्होने तथा उनके कुछ मित्रो ने जातपात तोडकर विवाह करने का प्रण लिया था। वे स्वय एक महाराष्ट्र ब्राह्मण परिवार मे उत्पन्न हुए किन्तु उनका विवाह लाहौर के एक पजाबी परिवार मे हुआ। उनके लघु भ्राता श्री कृष्णराव जी वाल्ले की पत्नी भी जालन्धर के एक सुप्रसिद्ध आर्य परिवार की विदुषी कन्या है। वाल्ले जी के पुत्र का विवाह अग्रवाल वैश्य परिवार मे हुआ है और उनके मौसेरे भाई, जो सेना मे उच्च अधिकारी हैं और विदेश मे डेपुटेशन पर हैं, ने गोवा की एक सुशिक्षित ईसाई महिला को वैदिक धर्म मे दीक्षित करके विवाह किया है। श्री कृष्णराव जी के छोटे पुत्र का विवाह आंध्र की एक तेलगुभाषी कन्या से हुआ है, दोनो अमेरिका के विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक हैं।

संस्कृत की उपेक्षा क्यो?

(शेष पृष्ठ एक का)

अवश्यम्भावी है और संस्कृत और संस्कृति के बिना भारत भारत न रहेगा—हिन्दू हिन्दू न रहेगा और हम हम न होगे।

अत सभी राष्ट्रप्रेमी देशभक्त प्रबुद्ध नागरिको शिक्षको, प्राध्यापको, आचार्यों व धर्माचार्यों का आह्वान किया जाता है कि वे एकजुट होकर सरकार की आत्मघाती "नई शिक्षा नीति" का प्रबल विरोध करें और शिक्षा मे संस्कृत और संस्कृति की शिक्षा का समुचित प्रावधान करने के लिये केन्द्र सरकार को बाध्य करें।

वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता पर शोध ग्रन्थ की योजना

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोध पीठ की ओर से एक ऐसे अधिकृत ग्रन्थ का प्रकाशन करने का निश्चय किया गया है जिसमे वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता सिद्ध की जा सके। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आर्य समाज के सिद्धातो का समर्थन करने वाले उन सब उद्धरणो, विचारों और मान्यताओ का समावेश किया जायेगा जो अन्य धर्मों की धार्मिक पुस्तकों और उनके अनुयायी विद्वानो द्वारा लिखी गई हैं। उदाहरण के लिए एकेश्वरवाद के समर्थन और मूर्ति पूजा के विरुद्ध इस्लाम, कबीर तथा नानक और तेरापथी, जैन सम्प्रदाय की मान्यताए। इसी प्रकार जात-पांत छुआ-छूत के विरुद्ध तथा सामाजिक एकता और सेवा के सम्बन्ध मे उपरोक्त तथा ईसाई धर्म के विचारो का समावेश करने की योजना है। ग्रन्थ मे प्रकाशित किये जाने वाले विद्वतापूर्ण निबंधो और लेखो के लिए उचित पारितोषिक और पारिश्रमिक देने का भी निश्चय किया गया है। जो विद्वान इस कार्य मे सहयोग दे सकें वे कृपया श्री दत्तात्रेय आर्य, निदेशक, दयानन्द शोधपीठ, दयानन्द कालेज, अजमेर से सम्पर्क करनेका कष्ट करे।

स्वत्वाधिकारी आर्यसमाज अजमेर के लिए प्रकाशक एव सपादक रासासिंह हेतु रतनलाल गर्ग द्वारा श्री आर्य प्रिन्टर्स बाबू मोहल्ला केसरगज अजमेर मे मुद्रित एव आर्य समाज भवन, अजमेर से प्रकाशित।